₹ 200

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

अनुप्रास

www.anuprasprakashan.com
वर्ष 05 अंक 08, 2024

आलेख

प्रो. डा. रामावतार यादव, डॉ. उदयनाथझा `अशोक`,
पं. विनयानन्द झा, डा.सुनीता झा,
विनोद नारायण झा, डा. शंकरदेवझा,
डा. सुरेश पासवान, डा. संजीत झा `सरस`,
डा. सुरेन्द्र भारद्वाज, डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

कथा

डॉ. नारायणजी, नीता झा,
डॉ. रंगनाथ दिवाकर, रमेश, श्याम भास्कर

कविता

रूपा धीरू, रघुनाथ मुखिया,
अंशुमान सत्यकेतु,नीरा दास,
प्रभात कुमार, श्रवण साह, सुखदेव प्रसाद साहु

गीत

डॉ. चन्द्रमणि झा, मोनी `वैदेही`

बालबाड़ी

डा. अमलेन्दु शेखर पाठक, मिथिलेश कुमार झा

अनुवाद

तीनटा कोरियाई कविता, अनुवाद केर अएनामे : उदय नारायण सिंह नचिकेता

लघुकथा / गजल / समीक्षा इत्यादि

अनुप्रास प्रकाशन समूह

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

अनुप्रास प्रकाशन

काव्यांश बुक्स क्रिएशन

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847211

www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashan@gmail.com

+91 9430583847 +91 8862977228

पुस्तक सूची : मैथिली

नाटक

01. सिया के सकल देखि : ऋषि बशिष्ठ 108/-
02. हमहूँ जेबै इसकुल : मनोज कामत 100/-
03. मनोरथ : रेवती रमण झा 200/-
04. चोखगर खौंच : डॉ. नरेश कुमार विकल 201/-
05. कमला मे भासियाइत सीता : डॉ. अरविन्द अक्कू 200/-

उपन्यास

06. लय *(दोसर संस्करण)* : विभूति आनन्द 200/-
07. मृत्युलीला : प्रदीप बिहारी 200/-
08. डीह : दीपा मिश्रा 251/-
09. युगांतकारी : मधुकान्त झा 200/-
10. सामंतद्रोही : मधुकान्त झा 300/-
11. बिड़रो : शंकर मधुपांश 300/-
12. देहक सिमान पर : शंकर मधुपांश 300/-

बाल उपन्यास

13. पिजरा : वन्दना झा 200/-

कथा-संग्रह

14. एकान्त द्वीप पर डा. मंजुला : श्याम दरिहरे 251/-
15. आशक चँगेरा : अरुण लाल दास 200/-

लघुकथा-संग्रह

16. स्पीड पोस्ट : ज्ञानवर्द्धन कंठ 200/-
17. भाइरस : ज्ञानवर्द्धन कंठ 200/-
18. भकभक्की : वन्दना झा 200/-

मधुमाछी कथा-संग्रह

19. बिठुआ : शंकर मधुपांश 199/-

बाल कथा-संग्रह

20. सोना हमर बड़ बुधियारि : वन्दना झा 200/-
21. हरियर-कचोर फुलबारी : वन्दना झा 201/-

बाल कविता-संग्रह

22. आबए बौआ गाबए गीत : वन्दना झा 200/-
23. सुबोध बाल-गीत : डॉ. चन्द्र मणि झा 200/-

मैथिली कविता-संग्रह

24. कोनो टूटल अछि तन्तु : नारायणजी 165/-
25. मुट्ठी भरि सम्वेदना : अंजली कुमारी 150/-
26. संवेदनाक भीत पर : अश्विनी कुमार तिवारी 225/-
27. अभिसारिका : जयंती कुमारी 200/-
28. थिर कएने मोन : अमरनाथ झा 'अमर' 211/-*(अनु.)*
29. फुलडाली : शंकर मधुपांश 160/-
30. आउ स्वप्न साझी करी : गोपाल झा 'अभिषेक' 200/-
31. नमहर हो चद्दरि जतबए : अमरनाथ झा 'अमर 200/-
32. जेना होइत हो भोर : अरुण लाल दास 150/-
33. अधवाराक बदलैत स्वरूप : नंदनी झा 250/-
34. तोरेसँ : शंकर मधुपांश 201/-
35. शब्द शेष अछि एखन : शंकर मधुपांश 201/-
36. छाया : उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' 250/-
37. राजर्षि भरत : सतीश चन्द्र झा 200/-
38. भोरक बाट तकैत : खुशबू मिश्रा 'खुशी' 200/-
39. योनिक आत्मबोध : दीपा मिश्रा 251/-
40. शतपत्री : दीपा मिश्र 800/-HB
41. जा धरि अछि अक्षर : अरुण लाल दास 200/-
42. हिलकोर : ललित ठाकुर 200/-
43. लोक काव्य कुसुम : डॉ. महेन्द्र नारायण राम 400/-

मैथिली गीत-संग्रह

44. पंछी बनी गगन केर... : अशोक कुमार मेहता 250/-

महाकाव्य

45. चाणक्य : दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 250/-*(तेसर सं.)*

अनुवाद

46. कोलरिज एवं अभिनवगुप्त : श्रीकृष्ण मिश्र (अ.- भैरवेश्वर झा)1000/HB
47. अब कति मौन बसू ?(नेपाली अ.) : धीरेन्द्र प्रेमर्षि
    मूल मैथिली : दीप नारायण 250/-

व्यंग्य-संग्रह

48. व्यंग्य मेकिंग इन विलेज : वीरेन्द्र नारायण झा 175/-

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

वर्ष 05 अंक 08, 2024 ₹ 200

प्रबन्ध सम्पादक

फुलकान्त ठाकुर

+91 7992322719

सम्पादक

दीप नारायण

+91 9430583847

उप सम्पादक

कुमार आलोक

+91 9431014994

शशि कुमार शशि

+91 8521907184

सम्पादकीय कार्यालय

'धनेश्वरीधाम' इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211

मो. +91 88629 77228

www.anuprasprakashan.com

ईमेल : anuprasprakashan@gmail.com

गूगल पे/पे टी एम : +91 8862977228

- सम्पादकीय सहयोग पूर्णत: अवैतनिक।
- पत्रिकामे व्यक्त विचार लेल सम्पादक उत्तरदायी नहि छथि। अनुप्राससँ सम्बन्धित समस्त न्यायिक मामिलाक फरिछौट मधुबनी न्यायालयक अधीन होएत।
- अनुप्रास लेल स्वामी, प्रकाशक श्रीमती गिरिजा नारायण द्वारा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड नयी दिल्लीसँ मुद्रित।

पग-पग पोखरि माछ मखान, मधुर बोल मुस्की मुख पान।
विद्या-वैभव-शान्ति प्रतीक, ललित नगर ई मिथिला थिक॥

— आचार्य सोमदेव

एहि अंकमे...

सम्पादकीय

जिजीविषेत् शतं समा: 02

आलेख

मध्य–मैथिलीक सहायक क्रिया रूप... : प्रो. डा. रामावतार यादव 05
सोरमादेई : पति कंसनारायण : डॉ. उदयनाथझा 'अशोक' 24
लोचनकृत रागतरंगिणी : एक विहंगम दृष्टि : पं. विनयानन्द झा 33
मिथिलामे महिला जागरण : डा.सुनीता झा 35
बघम्बरी बाबा : जेना हम जनलियनि : विनोद नारायण झा 37
मिथिलाक एकटा विस्मृत कलोत्सव परम्परा : दोलिक नाच : डा. शंकरदेवझा 43
उपन्यासकार सुमनजी : डा. सुरेश पासवान 49
मिथिलाक सांस्कृतिक प्रदूषण : डा. संजीत झा 'सरस' 52
...'कन्यादान'क विषयवस्तु ओ भाषा-शिल्प : डा. सुरेन्द्र भारद्वाज 56
... हरवहाक बेटीमे फजलुर रहमान हाशमीक दृष्टि : डॉ. जियाउर रहमान जाफ़री 62

कथा

बाबूजी : डॉ. नारायणजी 67
कंटरोल : नीता झा 71
खुट्टीपर टाँगल घुँघरू : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 74
नीम गाछ परहक गुरीच : रमेश 79
पहाड़ सिंह : श्याम भास्कर 85

लघुकथा

अमल कुमार झाक छओटा लघुकथा 88

पहिल छाप

श्रवण साह 70
सुखदेव प्रसाद साहु 84

कविता

रूपा धीरुक दूटा कविता 91
जन-संहारक अमृतोत्सव : रघुनाथ मुखिया 92
सुन्दर सृष्टि : नीरा दास 93
अंशुमान सत्यकेतुक तीनटा कविता 94
मीठगर मैथिली : प्रभात कुमार 96

गीत

करियौ कृपा हे दुर्गा मैया : मोनी 'वैदेही' 96
डॉ. चन्द्रमणिक चारिटा गीत 97

गजल

जगदानन्द झा 'मनु'क चारिटा गजल 99

अनुवाद

तीनटा कोरियाई कविता : अनुवाद केर अएनामे : नचिकेता 100

समीक्षा

मैथिली साहित्यक विलक्षण पोथी अछि 'मिच्छामी दुक्कड़म' : श्याम दरिहरे 103

बालबाड़ी

कथा : दुलरुआ चोर : डा. अमलेन्दु शेखर पाठक 107
कविता : मिथिलेश कुमार झाक चारिटा कविता 111

जिजीविषेत् शतं समाः

सम्पादकीय

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक पत्रिका 'अनुप्रास'क सातम अंक अपने सभक समक्ष प्रस्तुत करैत हम कहने रही जे पत्रिका आब वार्षिक अंकक रूपमे प्रकाशित होएत। तदनुसार एकर आठम वार्षिक अंक अपने सभक कर-कमलमे अर्पित करैत आइ हमर मोन अतिशय आह्लादित अछि। प्रस्तुत अंकमे प्रो. डा. रामावतार यादव, डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक', पं. विनयानन्द झा, डा. सुनीता झा, विनोद नारायण झा, डा. शंकरदेवझा, डा. सुरेश पासवान, डा. संजीत झा 'सरस', डा. सुरेन्द्र भारद्वाज आ डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़रीक आलेख संकलित अछि। डॉ. नारायणजी, नीता झा, डॉ. रंगनाथ दिवाकर, रमेश आ श्याम भास्करक कथा एवं अमल कुमार झाक छओटा लघुकथा पाठककेँ मिथिलाक माटि-पानिक सोन्हगर सुगन्धसँ साक्षात्कार कराओत। एहि अंकमे अपने सभकेँ रूपा धीरु, रघुनाथ मुखिया, नीरा दास, अंशुमान सत्यकेतु एवं प्रभात कुमारक कविता पढ़बाक अवसर भेटत। डॉ. चन्द्रमणिक चारिटा टटका गीत एवं मोनी 'वैदेही'क एकटा भक्ति गीत, जगदानन्द झा 'मनु'क चारिटा गजल, डॉ. उदय नारायण सिंह नचिकेताक तीनटा कोरियाई कविताक अनुवाद पाठककेँ आनंदित करत। श्याम दरिहरेजी बहुत पहिने अनुप्रासक मेलपर एकटा समीक्षा पठओने रहथिन। संजोगसँ दरिहरेजीक आन-आन रचनासभ विभिन्न अंकमे अबैत रहल मुदा ई समीक्षा छुटल रहि गेल छल। ओहि समीक्षाकेँ एहि अंकमे श्रद्धा सहित स्थान देल गेल अछि। एहि बेर पत्रिकाक स्थायी स्तम्भ बालबाड़ीक अंतर्गत डा. अमलेन्दु शेखर पाठकक सुंदर बाल-कथा एवं मिथिलेश कुमार झाक चारिटा बाल कविता नेना-भुटकाक लेल प्रेरणादायी होएत। 'पहिल छाप' स्तम्भमे एहन रचनाकारकेँ स्थान देल जाइत अछि। जनिकर कोनो रचना कतहु प्रकाशित नहि भेल रहैछ। एहि बेर 'पहिल छाप'मे श्रवण साह एवं सुखदेव प्रसाद साहुक कविताकेँ स्थान देल गेल अछि।

पाठकक समक्ष स्तरीय सामग्रीसभक विशिष्ट प्रस्तुति अनुप्रासक उद्देश्य रहल अछि। सीमित संसाधनमे साहित्यक उच्चतम मानदंडक अनुरक्षण पत्रिकाक मूल स्वर अछि। अपन

माटि-पानिक लेल प्रतिबद्धताक संग हृदयमे सेवा भाव अँगेजने हमसभ अपन छोट-छोट डेग आगू बढ़ा रहल छी। एहि डेगा-डेगीमे कतेक दूर धरि जा सकब ई भविष्यक गर्भमे अछि। ओना एहि बीच भारतवर्षमे उत्कर्षक बहुत रास अभिनव डेग बढ़ाओल गेल अछि। जे कालक कपालपर अमिट शिलालेख बनि सुशोभित भेल अछि।

आइ अपन देश विज्ञानमे एतेक सबल भ' गेल अछि जे हमरा लोकनि चानो दाइक अँगना कखनो जा सकैत छी। समयक संग विकासक शिखर उत्तरोत्तर उच्चसँ उच्चतर होइत रहए से देश आ समाज दुनूक लेल गौरवक बात थिक। मुदा, प्रगतिक एहि अन्हराएल होड़मे हमरालोकनि किछु एहनो क्षेत्रमे कल्पनातीत विकास केलहुँ अछि जे हमरासभक अभीष्ट नहि छल। हमरा कहबाक अछि— आइ देशमे वृद्धाश्रम केर संख्या दिनो-दिन बढ़ि रहल अछि। किनसाइत प्रगतिशीलताक अंध सुरंगमे भुतिआ तँ नहि रहल छी हमसभ? अनुशासित जीवन शैलीसँ विमुख भ' निजी स्वतंत्रता आ बंधनमुक्त जीवन जीबाक फेरमे सामाजिक बंधनसभ शिथिल भ' रहल अछि। शिक्षा आ प्रौद्योगिकीक अकास ओढ़ने हमरालोकनि अपन पुरान पीढ़ीसँ तालमेल बैसाबएमे असमर्थताक अनुभव किएक क' रहल छी? जन्मदाताकेँ अपना संग राखएमे किएक माथपर असोकर्ज केर रेघा अंकित भ' जाइत अछि? भारतीय संस्कृतिमे वृद्ध लोकनि ज्ञान, अनुभव आ मार्गदर्शनक स्त्रोत रूपमे सम्मानित कएल गेल छथि। ओ परंपरा आ संस्कृतिक संरक्षणकेँ लेल बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध भ' सकैत छथि, युवा पीढ़ीकेँ अपन ज्ञान, अनुभव आ कौशलसँ कुशल मर्गदर्शन क' सकैत छथि।

समकालीन पीढ़ीकेँ एहि बातक अवश्य चाँकि हो जे जीवनमे माए-बापक भूमिका हमरासभक अमूल्य निधि अछि। एक-दोसराक बीच भावनात्मक दूरी बढ़ल जा रहल अछि! परिवार-समाज बिखरि रहल अछि। सहोदर संग बाजा-भुकी बन्द भ' रहल अछि। ई ठीक अछि जे हमरा लोकनि 21म शताब्दीक व्यस्ततम समयक जालमे ओझरा औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, व्यक्तिवादिता, मोबाइल, इंटरनेट आ सोशल मीडियाक चकमक-चकमकीमे चोन्हरा अपन नैतिकता आ संस्कारक पीढ़ीकेँ निंगहेस क' रहल छी। माए, मातृभूमि आ मातृभाषाक मनुखक जीवन-निर्माणमे पैघ भूमिका रहैछ। हमर संस्कार एखनो माएक अँचराक खूंटमे बान्हल अछि। जँ अपन पीढ़ी बचेबाक अछि तँ हमरा घूरए पड़त अपन माए, मातृभूमि आ मातृभाषाक छाहरि तर। जतए एखनो हमर मंगल कामनाक आशीष छिड़िआएल अछि। माए-बाप गाममे काहि किएक नहि काटैत होथि, हुनक खोज-खबरि करब जरूरी नहि अछि मुदा फादर्स डे आ मदर्स डेपर भेल कोनो पोस्टपर भावुक करएवला पोस्ट करबे करब। किनको जन्मदिन आ वैवाहिक वर्षगाँठ सभपर 'विश' नहि करब आब सम्बन्धकेँ विषाक्त करैछ, बैकवर्डनेस मानल जाइछ। सामाजिकता आ आपकता जेना गामघरसँ विदा भ' मोबाइलेमे सन्हिआ गेल हो! आखिर एना किएक भ' रहल अछि? एहिपर हमरा सभकेँ गम्भीर चिन्तन करबाक चाही।

दुर्भाग्यक बात जे एहि सभपर चिन्तन करबाक लेल हमसभ ने तैयार छी, ने हमरा सभकेँ एहि लेल पलखति अछि। एक आभासी दुनियाँमे जीबाक लेल हमसभ अभिशप्त भेल छी।

धिया-पुता कॉन्वेंट स्कूलमे पढ़ैत अछि, मैथिली कोना बाजत! अपनो हिन्दीए अंग्रेजी बाजब तखन ओकरा सभकेँ सुविधा हेतै, सएह सोचि अपनो दुनू प्राणी आब हिन्दीए अंग्रेजीमे बातचीत करी! ई सोच हमरा सभक की सभ छीनि लेलक तेकर भान अखन नहि होएत! ई अखरत बुढ़ारीमे जखन पोता-पोती, नाति-नतिनीसँ दूर कोनो वृद्धाश्रम केर बेंचपर एसकर बैसि अपन जीवनमे की भेटल आ की हेराएल तकर आकलन करब। तखन पता चलत जे हम कतए हुसि गेल रही। आइ जे अपन माएक सम्मान नहि करैछ काल्हि ओकर सन्तति ओकर सम्मान कोना करत! जँ माएक सम्मान नहि तखन मातृभाषाक सम्मान कोना भ' सकत! माए आ मातृभाषा एक दोसराक पर्याय थिक। जे माएक सम्मान करत ओ मातृभाषाक सम्मान अवश्य करत। आब देखल जा रहल अछि जे लोक अपन माए आ मातृभाषाक प्रति उपेक्षाक भाव रखने अछि। गाममे कोनो एहन बियाह-दान, उपनयन, श्राद्धकर्म आदि कार्यक्रम, जाहिमे बहुत ठामक लोक-वेद-परिवार जुटैत अछि, केर धिया-पुता वा नेना-भुटकाक जुटान केर भाषिक सर्वेक्षण करब तखन आश्चर्यचकित होएब। विभिन्न ठामक बच्चा सभक जुटान केर भाषा प्राय: हिन्दी वा अंग्रेजी रहैत अछि। मैथिली एहि समूहसँ निपत्ता रहैत अछि। एकर की कारण अछि? निश्चित रूपसँ एकर कारण ओ धिया-पुता नहि हुनक माता-पिता छथि जे घरमे अपन नेना सभक संग हिन्दी-अंग्रेजी बजैत छथि। पुछबनि तखन ओ सगर्व घोषणा करताह जे ओकर स्कूलमे अंग्रेजी छोड़ि दोसर भाषा बजलापर जुर्माना होइत अछि तेँ आब हमहू सभ धिया-पुताक सुविधा लेल इएह बजैत छी। मिथ्या गौरवबोधसँ ग्रसित हमसभ ओहि नेना सभक दुश्मन छी। नव शिक्षा नीतिमे मातृभाषा पर जोर देल गेल अछि। मातृभाषा नहि तखन संस्कार कतएसँ? संस्कार नहि तखन अपन परम्परा कोना सिखत बच्चा! परम्परा नहि सिखत तखन अंग्रेजक बच्चा सभ जकाँ उड़ाँत होइते माए-बापकेँ छोड़ि अपन बसेरा बसा लेत। जखन माए-बाप दूर तखन आन सम्बन्ध सभक की गति होएत से सहजतासँ अकानल जा सकैछ। एहि सभक मूल कारण मातृभाषाक लेल मात्सर्यक अभाव अछि। मातृभाषाक सम्मान होएत तखन सर-समाज, कुल-गोत्र, परम्परा-संस्कार, पावनि-तिहार, परिवार-समाज-धर्म-देश लेल मात्सर्य आओत। इएह मात्सर्य सभक कल्याण करत आ सए साल धरि पुत्र-पौत्रादिक संग सुखपूर्वक जीवन जीबाक सपना साकार होएत। किछु एहने कामनाभावक अभिव्यक्ति श्लोकमे झलकैत अछि—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

भारतीय जीवन पद्धतिक एहि सार तत्वमे हमरासभक सार्थकता अछि। अपन मातृभाषा, संस्कार, सांकृति आ परम्परादिक विचार क' एहि जीवन दर्शनकेँ अंगीकार करी। इएह कामना अछि।

(दीप नारायण)

प्रो. डा. रामावतार यादव

सम्पर्क : काठमाण्डू, नेपाल
ramyadav1942@gmail.com

प्रसिद्ध भाषाविद्, पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, नेपालक पूर्व उपकुलपति, नेपालमे तीनि बेरि प्रज्ञा पुरस्कार विजेता, प्रथम *नेपाल विद्यापति मैथिली अनुसन्धान पुरस्कार, डा. धीरेन्द्र साहित्य-संस्कृति पुरस्कार* विजेता आ कतेकहु ग्रंथक रचयिता प्राध्यापक डा. रामावतार यादवक अनेकहु अनुसंधानात्मक आलेखसभ नेपाल, भारत, अमेरिका, विलायत ओ जर्मनीमे प्रकाशित छैन्हि। ब्रिटिश काउन्सिल छात्रवृत्ति, विलायत; फुलब्राइट छात्रवृत्ति, अमेरिका; ब्रिटिश काउन्सिल भीजिटर, लण्डन; सीनियर फुलब्राइट भिजिटिङ्ग स्कौलर, अमेरिका; अलेक्जाण्डर फौन हुम्बोल्ट पोष्टडौक्टोरल सीनियर रिसर्च फेलोशिप, जर्मनी आदि प्राप्त कएनिहार प्रा. डा. यादव *मिथिला रत्न, मिथिला विभूति, पहिल शब्दकोशकार पंडित भवनाथ मिश्र साहित्य शिखर सम्मान, चेतना समिति ताम्रपत्र सम्मान* एवम् *सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान, 2024*सँ सेहो सम्मानित छथि।

[**विमर्श फाउण्डेशन, काठमाण्डू**क तत्त्वावधानमे June 10, 2023क' नेपालक **मधेश प्रदेश**क राजधानी जनकपुरधाममे आयोजित **अन्तर्राष्ट्रिय विमर्श**मे प्रस्तुत आमन्त्रित अभिभाषणक परिवर्द्धित ओ परिनिष्ठित पाठ]

मध्य-मैथिलीक सहायक क्रिया रूप - नेपालमण्डलक नेवार नरेशकृत नाट्यकृति ओ गीतिकाव्यक पाठगत विमर्शक परिप्रेक्ष्यमे

1. प्राक्कथन

मैथिली भाषा-साहित्यक प्रामाणिक ऐतिहासिकताक प्रतिपादनार्थ एकर अभिलेखीय पाठसभक साक्ष्य बलँ एहि भाषाक वैयाकरणिक अवयवसभक (grammatical categories) वैज्ञानिक भाषिक वर्णन–विवेचन प्रस्तुत करब आवश्यकहि नहि अपितु अपरिहार्य अछि। तत्त्वत:, एहि आलेखक अभीष्ट काठमाण्डूस्थित नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अनुरक्षित मैथिलीक अपार बहुमूल्य हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभमे अभिनिहित वा अंत:स्थापित पुन:प्रापणीय ज्ञानक उत्खनन, तत्सम्बन्धी नव-नव ज्ञानक सृजन एवम् विश्लेषण, तथा जनमानसमे ताहि ज्ञानक सफल विकीर्णन करब अछि। सङहि, एहि नव आ पुन:प्रापणीय देशज ज्ञानकेँ (indigenous knowledge) वैश्विक स्तरमे प्राप्त ज्ञानसङ (global knowledge) अन्तर्सम्बन्धित करैत एवम् अतीतक ज्ञानक साहाय्यसँ भविष्यक कुशल व्यवस्थापन करैत अन्ततोगत्वा नेपालक सांस्कृतिक, भाषिक, ओ बौद्धिक उन्नयनमे संबल प्रदान करब सेहो अछि। परञ्च, वर्तमानमे, एहि आलेखक प्रतिपाद्य विषय नेपालमण्डलक नेवार नृपलोकनि–विरचित मध्यकालीन (1600–1769 CE) मैथिली नाट्यकृति ओ गीतिकाव्यक प्रकाशित पाठसभमे प्रयुक्त सहायक क्रियाक (Auxiliary verbs) विविध रूपिम–तत्त्वसभक सम्यक् भाषिक विवेचन करब अछि।

एतए ध्यातव्य जे गम्भीर गवेषण पश्चात् मैथिली भाषाक एकगोट आन वैयाकरणिक अवयव, **पूर्वकालिक क्रिया**मादेँ, अभिलेखीय पाठसभक साक्ष्य बलेँ ई सिद्ध कएल गेल छल जे मैथिलीक लिखित–साहित्यमे आधुनिक मैथिलीक पूर्वकालिक क्रियाक वर्तमान रूपिम ***-क'/-कए*** आदिक **"पहिल प्रयोग"** ***-कहुँ/-कहु*** रूपेँ ई. 1406मे भेल (देखू: Yadav 2004, यादव 2005)।

विवेच्य विषयक अध्ययन–विश्लेषणक कुशल सम्पादनहेतु ई.1628सँलए 1720ई.धरि नेपालमण्डलमे नेवार नरेशलोकनि–विरचित एवम् ई.1891सँलए ई.2024धरि, अर्थात् कुल 133 वर्षमध्य, विश्वभरिमे, विशेषत: जर्मनी, भारत, नेपाल, ओ जापानक अध्येता–अनुसन्धाताद्वारा सम्पादित–प्रकाशित निम्नोल्लिखित **दशगोट नाट्य ओ पाँचगोट गीतिसहित कुल पन्द्रहगोट प्रतिनिधि मध्य-मैथिली साहित्यिक कृतिक चयन आधार-ग्रन्थ रूपेँ भेल अछि** – जे निचाँ प्रस्तुत अछि।

1. जगज्ज्योतिर्मल्ल (1614–1637) कृत *मुदितकुवलयाश्व नाटक*, 1628 CE
2. जगज्ज्योतिर्मल्ल (1614–1637) कृत *हरगौरीविवाह नाटक*, 1629 CE
3. जगज्ज्योतिर्मल्ल (1614–1637) कृत *मदालसाहरण नाटक* n. d.
4. सिद्धिनरसिंहमल्ल (1620–1661) शासन–काल रचित *हरिश्चन्द्रनृत्यम्–नाटक*, 1651 CE
5. जगत्प्रकाशमल्ल (1643–1672) कृत *प्रभावतीहरण नाटक*, 1656 CE
6. जगत्प्रकाशमल्ल (1643–1672) कृत *प्रद्युम्नविजय नाटक*, Ca. 1666 CE
7. भूपतीन्द्रमल्ल (1696–1722) कृत *पर्शुरामोपाख्यान–नाटक*, 1713 CE
8. भूपतीन्द्रमल्ल (1696–1722) कृत *विद्याविलाप नाटक*, 1720 CE
9. भूपतीन्द्रमल्ल (1696–1722) कृत *माधवानल–नाटक*, 1704 CE
10. रणजितमल्ल (1722–1769) कृत *जलशायिविष्णवादिसृष्ट्युपाख्यान–नाटक* Undated
11. जगज्ज्योतिर्मल्ल (1614–1637) कृत *गीत–पञ्चाशिका*, 1628 CE
12. सिद्धिनरसिंहमल्ल (!620–1661) कृत गीत सङ्ग्रह *सिद्धि नरसिंह मल्ल*
13. जगत्प्रकाशमल्ल (1643–1672) कृत *नानार्थ देव देवी गीत सङ्ग्रह*, 1661 CE
14. जगत्प्रकाशमल्ल (1643–1672) कृत *गीतपञ्चक*, 1662 CE
15. नेपालक शिलालेखीय अभिलेखसँ सङ्गृहीत *मैथिली अभिलेख गीतमाला*

आधुनिक मैथिलीक व्याकरणमे अनेकहु भाँतिक रूपिम–तत्त्वसभ सहायक क्रियाजकाँ वा कहू जे English 'be' रूपेँ व्यवहृत होइत पाओल जाइत अछि, यथा:

वर्तमान काल	*अछि*	—	3 अनादरार्थी
	छ–	—	अन्यत्र
भूत काल	*छ–*		
	(रह–)		
भविष्यत् काल	*रह–*		
	(हो–)		

एकर अतिरिक्त, *थिक/थीक* मादेँ पर्यन्त सविस्तर विलगसँ विवेचन होएत, पश्चात्; मूल उद्येश्य मध्ययुगीन मैथिली साहित्यमे एकर पुरानतम प्रयोगक पाठगत काल निर्धारण रहत।
एहि रूपिम–तत्त्वसभक वैयाकरणिक वैशिष्ट्य निम्नानुसार अछि:

क. ई रूपिम–तत्त्वसभ सहायक क्रिया ('helping' verb) ओ मुख्य क्रिया ('main' verb) दुहु रूपेँ व्यवहृत होइत अछि।

ख. ई सहायक क्रियाक रूपिम मुख्य क्रियासङ्ग तखनहि जुटैत अछि जखन मुख्य क्रिया पक्ष (aspect) रूपिमसँ अन्वित होइत अछि।

ग. अर्थात्, कही तँ सहायक क्रिया मुख्य क्रियाकेँ नियन्त्रित (govern) करैत अछि।

घ. जेँ कि सहायक क्रिया मुख्य क्रियासङ्ग पक्ष रूपिम सटला पश्चातहि जुटैत अछि, स्वभावत: काल (tense), भाव (mood), अन्विति/पदसङ्गति (agreement), ओ आदरार्थी (honorificity) रूपिम आदि सेहो सहायक क्रियासङ्गहि जुटैत अछि न तु मुख्य क्रियासङ्ग।

ङ. आब ई बात स्पष्ट भेल जे प्रकृत्या सहायक क्रिया कालवाची रूपिमक बाहकभए (tense carrier) क्रियापदकेँ समापिका क्रियातुल्य बनएबाक वैयाकरणिक कार्य करैत अछि।

च. तत: पर इहो सिद्ध भेल जे सहायक क्रिया स्वयम् सर्वथा अपूर्ण होइत अछि एवम् कालवाची, भाववाची, ओ पदसङ्गति आदि रूपिमसभ जुटलोपरान्तहि ई पूर्णता प्राप्त करैत अछि[1]।

जेना कि उपर इङ्गित कएल गेल अछि, एहि आलेखक अभीप्सित इष्ट मध्य मैथिलीक सहायक क्रियाक कालक्रमिक साङ्गोपाङ्ग ऐतिहासिक–भाषावैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत करब अछि।

2. मध्यकालीन (1600–1769 CE) मैथिली नाट्यकृति

जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *मुदितकुवलयाश्व नाटक* ने.सं. 748/1628 CE

मध्यकालीन नेपालमण्डलक भक्तपुर राज्यक राजा जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *मुदितकुवलयाश्व नाटक*, 1628 CE, रामदेव झाक सम्पादनमे साहित्य अकादमी, नयी दिल्लीसँ ई. 2013मे पुनर्प्रकाशित भेल अछि ओना एहि नाटकक प्रथम प्रकाशन जर्मनीक Deutschen Morgenlaendischen Gesellschaft (German Oriental Society)क पुस्तकालयमे अनुरक्षित पाण्डुलिपिक साहाय्यसँ विजितकुमार दत्तद्वारा बाङ्ला भाषामे सम्पादित *प्राचीन बाङ्गाला–मैथिली नाटक* शीर्षकक नाटक–सङ्ग्रहमे ई.1980मे वर्धमान विश्वविद्यालय, वर्धमानसँ भेल अछि।

एतए दृष्टव्य जे एहि नाटकमे प्रयुक्त वर्तनीमे प्राकृतक वर्तनीक सरणिपर **अच्छइ** सदृश सत्तार्थक सहायक क्रियाक (Existential Auxiliary verbs) **अच्छ**[2], **च्छह**, **च्छिअ**, **च्छओ**, **जानलच्छ**, **जाइच्छओ**, **देखइच्छी**, **होइच्छ**, आदि संयुक्त रूपक बहुल प्रयोग प्रस्तुत भेल अछि — जकर वर्तनी प्राचीन आर्यभाषा संस्कृतक अति मान्य ध्वनि परिवर्तन नियम, Grassmann's Law, अनुरूप अछि। निचाँ **ग्रासमान नियम** नवतुरक भाषाशास्त्रीसभकहेतु अति सरल ओ सुबोधगम्य भाँतिएँ प्रस्तुत अछि:

Grassmann's Law

C	C #	–>	C	C #
[+asp]	[+asp]		[-asp]	[+asp]

ध्यान देबए योग्य विषय इहो जे एकहि वर्ष पश्चात् विरचित जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *हरगौरीविवाह नाटक*मे, 1629 CE, एहन **–च्छ** वा **च्छ–** संयुक्त रूप सर्वथा अनुपलब्ध अछि।

एकर अतिरिक्त, वर्तमानमे आधुनिक मैथिलीक ब्राह्मण–भाषिकाक वर्तमान कालहिटामे संकुचित सहायक क्रिया **थिक**[3] पर्यन्त **थिक** ओ **थी(क)** रूपेँ कुल दुई बेरि उपलब्ध अछि एहि नाटकमे।

ततबहि नहि, जगज्ज्योतिर्मल्लक एहि पुरानतम नाटकमे आधुनिक मैथिलीक क्रियापदमे प्रयुक्त प्रचुर आदरार्थी रूपसभक सर्वथा अभाव देखना जाइत अछि। **तात्पर्य जे कुल 133 वर्षमध्य प्रकाशित ओ नेवारी लिपिमे लिखित मैथिली कृतिसभक गवेषणात्मक विमर्श एवम् साहित्यानुशीलनक बलेँ ई कहल जा सकैत अछि जे 1628 ई.धरि नेपालमण्डलमे व्यवहृत मध्य–मैथिलीक आख्यातविचारमे आधुनिक मैथिलीक जटिल आदरार्थी रूपिमसभक (Honorificity distinctions)सन्निवेश नहि भेल–सन अवस्था विद्यमान छल।** निचाँ देल गेल उदाहरणसभ रामदेव झा (2013)द्वारा सम्पादित–प्रकाशित *मुदितकुवलयाश्व नाटक*सँ उद्धृत अछि।

सूत्र : हे प्रिये, महाराजाक आज्ञा भेल **अच्छ** जे आज हमरा भगवतीक महोत्सव **थी(क)**...
नाना दिगन्त सञो अनेक सज्जन आएल **अच्छ**... पृ. 61
नटी : हे नाथ भक्तपट्ट मोञे **जानलच्छ** ... पृ. 61
सूत्र : **ससम्भ्रं** : राजा नहि चिह्ने **च्छह** पृ. 62
राजा : प्रिये, इहाञे एतए रहु, हमे सभा **जाइच्छओ** पृ. 67
मन्त्री : हे देव, आज सभा लोक भीर **देखइच्छी** पृ. 68
राजा : हे प्रिये, तोहे संसारक सार **थिक**, हमर वचन सुनह पृ. 74
पातालकेतु : ...मोञे मायारूप कए ई कर्म करए जाइ **च्छओ** पृ. 79
कुण्डला : ...हम कुलगुरु तुम्बुरुक सङ्ग तपस्या करए जाइ **च्छञो** पृ. 93
कुवलयाश्व : हे मदालसे, किए मुह **फेरइच्छी** पृ. 99
मदालसा : हे नाथ, एहन की **कहइच्छी** पृ. 103

जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *हरगौरीविवाह नाटक* ने.सं. 749/1629 CE

नेपाल संवत् 749 तदनुसार 1629 CEमे रचित जगज्ज्योतिर्मल्लक *हरगौरीविवाह नाटक*क पहिल सम्पादन–प्रकाशन बेलायतक केम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालयमे अनुरक्षित एकहिगोट हस्तलिखित पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्मक आधारपर रामदेव झाद्वारा 1970 CEमे भारतक बिहार प्रदेशक लहेरियासराय–दरभङ्गागास्थित मिथिला–रिसर्च–सोसाइटीसँ कएल गेल।

जेना कि उपर इङ्गित कएल गेल छल, एहि नाटकक पाठमे एकहु बेरि सहायक क्रियाक संयुक्त रूप **–च्छ** वा **च्छ–** दृष्टिपथपर नहि अबैत अछि; आ तहिना *थिक* सहायक क्रिया कुल एक बेरि ओ *थीक* वा *थी(क)* संयुक्त क्रियारूप कुल तीनि बेरि दृष्टिगत होइत अछि।

परञ्च, मध्यकालीन नाट्य पाठमे प्रथम बेरि दुईगोट उच्च आदरार्थी सहायक क्रियारूप **छथि**[4] (पृ. 36) ओ **छिअथि** (पृ. 49) एही ***हरगौरीविवाह*** नाटकमे दृष्टिगत होइत अछि। आन शब्देँ कही तँ ई जे उपरोद्धृत चौदहगोट कृतिक अनुशीलन पश्चात् मैथिलीमे आदरार्थी सहायक क्रियारूप ***छथि*** ओ ***छिअथि*** रूपक **"पहिल प्रयोग"** 1629 CEमे रचित नेपालमण्डलक भक्तपुर राज्यक नृप जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *हरगौरीविवाह नाटक*मे उपलब्ध होइत अछि। ध्यातव्य जे मध्य–मैथिलीक आ कहू जे समग्र मैथिलीक आख्यातविचारक अध्येता–अनुसन्धाता, मैथिली भाषाक इतिहासकार, ओ भाषावैज्ञानिककहेतु ई एकगोट महत्त्वपर्ण ओ परम उपादेय सूचना भए सकैत अछि। ओना मध्य–मैथिली भाषामे आदरार्थी रूपिमसभक सन्निवेशक समाजभाषावैज्ञानिक वर्णन–विश्लेषणमादेँ देखू काठमाण्डूसँ प्रकाशित हमर पोथी (Yadav ed. 2011: 66)[5]। निचाँ प्रस्तुत उदाहरणसभ रामदेव झा (1970)सँ उद्धृत अछि।

नटी, किछु नगर वर्ण्णना मोञो कहइ **छञो**	पृ. 31
सूत्र, परन्तु एहन उत्सव, कओन नृत्य उचित **थिक**	पृ. 31
नन्दी, हे प्रभो, ई ऋष्याश्रम सन देखइ **छी**	पृ. 33
हिमा, हे प्रिये ञेहाक शील ञेहन थीक, परन्तु, कञोन कञोनञो गौरीक चरित्र देखि परम आनन्द **होइछ**	पृ. 36
महा, हे मातो, ञेहाक कन्या कहिनि **छथि**	पृ. 36
विधि, मैञे ओहे करै **छी**	पृ. 44
हिमा, प्रिये, कुसुम वृष्टि **होइछ**, स्वर्ग्ग अनेक दुन्दुभि वाद्य **बजइछ**	पृ. 44
हिमा, हे ऋषीश्वर सवे सामग्री उत्पन्निए **अछि**	पृ. 45
हिमा, ... 'ईश्वरे स्नेहे अर्द्धशरीर, कैलि **छिअथि**, से मोञे कहै **छञो** सूनु	पृ. 49
गौरी, हे ऋषीश्वर, ईश्वर नृत्य देखि, हमराहु नाचएक मन **होइछ**	पृ. 58
गौरी, हे ऋषीश्वर, ञेहाञे किछु ईश्वरक आदि मूल जनै **छी**	पृ. 60
महा, हे प्राणप्रिये मोहु किछु कहै **छि**	पृ. 62

जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *मदालसाहरण–नाटक*

जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *मदालसाहरण–नाटक*क जापानी संस्करण जापानक एकगोट युवा अध्येता–अनुसन्धाता Makoto Kitadaद्वारा (2014, 2015) ताहि देशक Osaka Universityक जर्नल *Indomizokuken-kyu ((Indian Folk Culture Research)*मे कुल दुइ किश्तमे प्रकाशित भेल अछि — अत्यन्त सुखद संयोग इहो जे दुहू आलेखमे नाटकक मूल नेवारी पाठक रोमन लिप्यन्तरण सेहो प्रस्तुत भेल अछि। निचाँ देल गेल किछु उदाहरणसभ Kitada (2014, 2015)मे प्रस्तुत *मदालसाहरण–नाटक*क रोमन लिपिक पाठक देवनागरी लिप्यन्तरणरूपेँ उद्धृत कएल गेल अछि।

हे द्विजवर उत्तम **कहैछी**	Folio 3 V
हे देवि, हमरा दक्षिण वाहु स्पन्द, एहन **होइछ**, ...	Folio 7 R
हे देवि, कुवलयाश्व योग्य पुत्र **भेलाह**, आबे मोरा शान्ति रस मन **होइछ**	Folio 12 R
हे देवि, ओञे बड कार्य्य कएल, विषादे आबे की **होएत**	Folio 8 V
हे प्रिये, इहाञे एतए रहू, हमे सभा **जाइछओ**	Folio 3 R
हे देवी, एतए पुत्रक निधन **भेल**, ओतए मदालसे प्राण त्यजल, कओने की पाप **भेल**	Folio 7 V
हे वत्स, कुवलयाश्व दुहु व्यक्तिक सर्व्वदा कल्याण **होअव**	Folio 12 R
हे देवि आज कुवलयाश्व काए नहि आनल **छथि**	Folio 10 V
तोहे एक **थिकह** संसारक सारे, परिहर मानिनि मान असारे	Folio 10 R
हे देवि, नव रस अपन शरीर **थी(क)**	Folio 14 R

जन धन किछुओ न काम, तोहे जनु **होअह** धाम Folio 15 R
हे देवि, शान्ति वरावरि सुख किछु नहि॥ मोञे **कहैछओ** Folio 12 V
...अत:पर मोरा ईश्वरक भक्ति बड मन **होइछ** Folio 12 V
आओरो किछु सुनह, ई तौर्य–त्रिक वस्तुए, देवता सन्तुष्ट **हो** ते चारु पुरुषार्थ **हो**, ते एहि वस्तुक उत्पत्ति **कहईछओ** Folio 16 V

***हरिश्चन्द्रनृत्यम् नाटक* ने.सं. 771/1651 CE**

ललितपुर राज्यक प्रसिद्ध राजा सिद्धिनरसिंहमल्लक शासनकालमे विरचित ओ रामभद्र शार्माक हाथेँ ई.1651मे प्रतिलिपिवद्ध कएल गेल *हरिश्चन्द्रनृत्यम् नाटक*क प्रथम सम्पादन–प्रकाशन जर्मन भूमिकासहित आउगुष्ट कोनराडीद्वारा (August Conrady) ई.1891मे जर्मनीक Leipzig शहरसँ भेल। आब ई बात सार्वजनीन भ' गेल अछि जे *Das Hariçcandranṛtyam Ein Altnepalesisches Tanzspiel* शीर्षकक ई ग्रन्थरत्न मूलत: आउगुष्ट कोनराडीद्वारा जर्मनीक सुप्रसिद्ध लाइप्सिश विश्वविद्यालयमे November 23, 1891 Mondayक' दोसर पीएच.डी. डिग्रीक उपाधिहेतु habilitationsschrift रूपेँ प्रस्तुत कएने छलाह एवम् ओ उपाधि पएबामे सफल सेहो भेल छलाह।

ओना ई नाटक बाङ्ला–मैथिली मिश्रित अछि परञ्च अपन भगीरथ प्रयत्नसँ गोविन्द झा (2005) एहि नाटकमे बाङ्ला शब्दक बाहुल्य होइतहु एकर मूल भाषा मैथिली सिद्ध करबाक सुयत्न कएलैन्हि अछि। ध्यातव्य इहो जे रमानन्द झा 'रमण' (ed. 2019) एहि नाटकक मैथिली संस्करण राँची–झारखण्डसँ प्रकाशित कएलैन्हि अछि। जेँ कि एहि नाटकमे बाङ्ला शब्दक बाहुल्य अछि तेँ एहिमे बाङ्लाक सहायक क्रिया रूप **आछे** प्रचुर मात्रामे प्रयुक्त अछि। आ तहिना **थिक** कुल 23 बेरि ओ तकर स्त्रीलिङ्ग रूप **थिकि** 3 बेरि प्रयुक्त अछि। एहि नाटकक पाठमे आदरार्थी रूप **छथि**क कुल 9 गोट दृष्टान्त उपलब्ध अछि। निचाँ प्रस्तुत उदाहरणसभ Conrady (1891)सँ अछि।

आगे **अपने खायछि**, पाछे देवताके **भोग लगायछि** पृ. 16
निरन्तर दुष्टका संगे प्रीति करिकहु साधुके जंजार **करैछि** पृ. 16
ए थाकुर मोर पैकुतितगोत एमन **थिक** पृ. 16
हम **थिक** जे दर्जि **थिक**, मोर राजा जे हरिचन्द्र से उद्धार करैके **जाइछि** पृ. 26
मोर राजा तोहे रथ **आयरछथि**... से तोहरा दक्षिणा कतेक **रागयछथि**... पृ. 26
बहियाब नाम की **थिक** पृ. 30
भर **कहैछथि**, चरु पृ. 30
हम जे मसम्बिस **थिकि**...मोराके एक रोड़ी चाहत, खोजिते **खायछि** पृ. 30–31
मस॥ हिनका मूल की **थिकि** पृ. 31
तह्निका नाम की **थिकि** पृ. 31
ए हरिया, की **कहैछथि** पृ. 35
की काज विनती **करैछथि** पृ. 35
रे निर्वंश, छादउ, कतेक जंजार **करैछथि** पृ. 35
की दु:ख **करैछथि** पृ. 36
एथा बैसरे काज नहि **थिक**, ब्रह्मलोक जायब, चरु पृ. 39
अहे हरिया, ...हमरा ना [म] जे कालसेन **थिक** पृ. 39

हम जे घर **जायछि** पृ. 39
अहे थाकुर, हम ने कंगार ब्राह्मण **थिक** पृ. 40
अहे पापिष्ठ, ...हम घर **जायछि** पृ. 42

जगत्प्रकाशमल्लकृत *प्रभावतीहरण नाटक*, ने.सं. 776/1656 CE

भक्तपुरक राजा जगत्प्रकाशमल्ल विरचित *प्रभावतीहरण नाटक*क रचनाकाल ने.सं. 776 तदनुसार 1656 CE अछि एवम् एहि नाटकक सम्पादन–प्रकाशन लेखनाथ मिश्रद्वारा ई.1972मे भेल। ओना लेखनाथ मिश्र केम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालयस्थित हस्तलिखित पाण्डुलिपिक एहि नाटकक मूल पाठकेँ नेवारी लिपिसँ देवनागरीमे लिप्यन्तरण करबाकाल अनेकहु गम्भीर प्रकृतिक पाठ–अशुद्धि कएने छथि से बात जर्मन विद्वान Horst Brinkhaus (1987)क अनुसन्धानसँ अभिज्ञात होइत अछि।

प्रारम्भहिमे एतबा कहि दी जे एहि नाटकमे सहायक क्रिया रूप *थिक/थिकि* कुल 5 बेरि, उच्च आदरार्थी *छथि* कुल 1 बेरि, ओ मध्य आदरार्थी रूप *छह/छहु/छहि* प्रथमत: कुल 6 बेरि दृष्टिगत होइत अछि। उदाहरणसभ लेखनाथ मिश्र (1972)सँ अछि:

नटी.– हम नहि जानयी **छहि** कउन राजाक आज्ञा पृ. 2
नटी. – ...तथापि किछु मोय **कहै छव्** पृ. 3
सत्यभामा–हे ईश्वर! ह्म किछु गोचर **करै छव्** पृ. 5
सारण–हे ईश्वर! ह्म किछु गोचर **कहै छव्** पृ. 6
कृष्ण–हे प्रिय! उपवन दर्शन उत्कंठा **होयि छि** पृ. 7
वज्रनाभ–हम किछु **कहै छव्** सुनु पृ. 12
प्रेमवती–हमहु किछु विज्ञप्ति **करै छहु** पृ. 12
चंद्रावती–हे दैत्यराज! ह्म किछु **कहैछ** पृ. 13
प्रभा.–हे तात! ह्मर प्रणाम, अपन स्थान **जायि छि** पृ. 15
प्रभा.–हे हंसी! इहाञ अपूर्व **देखै छिय** के **थिक** पृ. 21
हंसी.–हे कन्या! ह्मे हंसी स्वर्गमलोक सञे **आयल छि**, इहाय के **थीक** पृ. 21
हंसी–...बापके कहु जे तीनि हंसी अनेक कौतुक वार्ता **जनैछ**... पृ. 23
हंसी–हे प्रभावती! ऋान सरोवर **जायि छव्** पृ. 24
प्रभा.–हे तात! एक हंसी देखलि नाना देशक अनेक वार्ता **जनै छह** से भेट पृ. 25
विभा.–आज किछ तोहरा मन आन चिन्ता देखे छि, संभाषना
किछु नहि **करै छिह** किय पृ. 36
ऋक्षभृंग–पूर्ण भेल तपस्वी अनेक **आयल छल** पृ. 36
विभा.–हमे मध्याह्न स्नान करय तीर्थ **जायि छव्** पृ. 37
हे मन्त्री! द्यैत्यराज की नहि **आयल छथि** पृ. 58
सखी–हे रानी! कन्यापुर कओनहु पुरुषक प्रवेश **भेलछ**, से बुझु पृ. 58
सुना.–लोक विमन सन **देखै छी** पृ. 58
सुनाभ–तोहे गवार, राजाक अन्त:पुर **पैसर[ल] छह** आबे कतय **जाय छह** पृ. 61
वज्र, मत्त–...अब कतय **जाय छह्** पृ. 61

जगत्प्रकाशमल्लकृत *प्रद्युम्नविजय नाटक* Ca. 1666 CE

जगत्प्रकाशमल्लकृत *प्रद्युम्नविजय नाटक*क मूल नेवारी पाठक रोमन लिपिमे लिप्यन्तरण, अङरेजीमे अनुवाद, एवम् सुसम्पादन जर्मनीक विद्वान Horst Brinkhaus जर्मनीक श्टुटगार्ट शहरसँ ई. 1987मे कएलैन्हि। एतबाधरि कहिए दी जे ब्रिङ्कहाउसक ई कृति भारतविद्याशास्त्र (Indology) ओ विशेषत: मध्य–मैथिली साहित्यक अध्येता–अनुसन्धाताहेतु एकगोट अनुपम प्रतिमान सदृश अछि। उदाहरणसभ Horst Brinkhaus (1987)सँ अछि:

तह्निक नन्दन **थिक** भवसिंहदेव...	Folio 3a
एकर कुमार **थिक** प्राणमल्लदेव	Folio 3a
प्रद्युम्न: ... हमहु विनति **करैछञो** सुनु	Folio 5b
उद्धव: हे परमेश्वर! ह्महु विनति **करैछञो**...	Folio 6a
अक्रूर: हे गोविन्द! ह्मे किछु विज्ञापन **करैछञो**	Folio 6a
सारिका: ...हमहु किछु विनती **करैछञो**	Folio 6a
रानी: हे प्रभु! हम किछु **कहैछञो**, सुनर होअ	Folio 8b
महे.: हे प्रभु! एहन इहाक पत्नी हमे **थिकी**	Folio 8b
महे.: हे भ्राता! इहाक आज्ञाकारी हमे एहने **थिकहु**	Folio 9a
इहाक कन्या हमे विवाहार्थ **मगैछिअ**	Folio 27a
महे.: हे लोके! हमे द्वारिका **जायिछञो**	Folio 28b
हे उद्धव अक्रूर! द्राढामणि एतए नहि **छय**...	Folio 30a
हे कछप! अद्यापि भ्राता नहि **आयल छथि**	Folio 30a
हम तह कहेन **मारि होअ**	Folio 46a
ना.: ई कञोन संदेह, ब्रह्माक वचन विपरीत **होएत**	Folio 46a
...तकर जयार्थ मंगल कय **रहब**	Folio 46b
तोहे जल भितर गय **रहु**	Folio 46b
एहि मति **होअथु** केवल मोर	Folio 52b
हम सब पशुपति दर्शन कए कौमारीक स्थान जाए **रहब**	Folio 54a
हे सत्यभामा! धवला गृह जाए प्राणनाथ देखि **रहब**	Folio 55b

भूपतीन्द्रमल्लकृत *माधवानल नाटक* ने.स. 824/1704 CE

भूपतीन्द्रमल्लकृत *माधवानल नाटक*क मूल नेवारी पाठक देवनागरी लिप्यन्तरण एवम् सम्पादन रामावतार यादव (ed. 2024) कएलैन्हि जे *Critical Edition of Newari MSS. of Three Medieval Sanskrit and Maithili Plays* शीर्षकक ग्रन्थमे संगृहीत भए मैथिली विकास कोष, जनकपुरधामसँ पहिलि बेरि प्रकाशनोन्मुख अछि। ध्यातव्य जे ई कृति नेपाल सरकारक शिक्षा मन्त्रालयस्थित UNESCO Commission, मूल UNESCO Office, Paris, एवम् मैथिली विकास कोष, जनकपुरधामक संयुक्त तत्त्वावधानमे सम्पन्न कएल गेल अनुसन्धान परियोजनाक परिणति स्वरूप आएल अछि। *माधवानल नाटक*मे प्रयुक्त मैथिली सहायक क्रियाक किछु उदाहरण Ramawatar Yadav (ed. 2024 Forthcoming)सँ निचाँ प्रस्तुत अछि।

नटी, हे नाथ एहाक प्रसादे महाराजाक परिचय **भेल** Folio 2 V
नटी, हे प्राणप्रियेतम, तन्हि महाराजक नगरां एहनी **थि(क)** Folio 3 R
सूत्र, हे प्रिये, हमे माधवानल **होयब** Folio 3 R
नहि मोर रूप गुण नहि **अछ** ज्ञान मोरा Folio 8 R
हेम, हे सहचरी लोके ई उद्यानक र(ल)ग उत्तम पुष्करणी **देखै छिअ** Folio 10 R
सर्व्वे, महाराज आज्ञा कयल **होअ** Folio 14 R
नत्तन देखब चलु सुन्दरि आज, लोक रसिक **अछ** हमर समाज Folio 21 V
हमे संतुष्ट **भेलाहु** Folio 24 V
...तथापि अपन वचन रक्षणीय **थि(क)**, हमे जायब Folio 25 V
हे सखी लोके, हमर हृदय एक बड वेदना **अछ** Folio 36 R
नाना प्रकारे श्रृंगार रस **करै छलाहु** Folio 31 V
हे कामकन्दला, त्वहर दर्शन निमित्ते हमे एतय **छिअ**, जायब चलु Folio 27 R

भूपतीन्द्रमल्लकृत *पर्शुरामोपाख्यान नाटक*, ने.सं. 833/1713 CE

नेपाल संवत् 833 तदनुसार 1713 CEमे लिखल भूपतीन्द्रमल्लकृत *पर्शुरामोपाख्यान नाटक* रामावतार यादवद्वारा ई. 2011मे काठमाण्डूसँ सम्पादित–प्रकाशित भेल अछि। एहि अङरेजी संस्करणक प्रमुख वैशिष्ट्य ई जे एहिमे मूल नेवारी पाठक प्रतिकृति (Facsimile), देवनागरी लिप्यन्तरण, रोमन लिप्यन्तरण, अङरेजी अनुवाद, मध्य–मैथिलीक लघु व्याकरण एवम् मध्यकालीन नाट्यशिल्पविधान तथा भाषागत बृहत समीक्षात्मक टिप्पणी आदि सहित एकर प्रकाशन भेल अछि। निचाँ प्रस्तुत उदाहरणसभ Ramawatar Yadav (ed. 2011)सँ अछि:

हे प्रिय्, एहन राजा श्रीश्रीजयभूपतीन्द्रमललदेव **थिकथि** Folio 3 a
सगन महालक्ष्मीक **थिक**... Folio 3 b
हे वसुधाधिप हमर गोचर सुनल **होअ** Folio 5 b
हे पिता, माता, हमर विज्ञप्ति सुनल **होअ** Folio 5 b
सम, जुगुत वर, नहि पबै **छिअ** Folio 12 a
राजासबेके, निमन्त्रण दय, बजाओल चाहिए, तथी कि कहै **छिअ** Folio 13 b
इहाक पिताञ आज्ञा कएलन्हि **अछ** ...से श्वा(स्वा)मि इहाका **होएताह** Folio 16 b
जञो बल **छहु** हे संमुख आबह Folio 17 a
हे रेनु य(यु)द्ध विस्तार कि करै **छह** Folio 17 b
महाराज इहाञ विस्तर लए **रहु** Folio 20 b
इ वस्त्र, अलंकरन, यग्योपवीत लेल **होअ** Folio 21 a
जेहने विष्णुका लक्ष्मी, चन्द्रमाका, चण्डिका, वसिष्ठ, का अरुंधति, अत्यन्त
प्रनएस्थान **थिकथि**, तेहने, रेनुकादेवी ञहाका **होथु** Folio 21 b
...एकरे द्वारे अनेक अभ्युदय होएत, अवतारि पुरुष, थिकथी,
इ जन्मप्रर्त्ति (जन्मपत्री) **लेल होअ** Folio 34 a
हे रेनुकादेवि, इ तिनौ बालक **लेल होअ** Folio 34 a
एखने अभ्य(न्)तर जाए **रहब** Folio 34 b

...दुहुजने, पिताक सेवा कए **रहु**	Folio 36 a
जमदग्निक, आश्रम, गेल **छलाहु**...का(म)धेनु प्रसादे ओ मुनिश्वर कृतार्थ **छथि**	Folio 38 a
इश्वर भजन कए अभ्य(न्)तर जाए **रहब**	Folio 43 a
हे पर्शुराम ञहाञ, अपन आश्रम गेल **छलाह**	Folio 44 a
हे, सुमत, जे तोर दे कहल **छल** से प्रमान, देषै **छिए**	Folio 49 b
हे जमदग्नि मुनि २ महाराजाञ एक गोचर करै **छथि**	Folio 49 b
हे, मन्त्रि कि आज्ञा करै **छथि** से (क)हु	Folio 49 b
पापिष्ठ, ब्राह्मनाधम, कि बल पाए संग्राम करए आएल **छह**	Folio 60 b
कए लेह जिव जतने, संमुख **रहह**	Folio 60 a–b
हे ब्राह्मनाधम बहुत गुमान, कि करै **छह**	

भूपतीन्द्रमल्लकृत *विद्याविलाप नाटक*, ने.सं. 840/1720 CE

नेपाल संवत् 840 तदनुरूप ई. 1720मे लिखल महाराज भूपतीन्द्रमल्लकृत *विद्याविलाप नाटक*क पहिल सम्पादन–प्रकाशन ओ बाङ्ला संस्करण बङ्गाली विद्वान ननीगोपाल बन्दोपाध्यायद्वारा 1916–1917 CE कलकत्तासँ भेल अछि। तकर 48 वर्ष पश्चात् एहि नाट्यकृतिक पुनर्प्रकाशन अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, प्रयागक सौजन्यसँ ई.1965मे एकगोट नव अवतार *विद्याविलाप : नेपालीय मैथिली नाटक* शीर्षक अन्तर्गत भेल अछि। जँ कि एहि कृतिक सम्पादकक नाम अनुपलब्ध अछि तँ एहि नाटकमादँ अर्थात् एहि नाटकक कथावस्तु, नाट्यशिल्पविधान, प्रयोजन, वाद–संवादक भाषा आदिद' एकहु पाँति भूमिका–स्वरूप नहि कहल गेल अछि – मात्र मूल नेवारी पाठक देवनागरी लिप्यन्तरणेटा प्रकाशित कएल गेल अछि।

ध्यातव्य इहो जे भूपतीन्द्रमल्लक ई कृति गीति–नाट्य (Opera) सदृश अछि। अर्थात्, एहि गीति–नाट्यमे सम्पूर्ण संवाद पद्यमय अछि एवम् मैथिली गद्यक माध्यमसँ कएल गेल एकहुगोट कथोपकथनक दृष्टान्त दृष्टिपथपर नहि अबैत अछि।

तहिना, एकगोट आओरो विचित्र वस्तुदिसि ध्यानाकर्षण करए चाहब आ ओ ई जे पोथीक शीर्षक पृष्ठमे "लेखक महाराज भूपतीन्द्रमल्ल (१६९५–१७२२ ई.)"क स्पष्ट उल्लेख होइतहु कुल दुइगोट गीतक अर्थात् *राजवर्णना* एवम् *देशवर्णना*क (pp. 2–3) रचयिता काशीनाथक नाम सम्पूर्ण पोथीमे छापल गेल अछि — **विद्याविलाप** विषम पृष्ठमे ओ **काशीनाथ** सम पृष्ठमे। एहिसँ पाठककेँ अनावश्यक भ्रमक सृजन भ' सकैत अछि। निचाँ प्रस्तुत उदाहरणसभ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, प्रयागक सौजन्यसँ ई.1965म प्रकाशित पोथीसँ अछि।

चाँद ललाट शोभित **अच्छ**	पृ. 1
गल **रह** कालिम वीस	पृ. 1
दरशने दुर **होअ** जयत कलेश	पृ. 2
अच्छ भागतापुरि नामे	पृ. 3
अनुपम **अच्छ** मोर रत्नापुरि देश	पृ. 3
परसनि **होएति** एखने भवानी	पृ. 4
होएत मनक उलासे	पृ. 5
गँथइच्छ भले भाति कुसुम सयानि	पृ. 6
अभिमत जत **अच्छ** पुराओव सेहे	पृ. 7

सुवादनि **अच्छ** मोर साजनि जशोमति	पृ. 7
जतय भजन मोर **अच्छ** जाहाँ	पृ. 9
मिलब नागर जत **होयत** बड़ रंगे	पृ. 9
एहन मनोरथ कहै **च्छिअ** तोरा	पृ. 9
नृप भूपतीन्द्र कह **होयत** उपाय	पृ. 10
द्विजभेष **अयलाह** आज	पृ. 16
केहु केन नयिते **जायिच्छि** सरसे आबे	पृ. 16
जे **च्छथि** तोर पर पुरुयारतन	पृ. 20
हे थ(ठ)कुराणि, भय बड **होयि अच्छ** मोर	पृ. 21
उरहि कलित **अच्छ** हार सुसाजे	पृ. 33

रणजितमल्लकृत *जलशायिविष्णवादिसृष्ट्युपाख्यान नाटक*

रणजितमल्लकृत *जलशायिविष्णवादिसृष्ट्युपाख्यान नाटक*क रचनाकाल अनुपलब्ध अछि। एहि नाटकक नेवारी मूल पाठक लिप्यन्तरण ओ एकर सम्पादन रामावतार यादव (Yadav ed. 2024 Forthcoming) कएलैन्हि जे *Critical Edition of Newari MSS. of Three Medieval Sanskrit and Maithili Plays* शीर्षकक ग्रन्थमे संगृहीत भए मैथिली विकास कोष, जनकपुरधामसँ प्रकाशनोन्मुख अछि। *जलशायिविष्णवादिसृष्ट्युपाख्यान नाटक*मे प्रयुक्त सहायक क्रियाक किछु उदाहरण Ramawatar Yadav (ed. 2024 Forthcoming)सँ निचाँ प्रस्तुत अछि।

...जे उचित से कयल **होअ**	Folio 5 V
...वसन्त समय **भेल** नाना कोकिल सब बोलइ **अच्छ** ...	Folio 7 V
हिर, हे शुक्राचाय्र्य ई मूर्ख प्रह्लाद हमर परापूर्वक वैरी नारायण तकर स्तुति करै **अच्छ** अनेक प्रकारे कहल मानै **अच्छ** नहि एहाञ बुझाउ	Folio12 R
शुक्र, हे प्रह्लाद तोहर पिताक वैरी नारायण तकर नाम किये करै छह भल **होयत** नहि	Folio12 R
प्रह्ला, हे शुक्राचाय्र्य हमे विष्णुक नाम लेयी **छिअ** ते हमर पिता क्रोध करै **छथि** ते हमर बउ(ड) दु:ख भेल	Folio12 V
जे मागै **छी** से देब	Folio17 V
... ई अमंगल **भेल**	Folio19 R
... एहाञ जे मागै **छी** से हम देब	Folio22 R
हे प्राणेश्वर एय(ह)न आज्ञा करै **छिअ** हमरो विज्ञप्ति अपधान करु	Folio31 R
हे कुमार तोहर नाम साक्यसिंह मुनि प्रख्यात **होय**त, त्वहे कौद्धावतार भेल...	Folio33 V
... अत: पर सत्ययुग उत्पन्न करब, हमे अपन रूप **होयब**	Folio36 V
... एहाक परा(क्र)म देखि हमे संतुष्ट **भेलाहु**	Folio41 V
हे यमुना तोहर रूप यौवन देखिया मनोल्लास **होयी अछ** ते किछु कहब सुनु	Folio29 V
... पुन: पुन: शिर उत्पन्न **होयी अच्छ**	Folio26 V
हे बलि राजा तीन पद भूमी मागै **छिअ** दिअ	Folio17 V

3. मध्यकालीन मैथिली गीतकृति

जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *गीत-पञ्चाशिका*, 1628 CE

जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *गीत–पञ्चाशिका*क रचनाकाल शकाब्द 1550 तदनुसार 1628 CE अछि, अर्थात् *हरगौरीविवाह नाटक*क रचनासँ एक वर्ष पूर्वहि एकर रचना भेल अछि। एहि गीत–संग्रहक सम्पादन–प्रकाशन दुर्गानाथ झा 'श्रीश' शाके 1896 तदनुसार 1974 CEमे दरभंगा, बिहारसँ कुल 8 (क–ज) पृष्ठक वैदुष्यपूर्ण 'प्रस्तावना' ओ 8 (27–34) पृष्ठक अति उपादेय ओ महत्वपूर्ण 'टिप्पणी' सहित कएलैन्हि। उदाहरण :

भवहि भवानिहि **भेल** बड दन्द	गीत 1 पृ. 2
जञो तोहे प्रभु नहि साक्षी मान, तञो **थिक** समुचित शपथ विधान	गीत 1 पृ. 2
गेलाहु सँकेत थल, हमो न वुझल **छल**	गीत 22 पृ. 11
मोहि परिहरि पहु, परदेश वैसि **रहु**, निसि दिन झाँखि रहली	गीत 22 पृ. 11
कि हेतु नहि अएल पहु, संशय **भेल** मोह	गीत 22 पृ. 11
नृपजगजोति कह, रसिकक मन **रह**	गीत 22 पृ. 11
तोहे विनु हृदय **होअए** तसु झूर	गीत 23 पृ. 11

जगत्प्रकाशमल्लकृत *नानार्थ देव देवी गीत संग्रह*, 1661 CE

जगत्प्रकाशमल्लकृत *नानार्थदेवदेवीगीतसंग्रह*क रचनाकालक उल्लेख मूल पाठमे अनुपलब्ध भेलासन्ताँ एकर सही ठेकान नहि भ' सकल अछि परञ्च जगत्प्रकाशमल्लकृत *गीतपञ्चक* काव्यकृतिक विशद् अध्ययनकक्रमेँ हमरा ई भान भेल जे एकर रचना संभवत: ई. 1661मे भेल होएत (देखू: Yadav ed. 2018)। *नानार्थदेवदेवीगीतसंग्रह*क प्रकाशन सुन्दर झा शास्त्रीद्वारा सम्पादित ओ काठमाण्डूसँ प्रकाशित एकगोट कृशकाय ओ अप्रत्यायक परञ्च ततबहि गम्भीर मैथिली पत्रिका *फूल–पात*मे (विजया दशमी विशेषाङ्क, 4: 8, वि.सं. 2029/1972 CE भेल अछि। *नानार्थदेवदेवी*मे कुल 109 विविध भाँतिक गीत अछि। सुन्दर झा शास्त्रीक वैशिष्ट्य ई जे एहि कृतिमे जगत्प्रकाशमल्लक अभिन्न ओ 'जिवतुल्य' मित्र चन्द्रशेषर सिंहमादेँ विस्तृत जानकारीसहित गीतसभमे प्रयुक्त पुरान, हेराएल, दुरूह, ओ अप्रचलित शब्दसभक शब्दार्थ प्रस्तुत भेल अछि। उदाहरण :

त्रिनयन धरि हर **भेल** अति शोभ	गीत 2 पृ. 1
जगत प्रकाश नृप कह दिगवास, हमे **होबओ** तोहरे चरणक दास	गीत 2 पृ. 1
आधतन गोरि धरि हर कए **रह**	गीत 3 पृ. 1
दिने दिने जत **अछि** वेदन चाँद शेखर सिंह जाने	गीत 18 पृ. 5
अमिए वनधि वचनहि **छए** पार, भाविनि तोहे मोर हृदयक हार	गीत 19 पृ. 5
...अति कोमल **थिकि** नागर सर[मे] नहि वाला	गीत 18 पृ. 5
दुर **भेल** कुसुमक आँचर, टुट **रह** तुअ उर हारा	गीत 18 पृ. 5
दिने दिने जत **अछि** वेदन चाँद शेखर सिंह जाने	गीत 18 पृ. 5
मनोरथ पूरय माधव कहिया, एहि एक झाँखि झाँखि **रहलहु** हिया	गीत 65 पृ. 20
हमर वलय किंकिणि वड **भेला**	गीत 65 पृ. 20
अम्वर नहि मेघ तेज **अछि** चन्दा, अम्वर कत एखने **होए** मन्दा	गीत 81 पृ. 24

जगत्प्रकाशमल्लकृत *गीतपञ्चक*, ने.सं. 782/1662 CE

जगत्प्रकाशमल्लकृत *गीतपञ्चक* रचनाकाल ने.सं. 782 तदनुसार 1662 CE अछि। ई एकगोट तीव्र प्रशस्तिपूर्ण ओ घनीभूत विरह–पीड़ासँ अभिभूत शोकगीत अछि। अपन घनिष्ठ मित्र चन्द्रशेषर सिंहक असामयिक मृत्योपरान्त ताही वर्ष एहि शोकगीत–संग्रहक रचना भेल अछि। एकर अङरेजी स्वस्करण तथा सम्पादन–प्रकाशन रामावतार यादव *Elegy Written in a Royal Courtyard: A Facsimile Edition of Jagatprakāśamalla's Gītapañcaka* शीर्षक अन्तर्गत Adroit Publishers, New Delhiसँ कएलैन्हि अछि (Yadav ed. 2018)। उदाहरणसभ (Yadav ed. 2018)सँ अछि:

रह सङ्ग भूत गन, चाँद तिलक धरे	Folio 1 b
जेठ जिवन सखि, विसलेखे **भेल** मोरि	Folio 2 b
भौह कुटिल प्रिय, मनमथ धनु **थिक**	Folio 2 b
कखने **भेलहु** दिन, कओने खने राटि(ति), सुमरैत **रहबहु** काँटि(ति)	Folio 7 b
त्रिभुवन नहि **थिकि**, हम सनि पापिनि...	Folio 13 b
रतन खचित **अछ**, कुण्डल दो[डो]ल	Folio 27 a
कमलक दल सम, लोचन **भेल**	Folio 27 a
भेलहु हमरा दी[ही]न	Folio 27 b

सिद्धिनरसिंहमल्लक मैथिली गीतावली

ललितपुर राज्यक सुप्रसिद्ध नरेश सिद्धिनरसिंहमल्लकृत कुल 13गोट दुर्लभ गीतक संकलन *सिद्धि नरसिंह मल्ल* शीर्षक अन्तर्गत शैलेन्द्र मोहन झा 1969 ई.मे दरभङ्गासँ सम्पादित–प्रकाशित कएलैन्हि। एहि 13गोट दुर्लभ गीतक सङ्कलनक वैशिष्ट्य ई जे ई 3 पृष्ठक 'निवेदन', नृप सिद्धिनरसिंहमल्लमादेँ कुल 16 पृष्ठक शोधपूर्ण परिचयात्मक विवरण ओ तेरहो गीतक पाठक सटीक अर्थ तथा व्याख्यासँ सम्पुटित अछि। उदाहरण :

धारति सञ्चर मनमथ कुञ्जर **भेल** मगन गुन पङ्के	गीत 2 पृ. 21
हृदय निकारुण तुअ अति दारुन जुग भरि **रहल** कलङ्के	गीत 2 पृ. 21
पन्नग भूषण मलय पवन अधिक **होअ** उदासे	गीत 4 पृ. 25
करह सुजन सङ्गम जतन जेँ मोर **रह** पराने	गीत 4 पृ. 25
जे आबे जिव तह अधिक पेयसि **रह** तसु सङ्गे करह विलासे	गीत 6 पृ. 29
जे जते **अछल** भल सबे विपरित भेल	गीत 6 पृ. 29
कहदहुँ कओन पुरुष धनि जाहि कर **रह** अनुराग	गीत 8 पृ. 35
के **अछ** एहि महितल जे अरजल एहेन भाग	गीत 8 पृ. 35
सिंह नृपति कह धैरज कए **रह** हरिक चरण कर सेवा	गीत 9 पृ. 36
पड़ल अनाहति ते **छथि** अनतए बालभु दोस न देवा	गीत 9 पृ. 36
सिंह नृपति कह धैरज कए **रह**	गीत 10 पृ. 36

नेपालक मैथिली अभिलेखसँ संगृहीत *मैथिली गीतमाला*

जयमन्त मिश्रद्वारा सम्पादित ओ मैथिली अकादमी, पटनासँ 1977 CEमे प्रकाशित एहि कृशकाय परञ्च गम्भीर ग्रन्थमे 28 पृष्ठक वैदुष्यपूर्ण भूमिकासहित ई.1665सँ ई.1718धरिक नेपालक मल्लकालीन नरेशलोकनिकृत

कुल एक्कैसगोट शिलालेखीय अभिलेख–गीतसभ संगृहीत कएल गेल अछि। प्रत्येक गीतक पादटिप्पणीमे पाठकजनक हितार्थ प्रस्तुत वहुमूल्य 'टिप्पणी' एहि ग्रन्थक उपादेयताक श्रीवृद्धि करैत अछि। उदाहरण :

पिरितिक वस भय **भेल** एक देह	गीत 3 पृ. 33
एक सकल भरोस अनुखन, एकबल विसवास **अछि** मन	गीत 4 पृ. 34
जाग जगुति सुयज्ञ जप जत, निखिल कलेश निदान **अछि** तत	गीत 4 पृ. 34
आज भूषणे हीन **होएव** अवस निअ वन जानि	गीत 5 पृ. 35
हमर जे **भेल** सहे वरु **भेल** मल्ल परताप भान।	
आवहुँ शंकर विमुख जन नहि **होअ** तुअ पद आन॥	गीत 5 पृ. 35
कीदहुँ पुरुव सुकृत फल भुगुतल निफल **भेल** (सब) काजे।	गीत 6 पृ. 36
कीदहुँ विधिवसे गिरि तर नन्दिनि **भेलि** हे विमुख मोहि आजे॥	गीत 6 पृ. 36
कीदहुँ करम **अच्छल** मोहि अनुपम जैँ तैसन परिजन	गीत 6 पृ. 36
ऐसन सेवल सओ गंजन सवे **भेल** अवहुँ करवह समधान	गीत 5 पृ. 35
अबल सकल भरोस तुअ पदे **होएत** सुत सत मोहि	गीत 7 पृ. 37
आज कालि जे होएव परसनि तोहहि ई **छल** भान	गीत 7 पृ. 37
तखने तोहे **यादि होएव** परसनि देवह संपति सार	गीत 7 पृ. 37
एतय जे **भेल** जेहि तेहि गेल ओतहुँ मने अवधारि	गीत 7 पृ. 37
तैअओ न तुअ पद **होएव** उदास	गीत 9 पृ. 39
यदि जडमति **अच्छल** विमुखे	गीत 9 पृ. 39
प्रणति कइए निवेद गोचर **होह** परसनि हे	गीत 11 पृ. 41
जगत प्रकाश भन घरमहि चिन्ति केहु, परलोकक फल **होय**	गीत 13 पृ. 43
विश्व लक्ष्मी पति भूपति भूपतीन्द्र ओ रणजित **होय** चिराउ	गीत 21 पृ. 51

4. विमर्श ओ निष्कर्ष

निष्कर्षवत् किछु कहबासँ पूर्व सहायक क्रिया **अछ**, (वा **छ**–)क व्युत्पत्तिमार्दे मैथिली भाषाविज्ञानक शिखर पुरुष गोविन्द झाक सूझपूर्ण सम्मति आम पाठकजनक हितार्थ निचाँ प्रस्तुत करब श्रेयस्कर होएत।

गोविन्द झा (1968) *मैथिलीक उद्‌गम ओ विकास*

> प्रसङ्गवश एतहि ***अछ्*** धातुक उद्‌भव ओ रूपावलीक विवेचन सुविधाजनक होएत। ओना तँ अँटकर पञ्च डेढ़ सए बाला विद्वान लोकनि झटपट ***अस्ति*** सँ ***अछि*** निकालि लैत छथि, किन्तु से असम्भव थिक, कारण जे ***अस्ति*** सँ ***अत्थि*** वा ***आथि*** बनि सकैत अछि...। (पृ. 59) (Boldness Added)

गोविन्द झा (1974) *मैथिली भाषा का विकास*

> मै की मुख्य सत्तार्थक धातु **छ** वा **अछ** है। ...प्राकृत और पाली में यह इसी अर्थ में **अच्छ** रूप में मिलता है, जैसे मभा **अच्छइ**, पाली **अच्छति**। पृ. (268–69) (Boldness Added)

टिप्पणी: आश्चर्यक गप जे गोविन्द झा (1974)सँ 9 वर्ष पूर्वहि अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, प्रयागसँ 1965मे प्रकाशित भूपतीन्द्रमल्लकृत *विद्याविलाप* मैथिली नाटकक मूलपाठ आ तहिना गोविन्द झा (1974)सँ 4 वर्ष पूर्वहि लहेरियासराय–दरभङ्गा शहरसँ रामदेव झाद्वारा 1970मे सम्पादित–प्रकाशित जगज्ज्योतिर्मल्लकृत नाट्यकृति *हरगौरीविवाह* नाटकक मूलपाठमे मध्य–मैथिलीक सहायक क्रियाक **–च्छ/च्छ–** संयुक्त रूप प्रचुर मात्रामे उपलब्ध होइतहु ताहि दुहु मध्यकालीन नाट्यकृतिसँ एकहुगोट मध्य–मैथिलीक दृष्टान्त गोविन्द झा (1974)मे सन्दर्भित–उद्धृत कएल नहि भेटैत अछि — मात्र प्राकृत ओ पालीक एक एक दृष्टान्त देल गेल अछि।

मध्यकालीन नेपालमण्डलमे 1628–1720 CE मध्य नेवार नरेशलोकनि–विरचित एवम् जर्मनी, भारत, नेपाल ओ जापानसँ 1891–2024 CE मध्य प्रकाशित कुल 15गोट प्रतिनिधि मध्य–मैथिली नाट्यकृति एवम् गीतिकाव्य ग्रन्थक पाठगत विमर्श ओ तकर साहित्यानुशीलनसँ मध्य–मैथिली सहायक क्रियाक उपलब्ध लेख्य–रूप ओ व्याकरणिक पक्षमादेँ निम्न निष्कर्ष नि:सृत होइत अछि।

1. मध्यकालीन किछु कृतिमे मध्य–मैथिली सहायक क्रियाक लेख्य–रूप प्राकृतक वर्तनीक सरणिपर **अच्छइ, अच्छ, अच्छल, कहइच्छि, च्छी, च्छिअ, च्छओ, करैच्छ, कएलच्छ, होइच्छ, जाइच्छञो** आदि संयुक्त रूपक बहुल प्रयोग दृष्टिगत होइतहु अधिकांश कृतिमे आधुनिक मैथिलीक सरलीकृत लेख्य–रूप उपलब्ध होइत अछि।
2. ई सरलीकृत लेख्य–रूपसभ अछि: **अछ, अछि, छी, कहइछ, करइछ, होइछ, जाइ छी** आदि।
3. तहिना, मध्य आदरार्थी रूपसभ अछि: **होअह, छह, छहु** आदि।
4. उच्च आदरार्थी रूपसभ अछि: **छथि, छलाह, छिअथि, थिकाह, थिकथी** आदि।
5. प्रथम पुरुषवाची वर्तमान कालमे प्रयुक्त चिह्न अछि **–ई (इ)**, यथा: **कहइच्छि, , च्छी, छी** आदि।
6. द्वितीय पुरुष अनादरार्थी (मध्य आदरार्थी) वर्तमान कालमे प्रयुक्त चिह्न अछि **–ह**, यथा: **छह, च्छह, रहह** आदि।
7. द्वितीय पुरुषवाची आदरार्थी वर्तमान कालमे प्रयुक्त चिह्न अछि **–इ**, यथा : **छि**, । **आगे अपने खायछि, पाछे देवताके भोग लगायछि** *हरगौरीविवाह नाटक*, पृ. 16
8. अन्य पुरुषवाची अनादरार्थी वर्तमान कालमे प्रयुक्त चिह्न अछि: **–ϕ**, **अच्छ–ϕ**, **होयिअच्छ–ϕ**आदि।
9. भूतकालवाची सार्वकालिक चिह्न अछि **–ल**, यथा : **छल, अच्छल, भेल, रहल, छलाह, छलाहु, रहलाहु, गेलाहु** आदि।
10. भविष्यत्कालवाची चिह्न अछि: **–ब < व >** (प्रथम ओ द्वितीय पुरुष) तथा **–त** (अन्य पुरुष), यथा : **होएव, रहव, होयत** आदि।
11. प्रथम पुरुष (कर्ता) वर्तमान काल :
    –ञो, यथा : **च्छञो, करैच्छञो, कहैच्छञो** आदि।
    –ओ, यथा : **जाइच्छओ**।
    –व्, यथा : **कहै छव्, करैछव्, जायि छव्** आदि।
    वस्तुत: ई रूपिम **–ञो** अछि जकर वर्तनीगत अनासिक्य रूप **–व्** तथा **–ओ** अछि।
12. प्रथम पुरुष/द्वितीय पुरुष (कर्ता) वर्तमान काल : **–इ/–ई:** यथा : **जायिच्छि, देखइच्छी, मुह फेरइच्छी, की कहइच्छी** आदि।
    अन्य पुरुष (कर्ता) वर्तमान काल : **–छ**, यथा : **होइछ, बजइछ, जनैछ**, एवम् **अछि, अच्छ**।
13. अन्य पुरुष (कर्ता) आदरार्थी वर्तमान काल : **छथि, की कहैछथि, की दु:ख करैछथि**।
14. अन्य पुरुष (कर्ता) भविष्यत् काल : **–त**, यथा : **होएत/होयत**।
15. अन्य पुरुष (कर्ता) आदरार्थी भविष्यत् काल : **–आह**, यथा : **होएताह**।

16. प्रथम पुरुष (कर्ता) + द्वितीय पुरुष (कर्म) वर्तमान काल : **–हु**, यथा: **छहु**। उदाहरण: **हमे किछु विज्ञप्ति करै छहु** तथा एकर एकगोट विविध रूप **छव्** सेहो देखना जाइत अछि। उदाहरण: **तथापि किछु मोय कहै छव्** (*प्रभावतीहरण–नाटक*)।

17. प्रथम पुरुष (कर्ता) + द्वितीय पुरुष मध्य आदरार्थी (कर्म) वर्तमान काल : **–ह**, यथा : **छह**।
उदाहरण : **तोहे गवार, राजाक अन्त:पुर पैसर[ल] छह**
आबे कतय जाय छह (*प्रभावतीहरण–नाटक*), पृ. 6।

आब आबी **थिक** सहायक क्रियादिसि।

i. **थिक** (**थीक** सेहो) एकगोट असार्वत्रिक ('defective') एवम् गोविन्द झाक मतैं 'विकलांग' सहायक क्रिया–रूप अछि।

ii. एहि Copula सहायक क्रियाक प्रयोग मैथिली भाषाक मात्र ब्राह्मण–भाषिकामे आ ताहूमे वर्तमान कालहिटाधरि परिसीमित अछि, यथा: **थिकह, थिकथि, थिकाह,** आदि।

iii. अर्थात्, भूतकालवाची रूपिम (morph) **–ल** ओ भविष्यत्कालवाची रूपिम **–ब** तथा **–त** सङ्ग जुटि ई सहायक क्रिया कोनहु अर्थपूर्ण क्रिया–रूपक निर्माण नहि क' पबैत अछि। यथा: ***थिकल, *थिकब, *थिकलाह, *थिकत, *थिकताह** आदि कथ्य ओ लेख्य दुहु रूप मैथिली भाषा–साहित्यमे पूर्णत: अग्राह्य ओ सर्वथा अनुपलब्ध।

iv. थिक सहायक क्रियाक "पहिल प्रयोग" नेपालमण्डलक भक्तपुर राज्यक नरेश जगज्ज्योतिर्मल्लद्वारा 1628 ई.मे विरचित *मुदितकुवलयाश्व* शीर्षकक मध्य–मैथिलीक नाट्यकृतिक पाठमे ओ ताही साल विरचित जगज्ज्योतिर्मल्लक *गीत-पञ्चाशिका* गीत-सङ्ग्रहमे दृष्टिगत होइत अछि। तद्वत्, जगज्ज्योतिर्मल्लकृत *मदालसाहरण नाटक*मे सेहो प्रयुक्त भेल अछि।

उदाहरण : **थिक (p. 74), थी(क) (p. 61)** ***मुदितकुवलयाश्व***
थिक (p. 2) ***गीत-पञ्चाशिका***
थिकह (Folio 10 R) ***मदालसाहरण*****।**

v. एकर आदरार्थी रूप **थिकथि, थिकाह** आदि रूप मध्य मैथिली ओ आधुनिक मैथिली दुहुमे प्रयुक्त अछि।

vi. विवेच्य मध्यकालीन कृतिसबहुमे **थिक** (स्त्रीलिङ्ग **थिकि**), **थीक, थिकथि, थिकाह** आदि रूप प्रयुक्त अछि।

vii. जातीय/वर्गीय पहिचान (caste identity) वा निजत्त्वक (personal identity) प्रतिपादनार्थ अपन विभाषा/भाषाकैं विशिष्ट (superior), पृथक (exclusive), ओ मानक/उच्च (standard/high; German *Hoch*) सिद्ध करबाक प्रयोजनैं मैथिली भाषाक ब्राह्मण–भाषिका बेसी नहि तँ दुइगोट समाजभाषिक ओ व्याकरणिक रणनीतिक अवलम्बन करैत पाओल जाइत अछि।

एक, क्रियापद ओ कारक विभक्तिमे **नासिक्य**क बहुल प्रयोग, यथा: **के छैं? की कहलैं? कहिआ अएलैं? सीताकैं, विद्यालयसँ** आदि।

दुई, 'थिक' सहायक क्रियाक बहुल प्रयोग – जाहि 'defective' सहायक क्रियाक ऐतिहासिक–भाषावैज्ञानिक व्युत्पत्ति अद्यावधि अस्पष्ट ओ अज्ञात अछि आ जकर सामान्य वा आदरार्थी प्रयोग ब्राह्मण–भाषिकाक व्याकरणक 'वर्तमान' कालहिटामे परिसीमित अछि।

थिक सहायक क्रियाक एकगोट समाजभाषिक प्रयोजन (sociolinguistic function) अतुल्य अछि। ब्राह्मण–भाषिकामे **थिक** वा एहिसँ नि:सृत रूपिमसभक प्रयोग बुझु जे ई ओहिना भेल जेना लण्डन विश्वविद्यालयक कोनहु प्राध्यापक अपन निजत्त्व (Identity) ओ वैशिष्ट्यक (Superiority) प्रतिपादनार्थ ओ आन विश्वविद्यालयक प्राध्यापकसँ पार्थक्य (Exclusivity) स्थापित करबाक प्रयोजनहेतु अङरेजीक एकटा अदना Preposition 'Often' कैं ***t*** सहित उच्चारण करैत (जे सामान्यत: अनुच्चरित रहैत अछि) अपनाकैं विशेष वर्गक (Class) सिद्ध करबाक प्रयोजनार्थ एक ढंगक वर्गदम्भक (Snobbery/High-browness) प्रदर्शन करैत छथि।

अन्तत:, ब्राह्मण–भाषिकाक विशद् भाषावैज्ञानिक विवेचनहेतु द्रष्टव्य अछि हमर आलेख (यादव 1999); तहिना, देखू हमर मैथिली आलेख (यादव 2023) ओ अङरेजी आलेख (Yadav 2023) सेहो।

अन्त्यटिप्पणी

1. विशद् वर्णन–विश्लेषणहेतु द्रष्टव्य अछि Ramawatar Yadav (1996) *A Reference Grammar of Maithili*, Berlin & New York: Mouton de Gruyter.

2. मैथिली अपभ्रंशक वा कहू जे मैथिली भाषाक पुरानतम उपलब्ध ओ प्रकाशित गद्य–ग्रन्थ ज्योतिरीश्वरकृत *वर्णरत्नाकर*मे सत्तार्थक संयुक्त सहायक क्रिया रूप **अच्छ** ओ सरलीकृत सहायक क्रिया रूप **अछि** सर्वथा अनुपलब्ध अछि। परञ्च, सरलीकृत सहायक क्रिया रूप **अछ** *वर्णरत्नाकर*क पाठमे सर्वत्र उपलब्ध अछि। तहिना, सहायक क्रिया रूप **अछथि** (Folio 42 kha, p. 30; 63 ka, p. 53), **अछवाहे** (Folio 56 ka, p. 45) एवम् **अछिअ** (Folio 38 ka, p. 24) सेहो उपलब्ध अछि।

3. *वर्णरत्नाकर*मे **थिकह** कुल एकबेरि मात्र दृष्टिगत होइत अछि (Folio 76 ka, p. 68)। ध्यातव्य जे **थिक** सहायक क्रियामादेँ Ramawatar Yadav (1996)क अभिमत मननीय अछि :

> *thik* 'is' : thik: a characteristic of the Brahmanic speech, is a full form of the verb 'to be' in Maithili. In affected styles, *thik* is optionally used as a copula in present–tense forms. However, it is a highly marked form, and its use is on the decline now: *thik* is systematically replaced by *ɔich* and *ch–* in all educated styles of speech… (p. 219)

4. *वर्णरत्नाकर*मे आदरार्थी सहायक क्रिया **छथि** कुल तीनिबेरि प्रयुक्त अछि (Folio 22 ka, p. 8; Folio 52 kha, p. 40; Folio 63 ka, p. 53)।

5. The question is: how is it that in works produced by kings and their priest-scholars in the Nepal Valley a codification of a complex verbal morphology occurred? The answer to the question may be had in the sociology

of language use. During 16th to 18th centuries, Maithili was a court language, a language of royal communication, a language of prestige and high esteem, and at the same time it was a robust and potent means of literary expression in the Nepālamaṇḍala. Maithili was being used in the royal courts of the Malla kings of Nepal under highly formal and even formulaic circumstances by elites and courtiers of varying cadre and status. No wonder an element of highly codified form of deference and courtesy and honor was superimposed on the verbal bases in order to distinctly stratify the status of members of the royal court vis-à-vis other users/consumers of this language. Maithili was after all a language of kings and queens, of princes and princesses, of elites and courtiers, and of high priests and scholarly pundits. This perforce led to emergence of an immaculate form of language 'fit' to suit the royal purposes, while, at the same time, probably less dignified varieties, i.e. colloquial varieties of Maithili coexisted elsewhere in Nepal and India. It is highly likely therefore that what the linguists later dubbed 'diglossia' existed rather early in Maithili – a phenomenon that needs to be explored further.

Yadav (ed. 2011: 66)

सन्दर्भ सूची

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति 1965 *विद्याविलाप: नेपालीय मैथिली नाटक,* प्रयाग।

झा, गोविन्द 1968 *मैथिलीक उद्गम ओ विकास,* कलकत्ता: मैथिली प्रकाशन समिति।

झा, गोविन्द 1974 *मैथिली भाषा का विकास,* पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।

झा, गोविन्द 2005 "हरिश्चन्द्रनृत्यक भाषा," मे: गोविन्द झा (2005) *अतीतालोक,* पटना: अखियासल प्रकाशन, पृ. 91-102।

झा, रामदेव (सं. 1970) *जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत हरगौरीविवाह नाटक,* लहेरियासराय, दरभंगा: मिथिला–रिसर्च–सोसाइटी।

झा, रामदेव (सं. 1913) *जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत मुदितकुवलयाश्व नाटक,* नयी दिल्ली: साहित्य अकादमी।

झा, शैलेन्द्र मोहन 1969 *सिद्धि नरसिंह मल्ल,* लालबाग-दरभंगा: पुस्तक केन्द्र।

दत्त, विजितकुमार (सं. 1980) *प्राचीन बाङ्गाला-मैथिली नाटक,* बर्धमान: विश्वविद्यालय।

बन्दोपाध्याय, ननीगोपाल (सं. 1916-1917) *नेपालेर बाङ्गाला नाटक,* कलकत्ता: बङ्गीय साहित्य परिषद मंदिर।

मिश्र, जयमन्त 1977 *मैथिली अभिलेख गीत–माला,* पटना: मैथिली अकादमी।

मिश्र, लेखनाथ (सं. 1972) *जगत्प्रकाशमल्लकृत प्रभावतीहरणनाटक,* पौना, दरभंगा: लेखनाथ मिश्र।

यादव, रामावतार 1998 "मैथिलीक भाषिक वैविध्य: औपभाषिक ओ मानक स्वरूप," *सयपत्री* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा–प्रतिष्ठान, काठमाण्डू): 4, V.S. 2055/1998 CE, pp. 34–50। [*जिज्ञासा* (राँटी–मधुबनी, बिहार, भारत) 4: 6, 1999, पृ. 73-89मे सेहो प्रकाशित]

यादव, रामावतार 2004-2005 "मैथिलीक संयोजक निपात: रूपविज्ञानक दृष्टिएँ," *अंतिका* (दिल्ली) 6: 1-4, pp. 6-7.

यादव, रामावतार 2005 "मैथिलीक पूर्वकालिक क्रिया: ऐतिहासिक–भाषावैज्ञानिक वर्णन–विश्लेषण," *आँगन* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान) 1: 1, पृ. 11-26। [यादव 2016, पृ. 109-139मे सेहो पुनर्प्रकाशित]

यादव, रामावतार 2016 *मैथिली आलेख सञ्चयन (1989-2015),* जनकपुरधाम: मैथिली विकास कोष।

यादव, रामावतार 2022 *मैथिली आलेख सञ्चयन II (2015-2022)*, मधुबनी (बिहार, भारत): अनुप्रास प्रकाशन समूह।

यादव, रामावतार 2080 V.S./2023 CE *मध्ययुगीन मैथिली नाट्य र गीति कृतिहरूको भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण,* काठमाडौं: नेपाल सङ्गीत तथा नाट्य प्रज्ञा–प्रतिष्ठान। (नेपाली)

यादव, रामावतार 2023 "भाषा, विभाषा, एवम् मैथिली," *अनुप्रास* (मधुबनी): 7, पृ. 5-18।

यादव, रामावतार 2023 "नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालय काठमाण्डूमे अनुरक्षित एवम् नेवार नरेश-विरचित मध्य-मैथिली गीति-काव्यमे छन्दोलक्षणगुम्फित गीतक छन्दशास्त्रीय विवेचन," *मिथिला भारती* (पटना): 10, पृ. 35-65।

'रमण' रमानन्द झा (संपादक–संकलक 2019) *रामभद्रशर्माकृत हरिश्चन्द्रनृत्यं (मल्लकालीन मैथिली नाटक)*, राँची, झारखण्ड: विश्वम्भर प्रकाशन।

शास्त्री, सुन्दर झा (सं. वि.सं. 2029/1972 CE "श्री जय जगत्प्रकाश मल्ल कृत नानार्थ देव देवी गीत संग्रह," *फूल-पात* (काठमाण्डू) 4: 8, viii + 38।

'श्रीश', दुर्गानाथ झा (सं. शके1896/1974 CE *नृपतिजगज्ज्योतिर्मल्ल–कृत गीत–पञ्चाशिका,* कटहरबाडी–दरभंगा: चेतनाथ झा।

Brinkhaus, Horst 1987 *Pradyumnavijaya-nāṭaka* (of Jagatprakāśamalla), In: *The Pradyumna–Prabhāvatī Legend in Nepal: A Study of the Hindu Myth of the Draining of the Nepal Valley*, Stuttgart: Franz Steiner, Wiesbaden, "Appendix 1", pp. 161–345.

Chatterji, Suniti Kumar & Babua Misra (eds. 1940) *Varṇa-Ratnākara*, Bibliotheca Indica, 262, Calcutta: Royal Asiatic Society of Bengal. [Also published by Sahitya Akademi, New Delhi, in 1998]

Conrady, August (ed. 1891) *Das Hariçcandranṛtyam: Ein Altnepalesisches Tanzspiel*, Leipzig (Germany): G. Kreysing. (German)

Edwards, John 2009 *Language and Identity: An Introduction*, Cambridge: Cambridge University Press.

Garrett, Peter 2010 *Attitudes to Language*, Cambridge: Cambridge University Press.

Kitada, Makoto 2014 "Manuscript of a Maithili play preserved in the Kathmandu Valley: *Madālasāharaṇa-nāṭaka*, Part 1, " *Indomizokukenkyu (Indian Folk Culture Research)*: 13, pp. 65–84, Osaka University Knowledge Archive: Osaka university. (Japanese)

Kitada, Makoto 2015 "Jagajjyotirmalla's play *Madālasāharaṇa-nāṭaka*, Part 2 (Latter half), " *Indomizokukenkyu* (*Indian Folk Culture Research*)*:* 14, 45-84, Osaka University Knowledge Archive: Osaka University. (Japanese)

Yadav, Ramawatar 1984 *Maithili Phonetics and Phonology, Mainz* (Germany): Selden und Tamm.

Yadav, Ramawatar 1996 *A Reference Grammar of Maithili*, Berlin & New York: Mouton de Gruyter.

Yadav, Ramawatar 2003 "Maithili, " In: Cardona, George & Dhanesh Jain (eds. 2003) *The Indo-Aryan Languages*, London & New York: Routledge, pp. 470–490.
[Also published in Vibha S. Chauhan (ed. 2022: 25) *The Languages of Bihar*, Delhi: Orient BlackSwan., pp. 69–88.]

Yadav, Ramawatar 2004 "On diachronic origins of converbs in Maithili, " *Contributions to Nepalese Studies:* 31: 2, pp. 215–241.

Yadav, Ramawatar (ed. 2011) *A Facsimile Edition of a Maithili Play: Bhūpatīndramalla's Parśurāmopākhyāna–Nāṭaka*, Kathmandu: B. P. Koirala India–Nepal Foundation.

Yadav, Ramawatar (ed. 2018) *Elegy Written in a Royal Courtyard: A Facsimile Edition of Jagatprakāśamalla's Gītapañcaka*, New Delhi: Adroit Publishers.

Yadav, Ramawatar (ed. 2021) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Libraray London Manuscript*, Darbhanga (Bihar, India): Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation. Kameshwar Singh Bihar Heritage Series–23

Yadav, Ramawatar 2022 "The Nepal–Tirhut connection: A linguistic analysis of Middle Maithili archival literary texts (Based on gleanings from the hand–copied Newari manuscripts of Middle Maithili plays and songs composed by royal men of letters of Malla dynasty of the Medieval *Nepālamaṇḍala* and archived in the *Nepāla Rāṣṭrīya Abhilekhālaya* in Kathmandu), " *Mithilā–Bhāratī* (Patna): 9: 1–4, pp. 104–133.

Yadav, Ramawatar 2023 **Forthcoming** "Toward a historiography of lexicogenesis in Maithili – With special reference to the hitherto unstudied and unpublished hand–written British Library, London MS. of Henry Thomas Colebrooke's *Comparative Vocabulary* (1807 CE), " In: *Conference Proceedings of the Annual Kathmandu Conference on Nepal & the Himalaya*–2023, Kathmandu: Social Science Baha.

Yadav, Ramawatar (ed. 2024) *Critical Edition of Newari MSS. of Three Medieval Sanskrit and Maithili Plays*, Janakpurdhām: Maithilī Vikāsa Koṣa. **Forthcoming**

●●●

डॉ. उदयनाथझा 'अशोक'
श्रीसदाशिव परिसर, पुरी (ओडिशा)
सम्पर्क : +91 8895122312

व्याकरण एवं साहित्याचार्य डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक'जीक स्मृतितत्त्वामृत, विभूतिपञ्चक, तीनपत्र, हर्षनाथ झा, मैथिली निबन्ध मञ्जरी, न्यायरत्न पण्डित महेश झा, मिथिलाक भौगोलिक उद्भव आऽ विकास आदि मैथिली एवं संस्कृत, हिन्दी, ओड़िया, कन्नड़, गुजराती एवं अंग्रेजी भाषामे कुल 112 गोट पोथी प्रकाशित छनि। विभिन्न भाषाक पत्र-पत्रिका, सन्दर्भ-ग्रन्थ ओ पाठ्य-पुस्तकमे कुल ४००सँ अधिक लेख-निबन्ध प्रकाशित छनि। संस्कृत विश्वविद्यालय पुरीक शोध-निर्देशक रहल डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक' स्वर्णपदक, साहित्यरत्न, युवा पण्डित-सम्मान, संस्कृत भारती पुरस्कार, विद्वन्मणि सम्मान, जयदेव- स्मृति पुरस्कार, राजभाषा-गौरव-सम्मान, साहित्य-शिरोमणि-सम्मान, सुब्रह्मण्यभारती-सम्मान, हरिऔध-सम्मान, विद्वद्भूषण, मिथिलाभाषा- साहित्य-सम्मान, साहित्य अकादमी भाषा-सम्मान आदिसँ अलंकृत छथि।

ओरमादेई : पति कंसनारायण

नैमिषारण्यसँ आबि एक ब्राह्मण परिवार मिथिलाक 'खौआल' ग्राममे बसल। कालान्तरें खौआलसँ हुनक वंशजमेसँ केयो समस्तीपुरक निकट 'जगतपुर' नामक ग्राममे अपन निवास स्थिर कएलन्हि। पछाति नाथ ठाकुर उपनामक ओएन ठाकुरकें तत्कालीन कर्णाटवंशीय राजासँ 'ओइनी' ग्राम उपहारमे भेटल। ओइनी अपन अपभ्रंश नाम 'वइनी' वा 'वैनी'सँ आइयो जानल जाइत अछि, जे' समस्तीपुर जिलामे ताजपुर लग अवस्थित अछि। पहिने वैनी एक रेलवे स्टेशनो होइत छल, मुदा आब ओकर नाम 'पूसारोड' पड़ि गेल छैक। पोस्ट ऑफिस एखनो वैनिये अछि, जतए महान् क्रान्तिकारी खुदीराम बोसक प्रतिमा प्रतिष्ठापित छनि।

खौआड़य जगतपुर मूलक जयपतिक पौत्र ओएन ठाकुर ओइनी ग्राम पाबि 'ओइनवार' मूलक प्रतिष्ठापक बनलाह आ 'उपाध्याय' आस्पदक स्थानपर जमीनदार होएबाक कारणें 'ठाकुर' उपाधि धारण कएल। ओइनी ग्रामक प्रसंग पंजीमे लिखल अछि—

"दानशौर्यप्रतापैश्च प्रसिद्धेः यत्र पार्थिवाः।
ओइनी सा सर्वतः श्रेष्ठा स्वस्वधर्मप्रवर्त्तिका॥"

ओइनी ग्राम पाबियेकें ओएन बनलाह किंवा पहिनहिसँ रहथि, निश्चित नहि कहल जा सकैछ। कदाचित् नाथ झासँ ओएन ठाकुर बनल होथि से सम्भव। जे हो, मुदा ओइनवार कुलक उदय मुहम्मद तुगलकक समयमे हिनकहिं द्वारा भेल, ताहिमे कोनो सन्देह नहि। यद्यपि ई स्वयं तँ रहथि खौआड़य-जगतपुर मूलक, मुदा हिनक बाद सभ वंशज ओइनवार मूलक कहओलक। मूल तँ बदलि गेल, मुदा गोत्र काश्यपे रहल। एही ओएन ठाकुरक प्रपौत्र गोविन्द ठाकुरक पौत्र भेलाह कर्णाटवंशीय राजा हरिसिंहदेवक राजपण्डित, परमसिद्ध आ नीतिज्ञ कामेश्वर ठाकुर।

महाराज हरिसिंह देव 1248 शकाब्दक पौष शुक्ल नवमी मङ्गलकें नेपालक गिरि-दुर्गाश्रयण करबासँ पूर्वे कहियो कामेश्वर ठाकुरकें अपन राज्य दए देल। हिनको जखनि जे परामर्श लेबाक होनि तँ नेपालनरेशक 'उमगाँव-किला'मे जाय लैत छलाह। ई किला तहिया नेपालक भयङ्कर जंगलमे पड़ैत छल, तैं हरिसिंहदेवक दुश्मनकें तकर आभास धरि नहि छलैक। उक्त उमगाँव एखनि मधुबनी जिलाक 'भाला' प्रगन्नामे पड़ैत अछि।

हरिसिंहदेवसँ राज्य पाबियोकें कामेश्वरठाकुर स्वयं

राजा नहि भेलाह। 634 सालमे हुनक जेठ बालक भोगीश्वर ठाकुर एहि कुलक पहिल नरेश भेलाह। एहि विषयक वर्णन कीर्त्तिसिंहक गाथा "कीर्त्तिलता" नामक पोथीमे महाकवि विद्यापति कएने छथि। ई कीर्त्तिसिंह रहथि भोगीश्वरक पौत्र आ गणेश्वर ठाकुरक पुत्र।

"पुरिस पसंसओ राअगुरु कित्तिसिंह गणेश सुअ।
जे सत्तु समर सम्भाहि करि बप्प वैर उद्धरिअ धुअ॥"

[पुरुस पसंसजो रायगुरु कित्तिसिंह गणेस सुअ।
जो सत्तु समरमम्मदि कहु बप्पवैरि उद्धरिअ धुअ॥]

अर्थात् आओर प्रशंसा करैत छी, एक पुरुषक, जे गणेशक पुत्र राजगुरु कीर्त्तिसिंह छलाह, जे समरमे शत्रुक मर्द्दन कए पितृ-वैर (बप्पावैरी)क बदला चुकओने छलाह।

एतय एक विषय आओरो लिखि देब अप्रासंगिक नहि होएत जे कामेश्वर ठाकुर लोकनिक आस्पद तँ छल उपाध्याय (झा), मुदा ओएन ठाकुरसँ ठाकुरे कहबैत छलाह, तँ कतहुँ 'कामेश्वर झा' सेहो लिखल भेटैछ। संगहि हिनक परवर्ती वंशजमे अनेको आस्पद होइत गेल, जकर पृथक-2 कारण रहलैक। मुजफ्फरपुरक पातेपुर सन्निकट 'कुमर-वाजितपुर' गाममे जे केयो ओइनवार मूलक छथि, से सभ राजकुमार वा कुमरजीक सन्तति भेने 'कुमरे' लिखैत छथि। अस्तु।

भोगीश्वरहिक वंशमे शिवसिंह नरेश भेलाह, जे रूपनारायण पदाङ्कित महाराज रहथि। हिनकहिं राजपण्डित ओ बालसखा रहथिन्ह महाकवि विद्यापति। शिवसिंहक परोक्ष भेलापर हिनक पत्नी महारानी लखिमा देवी शासिका भेलीह— "पुत्राभावे तु पत्नी स्यात्तदभावे तु सोदरः" एहि स्मृति वचनानुसारैं। एवंक्रमे राज्य आगाँ बढ़ैत गेल आ दशम राजा भेलाह हरिनारायण पदाङ्कित भैरवसिंह, जनिक समयमे वाचस्पति मिश्र (द्वितीय), पक्षधर मिश्र ओ शङ्कर मिश्र सदृश नैयायिक सभ भेलथिन्ह। हिनकहि समयमे तारसराय-मुरियाक उत्तर-पूबमे स्थित जरहटिया गामक पोखरिक यागमे मिथिलाक 1400 मीमांसक भाग लेने रहथि।

एही भैरवसिंहक पौत्र आ राजा रामभद्रसिंहक बालक रहथि लक्ष्मीनाथ सिंह। लक्ष्मीनाथक माय अनुमतिदेवी पलिवार मूलक महिषी ग्रामवासी देवे झाक बालक शिव झाक कन्या रहथिन्ह तथा कुमरबलभद्र आ राजा रतिनाथ लक्ष्मीनाथक अनुज छलथिन्ह। जखनि ई पिताक उत्तराधिकारी घोषित भेलाह तँ कुल-रीतिक अनुसार हिनक नाम 'कंसदलन नारायण' राखल गेल, जकर अर्थ होइछ— 'संग्रामे रिपुराज-कंस-दलनः प्रत्यक्ष नारायणः' अर्थात् प्रबल रिपु-रूप कंसक विनाशार्थ प्रत्यक्ष नारायणक अवतार भगवान् श्रीकृष्ण। एहि नामकेँ संक्षेपकए समाज प्रचलित केलक 'कंसनारायण'। ई अपन राजधानी दड़िभंगासँ कोस-डेढ़ कोस उत्तर निश्चित कएलन्हि, जकर निकट सोनहान, वासुदेवपुर, बेहटवार प्रभृति गाम सभ छल। एहि मूलक केयो राजा कोनो एकटा स्थायी राजधानी नहि बनाओल, फलतः ओकर स्मृतिचिह्न वा अवशेषक एखनि अभाव अछि। हँ, हिनक ओहि राजधानीक मध्य एक डीहकेँ अवश्य 'कंसनारायण-डीह' क संज्ञा देल जाइत अछि।

जाहि गाममे हिनक पितामहभ्राता चन्द्रसिंह अपना नामपर 'चन्द्रसागर' (चनसारि) पोखरि खुनओने रहथि आ जतए चन्द्रेश्वरमहादेवक स्थापना कएने छलाह, तकर निकटहिं कंसनारायण देव अपन नामपर एक गाम बसाओल 'कंसी' वा 'कनसी'। कनसी-सिमरी ग्रामयुगलक अस्तित्व एखनहुँ ओतए वर्तमान अछि।

'मन्त्रप्रदीप' नामक तान्त्रिकग्रन्थमे आगमाचार्य हरपति उपाध्याय हिनका प्रसंग कहैत छथि जे—

"श्रीकंसनराएनभूमिपालः सानुग्रहो मे कुरुते निदेशम्।
मन्त्रप्रदीपङ्कुरु सत्त्वरं त्वं यद्दर्शन मे भवति प्रमोदः॥"

पोथीक अन्तिम पुष्पिकामे यथा— "इति-समस्त-प्रक्रिया-विराजमान-शिवभक्तिपरायण-श्रीमत्कंसनारायण-लक्ष्मीनाथदेव-निदेशप्रोत्साहित-बेजौलिग्रामनिवासि-विख्यातखौआलग्रामीण म. म. श्रीरुचिपतिशर्म्मात्मजागमाचार्य-श्रीहरपतिविरचिते

मन्त्रप्रदीपे पञ्चदश: पटल: समाप्त:"। उक्त हरपति रहथि बेजौलीग्रामवासी अनर्घराघवक टीकाकार रुचिपतिक बालक आ धनपतिक भाइ।

महाराजा कंसनारायण स्वयं तँ कवि छलाहे, ओ कवि आ विद्वान्क बड़ पैघ पोषको रहथि। शिवसिंहक बाद जँ केयो एहि वंशमे सबसँ पैघ साहित्य-संस्कृति-संरक्षक भेलाह तँ यैह श्रीमान् कंसनारायण। हिनक दरवार ओ कालखण्ड दुनू मैथिली गीतकाव्यक लेल स्वर्णयुगे छल। ई परम भक्त आ शाक्त छलाह, मुदा किछु दुर्व्यसनो घेरने छलनि, जकर परिणाम स्वरूप प्रजामे हिनक स्वाभाविक भय तँ छल, आदर ओ सम्मान नहि रहन्हि। ई एक बेर अपन कुलयोगीक हत्या सेहो करबाय देने रहथि, जकर सुविस्तृत वर्णन मिथिलातत्त्वविमर्श (पृ.- 135-136)मे म.म. परमेश्वर झा कएने छथि। योगी-वध-प्रायश्चित्त निमित्त पण्डितवर्गक कहला पर ई एक्कहिं बेर एक सय पोखरि खुनाबय लगलाह। परन्तु पूरा कोनो नहि कए सकलाह, इएह पोखरि सभ हिनक 'कन्स नरैनी' नामसँ जानल जाइत अछि। राजधानीक निकट आ राघवपुरड्यौढ़ी लग 'कबै' गाममे अवस्थित दुई गोट 'कंसनरैनी'कैं अवश्य आंशिक पूर्ण पोखरि कहल जा' सकैछ। किछु पोखरि 'कंससागर' नामे सेहो अछि, जकर अपभ्रंश आइ 'कंसारि'क रूपमे भेल अछि। मधेपुर प्रभृति गाममे एहन पोखरिक अस्तित्व पाओल जाइत अछि।

हिनक शासन कालमे अर्थात् 1510 ई.मे देवी भागवतक प्रतिलिपि उदयकर नामक विद्वान् कएने रहथि, जकर पुष्पिकामे लिखल अछि "लक्ष्मण संवत् 392 पौषवदि तृतीया बुधे, महाराजश्री कंसनारायणदेवे प्रचारेण श्रीउदयकरेण लिखितैषा पुस्तीति"। एकर आधार पर 1510 वा 11 ई. में ओ सिंहासनारूढ़ भए चुकल रहथि। राजा कंसनारायण महान् योद्धा, राजाराजाधिराज आ तीरभुक्तिमे यवनपति-भयाधायक रहथि, जकर प्रमाण भगिरथपुर-अभिलेख थिक। 1954 ई.मे भगिरथपुर (पण्डौल प्रखण्डक डभैत गाम लगहक एक ग्राम विशेष) गामक खेतसँ प्राप्त अभिलेखमे कहल गेल अछि—

"द्विजोत्तमसुखप्रदा नृपतिकंसनारायण-
प्रवीररजनी मुदा मठमचीकरत्सुन्दरम्।"
"सूनुर्ज्यायान् यदीयो यवनपतिभयाधायकस्तीरभुक्तौ,
राजाराजाधिराज: समर-सरभस: कंसनारायणोऽसौ"

ई उत्कीर्ण अभिलेख ल. सं.- 394(1513 ई.) क थिक, कारण ओहिमे स्पष्ट कहल गेल अछि जे— "वेदरन्ध्रहरनेत्रचिह्निते लक्ष्मणस्य नृपतेर्म्मतेब्दके।" स्मर्त्तव्य धिक जे 'वेदरन्ध्रहरनेत्र'कैं अङ्कमे रखने 394 ल.सं. सिद्ध होइछ।

डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' (मै. सा. इ., पृ.- 80) क अनुसार 'सोरमा' कंसनारायणक पहिल पत्नी छलीह, बेहट निवासी करमहय मानू झाक कन्या। मानू झाक प्रपौत्र रहथि म. म. हरिहर उपाध्याय, जनिक सुभाषितावली विख्यात अछि।" मिथिला मिहिर (दैनिक, 5-1-1986, पटना) क "राजा कंसनारायण आ रानी सोरमा" शीर्षक लेखमे सेहो कहल गेल अछि जे "राजा कंसनारायणक विवाह छल करमहा बेहट मूलक वत्सगोत्रीय म.म. मानूझाक कन्या सोरमासँ । म.म. मानूझाक सन्तति अधुना मधुबनी जिलाक 'बिट्ठो' नामक गाममे बसल छथि।" पण्डितराज श्री मुरलीधरसौरभम् नामक एक अभिनन्दन ग्रन्थ (वाराणसी, २००८ ई.)मे भैरवानन्द एवं राघवानन्द नाटकक प्रणेता माणिक पर दुइ लेख छपल अछि, जाहिमे क्रमश: कहल गेल अछि जे "कंसनारायण नाटककार माणिक के दामाद थे" (पृ.- 48) तथा "इनकी पुत्री और मिथिला की अद्वितीय विदुषी सोरमा, मिथिलानरेश राजा कंसनारायण लक्ष्मीनाथकी पटरानी थी।" (पृ.- 152)।

हिनक विवाहक प्रसंग 'मीडिएबुल नेपाल' (भाग-॥, रेग्मी, पृ.- 108) क जँ मानी तँ मोरंगाधिपति कृष्णनारायण, नेपालनरेशक द्वारपण्डित माणिकक अनिन्द्य सुन्दरी कन्या पर मोहित भए गेल रहथि आ ओ माणिकसँ हुनक पुत्रीक हाथ माङि लेल। माणिकक शर्त्त छल जे जँ अहाँ अपन राजधानी हमर गामक नजदीक, ओहि जनपदमे स्थापित करब तँ अपनेक माङ्ग मान्य बुझू। एकर बादे कंसनारायण दड़िभंगाक पार्श्ववर्ती गाममे अपन राजधानी स्थापित कएलन्हि। एही पोथीक पृ.- 110 पर भिन्न कथा वर्णित अछि। तदनुसार माणिकक पुत्री

सोरमा, जेहने दिव्य सुन्दरी रहथि, तेहने छलीह विदुषी। कौतुकहिमे ओ एक दिन नेपालक कोनो मूर्द्धन्य पण्डितकेँ भरल राजदरवारमे कोनो प्रश्न पूछि अप्रस्तुत कए देने रहथिन्ह। हिनक रूप-गुणक संगहिं वैदुष्यहुँक सूचना राजा कंसनारायण धरि पहुँचल। ओ हिनकासँ विवाहक इच्छुक भेलाह। दूत गेल आ संवाद अनलक जे यदि राजा हमर पुत्रीसँ शास्त्रार्थमे जीत जएताह तँ हुनक अभिलाषाक पूर्ति होएतन्हि। एम्हर राजा अपन दरवारी सभसँ विचारि शास्त्रार्थमे प्रवृत्त भेलाह आ विजयी रहलाह। यद्यपि हुनक एक विवाह भेल छल, तथापि सोरमासँ दोसर विवाह कएल। सोरमहिंसँ हुनका छओ गोट पुत्र भेलथिन्ह राजा रूपनारायण, व्रजनारायण, नरनारायण, ऐतिपालनारायण, तेजबहादुर मधुरानाथ आ उज्ज्वलगोविन्द। रूपनारायणहिक सन्तान चपाही आ सुगौना सभमे छथिन्ह।

स्वयं कंसनारायण तँ उचिते, प्रत्युत् हुनक सभ्यहुँमे जे केयो गीतकार रहथि, कवि रहथि से सभ सेहो अपन-अपन रचनामे महारानी सोरमाक उल्लेख करब नहि बिसरल। एतेक धरि जे म.म. परमेश्वर झा (मि.त.वि. 112)क कथ्यमे विद्यापति सेहो कंसनारायण ओ सोरमा देविक चर्चा करैत छथि। वस्तुत: महाकवि विद्यापति अपन पाँच गोट गीतमे हिनक चर्चा अवश्य करैत छथि। 'कंसनारायण'क चर्चा एकटामे, 'कंसदलननारायण'क तीनटामे आ 'कंसदलन'क एकटामे। एहिमे 'कंसनारायण'क संग-2 'सोरमा देवि'क चर्चा सेहो भेल अछि। यथा-

1) अगर उगारि गारि मृगमद रस...
विद्यापति भण कंसनरायण सोरमा देवि समाज॥

2) कि आरे नव जौवन अभिरामा। ...
भणइ विद्यापति से बड़ नागरि आन न पाबय कोइ।
कंसदलन नारायण सुन्दर तसु रंगिनि पए होइ॥

3) साए साए काँ लागि कौतुक देखल...
सुकृति सुफल सुनल सुन्दरि विद्यापति वचन सारे।
कंसदलन नारायण सुन्दर मिलल नन्दकुमारे॥

4) जेत देखल तत कहि न पारिआ...
भणइ विद्यापति सुनुवर जौवति जान न पाबय कोइ।
कंसदलन नारायण सुन्दर तासु रमनि पए होइ॥

5) कि लागि कौतुक देखलौं...
सुकृति सुफल सुनह सुन्दरि विद्यापति भन सार।
कंसदलन गुपाल सुन्दर मिलल नन्दकुमार॥

परन्तु विद्यापतिक भनितायुक्त उपर्युक्त गीत सभ हुनके थिकनि वा ओहि नामक कोनो दोसर कविक अथवा प्रक्षिप्त, तकर निर्णयक स्थान ई नहि। हँ एतबाक धरि अवश्य जे भोगीश्वर ठाकुर ओ हुनक पुत्र गणेश्वर ठाकुर तथा पौत्र कीर्त्तिसिंहक समयमे रहनिहार विद्यापति, भवेश्वर सिंह (भोगीश्वरक भाय) क पौत्र (देवसिंहक बालक) शिवसिंहक दरवारी तँ भए सकैत छथि, मुदा शिवसिंहक पितियौत दर्पनारायण नरसिंहदेवक प्रपौत्र कंसनारायण लक्ष्मीनाथक सभासद होथि वा हुनका समयमे अवस्थित होथि— से सम्भव प्रतीत नहि होइछ। कतबो जीबथु, किन्तु 1354 ई. (भोगीश्वरक समय)सँ 1520 ई. (कंसनारायणक समय) धरि जीअब असम्भव।

हिनक दरवारी कविमे प्रमुख रहथि श्रीधर, गोविन्द, काशीनाथ, रामनाथ आदि। एक कवि गोपीनाथ नामक सेहो हिनक सभ्य रहथिन्ह, जनिक रचना नहि भेटैछ। हिनका सबहिंक लिखल गीतक भनितामे

कंसनारायण ओ हुनक पटरानी सोरमादाईक चर्चा अवश्य भेटैत अछि। गोविन्दक पदमे यथा—

क- गोविन्द भन, बुझ कंसनराएन, सोरमादेई अनुरागी।
ख- गोविन्दभन, मती कंसनराएन, सोरमादेवि समाज।
ग- सोरमारमन एहो रस जान, कंसनराएन गोविन्द भान।
घ- दासगोविन्द भन कंसनराएन, सोरमदेवि समाज।
ङ- सोरमारमन सिरि कंसनराएन, मिलत नन्दकुमारे।

एहिमे पाँचम भनितासँ प्रतीत होइछ जे ई कंसनारायण विरचित गीतक भनिता थिक, अन्यथा गोविन्दक नाम नदारद नहि रहैत। शेष काशीनाथ, रामनाथ ओ श्रीधरक गीत-भनिताकेँ देखल जाय, जाहिमे ओ लोकनि सोरमा रानीक सेहो उल्लेख कएने छथि—

क- काशीनाथ रम भए कंसनराएन बुझ पैय।
(कह काशीनाथ सोरमरमन कंसनरायन बुध पैय)
ख- सोरमरमन सकल रसविन्दक रामनाथ कवि भानय रे।
ग- कवि सिरिधर हुनि भान, कंसनराएन सोरम जान।
घ- पिआ विसरन तह सबै लहु कवि सिरिधर हेन भान
कंसनराएन नृपवर रसधर सोरमदेवि रमान॥

एतय ई स्मर्त्तव्य थिक जे श्रीधरकवि हिनक मंत्री श्रीधरदाससँ भिन्न नहि रहथि, जे वर्त्तमान मधुबनी जिलाक नागदह ग्रामवासी कायस्थ छलाह आ जनिक स्त्रीपर कुदृष्टि देबाक कारणें हिनक अपयश बढ़ल। जखनि कि हिनक पटरानी सोरमा स्वयं अनिन्द्य सुन्दरी स्त्री रहथि। श्रीधर दासक स्त्री बला कथाक वर्णन प्रबन्ध विस्तरभयेँ ओ अनावश्यक बूझि एतय उल्लेख नहि कएल अछि। मुदा हिनक सभासद काशीनाथ विद्याविलाप नामक मध्ययुगीन नाटकक रचयिता थिकाह।

उपर्युक्त गोविन्द कवि आ कंसनारायणक मध्य ठीक ओएह सम्बन्ध छल, जे कि हिनक पूर्वज राजा शिवसिंह ओ विद्यापतिक बीच छलनि। गोविन्द बाल-सखा जँ नहियोँ तँ कवि-अनुचर अवश्य रहथिन। मुदा मिथिलामे अनेक गोविन्द-नामधारीकेँ भेने ई निश्चय करब कठिन थिक जे कोन गोविन्द हिनक सभामे सुशोभित रहथि। नरेन्द्रनाथ दासक मतेँ गोविन्ददास तँ हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'क मतमे गोविन्द मिश्र। जखनि कि केयो हिनका घुसौतय मूलक काव्यप्रदीपकार गोविन्दठाकुर सेहो कहैत छथि। परन्तु हमरा जनैत डॉ. श्रीशजीक कथ्य (मै.सा.इ., पृ.- 91) तथ्यसँ दूर नहि जे ई गोविन्द रहथि नलचरित नाटककार आ दिघबयमूलक स्थिति ठाकुरक वंशज रविकरक पुत्र। स्थिति ठाकुरक पुत्र भेलाह लक्ष्मण आ तनिक पुत्र उदयी, एही उदयीक पौत्र रविकरक बालक रहथि गोविन्द। हिनक लिखल पन्द्रह गोट गीत उपलब्ध होइत अछि, १२टा भाषागीत संग्रहमे संग्रहीत अछि त तीनिटा छिटफुट। दूटा गीत लोचनक रागतरंगिणीमे सेहो अछि, मुदा से भाषागीत संग्रहहुँमे पाओल जाइछ। तकर अतिरिक्त तीनटामेसँ एकटा महेशवाणी जगज्योतिर्मल्लक 'हरगौरी विवाह'मे आ एकटा महावैयाकरण पं दीनबन्धु झाक मिथिला भाषाविद्योतनमे प्राप्त होइत अछि । तेसर गीत डॉ. श्रीशजीकेँ भेटलनि, जकर चर्चा ओ अपन मैथिली साहित्यक इतिहास (पृ.- 80)मे करितो छथि।

कंसनारायणक दू गोट गीत रागतरंगिणीमे भेटैत अछि, एकटा नेपाल तालपत्र पोथी आ एकटा भाषागीत संग्रहमे संग्रहीत भेल अछि। भाषागीत संग्रहमे प्राप्त लक्ष्मीनाथक नामे जे दू गोट गीत भेटैत अछि, सम्भव थिक हिनकहिं रहल होनि। मुदा कतोक अन्य गीत सभमे स्पष्टत: 'कंसनारायण' 'कंसनृपति' रूपक भनिता पबैत छी, जाहिसँ ई

धारणा प्रबल बनैछ जे कंसनारायण, कंसनृपति आ लक्ष्मीनाथक नामे प्राप्त गीत सभक रचयिता भिन्न नहि छथि। किछु गीत 'लक्ष्मीनारायण'क भनिताक संग सेहो भेटैत अछि, जकरा किछु गोटे 'लक्ष्मीनाथ'सँ भिन्न व्यक्तिक रचना स्वीकार कएल अछि। मै.सा.इति. (पृ.- 120-21)मे डॉ. कृष्णकान्त मिश्र कवि लक्ष्मीनारायण ओ लक्ष्मीनाथ कंसनारायणकेँ भिन्न मानैत छथि। एकर कारण हुनक गीतक भनितामे 'कृष्णनारायण' पद भेटब भए सकैछ। मिश्रजीक मतें 'कंसनारायण' ओ 'रिपुराज-कंस-दलन-नारायण' सेहो अभिन्न नहि छथि। परन्तु मोरंग नरेश 'लक्ष्मीनारायण' कंसदलन नारायण रहथि आ नसिरापति 'लक्ष्मीनाथ' कंसनारायण। दू गोट भिन्न राजामे एतेक साम्य भेनाइ सम्भव नहि। जखनि कि 'लक्ष्मीनारायण'केँ कतहुँ-2 'कृष्णनारायण' उपाधिधारी सेहो कहल गेल अछि। स्वाभाविक थिक 'कंसदलन' केनिहार 'कृष्णे' तँ छलाह तेँ 'कंसदलन नारायण' होथि वा 'कृष्णनारायण' कोनो अन्तर नहि पड़ैछ।

कृष्णनारायणक संरक्षणमे एक कवि रहथि 'श्यामसुन्दर' जनिक बनाओल गीतक भनितामे राजा ओ रानी दुहूक उल्लेख भेल अछि। उदाहरणार्थ यथा—

"रसमय श्यामसुंदर कविगाव
सकल अधिक भेल मन्मथ भाव
कृष्णनरायन ई रस जान
कमलावति-पति गुनक विधान॥"

एतय स्मरणीय अछि जे कंसनारायणहुँक दू पत्नीमेसँ एकक नाम कमलावती रहनि। 'कृष्णनारायण' पत्नी सोरमा रहथिन, जकर उल्लेख हुनक विवाह वर्णन प्रसंगमे कए चुकल छी।

'मीडिएबुल नेपाल'क (पृ.- 307) अनुसार ओइनवार नरेश नरसिंहक बालक धीरसिंह ओ तनिक बालक राघवसिंहक अनुज जगनारायण रहथिन्ह। जगनारायणकेँ चारि बालक, जाहिमे त्रिविक्रम नारायण श्रीनाथ जेठ आ रुद्रनारायण सबसँ छोट रहथिन। एकर अतिरिक्त आन कोनो सूचना एहि प्रसंग नहि भेटैछ। परन्तु एतबेसँ ई निश्चित भए जाइछ जे मोरंग राजवंश सेहो ओइनवारहिंक शाखा छल। जगनारायणहिंक राज्यकालमे भीष्म (भीषम) कवि भेल छथि, जे अपन एक गीतमे लिखैत छथि—

"ससधर सहस सार बटुराव
तैअओ न वदन पटान्तर पाव।...
हरिहर प्रनविए भीषम भान
प्रभावति-पति जगनरायन जान॥"

कंसनारायण नाम हिनका उत्तराधिकारी घोषित करबाक समय देल गेल छल, तेँ 'लक्ष्मीनाथक नामयुक्त गीत हिनक पूर्बक लगैछ, संगहि एहिसभ रचनामे 'सोरमा'क नाम नहि रहने इहो प्रतीत होइछ जे ई रचना सभ हिनक विवाह-पूर्वक रहल होनि। यथा—

"माधव ए बेरि दुरहु दुर सेवा।
दिन दश धैरज कर यदुनन्दन हमे तप बरि बरु देवा॥
कोरि कुसुम मधु वेकत न रहते हठ जनु करिअ मुरारि ।
तुअ इह दाप सहए के पारत हम कोमल तनु नारि॥
आइति हठ जञो करबह माधव तञो आइति नहि मोरि ।
काँच बदरि उपभोगे न आओत उहे कि फल तोरि॥

एतिखणे अमिय वचन उपभोगह आरति अनदिने देवा।
लखिमीनाथ भण सुन यदुनन्दन कलियुगे निते मोरि सेवा॥"

एकर अतिरिक्त किछु गीत हिनक 'लक्ष्मीनारायण'क नामसँ सेहो भेटैछ, उदाहरणार्थ यथा—

"कुन्दन कनक कन्हाई, हमहुँ कसौटी तूल।
निज हिय कसल बालम गुन, बूझल बहुमूल॥
ए सखि सुपहु समागम, सुख कहनि न जाय।
मनकर मनाओन छाड़िय, राखिय हिय लाय॥
पुरुब गौरि हमे पूजलि, पूने परिणत नेह।
जीव एक कय मानल, की जओ दुई देह॥
लछमीनरायण नृप कह, तोहे गुनमति नारि।
जा सओ नेह बढ़ाबह, सेहे देव मुरारि॥"

एहिमे 'नृप' पदसँ ई अर्थ करब व्यर्थ जे ओ राजा भए गेल रहथि, कारण बहुतो एहन प्रमाण भेटैत अछि जाहिमे राजकुमार, भैयारीमे छोटो अन्य राजकुमार, मंत्री, राजपुरुष लोकनि सेहो गीत वा पोथीमे 'राजा' 'महाराजा' आदि पदक व्यवहार करैत रहथि।

राजा कंसनारायण, लक्ष्मीनाथ ओ लक्ष्मीनारायणक भनिताक अतिरिक्त 'कंसनारायण' नामक भनिताक प्रयोग सेहो कएने छथि। यथा—

"पएर पड़ि विनमओ सजना रे जत अनुचित पड़ु मोर।
जनु विघटावह नेहरा रे जीवन जौवन थोर॥
पलटह गुणनिधि तोहे गुणरसिया जीवे करह वरु शाति।
....
पुछि लेहु ई तरुण आपहि रे अइसना लागए मोहि भान।
कि तुअ मन लगिला रे किए कुशल पँचबाण॥
काठ कठिन हिय तोहरा रे दिनहुँ दया नहि तोहि।
कंसनरायन गविहा रे निरमय कान्हहि मोहि॥"

रागतरंगिणी (लोचन)मे प्राप्त हिनक निम्न रचनाकेँ देखल जाय, जाहिमे 'नसिरा भूपति' आ 'नसिरा शाह सुरताने' सन्देह उत्पन्न करैछ। यथा—

"साय साय पियाके कह विनती॥
इहआ बसन्त ऋतु ओतहिं गमाबथु
एत एक भल नहि बीती॥
घन मलयज रस परस लाग बिस
दुसह सुनिय पिक नादे।
अनल बरिस शशि निन्दओ न होअ निशि
एतय अओर परमादे॥
जे सबे विपरीत से सबे कहत कत
के पतियायत आने।

जखने आओब हरि हमहिं निवेदब
जो राखत पचवाने॥
सुमुखि समाद समादरें समादल
नसिराशाह सुरताने।
नसिरा भूपति सोरमादेई पति-
कंसनराएन भाने॥"

एहिमे चर्चित नसिराशाह प्राय: ओइनवार वंशक पतन केनिहार बंगालक हुसैन शाहक पुत्र नसरतशाह (1518-31) रहल होएत। मुदा तकर नाम कंसनारायण किएक लिखलनि, विचारणीय अछि। डॉ. श्रीशजीक मतेँ (पृ.79) मोरंग आ नसिरामे कंसनारायण नामक राजा भेल छथि, सम्भव थिक मोरंग नरेश कवि सभक आश्रयदातो रहल होथि। ई मोरंग अछि मिथिलाक उत्तरी सीमापर, आधुनिक नेपालक एक गोट मैथिली भाषी जिला। लक्ष्मीनाथ (कतहुँ-२ लक्ष्मीनारायण) एतूका राजा रहथि। शुभकर्म निर्णयकार मुरारि मिश्र, जे ओतूका राजा निर्भयनारायण क समयमे भेल छथि, मोरंग राजवंशक कुल सात गोट राजा सभक नामावली दैत छथि। यथा— लक्ष्मीनारायण, रूपनारायण, वीरनारायण, नरनारायण, जगनारायण, त्रिविक्रम नारायण आ निर्भय नारायण। ई नामावली राजा सबहिंक थिक, न कि पिता-पुत्र-पौत्र आदि वंशपरम्पराक। नेपालक इतिहास देखलासँ ज्ञात होइछ जे मोरंगमे जे कंसनारायण राज्य करैत छलाह से रामभद्रहिंक बालक रहथि। एकर पुष्टि धर्मशास्त्री मुरारि मिश्रक लिखल शुभकर्मनिर्णयहुँसँ भए जाइछ। अतएव दुहू कंसनारायण अभिन्ने रहथि। मुदा उक्त 'नसिरा भूपति'क की अर्थ? नहि जानि 'नसिरा' कोन थिक ? एकर भौगोलिक स्थिति की छल आ एखनि ओकर की स्वरूप अछि? डॉ. विश्वेश्वरमिश्र (मि. मि. 18 मार्च 1979) क अनुसार 'नसिरा' पूर्णियाँ जिलाक एक ग्राम विशेष छल, जे पंजी प्रबन्धक समय धरि काफी ख्याति पाबि चुकल छल। ई अपन प्रदेशक पर्याय बनि गेल छल आ कंसनारायणक राजधानी मोरंगसँ अधिक प्रसिद्ध छल। एही कारणेँ प्राय: ओ अपनाकेँ 'नसिरा भूपति' लीखि गौरवानुभव कएने होथि। जखनि कि पूर्णियाँक श्रीनगर-क्षेत्रकेँ 'नशिरा' देश कहल जाइत छल, ताहि सम्बन्धमे म. म. परमेश्वर झा लिखैत छथि जे "एहि प्रान्तकेँ नशिरा-देश बहुत लोक कहै छथि" (मि.त.वि., पृ.19)। पूजाप्रदीपक रचना गोविन्द ठाकुर भवानन्दरायक आज्ञासँ कएने रहथि, जकर चर्चा ओहि पोथीमे भेल अछि। एहि भवानन्द रायकेँ कवीश्वर चन्दा झा नशिराक वासी मानैत रहथि आ परमेश्वर झा भुर्सुट ग्रामवासी (मि.त.वि., पृ.140)। जे हो, मुदा ई नसिराशाह 'पंचगौडेश्वर' रहथि ताहिमे सन्देह नहि। कारण महाकवि विद्यापति लिखैत छथि—

"से गुनगाहक नाह देशान्तर कामे पसार उसारब ना।
....
कह कविशेखर वेदन जानत आनत नेह-सन्देसा ना।
नव रस विन्दक पंचगौडेसर नसिरा साह नरेशा ना॥"

मैथिली प्राचीन गीतावली (1977, पृ.55)मे प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' आ डॉ. रामदेव झा 'नसिरा'केँ 'मिथिला' मानैत सन्देह व्यक्त करैत छथि जे "मूलमे प्राय: 'मिथिला भूपति' रहल होएत आ गायकी परम्परामे 'मिथिला'क स्थानमे 'नसिरा' भए गेल होएत"।

कदाचित् इहो सम्भव रहल हो, जे अपन कूटनीतिक अन्तर्गत कंसनारायणकेँ नसिरा शाह सुल्तान नसिरा क्षेत्रक राजा हिनका बनओने हो आ ताही समयमे एहि गीतक रचना भेल हो। तेँ—

"सुमुखि समाद समादरैँ समादल, नसिराशाह सुरताने।
नसिरा भूपति सोरमादेई पति कंसनराएन भाने"॥

कंस नारायणक एक तेसर गीतकेँ देखल जाय—

"तनु सुकुमार पयोधर गोरा।
कनकलता जनि सिरिफल जोरा॥
देखलि कमलमुखि बरनि न जाइ।
मन मोर हरलक मदन जगाइ॥
भोहाँ धनुष धएल तसु आगु।
तीष कटाख मदन शर लागु॥
सब तरु सुनिय ऐसन बेवहारा।
मारिअ नागर उवर गमारा॥
कंसनराएन कौतुक गाबय।
पुनफल पुनमत गुनमति पाबय॥"

कंसनारायण लक्ष्मीनाथ ओइनवार मूलक आ कामेश्वर ठाकुर वंशक अन्तिम राजा रहथि। भोगीश्वर ठाकुरसँ लए हिनका धरि कुल बारह गोट राजा (जाहिमे दू रानी) कुल 201 वर्ष धरि राज्य कएल।

सोलहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे बंगालक राजा अलाउद्दीन हुसैन शाहक उत्तराधिकारी नसरतशाह (1518-32 ई.) 1526 ई.मे मिथिला पर आक्रमण कए राजा कंसनारायणकेँ मारि देलक आ अपन बहिनोई अलाउद्दीनकेँ तिरहुतक शासक नियुक्त कएलक। एकर पुष्टि एहू निम्नोक्त पद्यसँ होइत अछि—

"अङ्काब्धि वेदशशिसम्मित शाकवर्षे
भाद्रे सिते प्रतिपदि क्षितिसूनुवारे।
हा हा निहत्य इह कंसनारायणोऽसौ
तत्त्याज देवसरसी निकटे शरीरम्॥"

एहिमे अंकित 1449 शाक वर्षसँ 1526 ईसविये सिद्ध होइछ। तिरहुत विजयक बाद नसरतशाह पश्चिम बढ़ि चम्पारन राज्यपर अधिकार जमओलक आ ओतए ओ अपन दोसर बहिनोइ वा जमाय मकदुम आलमकेँ शासन देलक। स्मरणीय थिक जे इहो राज्य एवं गोरखपुर राज्य सेहो ओइनवारे मूलक एक शाखाक अन्तर्गत छल, मुदा उक्त आक्रमणक समय एहि राज्य पर ओहि मूलक शासन छल वा नहि, कहब कठिन अछि। मुदा एतय स्मरणीय थिक जे चम्पारन, गोरखपुर आदि क्षेत्र पर राज्य केनिहार इन्द्रसेन, पृथ्वीनारायण, शक्तिसिंह, मदनसिंह, नृपनारायण, अमरसिंह प्रभृति राजा लोकनि कंसनारायणक भाय राजा रतिनाथहिंक सन्तति रहथि।

कंसनारायणक मृत्युक बाद हुनक देवान हैंठीवाली ग्रामवासी केशव मजुमदार, अरहदी कायस्थ, नवाब नसरत शाहक बहिनोइ अलाउद्दीनक अनुयायी भए एक वर्ष धरि राज्य चलाओल, जनिक उत्खनित पोखरि एखनो हैंठीवाली गाममे विद्यमान अछि। मजुमदारक बाद पुन: एक वर्ष धरि मिथिलाक राज्य मजलीश खाँ नामक मैथिल ब्राह्मणक हाथमे आएल। जे हो, शाखा सन्ततिसँ भरल-पुरल रहलो पर कंसनारायणक मृत्युक बाद मिथिला अराजक स्थितिमे आबि गेल आ हिनक संगहि ओइनवार मूलक राजवंशक पतन भए भेल।

•••

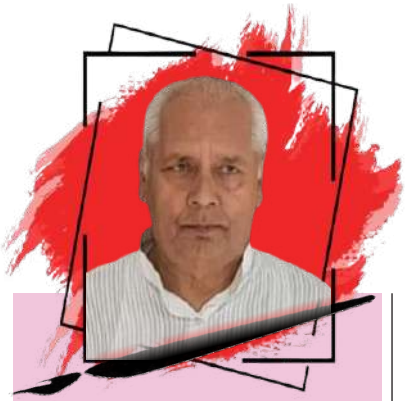

पं. विनयानन्द झा

मंगरौनी, मिथिला, मधुबनी।

सम्पर्क : *+91 88773 74666*

पं. विनयानन्द झा प्रसिद्ध प्राच्यविद् आ साहित्यकार छथि। सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास विशेष रूपसँ मैथिल संस्कृतिपर हिनक अनेक महत्वपूर्ण काजसभ अछि। हिनक किछु महत्त्वपूर्ण पुस्तक सभक नाम अछि— 'दार्शनिक शिक्षा का पारंपरिक केन्द्र मिथिला', 'मिथिला की सारस्वत सुषमा', 'मिथिला के सामाजिक इतिहास में पंजीकरण का प्रभाव' एवं 'महामहोपाध्याय सचल मिश्र'। साहित्यक क्षेत्रमे विनयानन्दजी मैथिलीमे लेखन करैत छथि आ शोध हिन्दीमे। मैथिलीमे प्रकाशित हिनक कवितासंग्रहक नाम अछि— 'विनयलता अनुराग'। संस्कृत केर अनेक काव्य सभक मैथिली एवं हिन्दीमे अनुवाद कएने छथि यथा गोकुलनाथ रचित शिवस्तुति केर मैथिली अनुवाद 'नीलाक्षी', जयदेव विरचित गीतगोविन्दक मैथिली पद्यमय रूपांतरण 'विनय नयन नीलिमा विलास', पं. मोहन मिश्र प्रणीत 'राधानयनद्विशती'क हिन्दी अनुवाद 'विनयावलोकन' चर्चित छनि।

लोचनकृत रागतरंगिणी : एक विहंगम दृष्टि

रागतरंगिणी संगीतशास्त्रक एक ग्रंथ थिक जे संस्कृत भाषामे अछि। मुदा एहिमे गीत सभ मैथिलीमे अछि। एकर प्रणेता छलाह, लोचन जे एक कवि सेहो छलाह। लोचन भारद्वाज गोत्रक बाबूक पुत्र एवं परमानन्द झाक पौत्र छलाह। रागतरंगिणी ग्रंथ के आरंभमे कवि लोचन रचनाकालमे मिथिलामे राजा महिनाथ ठाकुर के शासनरत कहलन्हि अछि एवं राजाक अनुज के आज्ञासँ ग्रंथक प्रणयन कएलन्हि।

एहि ग्रंथमे पाँच अध्याय अछि जे तरंग अभिहित अछि। प्रथम तरंगमे राग-स्वरूप वर्णित अछि, दोसरमे रागिनी स्वरूप। तेसरमे उत्पत्ति एवं नाद निरूपण एवं तिरहुति(मिथिला)मे विख्यात राग, ओकर गीत, छन्द एवं ताल आदिक वर्णन अछि। चारिम तरंगमे मिथिलामे प्रचलित संकीर्ण रागक वर्णन भेल अछि। पाँचम तरंगमे स्वर प्रकरण, वीणा वाद्यक विषय, श्रुति विभाग, राग-संस्थान, राग गान समय एवं नायक नायिकाक भेद वर्णित अछि।

एहि ग्रंथमे कुल १०३ मैथिली गीत अछि जाहिमे पाँच के कवि ज्ञात नहि अछि। शेष ९८ गीत २९ टा कविक अछि। जाहिमे एक स्वयं लोचन छथि। लोचन रागतरंगिणीमे छः राग एवं प्रत्येक रागक संग पाँच-पाँच टा रागिनी सभक वर्णन हनुमन्त मत के आधार पर कएलन्हि अछि जकर सूची निम्नलिखित अछि :

राग		*रागिनी*
1. भैरव	:	बंगाली, मधुमाधवी, वराही भैरवी, सिन्धु।
2. कौशि	:	तोड़ी, खम्भावती, गौड़ी, ककुभ, गुणकरी।
3. हिन्दोल	:	बेलावली, देशाख, रामकरी, ललिता, पटपंजरी।
4. दीपक	:	केदार, कानरा, देशी, कामोह, बिगाहरा।
5. श्रीराग	:	वसन्त, मालव, आलश्री, धनाश्री, आसावरी।
6. मेघ	:	मलारी, देशिका, भूपाली, टंक, दक्षिण-गुर्जरी।

रागतरंगिणी में संकीर्ण रागक सेहो विवेचन कएल गेल अछि। देशी-राग, देशी-ताल, देशी भाषा एवं देशी-सुर पर लोचन बेसी बल देलन्हि अछि। ओ एहि पोथीमे अन्य स्थानक संगीतक तुलनामे तिरहुतक वैशिष्ट्य के दरशौलन्हि अछि।

तेसर तरंगमे राग सभक उत्पत्तिक कारणरूप नाटक प्रसंगमे लोचनक उक्ति अछि, "नाभिक ऊपर हृदसँ प्राणवायु ब्रह्मरन्ध्रक अन्तमे जे स्वर उत्पन्न करैत अछि ओ स्वर नाद भेल। आकाश, अग्नि एवं वायुसँ उत्पन्न भऽ नाभिसँ ऊपर उच्चारण हेतु प्रस्थानक मुँहमे आबि जे स्पष्ट भऽ जाइत अछि ओ नाद कहाइत अछि।" नादक तीन प्रकार कहल गेल अछि— प्राणिभव (जीवसँ उत्पन्न), अप्राणिभव (निर्जीव वस्तुसँ उत्पन्न) एवं उभयसंभव (दुनु प्रकारसँ उत्पन्न)। एहि प्रकारे नादसँ व्याप्त जे स्वर एवं मूर्च्छना अछि ओहिसँ रागक उत्पत्ति होइत अछि। जतए स्वर मूर्च्छना के प्राप्त करैत अछि ओतहि ओ राग स्वरूप भऽ जाइत अछि।

चारिम तरंगमे संकीर्ण रागक वर्णन क्रममे मात्र मिथिलामे प्रसिद्ध रागक वर्णन कएल गेल अछि। एहिमे जाहि राग सभक विवेचन अछि ओकर सभक नाम अछि विभासी, अहिरानी, गोपीवल्लभ, शारंगी, कोडार, घनछी, गौडमालव, राज-विजय एवं नाट। लोचनक कथन अछि जे इएह नौ(राग) तीर भुक्ति(मिथिला) मे विकसित भेल। एहि तरंगक अन्तमे मिथिलाक संकीर्ण एवं असंकीर्ण रागक गणना कऽ चौबीस टा रागक नामोल्लेख लोचन करैत छथि, यथा— ललिता, विभासी, भैरवी, अहिरानी, बड़ाड़ी, गोपीवल्लभ, गुजरी, रामकली, शारंगी, कौशिक, कोहार, वसंत, धनहरी, आसावरी, श्रीराग, गौड़ मालव, मालव, पाली, राजविजय, नाट, कामोद, देशाख, केदार एवं मलारी। लोचनक कहल अछि जे वसंत राग रहित सहि सभक अवान्तर(गौण) भेद सभ मिला कऽ तिरहुत देशीय सन्तानवे टा राग अछि।

पाँचम तरंगमे सर्वप्रथम स्वर श्रुति प्रकरण पर कहल गेल अछि ओकर बाद स्वर-संस्थितिक वर्णन अछि। लोचनक उक्ति अछि जे वीणामे सभ रागक स्वरक संस्थिति अछि जे वीणा के बजबइ मात्रसँ प्रगट भऽ जाइत अछि। लोचनक आगू कहब अछि जे रागक प्राचीन बारह संस्थिति(थाट) अछि— भौरवी, टोड़ी, गौरी, कर्णाट, केदार, यमन(ईमन), शारंग, मेघराग, घनाश्री, पूर्वा, मुखारी एवं दीपक। प्रत्येक रागक वर्णनक पश्चात् पोथीमे संकर-रागक वर्णन अछि।

पांच तरंगक अन्तमे नायक नायिकाक वर्णन अछि। दामोदर के उद्धत करैत लोचन श्रृंगार रसमे चारि प्रकारक नायक होइत अछि – अनुकूल, शठ, धृष्ट एवं दक्षिण। जे सीतामे राम समान एक मात्र स्त्रीमे अनुराग रखैत अछि ओ भेल अनुकूल नायक। जे समक्ष भेला पर प्रेम प्रदर्शित करए एवं परोक्ष भेला पर परस्त्री पर आसक्ति निडर भावसँ देखाबए ओ शठ नायक भेल। जे झूठ वाजय, अप्रिय काज करए, फटकारल गेलो पर थेथर बनल रहय एवं प्रगटरूपसँ अपराधमे प्रवृत्त हो ओहन व्यक्ति धृष्ट नायकक श्रेणीमे अबैत अछि। जे परस्त्रीमे आसक्त रहलो उत्तर प्रथम स्त्रीक प्रति सद्भाव, आदर, प्रेम एवं भयक त्याग नहि करय ओ दक्षिण नायक अभिहित अछि।

नायिकाक प्रथमत: तीन प्रकार कहल गेल अछि— मुग्धा, मध्या एवं प्रगल्भा। चौदह वर्ष धरिक नारी 'बाला' भेल, ओहिसँ ऊपर बीस वर्ष धरिक नायिका भेल मुग्धा। बीससँ छब्बीस तकक युवती मध्या अभिहित अछि। छब्बीससँ पैंतीस वर्ष धरिक युवती के प्रगल्भा कहल गेल अछि। मुग्धा के प्रथम यौवना, मध्या के द्वितीय यौवना एवं प्रगल्भा के तृतीय यौवना सेहो लोचन वैकल्पिक रूपे कहैत छथि। हुनक आगाँ कहब अछि जे केकरो केकरोमे पैंतालिस वर्ष धरिक नारी चतुर्थ यौवना अभिहित प्रगल्भा नायिका श्रेणीमे अबैत अछि। ओहिसँ अधिक वय भऽ गेला पर वृद्धा भऽ गेल।

एकर बाद उपर्युक्त तीनू कोटिक नायिकाक प्रकार सेहो लोचन कहैत छथि। मुग्धाक पाँच प्रकार, मध्याक चारि एवं प्रगल्भाक सात प्रकार। एहि प्रकारे कुल सोलह प्रकारक नायिका होइत अछि एवं एहि सभ के यदि खण्डिता, विप्रलब्धा आदि कर्मे आठ प्रकारक नायिकासँ गुणन करी तऽ नायिकाक कुल १२८ प्रकार भऽ जाइत अछि संगहि एहि १२८ प्रकारक नायिकाक स्वकीया, परकीया एवं सामान्य वनिता भेदसँ गुणन कएला पर नायिकाक ३५४ प्रकार होइत अछि।

संगीत मर्मज्ञ भातखण्डे अत्यंत श्रद्धापूर्वक लोचनक नाम लैत छथि। मिथिलामे संगीतशास्त्र पर प्राप्त ई एक मात्र स्वतंत्र ग्रंथ अछि। उत्तर भारतीय संगीत(हिन्दुस्तानी संगीत)मे दस थाट(राग समूह) कहल गेल अछि, परंच लोचन बारह थाटक वर्णन करैत छथि। रागतरंगिणीक रचना लोचन राजा महिनाथ ठाकुरक अनुज नरपति ठाकुरक आज्ञा पर कएलन्हि। महिनाथ ठाकुरक राज्य काल १६७१सँ ९३ ई० अछि। लोचनकेँ दरभंगा जिलाक उजान गामक निवासी कहल जाइत अछि।

●●●

डा. सुनीता झा

मिल्लत कॉलेज-दरभंगा
सम्पर्क : +91 9199924917

समकालीन मैथिली साहित्यक स्त्री लेखनमे कलमक बले ख्याति अरजनिहारि पाहीटोल, सरिसब-पाहीक डॉ. सुनीता झाक चुल्हि सँ हटि कऽ(कथा-निबंध संकलन), मोह(मैथिली उपन्यास) एवं मैथिली साहित्यमे महिला लेखिकाक योगदान विषयपर शोध-ग्रन्थ प्रकाशित छनि। विभिन्न पत्रिका-पुस्तक आदिमे आलेख प्रकाशित होइत रहैत छनि। एम. ए. मैथिली विषयमे गोल्ड मेडलिस्ट छथि। अध्ययन-अध्यापन,भोजन-विन्यास,मिथिलाक विधि-व्यवहार,पारंपरिक गीत-नाद,साहित्यिक -सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रममे सहभागिता विशेष अभिरुचि छनि। पण्डित हरिनारायण झा एवं पण्डित शिवनारायण झा शैक्षणिक एवं सामाजिक सहयोग न्यास-हाटी(सरिसब-पाही) द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मानसँ सम्मानित सहज व्यक्तित्वक स्वामिनी डॉ. सुनीता झा संप्रति मिल्लत कॉलेज,दरभंगाक मैथिली विभागमे सहायक प्राध्यापक छथि।

मिथिलामे महिला जागरण

एक समय छल, नारीक जीवन परदे धरि सीमित छल। पुरूष समाज बीच कहबे लेल अर्द्धांगिनी नारीकेँ पुरुष सहचरिणी रूपमे मान्यता देनहि नहि छलैक। जँ नव विचारधाराक नवयुवक पुरुष, कनियाँक पक्षमे किछु बजैत छल तऽ ओकरा घरक बूढ़-पुरान, मौगियाह-कलियुगिया कहि संबोधित करैत छलैक। ई परिवारमे कलहक कारण भए जाइत छलैक। एहना परिस्थितिमे अनुशासित पति, जेठ-श्रेष्ठ लग मौन भए जाइत छल। एकर मूल कारण छल, समाजक बीच शिक्षा एवं आत्मवलक अभाव।

महिला समाज, अध्ययन दिसि प्रवृत्त भेलीह। एक दिशि जँ महिला-समाजपर सेहो वैज्ञानिक प्रगतिजन्य, एकर नित-नूतन आविष्कारजन्य, पाश्चात्य-सांस्कृतिक प्रभाव पड़य लागल तऽ दोसर दिशि पुरुष वर्गक संग प्रतिद्वन्दिताक भाव सेहो हृदय कूहरमे पनपल, जेकर अभिव्यक्ति पुरुष समाजक बीच खुलि कऽ तऽ नहि मुदा प्रेरित कएलक काव्य-सर्जनाहित। काव्योक सर्जनामे हमर मानस पटलपर ई घुरिआए रहल अछि जे प्रगतिवादी गृहिणी लेखिका कामाख्या दाइकेँ छद्मनाम 'निरजा रेणु', एवं लिली रेकेँ 'कल्पनाशरण' नामसँ काव्यसृजन करबाक की कारण छलनि!

मिथिला समाजक भित्ति पर पुरुषवर्गक होइत पाशविक अत्याचारकेँ नारी-समाज आखिर कतेक दिन धरि सहन करितथि?असह्य वेदनासँ ग्रस्त ओ चिरकालसँ पुरुषक कोपभाजन बनल त्रस्तभेल नारीगण मुक्तिक मार्ग ताकय लगलीह आ अवसर भेटलापर माल-जाल सदृश छान-पगहा तोड़ि पुरुषवर्गसँ लोहा लेबाक लेल समर-भूमिमे कूदि पड़लीह, जाहिमे हिनका लोकनिकेँ सफलता सेहो भेटलनि।

साहित्यिक जगतमे तऽ महिला लेखिका लोकनिक सहभागिता गत् सत्तरिए शतकसँ गति पकड़ि लेलक जे अनवरत द्रुत गतिए चलिए रहल अछि। किछु अग्रणी कथा-संग्रह लेखिकाक उल्लेख करब—

'ठेहिआएल मोन शीतल छाहरि'(1965) श्रीमती गौड़ी मिश्र, 'उबिआइत आखर'(1976) चित्रलेखा देवी, 'फरिच्छ'(1984) 'कथा नवनीत'(1990) एवं 'पृथा' (2002) नीता झा, 'आशाक अन्त'(1978) शकुन्तला देवी, 'एकटा आकाश'(1988) 'यायावरी'(1995)डा. शेफालिका वर्मा, 'अन्तर्द्वन्द्व'(1988) शुशीला झा, 'झिझिरकोना'(1989) ज्योत्सनाचन्द्रम्, 'सभसँ पैघ विजय' (1996) आशा मिश्र, 'धार पियासल' (1996) 'ऋतम्भरा'(2001) निरजा रेणु, 'काँचहि बाँस' (2000) उषा किरण खान आदि।

पुरुष समाज, महिलाक ओछ मानसिकताक ओकालति करैत छथि। पुरुष जँ अन्य महिलाक संग हँसथि-बाजथि, मित्रता जोड़थि तऽ हुनकर पुरुषत्व। महिला जँ अन्य पुरुषक संग हँसथि बाजथि तऽ वेहाया। हम महिला समाजक लेल तऽ एकरे ओकालति करब जे पुरुषेक ओछ मानसिकता होइत छैक।

आलोच्य कथा लेखिकामेसँ किछु महिला लेखिका, पुरुषक ओछ मानसिकताक भुक्तभोगी सेहो भेल छथि। केओ कलहसँ आजीज भए समाजमे कलंकित होइत पूर्व पतिकेँ त्यागि अन्य पुरुष मित्रक संग रहय लगलीह, केओ एहि कलंकक लोकलाजे छुप्प भए वेदना सहैत रहलीह तऽ केओ आजीज भए आत्माहत्या तक कएलनि।

कहबी छैक— "माघक घाघस बकरीक ढूसि साँय-बहुक झगड़ा तीनू फूसि"। हमर दृष्टिएँ साँए-बहुऽक झगड़ा तऽ सोहाग-भाग। शिक्षित नारीक लड़ाइ, अशिक्षित नारीक लड़ाइ-झगड़ासँ भिन्न देखल गेल। अशिक्षित नारी जतय झगड़ाक क्रममे मात्र अश्लील शब्दक प्रयोग करैत देखल जाइत छथि ततहि शिक्षित समाजक नारी लोकनि अपन अधिकारक लेल क्रान्तिक नारा सुसंस्कृत ओ सभ्य भाषामे लगबैत सामाजिक दशा-दिशाक सुधारक आग्रही लगैत छथि।

आजुक अधिकांश परिवारक पुरुष वर्ग सेहो महिलाकेँ अपन सुभ्यस्त पारिवारिक जीवनक लेल, अर्थ उपार्जन करबाक लेल प्रेरितो कए रहल छथिन। पुरुष-महिलाक मतभेद एवं झगड़ामे जँ गम्भीरतासँ विचार करी तऽ सुखमय सहजीवनक लेल दुनूक बीच सामंजस्य होएबाक चाही। थोपरी एक हाथसँ कदापि नहि बाजि सकैछ।

शिक्षित-अशिक्षित नारी मात्रेमे पुरुषक तुलनामे गुणक कनेको कमी नहि छैक। पुरुषसँ बढ़ि-चढ़ि कऽ परिश्रम करबाक क्षमता महिलामे छैक। मुण्डन, उपनयन एवं विवाहक अबसरपर घरक देवाल, गोसाओनिक घर, कोवर घरमे महिला कलाकार लोकनि अदौसँ कलाकृत्ति करैत आबि रहल छलीह। हुनका लोकनिक कलाकेँ परंपरा मात्र बूझल जाइत छलन्हि। स्व.ललितनारायण मिश्र जहिया विदेश मंत्री रहथि, मधुबनी(मिथिला) पेन्टिंगकेँ विश्व-स्तरपर प्रशस्ति प्राप्त करबाओल। मिथिलाक घर-घरमे पेन्टिंग होमए लागल। जगदम्बा देवी एवं महासुन्दरी सन-सन अनेको महिला कलाकार पुरस्कृत होइत रहलीह। विश्व-स्तरपर मधुबनी पेन्टिंगक विपणन होमए लागल। बादमे श्री मती गौड़ी मिश्र(डा.भवनाथ मिश्रक पत्नी) सेवा मिथिला नामसँ मधुबनीमे मिथिला पेन्टिंगक प्रशिक्षण सह विपणन केन्द्र खोललन्हि। एहि संस्थाक माध्यमसँ हजारो महिलाक जीवन दिशा-दशा बदलि गेलैक। मिथिलाक महिला-शिल्पी लोकनि चूड़ी-लहठी, सिकी-मौनी आदि कलाकृत्तिसँ जीवन-यापन हजारोक संख्याँमे कए रहलीह अछि।

एकटा समय छल जखन कहल जाइत छल शास्त्रक सूक्तिक अनुसारे 'यत्र नार्यस्य पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' वस्तुत: केहन आदर्श छल जखन नारीक एहेन रूप छल समाजमे।

केन्द्र एवं राज्य सरकार सेहो अशिक्षित नारीक विकासक लेल गत् अस्सीक दशकेसँ, प्रखण्ड स्तरपर नारी कल्याणक विभिन्न योजना यथा वयस्क शिक्षा, महिला कल्याण योजना, आँगनबाड़ी, स्वयं सहायता समूह, जीविका आदि चला रहल अछि। गामे-गाम, टोले-टोल स्वयं सहायता समूह चलि रहल अछि। "सखी-वहिनपा" सन-सन अनेको महिला समूह बनल जे महिलाकेँ आत्मवल बढ़ेबामे सहयोगी सिद्ध भेल। अशिक्षित महिला साक्षर भए रहल अछि। आब पुरुष वर्ग महिलाकेँ उत्प्रीरित करबाक साहस नहि कए सकैत छथि। महिलाक बीच एकता छैक, ओकर समूह सशक्त छैक। अनपढ़-निशावाज पुरुषकेँ सेहो सुधारबाक लेल महिला जागरूक भए रहल अछि। महिलामे सामान्यतया मित्तव्ययिता एवं अर्थ-संचयक प्रवृत्ति रहैत छैक। वेर-विपत्तिमे महिले पुरुषक लेल ढ़ाल बनि ठाढ़ होइत छैक।

हमर "चुल्हिसँ हटि कऽ" कथा-निवंध संकलनमे "जागरण" शीर्षक कथा अछि, जाहिमे पियक्कर पतिक अत्याचारसँ त्रस्त महिला सब केना समूह बनाए अपन जीवनक स्तरक सुधार कएलक एवं पतिकेँ शासन कए निशाक आदति सेहो छोड़ौलक तकर वर्णन कएल गेल अछि। ई हमर कथा आँखिक देखल-सुनल सत्य घटनापर आधारित अछि।

•••

बघम्बरी बाबा : जेना हम जनलियनि

विनोद नारायण झा

घोंघौर, मिथिला, मधुबनी (बिहार)
सम्पर्क : +91 94318 15798

राजनीतिमे रहितो विनोद नारायण झाजी साहित्यिक-सांस्कृतिक-अध्ययनशील व्यक्तित्व छथि। अपन माटि-पानि, लोक-वेद, देस-कोस आ समाजक लेल अपन हृदयमे अनुपम मात्सर्य रखने छथि। बिहार सरकारमे लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभागक मान. मंत्री श्री झा बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक प्रकाशन निगममे उपाध्यक्ष, राज्य नियोजन समिति आ हिन्दी सलाहकार समितिक सदस्य (ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार); सचेतक, सत्तारूढ़ दल, बिहार विधानसभा आदि बहुत रास पदपर अपन कुशल कार्यशैलीक छाप छोड़ने छथि। अमेरिकन कॉसिल ऑफ यंग पॉलिटकल लीडर नामक संस्थाक आमंत्रणपर अमेरिकी राष्ट्रपतिक चुनावक अध्ययन एवं विश्लेषणक क्रममे अमेरिकाक 11 राज्यक यात्राक संग मैकम्युनिष्ट पार्टी ऑफ चाइनाक आमंत्रणपर चीन यात्राक अतिरिक्त फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, वेटिकन सिटी, वियतनाम, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, भूटान, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशक यात्रा कएने छथि। सम्प्रति बेनीपट्टी (मधुबनी)क लोकप्रिय विधायक छथि। मिथिला-मैथिलीसँ सम्बंधित शोधपरक अनेक आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल छनि। उच्चैठमे उच्चैठ-कालिदास महोत्सव केर शुरूआत करबामे हिनक महती भूमिका रहल अछि। साहित्यिक-सांस्कृतिक विचार-गोष्ठी सभमे लब्धप्रतिष्ठ वक्ता रूपमे भाग लैत छथि। सहज-सरल स्वभाव आ आमजनसँ आत्मीय जुड़ाव हिनक अनुपम वैशिष्ट्य अछि।

सम्पूर्ण भारतवर्षमे आ विशेष रूपसँ मिथिलामे आस्था, श्रद्धा, पूजा आ भक्ति भाव केर अनेक केन्द्र बनल अछि। एहि केन्द्र सभक निर्माणमे ओहि स्थलसँ संबंधित कोनो सामान्य पुरुष वा स्त्री पात्रक विशेष गुण केर मुख्य भूमिका रहैत अछि। ई विशेष गुण कालक्रममे ओहि क्षेत्रक सामान्य लोकमे आस्था-विश्वासक सर्जना करैत अछि। जन सामान्यमे यैह आस्था आ विश्वास कालक्रममे ओहि व्यक्तिमे चमत्कार वा पराशक्ति अधिरोपित करैत अछि। ई शक्ति जखन दैवीय स्वरूप ग्रहण कऽ लैत अछि तखन ओ स्थान जन-समुदायमे पूजित होइत महत्वपूर्ण केन्द्र बनि अभरि जाइत अछि। सम्पूर्ण मिथिलामे एहन अनेक केन्द्र अछि। हमर गाम घोंघौर (बाबूबरही)मे एक एहन केन्द्र सेहो अछि–बघम्बरी बाबा स्थान। गाममे ई स्थल रूपमे जानल जाइत अछि।

एहि बघम्बरी बाबा स्थानक पुजारी एकटा सिद्ध व्यक्ति यमुना दास छलाह जे गाम भरिमे यमुना बाबा रूपमे जानल जाइत छलाह। हमसभ अक्सर ओहि स्थलपर जाइत रही। 1960 केर दशकक बात होएत। बाबा स्थान अत्यन्त रमणगर स्थल छल। एतए बहुत रास रंग-बिरंगक फूलसभ लागल रहैत छल। राम-जानकी मंदिरक साफ-सफाइ बहुत सुन्दर छल आओर स्थलक एक किनारपर बघम्बरी बाबा आ यमुना दासिनक समाधि स्थल रहए। साँझमे घुमबाक वा दर्शनीय स्थल रूपमे हमर गामक ओ एक महत्वपूर्ण भाग छल। यमुना बाबाक निश्छल व्यवहार आ स्नेह-मात्सर्य सेहो स्थलपर जेबाक लेल आकर्षित करैत रहए। जहिया कहियो स्थलपर गेल होएब, निश्चित रूपसँ राम-जानकी मन्दिरमे प्रणाम कएलाक बाद बघम्बरी बाबाक समाधिकेँ प्रणाम अवश्य कएने होएब। हुनक समाधिक माटि आँगुरसँ उठा कपारमे चानन जकाँ लगा लैत रही। अपन परिवारमे बूढ़-बुढ़ानुस मुहेँ बाबाक विषयमे बहुत रास कथा-पिहानी सुनने रही।

वर्ष 1966मे हमर जेठ बहिन इन्दु दाइक मधुश्रावणी पावनि रहए। अपन आ पितियौत लगा पाँच-छओ बहिनक बियाह ओहि साल भेल रहैक। बघम्बरी स्थल केर फुलबारी बहुत सुन्दर रहए। सभ नवविवाहिता फूल लोढ़ए ओतए जाइत रहए। तखन हम पाँचम वर्गमे पढ़ैत रही। माएक इच्छा रहए जे जेठ बहिन जखन फूल लोढ़ए लेल स्थलपर जाए तऽ हम अवश्य संगे जइयैक। हमरा

घरसँ स्थलक दूरी मात्र एकसँ डेढ़ किलोमीटर हेतै। सभ बहीन संगे ओकर सखी-बहिनपा आ छोट भाए-बहिन जाइत रहए। हमहूँ जाइत रही। गाममे एकटा उत्सवी माहौल बनि गेल रहए। मलमास पड़लाक कारणेँ ओहि साल डेढ़ मास धरि फूल लोढ़बाक कार्यक्रम चलल। स्थलसँ अबैत कालक दृश्य अत्यन्त मनोरम रहैत छल। साज-शृंगार कएने आ गहना-गुरिया पहिरने गीत-नाद गबैत भक्ति-भावसँ हुलसैत बहिन सभक हाथमे रंग-बिरंगक फूलसँ भरल चँगेरा-फुलतोरा आ सहयोग करैत संग चलैत हमसभ! हमरो सभकेँ खूब नीक लागए। सभ दिन स्थल जा कऽ बघम्बरी बाबाक समाधिक माटि कपारमे लगेनाइ हमर दिनचर्या बनि गेल रहए। जिज्ञासा तऽ बनिए गेल छल जे आखिर बघम्बरी बाबा के छलाह, यमुना दासिन के छलीह। एहि विषयमे बहुत किछु सुनी ओहिसँ एहि स्थानक प्रति आकर्षण आ श्रद्धा बढ़िते गेल। बादमे अनुभव कयल जे एहि विषयमे बहुत रास जनश्रुति, प्रवाद, अतिरंजित गाथा, किंवदन्ती आदिक प्रचार-प्रसार परोपट्टा भरिमे पसरल अछि। एहि सभमे ओझराएल तथ्यकेँ एक तार्किक स्वरूप देबाक प्रयास एहि आलेखमे करैत छी।

उमइराम झा तीन भाइ छलाह। कतहुसँ अबैत रहथिन। साँझ भऽ गेल रहनि। संग लागि गेल रहनि एकटा हजाम आ एकटा चौधरीजी। बघम्बरी बाबा स्थानक रमणीयता देखि तीनू गोटे विचारलनि जे कतहुँ आन ठाम जे रहब ताहिसँ नीक जे राति भरि एतहि रहि जाइ। सहटि कऽ कुटी दिस गेलखिन तऽ बघम्बरी बाबाक दर्शन भेलनि। बाबाक दर्शनसँ आत्मामे एकटा अप्रतिम शान्तिक अनुभव भेलनि। भेलनि जेना कोनो जन्मक पुण्य फलित भेल हो, कोनो साध अपन पूर्णताकेँ समेटि जीवनक कोनो नियति दिस इशारा कऽ रहल हो। उमइराम झा बाबाकेँ गोर लगैत बहुत विनम्रताक संग खलखिन— बाबा आजुक राति हमराभकेँ अपन शरणमे बितएबाक आज्ञा देल जाउ। एहि स्थानक प्राकृतिक रम्यता, माटिक सुगंधि आ बसातक सौम्यता बहुत आकृष्ट कएलक अछि। अपनेक दर्शन भेलाक बाद जीवन सफल भऽ गेल अछि बाबा! उमइराम झाक सहजता आ समर्पण देखि बाबाक मुहसँ सहसा बहरेलनि— तोरा एतय आइए राति रहबाक नहि! हम तऽ सभदीना रहबाक लेल कहैत छिअह। एहि भूमिकेँ किनसाइत तोरे खोज हो। आब तौँ आबि गेलह तऽ एतहि बसि जाह। सेवा करऽ एहि माटिकेँ। उमइराम झाक संग जे दूगोट संगी रहथि ओसभ सेहो हाथ जोड़ि बाबासँ कहलनि— बाबा एहि जंगलमे बहुत बाघ-सिंहसभ हेतैक, केना रहब? बाबा कहलनि— तकर डर नहि करै जाइ जाह, हम छी ने! रोइयौँ भग्न नहि हेतह। एकर बाद सभगोटे मन्दिर लऽग बनल एकटा मचानपर राति गुदश्त कएलनि। रातिमे ओ सभ एकटा बाघकेँ देखि भागि कऽ बाबा लऽग जा कहलखिन— बाबा बाघ देखलियैक अछि। बाबा कहलखिन— जाह! निचैनसँ सुतह। हमहौँ अपन बाघकेँ पठौने छलहुँ जे कोनो आन जंगली जानवरसभ तोरासभकेँ हानि नहि करह। कहल जाइछ जे उमइराम झा ओतहि बसलथि आ बादमे घोंघौर गामक स्थापना हिनके द्वारा कएल गेल।

एहि बातक उल्लेख करब एतए जरूरी अछि जे 'बाबा बाघम्बरी नाथक महिमा' नामक पुस्तिकामे श्री इंद्रलाल चौधरीजी लिखने छथि जे बाघम्बरी बाबाक स्थानमे जे पहिल बेर गेल रहथि ओ गोविन्दराम झा छलथि से सत्य नहि अछि। उमइराम झाक बालक गोविन्दराम झा छलाह। गोविन्दराम झाक तीन बेटा— कन्हाइ लाल झा, भाइलाल झा आ वंशीलाल झा। कन्हाइ लाल झाक पुत्र बच्चे झा आ बच्चे झाक पुत्र भैयाजी झा। भैयाजी झाक पुत्र बद्रीनारायण झा आ बद्रीनारायण झाक पुत्र हम विनोद नारायण झा। एहि संक्षिप्त वंशवृक्षसँ स्पष्ट अछि जे कन्हाइ लाल झा हमर पितामहक पितामह छलाह। घोंघौर गामकेँ आबाद कयलनि उमइराम झा। अर्थात् हमरासँ सातम पीढ़ी ऊपर! एक पीढ़ी 25 बरखक अनुमान करी आ आजुक समय अपन पौत्रक पीढ़ीसँ गणना करी तखन हुनक समय आइसँ 25×10 अर्थात् 250 वर्ष पूर्व निर्धारित होएत। कहि सकैत छी जे 1775 ई. हुनक ज्ञातकाल अछि। हिनका सभकेँ बघम्बरी बाबाक साक्षात्कार भेटल छल। एहि वंशमे कन्हाइ लाल झा एक सिद्ध पुरुष भेलाह। ओ यमुना दासिनसँ तंत्रविद्या सिखलनि आ देवी कालीक साधना कएलनि। हमरा अँगनामे एकटा दादी रहथि जिनका अपना परिवारक बहुत रास खिस्सा बुझल रहनि।

धिया-पुताकेँ बैसा कऽ सभटा ज्ञात बात बतेबाक स्वभाव रहनि। हमसभ हुनका बबिया कहियनि। बबियासँ हम कन्हाइ लाल बाबा, बघम्बरी बाबा आ यमुना दासिन सभक बहुत रास खिस्सासभ सुनने रही।

हमर गाम घोंघौरमे स्थलक चारूकात घनघोर जंगल रहए। कमला नदी हमरा इलाकासँ दूर बहैत रहथि। पूरा इलाकामे मात्र जंगल रहए, एकसँ एक जंगली जानवर सभक वास रहए। हम स्वयं 1972 तक गाममे शाही, खिखिर आ नढ़िया आदि जानवर देखने छलहुँ। ओहि जंगलमे एकटा राम-जानकीक मन्दिर रहए। एहि मन्दिरक देख-रेख बघम्बरी बाबा करैत रहथि। एहि मन्दिरक स्थापना के कहिया कएलनि आइ निस्तुकी रूपसँ नहि कहल जा सकैछ। संभव जे स्वयं बघम्बरी बाबा एकर स्थापना कएने होथि। तखन एहि मन्दिरक स्थापना काल 1730सँ 1740 ई.क मध्य अकानि सकैत छी। बघम्बरी बाबाक मूल नाम जे रहल हो मुदा हुनक प्रसिद्धिक कारण हुनक सिद्धत्व आ परोपकारी छवि रहए। ओ जंगली जानवर सभसँ इलाकाक त्राता रहथि। किंवदन्ती इहो अछि जे ओ अपन सवारी लेल दूटा बाघ पोसने छलाह। एक बेर जबरदस्ती मालगुजारी ओसूल करए आएल किछु कर्मचारी जखन मालगुजारी नहि भेटलापर बान्हल दुनू बरद खोलबा लेल विर्त छल आ जखन बरद खोलबाक लेल मालक घर गेल तखन ओतए दूटा बाघ बान्हल देखि पड़ाइत बाबाक चरणमे आबि खसि पड़ल। माफी मंगैत कहलखिन मालगुजारी लेल आब नहि आएब बाबा माफ कऽ दिय। हम एहि किंवदन्ती सभपर नहि जाएब। मन्दिरमे रात्रि पूजा-अनुष्ठानक बाद बघम्बरी बाबा बाघक छाल ओढ़ि लैत रहथि। जन आस्था यैह छल जे बाघक छाल ओढ़लाक बाद ओ स्वयं बाघ भऽ जाइत छलाह आ जंगलमे बाघ बनि विचरण करैत छलाह। ओ बाघ कोनहुँ मनुक्खक अहित नहि करए, अपितु अन्य वन्य जीव-जन्तुसँ मनुक्खक रक्षा करैत रहए। हुनका रहैत कोनो हिंसक जानवर कोनो मनुष्य वा पोसुआ जानवर सभकेँ कोनो क्षत्ति नहि कऽ सकैत छल। एहि तरहेँ बघम्बरी बाबा गामक रक्षक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह।

कन्हाइ लाल झा बघम्बरी बाबाक विशेष शिष्य छलाह। हुनका बाबासँ बड़ लगाओ रहनि। बघम्बरी बाबाक समाधिस्थ भेलाक बाद राम जानकी मंदिरक देख-देख आ पूजा-पाठ सभक जवाबदेही वैह सम्हारलनि। यमुना दासिनसँ हुनकर तंत्रविद्या सिखनाइ, एहिमे पारंगत भेनाइ आ काली मैयाक आराधना करबाक वृत्तांत हमरो सभकेँ बूझल-सुनल अछि जेकर उल्लेख श्री इन्द्रलाल चौधरीजी अपन लेखमे लिखने छथि। पूर्वमे कहल बातकेँ हम दोहराबए नहि चाहैत छी। एहि विषयक जे हमर नव शोध अछि वा कहू जे भिन्न सुनलहुँ अछि तकर हम उल्लेख एतय करब जाहिसँ बघम्बरी बाबा विषयक अधिकसँ अधिक शोध सामग्री संकलित भऽ सकए आ हुनक कथा दन्तकथाक स्वरूपसँ बाहर आबि इतिहास सम्मत बनि सकए। जेना बघम्बरी बाबाक बाघ बननाइ दन्तकथा रूपमे श्रुत अछि। ई पूर्णतया संभव अछि जे जंगल रहबाक कारणेँ हिंसक जानवर सभसँ गामक मनुक्ख आ पशु सभपर रातिमे विशेष खतरा रहल हेतै। एहन विकट समय ओ बाघक छाल ओढ़ि अन्य हिंसक जीव सभसँ गामक रक्षा करैत छलथि जे कालान्तरमे हुनका विषयमे स्वयं बाघ बनि गामक रक्षा करबाक बात जनकंठमे आबि गेल हो। मुदा इहो निर्णय करब जे बाघक छाल ओढ़ि बाघक रूप धरैत जँ रातिमे विचरण करब तखन अन्य जीव-जन्तु एहि बाघक डरसँ हटले रहत, ककरो कोनो क्षत्ति नहि करत, कम पैघ साहस नहि अछि। अपूर्व दूरदर्शिता आ स्वयं अपन प्राण संकटमे दैत लोकक रक्षा करबाक दृढ़ता अद्‌भुत अछि। हुनक ई भाव आ विशिष्ट पुरुषार्थ हुनका पूज्य बनएबा लेल यथेष्ट अछि।

कन्हाइ लाल झाक काली माताक साधना विषयक अनेक गाथासभ सेहो प्रचलित अछि। बघम्बरी बाबाक सलाहपर ओ पुरनदाहा पोखरिपर खोपरी बना कऽ काली माताक आराधना-तपस्या शुरू कएलनि। जखन तपस्या अन्तिम चरणमे पहुँचल तऽ एक निशाभाग रातिमे भगवती काली स्वयं प्रकट भेलीह आ 'बलि' मँगलनि। काली मैयाक प्रकट होइत हुनकर सवारी शेर जोरसँ दहाड़लक। पूर्वसँ राखल बलिप्रदान हेतु छागर आ बलि प्रदान करएवलासभ दहाड़ सुनि भयसँ पड़ा गेल। तखन खड्गसँ अपन जाँघ चीरि कन्हाइ लाल झा काली माताक आज्ञा पूरा कएलनि। ओकर बाद काली माता हिनका कुशसँ बलिप्रदान करबाक वरदान

देलथिन। एखन हमर एक दियादमे उपनयनमे कुमरम् दिन प्रति बरुआ काली मायकेँ दूटा छागरक बलि देल जाइत छैक आ एकटा ब्रह्मकेँ। ओ अपने परिवारक लोक बलिप्रदान करैत छथि।

कन्हाइ लाल झा खड्गसँ जाँघ चिरलाक किछु दिन बाद पूर्ण स्वस्थ तऽ भऽ गेलाह मुदा जीवन भरि नँगरा कऽ चलैत रहलाह। बघम्बरी बाबाक शिष्य रूपमे हुनक यश बहुत दूर-दूर धरि पसरलनि। ओ घोड़ा, ताँगा वा बग्घीपर चलैत छलाह। एहन जन आस्था रहए जे हुनक आशीर्वादसँ असाध्य रोग सेहो छुटि जाइत अछि।

एक बेर घोंघौरमे भयंकर अकाल पड़ल। कहू जे पूरा इलाका भरिमे सौँसे अकाल पड़लैक। ओहि समयमे गामसँ पूब (East) सोनी नदी बहैत छलीह। तावत धरि कमला नदी इम्हर नहि आएल रहथि। जलक एकमात्र स्रोत वैह सोनी नदी छलीह। मुदा घोंघौरसँ दू-तीन कोस उत्तर केर गामक लोकसभ सोनी नदीकेँ बान्हि देने रहथिन। पानिक अभाओमे सम्पूर्ण घोंघौर गाममे हाहाकार मचि गेलै। गामक दक्षिण ब्रह्मस्थानमे सम्पूर्ण गामक लोक जमा भेल। ओतए यैह विमर्श भेलै जे अपना सभक खेतसभ अकालमे सुखा रहल अछि आ उत्तर केर लोक सोनी नदीकेँ बान्हि कऽ अपन खेत पटा रहल छथि। ई बड़ पैघ संकट अछि। गामक खेत नहि पाटत तऽ उपजा नहि होएत आ सब गोटे अन्नक अभावमे भूखसँ मरि जाएब। तखने एकटा दुसाध (पासवान) एकर रस्ता सुझौलनि। ओ मुरति पासवानजीक पूर्वज छलाह। ओ कहलनि जे हम 'सैन्ह' काटएमे सिद्धहस्त छी। हम ई काज कऽ सकैत छी। एखन बान्हक कारणेँ सोनीमे भरपूर पानि छैक। हम डूब्बी मारिकेँ बान्हमे तेहेन 'सैन्ह' कटबै जे केओ तुरत बान्हि नहि सकत। सैह भेलै। जखन हुनका सभकेँ पता चललनि तऽ बघम्बरी बाबा स्थलसँ एक कोस उत्तर भीषण लड़ाइ भेलै। दोसर दिसक दू आदमीक हत्या भऽ गेलै। घोंघौर वला सभकेँ कुशक कलेपो नहि। थाना-पुलिस आएल। घोंघौरक बावन आदमी मुद्दालह भऽ जहल पठाएल गेलाह। सभ सिरगर लोक (प्रमुख व्यक्ति) छलाह। आब की हैत? पूरा गाम ज्योतिष आ तांत्रिक कन्हाइ लाल झा लग गेल। हुनका कहल गेलनि जे अहीं आब कोनहुँ उपाय करू जाहिसँ अपन गामक सब लोक जहलसँ छुटि सकथि।

ओहि दिनमे अदालत शुरू भऽ गेल छलै। दरभंगा-मधुबनी जिला नहि भेल छल। तिरहुतक सभसँ निम्न कोर्ट मुजफ्फरपुरमे रहए। बादमे जिला अदालत स्थापित भेल। मुजफ्फरपुरमे जिला एवं सत्र न्यायाधीशक रूपमे पहिल नाम मि. आर. जे. रिचर्डसन अंकित अछि। मुदा उत्तराधिकार पट्टपर हुनक समय अंकित नहि अछि। स्पष्ट अछि जे हुनक कार्यावधि निस्तुकी नहि अछि। जनिक कार्यकाल उल्लिखित अछि एहिमे प्रथम न्यायाधीश छथि मि. आर. एल. मैंग्ल्स। हुनक कार्यावधि 1875-76 ई. अंकित अछि। ओना 1782 ई.मे मि. फ्रांसिस ग्रैण्ड तिरहुत (मुजफ्फरपुर)क पहिल कलक्टर नियुक्त भेल छलाह। दरभंगा 1875मे तिरहुतसँ अलग होइत जिला बनल आ मि. ए पी मैकडॉनेल एतय केर पहिल कलक्टर भेलाह। दरभंगासँ अलग भऽ मधुबनी 1972 ई.मे स्वतंत्र जिला बनल।

लोकक अनुनय-विनयसँ द्रवित भऽ कन्हाइ लाल झा बग्घीसँ मुजफ्फरपुर पहुँचलाह। ओहि समय एक अंग्रेज न्यायाधीशक पदपर रहथि। पता लगलनि जे न्यायाधीशक बेटी बताहि भऽ गेल छैक आ ठीक नहि भऽ रहल छैक। कन्हाइ लाल झा न्यायाधीशक परेशान पत्नीसँ कहलथिन जे हम अहाँक बेटीकेँ ठीक कऽ सकैत छी। अहाँक बेटी स्वस्थ भऽ जेतीह। ओ तुरंत अपन पति अर्थात् न्यायाधीश महोदयकेँ कहलनि। न्यायाधीश महोदयकेँ शंका भेलनि जे कोनहुँ षड्यंत्र तऽ नहि अछि। ओ पुछलनि जे अहाँक फीस की होएत ? कन्हाइजी कहलनि जे किछु नहि। हिनका इलाज करबाक अनुमति भेटलनि। न्यायाधीश अपना बेटीकेँ एकटा घरमे बन्द कएने रहथि। ओतहि पेशाब-पैखानाक उचित इन्तजाम कऽ देने रहथि।

घरक कुण्डी खोलैत देरी ओ लोक सभपर पैखाना आदि फेकए लागए। कन्हाइ लाल झा कहलथिन जे अहाँसभ बघम्बरी बाबाक जयकारा लगाऊ आ केबाड़क कुण्डी खोलि दियौ। कुण्डी खोलैत देरी ओ बच्ची विष्ठा लऽ कऽ दौड़ल मुदा कन्हाइ बाबाक आँखिसँ आँखि मिलैत देरी ठाढ़ भऽ गेलीह। बघम्बरी बाबाक जयकारा लगैत रहल। ई ओकरा माथपर हाथ राखि किछु मंत्र पढ़ए लगलाह। किछुए कालमे ओ बच्ची सामान्य भऽ गेलीह। न्यायाधीश दुनू पति-पत्नी हतप्रभ छलथि। बाबा अपना बग्घीपर बैसि विदा भऽ रहल छलाह किएक तऽ उपचार

नि:शुल्क छल। मुदा दुनू पति-पत्नी बाबाक पयरपर खसि पड़ल आ किछु सेवा करबाक याचना कएलक। हुनक निवेदनक बाद कन्हाइ बाबा अपन बात रखलनि जे बघम्बरी बाबाक भक्तसभ जहलमे छथि आ ओहि केस केर फैसला अहीँ देबै। ओहि दिन फैसलाक डेट रहए। ओ न्यायाधीश निर्णय देलक जे 8 बजे रातिकेँ हत्या भेल, केओ ककरो देखि वा चीन्ह नहि सकैत छल तैं किनकोपर हत्याक आरोप प्रमाणित नहि होइत अछि। सभ गोटे रिहा भऽ गेलाह। इहो कहल जाइत छैक जे कन्हाइ लाल झा स्वयं ओकर बेटीकेँ तंत्रक बलसँ बताहि बना देने रहथिन। ई तर्कसंगत नहि लगैत अछि मुदा कोनो बताहिकेँ सम्मोहन आ मनोचिकित्सासँ सही अवश्य कयल जा सकैछ।

कन्हाइ लाल झा बघम्बरी स्थानक कर्ता-धर्ता रहथि। ओहि स्थानपर पूजाक उपरान्त बघम्बरी बाबाकेँ स्मरण कऽ जे प्रसाद ओ मँगथिन से हुनका हाथमे आबि जाइत छल। बहुत रास किंवदन्तीसभ अछि। एक बेर स्थलपर साधुसभक पंगत छल। भोजनक उपरान्त जखन सुपारी देबाक बेर आएल तऽ ध्यान एलै जे सुपारी तऽ अछिए नहि। सब चिन्तित भऽ गेल। कन्हाइ लाल बाबा कहलनि जे आधा पाइ लऽ कऽ दासजीक गोलासँ लऽ आबह। आधा पाइसँ की हैत? साधु-संत तऽ बहुत छथि। मुदा दुकानसँ सुपारी आबयसँ पूर्वहि आधा बोरा सुपारी स्थलपर पहुँचि गेलै। बादमे पता चलल जे दासजीक गोलामे सुपारीक बोराक मुह खुजलाक बाद ओहिमेसँ आधा बोरा सुपारी गायब भऽ गेलै। आदि-आदि।

बघम्बरी बाबाक महिमा अपरम्पार छनि। कोइ श्रद्धासँ हुनकासँ जे मँगैत छनि से पूरा होइत छैक। बहुत लोकक अटूट श्रद्धा आ विश्वास अछि।

1972मे मैट्रिक पास कएलाक बाद हम गामसँ पटना आबि गेलहुँ। स्थलसँ सम्पर्क कम भऽ गेल वा कही तऽ एकदम बन्न भऽ गेल। ओहि जगहक गतिविधिसभसँ सेहो अनभिज्ञ रहए लगलहुँ। फेर राजनीतिक आपा-धापी! गाम जएबो करैत छलहुँ तऽ बहुत कम समयक लेल। 1987मे बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगमक उपाध्यक्ष बनलहुँ, राज्य मंत्रीक दर्जा छल। मुदा ओम्हर ध्यान नहि गेल। 2005मे पण्डौलसँ विधायक निर्वाचित भेलहुँ। हमर ग्राम हमरा क्षेत्रमे नहि छल मुदा गामक सीमानसँ पण्डौल क्षेत्र शुरू भऽ जाइत छल। ध्यान आएल जे गामक प्रवेशपर एकटा द्वार बनाबी। काज शुरू भेल। सूर्यकान्त कक्का पुछलनि जे ई द्वार अपन स्वर्गीय पिताक नामपर बना रहल छी? हम कहलिएनि नहि, सम्पूर्ण गामक पिता बघम्बरी बाबाक नामपर बना रहल छी। मुदा अनेक व्यवधान भेल आ द्वार अपूर्ण रहि गेल।

वर्तमानमे बघम्बरी बाबा स्थानकेँ नव रूप दिएबाक श्रेय श्री इन्द्र लाल चौधरीजीकेँ छनि। ई शिक्षक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाक उपरान्त गाममे स्थायी निवास केलनि। सेवानिवृत्त भेलाक बाद पछिला 20 वर्षसँ बघम्बरी स्थानक उन्नयन एवं विकास हेतु अनवरत प्रयत्नशील छथि। तन-मन-धनसँ ओ एहि काजक लेल समर्पित छथि। श्री इन्द्रलाल चौधरीजी एहि बातक उदाहरण छथि जे जँ एक व्यक्ति समर्पित भावसँ कोनहुँ विकासक कार्य हेतु लागि जाए, तऽ कोनहुँ काज असम्भव नहि छैक।

विधायक भेलाक बाद हम जखन गाम आबी, तुरंत मास्टर साहब हमरा बघम्बरी बाबा स्थान लऽ जेबाक लेल प्रयासरत भऽ जाइत छलाह। एक-दू बेर कहुना गेल रही, मुदा बेसी काल व्यस्तताक बात कहि अगिला महिना आएब, यैह कहि पिण्ड छोड़ा लैत रही। मुदा मास्टर साहेब अपन प्रयास नहि छोड़लनि। 2010मे बेनीपट्टीसँ हमरा पार्टी अपन उम्मीदवार बनओलक। मास्टर साहेब बाबाक आशीर्वाद हमरा देलनि। कहलनि जे पूरा चुनावमे ई आशीर्वाद अपन जेबीमे रखने रहब। हम चुनाव जीति गेलहुँ मुदा स्थल वा गाममे कोनहुँ उल्लेखनीय काज करएबाक अधिकार हमरा नहि छल। ओना समय-समयपर अपन माएक आदेशपर स्थल या पाँड़े पोखरिक मंदिरमे यथासम्भव आर्थिक सहयोग करैत रहलहुँ।

2015मे हम चुनावमे पराजित भऽ गेलहुँ। मुदा एक सालक अन्दर पार्टी हमरा बिहार विधान परिषद् केर सदस्य बना देलक। आब हमरा पूरा बिहारमे विधान पार्षद् निधि खर्च करबाक अधिकार प्राप्त भऽ गेल। गाममे विकास कार्य आरंभ भेल। सभसँ पहिने पाँड़े पोखरिमे घाट निर्माण, फेर उच्च विद्यालयमे पुस्तकालय

आ चहारदिवारी निर्माण, फेखरा पोखरिमे घाटक निर्माण आदि काज भेल। मुदा बघम्बरी स्थलमे व्यय करबाक अधिकार नहि छल। मास्टर साहेबक प्रयास आ उत्प्रेरण अनवरत चलि रहल छल। सभसँ पहिने आवश्यक छल बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद्सँ स्थानक निबंधन। हमर अनुज श्री चन्द्रकान्त दिन-राति लागि गेलाह। एहि बीच हम लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभागक मंत्री बनि गेलहुँ। स्थलक निबंधन भऽ गेल, निबंधन संख्या-4486/2019 अछि। आब एहिपर धन खर्च करबाक अधिकार प्राप्त भऽ गेल। बघम्बरी स्थलक दू बीघाक परिसर अतिक्रमणसँ बाँचल छल। लगभग 30 लाख टाकामे ओकर घेराबन्दी सम्पन्न भेल। आब हमरा मोनमे आबए लागल जे बघम्बरी बाबा एकटा योजनाक तहत हमरा विधान पार्षद बनओलनि। आब हमरा अन्य विकासक कार्य अपन एहि कोषसँ करबाक छल। बेहटा (बेनीपट्टी)मे हम घर बना चुकल रही। ओ आब हमर गाम अछि मुदा जन्मस्थान तऽ घोंघौर गामे अछि। आब गामक पोखरि सभमे पाँचटा घाट, गामक प्रवेशमे बघम्बरी बाबा द्वार, ब्रह्मस्थानक घेराबन्दी कार्य प्रारम्भ भेल। आब असल छल बघम्बरी बाबा स्थानक उन्नयन आ विकास।

चहारदिवारी निर्माणक पश्चात् स्थलक स्वरूप अत्यन्त आकर्षक भऽ गेल। ओहि परिसरमे लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग (PHED) द्वारा इनारक विकास, विधान पार्षद निधिसँ अतिथिगृहक निर्माण, छतदार कीर्तन मंचक निर्माण कार्य अंतिम चरणमे अछि। एहि सभमे श्री शंकर झा (रामपट्टी) आ श्री शिवराम ठाकुरक उल्लेखनीय सहयोग छनि। आब इलाकाक नव पीढ़ीक आकर्षण आ श्रद्धाक केन्द्र ई स्थान बनल जा रहल अछि। ई गर्वक विषय थिक। नव पीढ़ी बघम्बरी बाबा आ एहि स्थलक विषयमे जानि कऽ गौरवान्वित भऽ रहल छथि। मुदा एकर प्रगटीकरण शेष छल। एक दिन बेनीपट्टीक नगवास पंचायतक बरही ग्रामक हनुमान मंदिरक युवा पुजारी श्री सुमित कुमार हमरासँ मिलि कऽ यज्ञमे आमंत्रित कएलनि। हम जखन बरही कथा यज्ञमे उपस्थित भेलहुँ तऽ हमरा बड़ आश्चर्य भेल। छोट-छीन गाममे एहेन भव्य आयोजन! ई कोना होइत छैक? हम श्री सुमित महात्माकेँ पुछलियनि। ओ कहलथि– "भगवान् करबै छथिन।" हम पुछलियनि जे हमर गामक बघम्बरी स्थानमे नहि भऽ सकैत छैक?

ओ कहलनि– "अवश्य हेतै।" तकर बाद ओ लागि गेलाह। दिनांक 10 फरवरी 2021सँ 19 फरवरी 2021 तक सुश्री मंजुलताजीक मुखारविन्दसँ श्रीराम कथाक वाचन भेल। 9 बजे रात्रि धरि कार्यक्रम चलैत छल। हजारक हजार लोक बघम्बरी बाबा स्थलपर जमा भेलाह। पूरा इलाकाक विशेष कऽ नव पीढ़ीक सहयोग असाधारण छल। ग्रामीणक सहयोगसँ कथा यज्ञ निर्विघ्न भावसँ सम्पन्न भेल। मास्टर साहेब श्री इन्द्रलाल चौधरीजीक अभिभावकत्वमे श्री जयराम चौधरी, श्री शिवराम ठाकुर सहित पचासो नौजवान दिन-राति परिश्रम कऽ एहि यज्ञकेँ नीकसँ सम्पन्न करओलनि।

बघम्बरी बाबाक आशीर्वादसँ घोंघौर गामक क्षमता असाधारण छैक। जे काज ठानि लैत अछि ओकरा नीक जकाँ सम्पन्न कऽ कऽ रहत। ग्राम गौरवक नैसर्गिक भावना समस्त ग्रामीणकेँ छनि। गाममे केओ बड़का, अमीर वा जमींदार नहि छथि सभ समान छथि। एतय वर्ष 1901मे प्राथमिक विद्यालय आओर 1954मे उच्च विद्यालय खुजल। ई सबटा घोंघौरक अपार इच्छा शक्तिक प्रमाण थिक।

बघम्बरी बाब राम-जानकीक उपासक छलाह। ओ एक तरहसँ जंगलमे राम जानकी मंदिरक पुजेगरी छलाह। अर्थात् ओ राम भक्त छलाह। हमरा इलाकाक लोकक इच्छा अछि जे बघम्बरी बाबा स्थान परिसरमे भव्य राम मंदिरक निर्माण होइ। पूरा ग्रामीण संकल्पबद्ध छथि। इहो कार्य निकट भविष्यमे अवश्य प्रारम्भ होएत।

बघम्बरी बाबा स्थलक कारणेँ घोंघौर ग्रामपर ईश्वरक असीम कृपा छनि। आइ धरि पैघ आगिलगी नहि भेल। कोनहुँ समयमे हैजा, प्लेग वा चेचक सन महामारी नहि भेल। जखन सम्पूर्ण संसार कोरोना सन भयंकर महामारीसँ संकटग्रस्त छल तखनो हमर गाममे एको आदमी कोरोनासँ पीड़ित नहि भेलाह। ग्रामीण सभक विश्वास अछि जे बघम्बरी बाबा गामकेँ बान्हि देने छथिन। एहि अखंड आस्थाक मूलमे बघम्बरी बाबाक आशीर्वाद अछि। बघम्बरी बाबा स्थल एहि तथ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि जे एकटा साधारण मनुक्ख अपन सद्गुणसँ कोना देवता बनि जाइत छथि। बघम्बरी बाबाक जय !!

•••

डा. शंकरदेवझा

लहेरियासराय, दरभंगा।

सम्पर्क : +91 8210912761

मिथिलाक इतिहास ओ संस्कृतिक मर्मज्ञ विद्वान ओ अनुसन्धाताक रूपमे ख्यात डा. शंकरदेवझा मैथिली भाषा-साहित्यक गम्भीर अध्येता ओ रचनाकार छथि। नव-नव तथ्यक तार्किक-वैज्ञानिक विश्लेषण कयनिहार डा. झाक 'अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचार' (पत्र-साहित्य), सन्धि-समास (कथा-संग्रह), 'व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहनझा' (जीवनी), 'स जीवति गुणा यस्य' (डा. रामदेवझाक जीवन-रेखाङ्कन), 'अठारहवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास', 'प्ररोचना' (मैथिली समालोचना संग्रह), 'मैथिली नाटक ओ रंगमंचक विश्लेषणात्मक अध्ययन', 'मिथिला-संस्कृतिक विविध आयाम' प्रभृति हिनक मौलिक कृति प्रकाशित आ चर्चित छनि। 'छाहक डड़ीर' अमिताभघोषक अंग्रेजी उपन्यास 'द शैडो लाइन्स' एवं 'नव-नीता' नवनीता देवसेनक बाङ्ला रचना-संग्रहक मैथिली अनुवाद कयने छथि। एकरा अतिरिक्त दर्जनाधिक पोथी, स्मृति-ग्रन्थ, व्यंग्य-स्तम्भ आदिक कुशल सम्पादन कयने छथि।

मिथिलाक एकटा विस्मृत कलोत्सव परम्परा : दोलिक नाच

बच्चामे अपन पितामही स्मृतिशेष देवयतीदेवी प्रसिद्ध बच्चादाइक मुखसँ अनेक बेर सुनैत रहियनि जे हुनक नैहर आनन्दपुर-सहोरा(दरभंगा)क गाछीमे 'दोरिक नाच' होइत छलनि। मुदा ई 'दोरिक नाच' की होइत छल से हुनका जीवैत कहियो सविस्तार बूझि नहि सकलहुँ। तखन मनमे यैह धारणा बनि कऽ रहि गेल जे पमरिया, नटुआक नाच किंवा सलहेसक नाच सदृशे इहो कोनो नाच रहल होयतैक।

पत्रकारिता वृत्तिमे अयलाक बाद मिथिलाक ज्ञात-अज्ञात, प्रचलित-विस्मृत विभिन्न प्रदर्श ओ ललित कला परम्परापर योजनापूर्वक नियमित रूपसँ आलेख ओ रिपोर्ताज आदि लिखैत रहबाक क्रममे एक बेर विचार भेल जे बाबीक मूँहसँ सूनल ओहि 'दोरिक नाच'क सम्बन्धमे किछु थाह-पता लगा कऽ एकटा आलेख तैयार करी। ताहि क्रममे एक दिन दुपहरियामे आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनक राजकुमारगंज(दरभंगा) स्थित आवास 'मैथिली मन्दिर'क अगुऐतमे रौदमे बैसि हुनका संग गप्प करैत रही की हठात् हमरा फुरि गेल आ हम हुनकासँ पूछि बैसलियनि जे, 'ई दोरिक नाच की होइत छलैक?' ओ हमरा द्वारा उच्चरित संज्ञाकेँ संशोधित करैत कहलनि जे, "दोरिक नहि, दोलिक नाच होइत छलैक आ एही माघ-फागुनमे होइत छलैक।"

हुनकासँ एहि गप्पक बाद हम ई जानि सकलहुँ जे जाहि नाचक सम्बन्धमे हमर जिज्ञासा छल तकर शुद्ध नाम 'दोलिक' छैक। लोकमुखी भाषामे मुखसुखक कारणे बहुधा 'र' आ 'ल'मे अभेद भऽ जाइत छैक तेँ हमर बाबी जकरा 'दोरिक' कहैत छलथिन तकर शुद्ध संज्ञा 'दोलिक' छैक। आचार्य सुमन किञ्चित बिहुँसैत कहलनि जे— हमर रोसड़ा अञ्चलमे हमर गाम बल्लीपुर, ओ पार्श्ववर्त्ती करियन, बलहा आदिमे ई कहियो होइत छलैक। आनन्दपुर डेउढीक बाबूसाहेब लोकनि एकर बड़ भव्य आयोजन करबैत छलाह। उमाकान्त, दरबारीदास, गौहरबाई आदि लोकनिकेँ आमन्त्रित कयल जाइत छलनि। गीत-नाद, नाटक, कविसम्मेलन आदि होइत छलैक। एक-आध बेर हमहूँ ओहिमे कविवर सीतारामझाक संग काव्यपाठ कयने छी।'

आचार्य सुमन किछु औरो विस्तारसँ कहितथि ओ हम 'दोलिक' शब्दक व्युत्पत्तिक सम्बन्धमे पुछितियनि की तावत राघोपुर डेउढ़ीक बाबूसाहेब बाबू कृष्णनन्दनसिंहक पदार्पण भऽ गेलनि। आचार्य

सुमन हुनका स्वागतपूर्वक हाथ पकड़ि कुर्सीपर बैसौलथिन। तेहनामे हमरा द्वारा ठाढ़ कयल गेल 'दोरिक' प्रसंग तऽर पड़ि गेल ओ सामवेद, सामवेदक ऋचा ओ ऋचाक गान पद्धति आदिपर चर्चा-अर्चा होअऽ लागल। इहो चर्चा हमरा हेतु कम महत्त्वक नहि छल। तथापि ओहि दिन आचार्यक सान्निध्यसँ एतेक गप्प अवश्य जानि सकलहुँ जे 'दोलिक' कोनो नाचक विशेष प्रकार किंवा कोनो कलोपजीवी जातिक संज्ञा नहि थिक अपितु माघ-फागुनमे आयोजित भेनिहार एकटा विशिष्ट सामाजिक उत्सव छल जाहिमे विभिन्न प्रकारक प्रदर्शनीय कलाक प्रस्तुति भेल करैत छल।

'दोलिक' शब्दक व्युत्पत्ति ओ एकर इतिहासक कोनो स्रोत धरि पहुँचि सकबाक दिशामे चिन्तनशील बनल रहलहुँ संगहि संग आनहुँ आन शोधजन्य लेखन चलैत रहल। ताही क्रममे विद्यापतिपर पढ़बाक क्रममे अनेक ठाम अनेक विद्वान लोकनिक एहि धारणासँ अवगत भेलहुँ जे भाषामे काव्य-रचना करबाक कारणे समकालीन संस्कृतज्ञ पण्डित लोकनि विद्यापतिक उपहास करैत छलथिन। एहि उपहासकर्त्तामे केशवमिश्रक नाम प्रमुखतासँ लेल जाइत छनि, जनिका सम्बन्धमे कहल जाइछ जे ओ अपन प्रसिद्ध कृति 'अलंकार शेखर'मे विद्यापतिकेँ धू धरा कऽ हुनका 'अतिलुब्ध नगरयाचक' कहने छथिन।[1]

केशवमिश्र ओइनिवार नरेश रामभद्रसिंहदेवक समकालीन छलाह जनिक कालखण्ड पन्द्रहम-सोलहम शताब्दीक सन्धिकाल छलनि।[2] यद्यपि तावत धरि विद्यापति दिवंगत भऽ गेल छलाह। तेहनामे ई उचित नहि बुझना जाइत अछि जे एकटा दिवंगत मनीषीक उपहास केशवमिश्र कयने छल होयथिन। एतबे नहि केशवमिश्रक 'अलंकारशेखर' नामक ओ कृति जकर उल्लेख पूर्वमे भेल अछि ताहिमे उपहासमूलक एकटा औरो श्लोक अछि जकर भावार्थ ई जे पामर परिषद्मे प्रशंसित भेनिहार दोलीककर्त्ता लोकनि अर्थात् तन्निमित्त काव्य-रचना कयनिहार व्यक्ति लोकनिकेँ कथमपि स्वयंकेँ विद्वान कहयबाक स्पृहा नहि करबाक चाहियनि—

श्लाघ्यः पामर परिषदिकवयति दोलीक कर्त्तापि,
यस्मै स्पृहयति विद्वांस्तत्काव्यं काव्यमित्याहुः॥[3]

आब उपर्युक्त उद्धरणमे भने जनिकापर आक्षेप कयल गेल होइनि, से एखन हमर विचारक विषय नहि अछि। हमर विचारक विषय ई जे अलंकारशेखरसँ एतबा अवश्य प्रमाणित होइत अछि जे ओइनिवार कालीन मिथिलामे 'दोलिक' नामसँ कोनो उत्सव भेल करैत छल जाहिमे भाषामे रचित गीत-संगीत, नाटक आदिक प्रदर्शन भेल करैत छल। अवश्ये प्रखर विद्वान लोकनिक दृष्टिमे 'दोलिक' नामक ई उत्सव मूर्ख-अनपढ़ आदि लोकनिक मनोरंजनक साधन छल आ तन्निमित्त गीत-काव्य आदिक रचना कयनिहार व्यक्ति लोकनिकेँ 'दोलीककर्त्ता' कहि केशवमिश्र हुनक उपहास कयने छलथिन।

'अलंकारशेखर'सँ 'दोलिक' उत्सवक ऐतिहासिकताक सन्दर्भमे एकटा सशक्त अभिलेखीय प्रमाण तँ प्राप्त भेल किन्तु एहि दोलिक शब्दक व्युत्पत्तिक गीरह तथापि नहि सोझरा सकल।

'मैथिली नाटक ओ रंगमंच' विषयक अपन विस्तृत शोधकर्मक क्रममे एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक विषयक आलेख पढ़बाक अवसर भेटल जकर लेखक छलाह डॉ. थ्यिडोर ब्लॉख। पुरातत्ववेत्ता डा. ब्लॉख 1894 इ.मे वर्त्तमान छत्तीसगढ़ राज्यक सरगुजा जिला स्थित रामगढ़क पहाड़ीक दूटा गुफामे स्थित दू गोट प्राचीन प्रेक्षागारक पता लगौलनि। ओहि दुनू गुफाक नाम अछि सीताबेंगरा एवं जोगीमारा।[4]

उपर्युक्त दुनू गुफामे पाथरकेँ छेबि कऽ सुव्यवस्थित ढंगसँ रंगशाला बनाओल गेल छल जाहिमे एक दिस मंच अछि आ दोसर दिस प्रेक्षक लोकनिक बैसबाक हेतु कुर्सीनुमा आधार सब बनल अछि। एहि दुनू गुफामे पाथरपर उत्कीर्ण किछु अभिलेख सेहो अछि। सीताबेंगरा गुफामे ब्राह्मी लिपिमे उत्कीर्ण अभिलेखक पाठ निम्न रूपक अछि—

अद्रिपर्यति हृदयं।
सभावा गरु कवयो ए रातयं...

दुले वसन्तिया।
हासावानूभूते।
कुद्धस्फतं एवं अलंग (त)।

सीताबेंगरा गुफा स्थित प्रेक्षागारक अन्वेषक विद्वान पुरावेत्ता डा. ब्लॉख एहि गुफामे उत्कीर्ण अभिलेखक अर्थ निम्न रूपेँ कयलनि अछि— कवि लोकनिक सम्मान होयबाक चाहियनि कारण ओ हमरा लोकनिकेँ प्रोत्साहन दैत छथि। वसन्त ऋतुमे आयोजित दोलोत्सवमे गीत-नाद होइत अछि। हास्यक स्रोत प्रस्फुटित होइत अछि। ग्रीवामे मालती माला पहिरने लोक आनन्द मनबैत अछि।

डा. ब्लॉखक अनुसार ईसासँ तीन सय वर्ष पूर्व गुप्तसम्राट अशोकक समयक एहि गुफा-रंगशालामे काव्यपाठ, श्रृंगारिक गीत एवं नाटकादिक अभिनय भेल करैत छल।[5]

सीताबेंगरा गुफा स्थित प्राचीन प्रेक्षागार ओ ओहिमे उत्कीर्ण अभिलेखसँ कतोक ओझरायल तथ्य सब सोझरा जाइत अछि। प्रथम तँ मिथिलामे कहियो प्रचलित 'दोलिक नाच'क पूर्व पद 'दोलिक' शब्दक व्युत्पत्ति भेटि जाइत अछि। 'दोलिक' शब्द 'दोल'क परिवर्त्तित रूप किंवा भाववाचक थिक, जकर सोझ अर्थ थिक झूला। 'शब्दकल्पद्रुम'मे सेहो एकर अर्थ झूलाहिक रूपमे कयल गेल अछि— उद्यानादिषु क्रीडर्थं काष्ठादिमयो हिन्दोलक:।' यैह हिन्दोल मैथिलीमे झूलाक पर्याय रूपमे 'हिलोरा' भऽ गेल अछि। शास्त्रीय संगीतमे सेहो एकटा रागक नाम अछि 'हिन्दोल' जकर गायन मुख्यत: वसन्त ऋतुमे होइत अछि। मिथिलाक शास्त्रीय संगीत परम्परामे सेहो हिन्दोल एकटा सुपरिचित रागक रूपमे मान्य रहल अछि, जकर उल्लेख वर्णरत्नाकर ओ रागतरंगिणीमे भेटैत अछि। एतेक धरि जे बीसम शताब्दीमे कविवर जीवनझा सेहो हिन्दोल रागमे झूलाक विषय-वस्तु आधारित गीतक रचना कयने छथि।

तात्पर्य ई जे वसन्त सन मधुमासमे जखन प्रकृतिक यौवन प्रस्फुटित होइत छैक, वातावरणमे मादकता रहैत छैक, ताहि समयमे वन-उपवनक सुरम्य परिवेशमे परिभ्रमण करैत झूला किंवा मचकी झूलब पूर्वमे एकटा सामान्य विषय रहल होयत। यैह सामूहिक रूपसँ दोल किंवा झूला झुलबाक परम्परा एकटा उत्सवक रूपमे परिवर्त्तित भऽ गेल होयत जकर इतिहास ईसासँ तीनि सय वर्ष पूर्व अशोक धरि तँ जाइते अछि अपितु एकर व्याप्ति अखिल भारतीय स्तरपर छल। सोझ शब्दमे कहल जाय तँ ई वासन्ती दोलोत्सव वैह थिक जकरा वसन्तोत्सव किंवा मदनोत्सव कहि कऽ प्राचीन वाङ्मयमे सम्बोधित कयल जाइत रहल अछि।

सीताबेंगरा गुफाक अभिलेखीय साक्ष्य, केशवमिश्रक अलंकारशेखरक सांकेतिक साक्ष्य ओ अर्वाचीन कालक वृद्ध परम्परासँ प्राप्त साक्ष्य सभक विश्लेषणसँ जे अवधारणा बनैत अछि तदनुसार मिथिलामे दोरिक किंवा 'दोलिक नाच'क नामसँ जे उत्सवक परम्परा छल से मध्य भारतमे आयोजित भेनिहार दोलोत्सवक नामान्तर थिक। एहि उत्सवमे काव्यपाठ, गीत-नाद, नृत्य-नाट्य आदिक प्रस्तुति भेल करैत छल।

दोसर तथ्य ई जे 'दोलिक नाच' किंवा दोलोत्सवक आयोजन कोलाहल भरल नगरीय परिवेशसँ दूर जँ कोनो शान्त-एकान्त उपवन किंवा पहाड़क गुफा आदिमे भेल करैत छल तँ तकर दूटा कारण रहल होयत। प्रथम दोलोत्सव विशुद्ध रूपसँ ऋतुपरक उत्सव छल। तेहनामे वसन्त ऋतुक रमणीयताक अनुभूति गाछ-वृक्ष, लता-पुष्पसँ आच्छादित कोनो उपवन क्षेत्रहिमे भऽ सकैत छल, जतऽ दोला-हिलोराक आनन्द लेबाक संग-संग विभिन्न प्रकारक कला-विलासक आनन्द लेल जाइत छल होयत।

वन्य-पहाड़क क्षेत्रमे दोलोत्सवक आयोजनक दोसर कारण इहो रहल होयत जतऽ कोनो प्रकारक वर्जनासँ मुक्त रहि कऽ स्वच्छन्द मनोरंजन कयल जा सकय। ध्यातव्य थिक जे वसन्त ऋतुक वातावरणमे अनेरे एकटा मादकता रहैत छैक। एहि ऋतुमे लोकक कामेच्छा बेसी जाग्रत रहैत छैक, तेहनामे बहुधा श्लील-अश्लीलक बीचक रेखा मेटा जायब सामान्य बात रहलैक अछि जकर अनुभव आइयो कयल जा सकैत अछि। वसन्तोत्सवकेँ मदनोत्सव कहल जयबाक पाछाँ यैह कारण रहल अछि। एहनामे स्पष्ट अछि जे नगरीय क्षेत्रमे जनसंकुल मध्य घोर श्रृंगारिक कलाक प्रदर्शन ओ ओकर आनन्द उठा सकबाक अशौकर्यकेँ देखैत नगरसँ दूर प्रकृतिक उन्मुक्त वातावरणमे एकर आयोजन करबाक परम्परा छल

होयत। सरगुजा सन पहाड़ी क्षेत्रमे जौँ दोलोत्सवक निमित्त गुफामे स्थाइ रंगशाला बनयबाक परम्परा छल तँ मिथिला सन समतल क्षेत्रमे मजरल-बौड़ायल गाछीक मध्य अस्थाइ रंगशाला बना कऽ एहि उत्सवक आयोजन भेल करैत छल।

वस्तुत: नगरक अशान्त वातावरणसँ दूर कला-विलासक आनन्द लेबाक वर्णन कालिदासक 'कुमारसम्भव' एवं 'मेघदूत' प्रभृति काव्य आदिमे जे भेटैत अछि से कोनो निराधार कल्पना नहि अपितु यथार्थक आधारपर अछि।[6] एकर प्रमाण रामगढ़ पहाड़ीक पूर्व कथित दुनू गुफा-रंगशाला अछि। मिथिला सन समतल क्षेत्रक एकान्त उपवनमे सेहो एहि प्रकारक प्रदर्शनीय कलाक आयोजन भेल करैत छल तकर किछु झलक तेरहम-चौदहम शताब्दीक सन्धिकालमे ज्योतिरीश्वर प्रणीत: आद्य गद्य ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'मे सेहो भेटैत अछि।

वर्णरत्नाकरक पाँचम कल्लोलमे 'वनवर्णना'मे घनघोर वनक बीच किन्नरक गीत जो विद्याधरक आलाप गुँजबाक वर्णन भेल अछि।[7] उपवनवर्णनामे तँ नगरक कोलाहलसँ दूर एकान्त मनोरंजनक हेतु संगीतगृहक व्यवस्थाक वर्णन भेल अछि, जतऽ वारविलासिनी सभक द्वारा गीतक गायन कयल जाइत छल। यथा— वारवीलासिनीक गीतध्वनि, तँ मनोहर एवम्विध उपवन देषु। पुनु कइसन देषु। सङ्गीतगृह. धारागृह. पाठगृह. सङ्केतगृह. तँ मण्डित।[8] मुदा तकरा संगहि ओ उपवन लतामण्डप. लताहिन्दोल. लताभल एवं लतानिकुञ्जसँ सेहो युक्त अछि।[9]

वस्तुत: वर्णरत्नाकरमे सेहो प्रकारान्तरसँ वन्य प्रदेशमे आयोजित भेनिहार वासन्ती कला महोत्सवक वर्णन भेल अछि जे 'दोलिक उत्सव' किंवा 'दोलिक नाच'क परम्पराकेँ सम्पुष्ट करैत अछि।

दोलोत्सव किंवा दोलिक नाचक जे एकटा पक्ष अछि से विशुद्ध रूपसँ एकटा सामाजिक उत्सवक रूपमे रहल अछि। मुदा एकर जे एकटा दोसर पक्ष अछि से आध्यात्मिक महत्वक रहैत आयल अछि। 'आनन्द रामायण'क आठम 'मनोहर काण्ड'क नवम सर्गमे सीता ओ रामक दोलयात्रा उत्सवक विस्तारसँ वर्णन भेल अछि। माघ शुक्ल पञ्चमीसँ प्रारम्भ भऽ कऽ वैशाख कृष्ण पञ्चमी पर्यन्त राम ओ सीताक विग्रहकेँ रथपर विराजमान कऽ गीत-नृत्य उत्सवक संग प्रतिदिन दोलयात्रा निकालि आम्रोद्यानमे लऽ जा कऽ ओतऽ आम्रवृक्षमे बान्हल हिलोरा पर बैसा कऽ झुलयबाक वर्णन भेल अछि। एहि आयोजनमे नट-नर्त्तकी लोकनिक नृत्य, स्त्री लोकनिक मधुर गायन ब्राह्मणजन द्वारा स्तोत्रादिक पाठ ओ विभिन्न प्रकारक वाद्य-वादन कयल जयबाक विधान कयल गेल अछि।[10]

बंगालमे एहि वसन्त ऋतुमे श्रीकृष्णक दोलयात्रा मनयबाक परिपाटी रहल अछि। कहल जाइत अछि जे अन्यान्य क्षेत्र जकाँ पूर्वमे बंगालमे सेहो सामाजिक उत्सवहिक रूपमे दोलयात्राक आयोजन भेल करैत छल जकर एकटा भाग रंगक्रीड़ा भेल करैत छल, जकरा फगुआ वा होरी सेहो कहल जाइछ। मुदा गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायक प्रवर्त्तक चैतन्य महाप्रभु दोलोत्सवक ओहि विभिन्न आयोजन सबकेँ आराध्यदेव भगवान श्रीकृष्णसँ जोड़ि देलनि। तेहिना रंगक्रीड़ाक सम्बन्धमे सेहो ओ विधान कयलनि जे भक्त जन सर्वप्रथम श्रीकृष्णकेँ अबीर लगाय तदुपरि आनन्दोत्सव मनाबथि। चैतन्य द्वारा दोलोत्सवकेँ प्रदान कयल गेल आध्यात्मिक स्वरूपक परिपालन आइयो बंगालमे ओही रूपमे कयल जाइत अछि।[11]

एतावता एतेक बात निर्विवाद जे मिथिला समेत भारतक पैघ भागमे सामाजिक आयोजनक रूपमे दोलोत्सव मनयबाक परम्परा पूर्वमे छल। मिथिलामे सेहो 'दोलिक नाच' कहि कऽ एकर आयोजन होइत छल जकर अनेकश: प्रमाण भेटैत अछि। मुदा न्याय, मीमांसा, ज्योतिष, व्याकरण प्रभृति विद्याक भूमि मिथिलामे बौद्धिक लोकनिक दृष्टिमे दोलोत्सवक आयोजन एकटा अबौद्धिक कृत्य छल। एहि आनन्द-रस विलासक आयोजक, एकर प्रेक्षक एवं एहि आयोजनमे जनिक गीति ओ नाट्य आदिक प्रस्तुति भेल करैत छलनि तनिका सब गोटाक प्रति बौद्धिक लोकनि एकटा उपहासक भाव रखैत छलाह। जे कवि-नाटककार लोकनि अपन गीत ओ नाट्यक कारणे मनोरंजन प्रेमी ओ रसिक जनक बीच आदरणीय मानल जाइत छलाह, तनिका लोकनिकेँ निविष्ट बौद्धिक जन द्वारा 'दोलीककर्त्ता' कहि उपहास कयल जाइत छलनि। वस्तुत: मिथिलामे दोलीककर्त्तासँ तात्पर्य ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापतिसँ लऽ कऽ केशवमिश्रक समकालीन समस्त ओहि कवि-नाटककार लोकनिसँ छल जे लोकनि भाषामे गीत ओ नाटकादिक रचना कयने छलाह किंवा कऽ रहल छलाह।

आब जाहि ज्योतिरीश्वरक 'धूर्त्तसमागम' नामक प्रहसनसँ मिथिलामे भाषा-नाटकक रचनाक श्रीगणेश होइत अछि तकर जे विषय-वस्तु अछि से घोर शृंगारिक ओ हास्य रससँ युक्त अछि। जेना की पूर्वमे कहल गेल अछि जे ऋतुक अनुसार मनुष्यक प्रकृतिमे परिवर्त्तन होइत रहैत छैक। वसन्त ऋतुक समयमे वातावरणमे एकटा मादकता रहैत अछि, जाहिमे मनुष्य अनेरो बहकैत रहैत अछि। एहि ऋतुमे मनुष्यक काम भावनामे वृद्धि भऽ जाइत छैक। स्वभावत: एहि ऋतुमे आयोजित भेनिहार कोनो महोत्सवमे शृंगारिक विषयाधारित गीति-नाट्य आदिक प्रस्तुति समुचिते, ताहिमे जँ उन्मुक्त हास्यक परिपाक हो तँ और सोनमे सुगन्धि। 'धूर्त्तसमागम' प्रहसनक पर्यालोचनसँ ई प्रतीत होइत अछि जे जेना एकर रचना दोलोत्सव किंवा वसन्तोत्सवहिमे अभिनयक निमित्त भेल छल, अपितु एहि धारणाक सम्पुष्टि आलोच्य प्रहसनक प्रस्तावना विधानसँ सेहो भऽ जाइत अछि।

आलोच्य प्रहसनक प्रस्तावनामे नटी-सूत्रधारक संवादसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एकर रचना वसन्त ऋतुअहिमे अभिनयार्थ भेल छल। एहि प्रहसनक प्रधान रसक सम्बन्धमे नटीक जिज्ञासाक उत्तरमे सूत्रधार कहैत अछि जे, 'पूर्ण प्रस्फुटित मालतीक मकरन्दक सुगन्धिसँ मदमत्त भेल भ्रमरक गुञ्जनसँ गूंजित एहि वसन्तमे सतत कामदेवकेँ उद्दीप्त कयनिहार तँ शृंगारे रस अछि। जेना की प्रस्फुटित बेली पुष्पक कुञ्ज, गुञ्जन करैत भ्रमरसँ युक्त, मजरल आम्रवृक्षक पाँती एवं परागसँ युक्त तथा प्रमुदित कोइलीक कण्ठसँ नि:सरित मधुर मङ्गलध्वनिसँ समन्वित ई वसन्त ऋतु मुनि लोकनिक मनक सेहो हरण कऽ लैछ—

ननु प्रोत्फुल्ल-मालती-मकरन्द-सान्द्रमोदमत्त-मधुकर-झङ्कार- मुखरे वसन्ते सन्ततोज्जृम्भिताऽनङ्ग: शृङ्गार एव। तथा हि—

विकसित नवमल्ली-कुञ्ज-गुञ्जद्भिरेफ:
कुसुमित-सहकार-श्रेणि-निर्यत्परागः।
प्रमुदित पिक-कण्ठ-प्रोच्छलन्मङ्गलश्री-
रपहरति मुनेरप्येष चेतो बसन्तः॥[12]

वस्तुत: धूर्त्तसमागमक प्रस्तावनाक अतिरिक्त एकर प्रथम अङ्कक आरम्भमे जाहि प्रकारेँ वसन्तक मादकताक हृदयस्पर्शी वर्णन करैत ओही परिवेशमे प्रहसनक घटनाक्रमकेँ घटित कराओल गेल अछि, तकरा देखैत नि:संकोच कहल जा सकैत अछि जे एकर रचना दोलोत्सव प्रभृति कोनो वासन्ती आयोजनमे अभिनयार्थ कयल गेल छल होयत। एतऽ एकटा विशेष बात ध्यातव्य थिक जे एहि वासन्ती दोलोत्सवक प्रतीक पुष्प मालती भेल करैत छल जकर उल्लेख सीताबेंगरा गुफाक अभिलेख, धूर्त्तसमागम प्रहसनक प्रस्तावना एवं जीवनझाक हिन्दोल राग निबद्ध एकगोट गीतमे सेहो भेटैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक पश्चात मैथिली साहित्याकाशमे विद्यापति नामक जाहि जाज्ज्वल्यमान नक्षत्रक अभ्युदय भेल तनिक अजस्र मधुर ओ शृंगारिक गीत राशि तँ मिथिले नहि अपितु समस्त पूर्वाञ्चलक प्रदर्शनीय कला जगतमे एकटा क्रान्ति आनि देलक। हिनक शृंगारिक गीत सभक वैशिष्ट्य रहल अछि जे कोनहुँ प्रकारक नाट्यकथामे प्रसंगानुकूल एकर प्रयोग कयल जा सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे अतीत कालमे आयोजित होइत रहनिहार 'दोलिक नाच'मे हिनक शृंगारिक गीतयुक्त नाट्यक अभिनय होइत छल होयत। एतबे नहि हिनक हास्य रस मूलक जे एकटा कुट्टनीक आत्मपरिचयवला गीत भेटैत अछि, तकर अवलोकनसँ एहि धारणाकेँ बल भेटैत अछि जे ज्योतिरीश्वर सदृश विद्यापति सेहो दोलोत्सवमे अभिनयार्थ कोनो प्रहसनक रचना कयने छल होयताह।[13] तहिना नगेन्द्रनाथगुप्त सम्पादित 'विद्यापति पदावली'मे वसन्त विषयक सोलह गोट गीतक एकटा गुच्छ अछि।[14] एहि सब गीतमे एकटा सूत्रबद्ध कथात्मकता अछि। वसन्तमे धीरललित नायकक आरोपण कऽ कऽ ओकर जन्मसँ लऽ कऽ ऋतुराजक आसनपर आसीन होयबाक कथाक क्रमिक वर्णन भेटैत अछि।

एहि वसन्त विषयक गीत गुच्छक अवलोकनसँ प्रतीत होइत अछि जे विद्यापति वसन्त ऋतुमे आयोजित भेनिहार दोलोत्सव किंवा दोलिक नाचक निमित्त 'वसन्त विजय' नामसँ कोनो नृत्य-नाटिकाक रचना कयने छलाह।[15]

एहि ठाम कहबाक तात्पर्य ई जे ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापतिसँ लऽ कऽ हुनक परवर्त्ती कालक कवि ओ नाटककार लोकनिक रचनाक प्रस्तुति दोलोत्सव प्रभृति आयोजनमे सेहो भेल करैत छलनि। मिथिलाक केशवमिश्र प्रभृति निगूढ़ पण्डितक दृष्टिमे दोलोत्सव वस्तुत: मूर्ख लोकनिक ओ सभा भेल करैत छल जकर स्तर नृत्य-गान आदिसँ तृप्त होयब धरि सीमित छलैक। एहन मूर्ख लोकनिक मनोरंजनार्थ काव्य-रचना कयनिहार कवि समुदायक उपहास करैत केशवमिश्र 'दोलोत्सव' संज्ञाकेँ विकृत करैत ओकरा 'दोलीक' कहलनि आ एहिमे प्रस्तुत भेनिहार कवि लोकनि 'दोलीककर्त्ता' संज्ञासँ अभिहित कयल गेलाह। यद्यपि पूर्व उद्धृत अलंकारशेखरक ओहि श्लोकमे लेखकक घोर क्षोभक अभिव्यक्ति भेलनि अछि, मुदा एहि क्षोभक प्रदर्शनक ब्याजेँ लेखक एकटा दुर्लभ ऐतिहासिक प्रमाणकेँ अवश्ये अभिलेखबद्ध कऽ गेलाह जे आइ एकटा प्राचीन कलोत्सव परम्पराक छिड़िआयल सूत्र सबकेँ जोड़ि सकबामे सहायक सिद्ध होइत अछि।

अन्तमे पुन: एक बेर स्पष्ट कऽ देब आवश्यक होयत जे दोलिक कोनो नाचक प्रभेद नहि थिक। 'दोल' संज्ञाक भाववाचक भेल 'दोलिक'। जेँ की दोल उत्सवमे नृत्य-नाट्य आदिक प्रस्तुति भेल करैत छल तेँ पामर जन द्वारा एकरा 'दोलिक नाच' संज्ञासँ अभिहित कयल जाय लागल, से ठीक ओहिना जेना मध्यकालमे नेपाल-उपत्यकाक मल्ल नृपति लोकनि कार्त्तिक मासमे धार्मिक मूलक नृत्य-नाट्य आदिक प्रस्तुतिक जे एकटा परम्परा चलौलनि से कालान्तरमे 'कार्त्तिक नाच' नामसँ प्रसिद्ध भऽ गेल। जेना 'कार्त्तिक' नामक कोनो विशेष नाचक अस्तित्व नहि अछि, तहिना दोलिक नामक कोनो नाच नहि अछि। ई सामान्य जन द्वारा गढ़ल गेल एक गोट संज्ञा छल जे कालान्तरमे एहि सम्पूर्ण वासन्ती कलोत्सवक परिचायक बनि गेल। वर्त्तमानहुँ युगमे बहुतो अशिक्षित लोक जेना विद्यापति स्मृति पर्वकेँ 'विद्यापति नाच' मानि एहि आयोजनकेँ एही संज्ञासँ सम्बोधित करैत छथि तहिना पूर्वमे जँ दोल उत्सवकेँ 'दोलिक नाच' कहि देल गेल तँ से कोनो पैघ बात नहि।

सन्दर्भ-निर्देश

1. *अनुचिन्तन,* गोविन्दझा, नवारम्भ, पटना, 2010, पृ.- 76-77 (विद्यापतिक प्रसंग किछु विचारणीय प्रश्न)
2. *मिथिला तत्त्व विमर्श,* परमेश्वरझा, श्रीपरमेश्वर पुस्तकालय, तरौनी दरभंगा, 1949, पृ.- 215-216 (पूर्वार्द्ध)
३. *अलंकारशेखर,* केशवमिश्र, (स.) अनन्तरामशास्त्री वैताल, चौखम्बा संस्कृत सिरीज ऑफिस, विद्याविलास प्रेस, बनारस, पृ.- 4,
4. *आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया 1903-04(केब्ज एण्ड इन्स्क्रिप्सन्स इन रामगढ़ हिल्स),* पृ.- 122-130
5. *उपर्युक्त,* पृ.-124-125
6. *हमारी नाट्य परम्परा,* श्रीकृष्णदास, साहित्यकार संसद, प्रयाग, 1958, पृ.- 135-137
7. *वर्णरत्नाकर,* (स.) आनन्दमिश्र एवं गोविन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1990 (द्वितीय संस्करण), पृ.- 55 *(वनवर्णना)*
8. *उपर्युक्त,* पृ.- 57 *(उपवनवर्णना)*
9. *उपर्युक्त,* पृ.- 57 *(उपवनवर्णना)*
10. *कल्याण (संक्षिप्त आनन्द रामायण अङ्क),* गीता प्रेस, गोरखपुर, जनवरी 2024, पृ.- 395-397
11. *हिन्दुस्तान (हिन्दी दैनिक),* पटना, 2015, पृ. -6 *(दोलयात्रा : परमात्मा से अपना रंग मिलाने का त्योहार-* श्री श्री आनन्दमूर्त्ति)
12. *मिथिला-परम्परागत-नाटक-संग्रह: (प्रथम खण्डम्),* (स.) शशिनाथझा, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1985, पृ.- 28, (*धूर्त्तसमागम्-* ज्योतिरीश्वर)
13. *मिथिला-भारती (त्रैमासिक शोध पत्रिका),* भाग-6, अंक- I-IV, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 2019, पृ.- 35-36 (*मिथिलाक अभिनव भरत विद्यापति-* शंकरदेवझा)
14. *विद्यापति पदावली,* (स.) नगेन्द्रनाथगुप्त, वसुमति साहित्य मन्दिर, कलकत्ता, बंगाल संवत् 1342, पृ.- 61-66 (गीत सं.-1-16)
15. *मिथिला-भारती (पूर्वोक्त-13),* पृ.- 45-46 (*मिथिलाक अभिनव भरत विद्यापति-* शंकरदेवझा)

•••

उपन्यासकार सुमनजी

डा. सुरेश पासवान

ल.ना.मि.वि. दरभंगा।
सम्पर्क : +91 8051997405

समकालीन मैथिली साहित्यमे जखन युवा लेखन दिस देखैत छी तखन सक्रिय रचनाकार सभक मध्य एकटा जे महत्वपूर्ण नाम अभरैत अछि ओ नाम थिक डॉ. सुरेश पासवानजीक। माता श्रीमती रामसुन्दरी देवी आ पिता श्री बमभोली पासवानजीक सुपुत्र डॉ. सुरेश पासवानजी अध्येता छथि, प्रणेता छथि। सम्प्रति सी. एम. कॉलेज, दरभंगाक मैथिली विभागमे सहायक प्राध्यापक रूपमे कार्यरत छथि। मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न रचना प्रकाशित होइत रहैत छनि। डॉ. पासवान डायट, दरभंगाक D. El. Ed. हेतु एवं नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पटनाक स्नातकोत्तर कक्षा हेतु पाठ्यक्रम आधारित लेखनमे सिद्धहस्त छथि, लब्धप्रतिष्ठ छथि। मैथिलीमे आलेख, कथा, उपन्यास, कविता, शोध, आलोचना आदि विधामे रचनात्मक रूपसँ सक्रिय छथि। 'मैथिली उपन्यासमे दलित विमर्श' वर्ष 2020मे प्रकाशित भेलनि। निबंध-संग्रह 'अक्षत' भाग-1 एवं भाग -2 आ उपन्यास 'जिनगी एकटा आशा' शीघ्र प्रकाश्य छनि।

जखन रोटीक कोनो धर्म नहि होइत छैक, हवाक कोनो जाति नहि होइत छैक, पानिक कोनो रंग नहि होइत छैक, धरती एक अछि, आकाश एक अछि तखन ईश्वर निर्मित एति सृष्टिमे मानव-मानवमे विभेद किएक ? सामाजिक समरसता जन सरोकार संग मिथिलाक भू-भागमे बसनिहार किछु खास जाति वर्ग यथा-धानुक, किओट, कुर्मी, अमात आदि जे तत्कालीन समयमे बहिया अर्थात् खबास नामक संज्ञा से अभिहित छल तकर समस्याक संग अन्यान्यक रूपमे मिथिला, मैथिली तथा मैथिलक समस्याकेँ रेखांकित करैत अपन अन्तरदृष्टिमे निहीत भावकेँ शब्दक रूपमे वृष्टि करैत 'उगनाक दयादवाद' नामक एक मात्र उपन्यासक सृष्टि एहि तरहेँ कयलनि जे साहित्य रूपी उपवनमे सुमनक सुरभि मह-मह करैत दिग-दिगंत धरि लोकमे आह्लादित करैत रहत।

पूर्ण रूपें गाँधी दर्शन पर आधारित सुमनक एहि उपन्यासमे प्रेमचन्दक विचार आ आदर्शकेँ प्रतिष्ठा देल गेल अछि। हँ, एतबा धरि अवश्य जे किओ पाठक एकरा मार्क्स आ फ्रायडक विचारधाराक अनुरूप देखताह हुनका लोकनिकेँ एकर भाव बुझवामे असौकर्य हेतनि। उपन्यासमे एक दिस जतय समाजक कात लागल पिछड़ल, पछुआयल वर्गक पात्र छीतन, रधिया सावी अर्थात् सावित्री, अपर्णा आ मधुरीक संग प्रमुख पात्र तुलसीक चरित्र-चित्रण एक समुदाय विशेषक भेलो पर समानधर्मीक रूपमे कयने छथि ओत्तहि निरसू बाबू आ मोहन मिसर सन समाजक आदर्श कहबयवला दुनूक स्वरूपमे आकाश पातालक भिन्नता जेना समाजक वास्तविक सत्य से परिचय करबैत अछि तहिना उपन्यासमे संवाद ओ भाषाक प्रयोग रचनाकारक रचना कौशलसँ परिचय करबैत अछि। जाहि भावक निरूपण आचार्य सुमन 'उगनाक दयादवाद' उपन्यासमे कयने छथि, एकर पृष्ठभूमि आइ सँ छः सय वर्ष पहिने महाकवि विद्यापति तैयार कए चुकल छथि, यथा —

मान विहूना भोअना, सतुअ देओल राज।
शरण पइठ्ठे जीअणा, तीनू काअर काज॥[1]

दुखक विषय अछि एतबा समय बीतलाक बादो मिथिलाक स्वरूप नहि बदलला तँ ने उपन्यासकार सुमनजी तुलसीक मुँहे कहबौलनि— "हम पढ़ब अवश्ये मुदा खबासी करैत नहि। भूख प्यास बरु सहब, मुदा ऐंठ-कूठ उठायब नहि। जीअब तँ तहिना भऽकऽ। मान विहूना पसू होई' से पशु भऽ कऽ नहि। ई हमर निश्चय अछि।"[2]

एक बेर स्वयं अपन साक्षात्कारमे सुमन जी कहने रहथि— मैथिलीयोक कथाकार आब प्रेम-विवाह, वर्गीय परिधिमे शोषक-शोषित आदिक स्थूल चित्रणमे सूक्ष्म विश्लेषण दिस बढ़ि रहल छथि। एहि कथ्यमे अपनाकेँ कोना फराक राखि सकितथि। उपन्यासमे चित्रित हिनक भावाभिव्यक्ति देखल आ सकैछ— निरसू झा बाबु कहबथु आ छीतन खबास छितना कहि संबोधित होथु— से आब चलनिहार नहि। काज लै छथि तँ उचित बोनि देथु। बरद जकाँ जोतने रहता आ घास पात जकाँ दू मुठ्ठी अन्न छीटि देता से चलनिहार नहि। समय जमाना बदलि गेल छै। आब से सब नहि चलतनि।[4]

ठीक अहिना उपन्यासमे चित्रित दोसर अंश-छीतन खबास अन्तर्मनमे दबल हाहाकार प्रतिरोधक स्वरमे तखन बहार भेलै जखन निरसू बाबूक घरमे खबासिनक रूपमे काज करैत रधियाक बाँहि एकान्त पाबि निरसू बाबू धऽ लेलथिन। छीतन खबास मालिक पर ललकैत पहुँचल-आब के कोना टहल करय आओत। पेट छैक त इज्जतियो छैक। इज्जति बचतै त पेट बोनिओ कऽ कऽ भरि लेत। आब बाबू भैया जखन ककरो इज्जति लेबा पर तुलि गेल छथि तँ अपनो बेइज्जत होयता। हम-चेता जाइ छी।[5]

ने छोट ने पैघ चौखुट बसल मधुपुर गाम जखन अगिला-पछिला वर्गक संघर्षक आन्दोलन चलल तखन ई गाम सेहो चंचल भऽ उठल। एहि सँ पूर्व लोक स्वराज आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, किसान आन्दोलन आदि की-की ने देखने छल, मुदा ई पहिल अवसर छलैक मधुपुर गामक लेल जतय महतो-बहियामे भेद-भाव छलैक, रोब दाब ओ दवाब विच्छेद छलैक से आँखिमे खटकलैक। मालिकक खबासक प्रति व्यवहार मुक्त भोगिएकेँ नहि अनकहुँ अनसोहाँत लगलैक। आ अहि लेल पहुँचल छलाह किछु समाजवादी दलित संघक नेता लोकनि। वक्ता श्रोता सब स्थानीय मुदा भाषण खरी बोली मे। जखन तुलसी कें धन्यवाद ज्ञापन लेल कहल गेलैक, तुलसी बाजल— जे जन समाजक उत्थान करऽ आयल छथि नीक होइत जे ओकरा अपन भाषामे बुझबितथि तँ ओहो लोकनि हिनक भावकेँ बुझितथिन आ इहो सब बात बुझा सकितथिन।[6]

तुलसीक मुँहे एहि तरहक सम्बोधन जे स्वयं दलित होइतो अपन वर्गीय नेताक समक्ष कहल मातृभाषा प्रेम आ वास्तविक सत्यमे उजागर कऽ रहल अछि। एकटा एहन वर्गक युवक जकरा ने मैथिल कहल आइ छैक, ने ओहि समाजमे राजनीतिक चेतना जागृत भेल छैक से यदि आन्दोलनमे कुदि पड़ल तखन बुझि ली जे मिथिलाक भावना जड़ि पकड़लक।[7]

एकटा साधारण परिवारक तुलसी जे श्रमसँ अपन पहचान बनौलक। कहबी छैक— गरीबी के तीन यार, भूख अनादर अत्याचार। से तँ तुलसी के जीवनमे एहन कतेको अवसर अयलै जतय ओकरा एहि तरहक सीख भेटलैक। पहिल बेर जखन बाल संगी नन्द किशोरक ओहि ठाम भोजक लेल नोतल गेल आ भोजमे पाँतिमे कात बैसल तुलसीक पात पर भात नहि पड़लैक आ नीरसू बाबू एकरा ऐंठ-कूठ उठयबा लेल कहलथिन। तुलसीक स्वाभिमान एकर इजाजति कहाँ देलकै। मनुक्ख-मनुक्खक बीचक भेद ई एत्तहि बुझलक आ निश्चय कयलक जे ओ आगाँ बढ़ि अपन पिछड़ल वर्गविशेषकेँ सम्मान दिअयबा लेल काज करत। जकरा लेल सब सँ पैघ अस्त्र रहैक शिक्षा आ सेहो शिक्षा कोन तरहक तँ मातृभाषाक रूप मे।

नायक तुलसीकेँ उपन्यासक केन्द्रमे राखि बोधगम्य आ सहज शैलीमे अभिव्यक्ति संग वातावरणक निर्माण दिस कएल गेल सत्प्रयास सुमनजीक प्रतिभा सँ परिचय करवैत अछि, तँ दोसर दिस कथानक आ कथोपकथनक सृष्टिक अन्तर्गत भाउज रधिया आ देओर तुलसीक बीच संवाद, तुलसीकेँ हीरा मानि अपन बहिन सवियाक संग वियाहक सपना देखैत रधियाक मनोवृति आदिक समावेश जकर चित्रण सुमनजी बड़ रोचकताक संग कयने छथि, बेस आकर्षित करैत अछि।

उपन्यासक नायिका रधिया जे नारी जातिक लेल आदर्श रूपमे प्रतिष्ठापित छथि तिनक मोहभंग आ एहि उपक्रममे गढ़ल गेल भिन्न-भिन्न ताना-बाना जाहि मार्मिकताक संग सुमनजी उपस्थापित कयने छथि से पाथर

सन हृदयवलाकेँ सहजहि द्रवित कऽ उठैत अछि, जखन रचि-रचि कऽ संजोगल रधियाक सपनाक आगू तुलसीक वियाह सवियासँ नहि भऽ समाजसेवी अनाथ सदृश नायिका मधुरी संग होइत छैक तँ दोसर दिस अछि तुलसी अकरा मोनमे सेहो सावी अर्थात सवियाक प्रति अगाध स्नेह छैक। सवियाक प्रति तुलसीक ई स्नेह भले कतहुँ देखार नहि कयल गेल छैक, मुदा मधुपुर गाम सँ पटना होइत मातृभाषा आन्दोलनमे सहभागिता, जेलयात्रा वृतान्त आ समूचा कलकत्ताक दिग्दर्शन तुलसी सावियेकेँ एक नजरि देखबा लेल कयने छल तकर सांकेतिक इशारा आदि गम्भीरताक संग सुमन जी कयने छथि तकर अनुमान पाठक लोकनि सहजहि लगा सकैत छथि।

परिस्थिति मनुक्ख तँ मनुक्ख कखनो-कखनो भगवानोकेँ विवश कऽ पंगु बना दैत अछि। जौँ लोकक वश चलितें तँ तखन जे चाहिते सैह होएतनि। हमरा जनैत उपन्यासकार सुमनोजी के कोनो ने कोनो विवशता अवश्य रहल होयतान जाहि कारणे हिनक अन्तर्मनमे नुकायल वेदना प्रस्फुटित भर बाहर आयल-तुलसी मजरो जते, पूजल जाय, पूजा पर चढ़ौल जाय ओकर वृन्तमे फूल कोढ़ी नहि देखल गेलैक। सावी साबिके जकाँ घर बाहरक काज में हावी अछि परंच ककरो पर दावी नहि जमा सकली।[8]

उपन्यासक सब पक्षक अवलोकन पश्चात शीर्षक 'उगनाक दयादवाद' प्रसंग चर्चा अपेक्षित अछि। जहिना टहलू बेगार वा खबास उगना विद्यापतिकेँ प्रिय छलथिन, जाहि उगनाक सेवाभाव नि:स्वार्थ छलैक तकरा श्रमदान आ उपहारक रूपमे चेराक मारि भेटलैक। यैह हाल तँ तुलसीयोक छैक, कारण यैह रहल होयत जे विद्यापति शिवसिंह संग विद्या आ लखिमाक रूपमे छीतन, तुलसी रधिया आ सवियाकेँ चरित नायक बना एहि उपन्यासक नाम 'उगनाक दयादवाद' रखलनि।

हिनक स्वर प्रगतिवादी आ दृष्टि प्रयोगवादी ओ रचनात्मक अछि। उपन्यासमे सबतरि जागृतिक शंख फूकल गेल अछि। गाढ़ निन्दमे मातल मिथिलावासी के झिकझोरि जगायब एकर लक्ष्य थिक। एहि उपन्यासमे कटु तिक्त सत्यकेँ मधुर-चाशनी ओ नग्न यथार्थकेँ आदर्शक अभिनव परिधान पहिराओल गेल अछि। ई कही जे यथार्थक माटि पानि पर आदर्शक पावन मन्दिर गढ़ल गेल अछि। उपन्यासमे चित्रित मधुपुर गाम एकटा गाम मात्र नहि अपितु सम्पूर्ण मिथिलाक कथा कहैत अछि।[9]

आजुक समसामयिक उपन्यासमे मूल्य कथाक नहि कथ्यक होइछ। समकालीन उपन्यास शिल्पक साज सज्जाक स्थान पर अपन एहन विचारतत्वकेँ रेखांकित करबाक प्रयत्न करैत अछि जे कोनो आरोपकेँ स्वीकार नहि करत। आजुक उपन्यासमे ओ अनुभूति-प्रणवता सर्वाधिक महत्व रखैत अछि जे लेखककेँ यथार्थ जीवन खण्ड सँ भेटैत छनि तथा जकरा ओ सम्वेदनाक माध्यमसँ पाठक धरि संप्रेषित करैत छथि।[10]

निष्कर्षत: कहि सकैत छी जे सुमनजी कृत 'उगनाक दयादवाद' उपन्यास समकालिकताक आधार पर उत्कृष्ट उपन्यास थिक जे नव-नव जीवन मूल्य आ मानवीय मर्यादाक प्रतिष्ठा करैत अछि तथा जगवैत अछि जिजीविषा, कुण्ठा, संत्रास अभाव ओ पीड़ाक संसारमे आशा उल्लासक शत-शत दीपशिखा।

संदर्भ सूची

1. 'सुमन', सुरेन्द्र झा, *कीर्तिलता*, मैथिल मन्दिर, मिथिला प्रेस राजकुमार गंज, दरभंगा, श्लोक-09, पृष्ठ संख्या-27
2. 'सुमन', सुरेन्द्र झा, *उगनाक दयादवाद*, मैथिल मन्दिर, मिथिला प्रेस राजकुमार गंज, दरभंगा, पृष्ठ संख्या-18
3. विश्वनाथ, *अक्षर-अक्षर अमृत*, मैथिल रचना मंच, सोमनाथ निकेतन शुभंकरपुर, दरभंगा, पृष्ठ संख्या-69
4. पूर्वोक्त-1, पृष्ठ संख्या-25
5. पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या-12-13
6. पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या- 27-28
7. पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या-74
8. पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या-108
9. मिश्र, देवकान्त, *श्री सुमन साहित्य सौरभ*, आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, दरभंगा, पृष्ठ संख्या-334
10. पूर्वोक्त-9, पृष्ठ संख्या-339

●●●

डा. संजीत झा 'सरस'
सी. एम. कॉलेज, दरभंगा।
सम्पर्क : +91 9899496824

वाचस्पतिक जन्मस्थान ठाढ़ीक प्रभविष्णु अध्येता डॉ. संजीत कुमार झा नेनपनेसँ 'होनहार विरबान के होत चिकने पात' केर उक्तिकेँ सार्थक करैत अयलाह। हिनक मेधाक विस्फोट अत्यन्त आह्लादकारी अछि। पहिने प्रखंड विकास पदाधिकारी रूपमे बेनीपुर (दरभंगा) आ पलासी (अररिया)मे सेवा कयलनि। एहि अक्षर पुरुषकेँ एहि सेवासँ संतोष नहि भेल तेँ सरस्वतीक साधनामे आबि गेलाह। सम्प्रति सी एम कॉलेज, दरभंगामे संस्कृत विभागाध्यक्ष रूपमे सेवारत छथि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीक नीक ज्ञाता छथि। धाराप्रवाह निधोख संस्कृत बजैत छथि। मैथिली, संस्कृत आ हिन्दीसँ सर्जनात्मक रूपसँ जुड़ल छथि। राष्ट्रीय स्तरपर अपन मेधाक धाक जमा कतेक स्वर्णपदक प्राप्त कयने छथि। स्वतंत्र पोथी नहि आएल अछि मुदा हिनक अनेक रचना प्रकाशित, प्रशंसित आ पुरस्कृत भेल अछि।

मिथिलाक सांस्कृतिक प्रदूषण

वेदादि सकल शास्त्र समुपासक याज्ञवल्क्य, अष्टावक्र, कपिल, कणाद, गौतम, मण्डन, वाचस्पति, उदयन आदिसँ विभूषित राजा जनकक जाहि भूमिकेँ 'मिथिला' कहल जाइत अछि ओकर अदौंसँ एकटा विशिष्ट संस्कृति रहल। सम्पूर्ण संसारक लोक केर मस्तिष्क 'मिथिला' शब्द सुनि कऽ एकटा विशिष्ट आदर भावसँ चित्रित जाहि कारणे भऽ जाइत छैक, वएह थिक मिथिलाक संस्कृति। आचार-विचार, रहन-सहन, अशन-व्यसन, विधान-परिधान आदि एहेन मानक छैक जे एक क्षेत्रकेँ संस्कृतिकेँ अन्य क्षेत्रसँ फराक करैत अछि। ई सब एक दिन, एक मास, एक वर्ष वा किछु वर्षक अवधिमे नहि स्थापित होइत छैक, अपितु हजारो वर्षक साधनाक प्रतिफलसँ कोनो क्षेत्र विशेषक संस्कृति अपन अलग महत्व स्थापित करैत अछि। एकरा एकटा उदाहरणसँ बुझल जा सकैत अछि। आस्ट्रेलिया देशमे एकटा मूँगाक द्वीप कोरल द्वीप नामसँ जानल जाइत अछि। मुदा ओकर निर्माणक प्रक्रिया यदि देखल जाइ तऽ जखन हजारो वर्ष तक पथरीला मूंगा जीव मरैत गेल आ ओकर कैल्शियम कार्बोनेट युक्त कंकाल ओहि ठाम जमा होइत गेलए तऽ ओहि कोरल द्वीपक निर्माण भऽ सकल। इएह प्रक्रिया संस्कृतिक निर्माणकेँ सेहो मानल जा सकैत अछि। मिथिलाक संस्कृति भारतीय संस्कृतिक विविधताक एकटा महत्वपूर्ण अंगक रूपमे स्थापित अछि। जकरा बिना भारतीय संस्कृतिकेँ पूर्णताक कल्पनो नहि कएल जा सकैत अछि। यदि भारतीय संस्कृतिक आधार स्तम्भक रूपमे श्रीरामक आदर्श स्थापित छैक तऽ ओहि श्रीरामकेँ मर्यादापुरुषोत्तम बनेबा लेल अपन सर्वस्व न्योछावर करय वाली जगज्जननी भगवती सीता हमरे सभक बहिन छलीह। तैं तुलसीदासक कंठसँ अनायास निकलैत छन्हि—

सियाराममय सब जग जानी।
करहु प्रणाम जोरी जुग पानी॥

संस्कृतिक मतलब होइत अछि – अपन पूर्वजक तपोबलसँ अर्जित संस्कारक ओहेन परम्परा या थाती जे व्यावहारिक रूपसँ जीवनकेँ संस्कृत एवं परिष्कृत करैत श्रेयोमार्ग पर अग्रसर करैत रहए।

यद्यपि मिथिलाक संस्कृति उपर्युक्त सर्व गुणसँ सम्पन्न अपन कीर्तिपताका सम्पूर्ण विश्वमे स्थापित कयने वैश्विक

आकर्षणक केंद्रमे सदिखन बनल रहल। जकर परिणामस्वरूप अनेक दर्शनक उत्पत्तिस्थली बनबाक गौरवक भागी बनैत अपन अक्षुण्ण विद्वत्परम्परासँ भारत समेत विश्वकेँ पोषण कयलक। एहि सब गुणकेँ कारणे ई भारतीय संस्कृतिक चरम ध्वजवाहक क्षेत्रकेँ रूपमे मानल जाइत अछि। ई एकटा एहेन संस्कृति रहल जकरा व्यवहारमे धर्मशास्त्रक सब नियम मूर्तिमय जेकाँ बुझाइत अछि-

"धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयः मिथिलायाः व्यवहारतः।"

जाहि सांस्कृतिक विशिष्टता एहेन मानल जाइत हो जे गृहस्थ धर्ममे रहैत सन्यस्तभावक स्वरूप मानैत श्रीमद्भागवत सनक महापुराण स्वयं कहैत हो जे –

"एते वै मैथिला राजन् आत्मविद्याविशारदाः।
योगेश्वरप्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि॥"

ओहि संस्कृतिक अवस्था ओकर वर्तमान ध्वजवाहकक आचार-विचार, रहन-सहन, अशन-व्यसन, विधान-परिधान आदिक कारणे अत्यन्त कलुषित दुरवस्थाक प्रति बढ़य लागैत अछि वा अन्य संस्कृतिक तत्वक अधिक प्रवेशक कारणे जखन मिथिलाक संस्कृतिकेँ घोर उपेक्षा होमय लागैत छै, हमरा जनैत ओकरे कहल जाइत छैक – मिथिलाक सांस्कृतिक प्रदूषण।

वास्तवमे आइ मिथिलाक क्षेत्र अपन सांस्कृतिक प्रदूषणसँ एतेक दूषित भऽ गेल अछि जे ओहिमे रहनिहार वा ओहि संस्कृतिक चिन्तन केनिहार व्यक्ति सब प्रदूषित जलमे रहय वला मांछ आदि जीव जेकाँ अत्यन्त व्याकुल भऽ रहल छथि।

समाज आ परिवारक बंधन लगभग टूटि चुकल अछि। केकरो किनको धाख नहि रहि गेल। जाहि समाजक बले लोक अपन सम्पूर्ण जीवन आश-भरोसक संग सुखमय व्यतीत कऽ लैत छल, ओहि समाजमे आइ सब किछु व्यावसायिक भऽ गेल। धनमात्रक महत्व सम्पूर्ण समाजकेँ ओहि तरहे अपन पाशमे बन्हने अछि जे सब मात्र –

'धनान्यजर्यध्वं धनान्यर्जयध्वम्'

केर रट लगबैत आन्हर भेल पाइ कमाइ लेल अपस्यांत भेल अछि। पाइयेटा एकमात्र मानक नीक लोक कहेबा लेल रहि गेलए । पाइक महत्व पहिनहियो छल मुदा कोनो तरहेँ पाइ कमायब ई मान्य नहि छल। आइ ककरो हत्या तक पाइक लेल कऽ देल जाइत छैक। समाजक मूल्य केवल भाषण ओ लेखन तक सीमित रहि गेल। संभवतः इएह सब अवस्थाक कल्पना कय भर्तृहरि लिखने हेताह –

धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्तिः,
धनैरापदं मानवाः निस्तरन्ति।
धनेभ्यो परो बान्धवो नास्ति लोके,
धनान्यर्जयध्वम्' धनान्यर्जयध्वम्॥

मुदा फेर कहैत छी जे भारतीय एवं मिथिला संस्कृतिक एकटा महत्वपूर्ण अंगकेँ रूपमे साधन आ साध्यक पवित्रताक विचार रहल। पवित्र साधनसँ पवित्र साध्यक प्राप्तियेक महत्व एहि संस्कृतिक महत्ताकेँ बनओने छल। आइ ओहि सिद्धांतक शिथिलता हमरा लोकनिकेँ अपन संस्कृति एवं संस्कारसँ बहुत दूर केने जा रहल अछि। जीवनक उद्देश्य केवल धन प्राप्ति नहि छल। धर्म अर्थ काम मोक्ष ई चतुर्विध पुरुषार्थक कल्पना अत्यंत तपः प्रसूत कल्पना अछि। एहि संस्कृतिक विशिष्टतामे –*'धनात् धर्मं ततः सुखम्'*केँ बात होइत छल।

अर्थात धन सेहो गृहस्थधर्म वा अपन धर्मक निर्वहन लेल अर्जित कएल जाइत छल तथा ओहि धर्मक रक्षासँ उत्पन्न जे आत्मप्रसूत आनन्द होइत छल ओकरा 'सुखप्राप्ति' कहल जाइत छल। आइ जेना-तेना कोनो तरहें धन कमायब मात्र उद्देश्य अछि आ ओहि धनक उपयोग की? तऽ अशन-व्यसन, आचार-विचार आदिक एहेन बीभत्स स्वरूपक प्राप्ति जकरा संस्कृति आ संस्कारसँ कोनो मतलब नहि छैक। तैं तऽ होइत अछि सांस्कृतिक दोष। ओकरे कहल जाइत अछि सांस्कृतिक प्रदूषण।

जाहि भूमि पर आचार विचारक प्रधानता सर्वथा उत्कृष्टतम स्वरूपमे सदति रहल ओहि भूमिक वर्तमान व्यवस्थामे ओकर महत्व बिल्कुल नगण्य देखा रहल अछि। जे मोन हएत सएह खायब, जे मोन हएत सएह पहिरब, जेठ छोटक कोनो धाख नहि, माय बापक प्रति कोनो उत्तरदायित्व नहि इत्यादि अनेको एहेन दैनिक जीवनक घटना दुर्घटना अछि जाहिसँ हम सब सोचि सकैत छी जे कतयसँ कतय पँहुच गेलहुँ। ई स्मरण राखय पड़त जे – *'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः'*

अर्थात आचार व्यवहार हीन व्यक्तिकेँ वेदो नञि पवित्र कऽ सकैत अछि। कतय हम सब 'मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः, आचार्यदेवो भवः'केँ अवधारणाकेँ आत्मसात कयने छलहुँ वएह हम सब आइ एहि सब मानकसँ दूर भऽ केवल अपन स्वार्थे पर केंद्रित भऽ गेलहुँ।

पाश्चात्य संस्कृतिक समावेश जाहि तरहें जीवनक सब अवस्थाकेँ खंडित कऽ हमरा सबकेँ मांइटिमे मिलेने जा रहल तकर भान रहितो हम सब ओकर पाशमे आकंठ बन्हा गेल छी। किछुए चीज सेहो मात्र फ़ोटो खिचाबय लेल बचि गेल अछि, ओकरो यदि नहि बचा सकब तऽ अगिला पीढ़ी सबके मात्र मैथिल संस्कृति नामके झुनझुना टा थमायब, बाँकी व्यवहारमे किछुओ नहि रहि जाएत।

रहन-सहनक आलीशान आ लग्जरी व्यवस्था बनबैत हम सब पैघ महल तऽ बना लैत छी, मुदा घरक आगुसँ निकलल नाला, सड़क, गली कूची लेल दू इंच जमीन छोड़ब उचित नहि बुझैत छी, अपितु जेहो छै ताहुमेसँ किछु अपनामे मिला लेबामे हर्खक अनुभव करैत । जखन कि ओहि नाला, सड़क आदिक लाभ अहींकेँ भेटत। तऽ एहिसँ बेसी चिन्तनक संकोच आओर की कहल जा सकैत अछि। अपन घरक कूड़ा-कर्कट दोसराक घरक आगु फेकबामे जदि गर्वक अनुभूति होयत तऽ स्वच्छताक भावना केहन भऽ सकैत अछि? ई तऽ कल्पनो नहि कएल होएत। राति राति भरि ट्रैक्टर चलाय सजल पोखरिकेँ प्रातः काल मृत्तिकापूर्ण आवासीय भूमि बनाब'केँ बहादुरीसँ जदि हमर सभक सीना चौड़ा होइत रहत तऽ मिथिलाक जल संस्कृति आ 'पग-पग पोखरि पान मखान'क उद्घोष केनिहार सब लेल आत्महत्यो केनाइ कम्मे बुझेतनि।

विरासतक जतेक चिन्ह बाँचल अछि ओकरा बेचि अपन बैंक बैलेंसमे वृद्धि करबाक इच्छुक मैथिल कोन मुँहे अपन अगिला पीढ़ीक सोझा ठाढ़ भय कहि सकताह जे हमर संस्कृति एहेन वा ओहेन छलै?

एक तऽ सरकार मिथिलाकेँ सदान्तीसँ उपेक्षित रखलक ऊपरसँ हम सब सेहो ओहि धरोहर सब के सुरक्षित यदि नहि राखि सकब तऽ भविष्यक पीढ़ीके की हस्तांतरित करब? ई एकटा विचारणीय प्रश्न अछि।

"मैथिली भाषा आ तिरहुता लिपि" ई दुनु हमर सबहक एकटा अभिन्न अंग छल, आइ लिपिक ह्रासँ हम सब अपंग भइये गेल छी, संगहि भाषा कतबा बाँचल अछि सेहो तऽ बुझिये रहल छी। जहन भाषा तक नहि बाँचत तऽ कहू जे बिना भाषाके कोना बाँचत संस्कृति?

मिथिलाक कोनो गाम यदि आइयो प्रतिष्ठित गाम कहाइत अछि तऽ ओकर मूलमे ओहि गामक विशिष्ट विद्वत् परम्परा रहल अछि। सेहो संस्कृतक पांडित्य परम्परा। आइ ओहि गाम सबमे चलि जाउ संस्कृत पढ़बाके नाम पर शपथ खेनिहार लोक भेटब मोश्किल होयत। कहबामे असोकर्ज नहि जे संस्कृतक विशिष्ट विद्वत्परम्परासँ मैथिलीक पोषण होइत रहल, तैं मैथिली भाषा सेहो संरक्षित एवं संवर्धित होइत रहली। आइ संस्कृतक जाहि तरहक ह्रास भेल तैं मैथिलीक आकाशमे सेहो एकटा अंतहीन कुहेस पसरल बुझाइत अछि। हमर सबहक जतेक विशिष्ट मैथिलीक साहित्यकार सब भेलाह हुनका संस्कृतसँ फराक नहि देखि सकैत छियन्हि। ओ सब प्रायः संस्कृतक विद्वान भेलाह। आइ दुनु अलग अलग भाषा एवं साहित्यक विधा

अछि। संस्कृतक अवहेलनाक परिणामस्वरूप आइ मैथिली भाषा संग मिथिलाक संस्कृतिमे भेल ह्रास हम सब अनुभूत कइये सकैत छी । भाषाके प्रदूषण हमरा सबहक घरमे एतेक व्याप्त भऽ गेल अछि जे माइयो अपन बच्चा सबके प्रात:काल 'गुड मॉर्निंगे' कहि जगबैत छथिन्ह। एनामे मातृभाषाक विकास कोना सम्भव होयत?

संस्कार दिस तऽ सोचबो आब रूढ़िवादिताक श्रेणीमे ठाढ़ कऽ देत। उपनयन, बियाह मुख्य संस्कार होइत छल। उपनयनक जनउ रातिम तक मात्र रहि गेल, मुदा खर्च ओहि पर लाखक लाख। कतेक गोटा तऽ ओहो करायब उचित नहि बुझैत छथि। बियाहमे शेरवानी तऽ ओहिना सन्हिया गेल जेना तरकारीक नोन हुअए, जकरा बिना सुआदे नहि एतय। जयमालाक विशिष्टता तऽ आब हमहुँ सब हर्षित भऽ कैमरामे सूट करैत छी। हल्दी, मेंहदी, किदनि कहाँदनि संगहि ई प्री वेडिंग फोटो सूट तऽ हमरा सबहक सब आदर्श आ परम्पराके तेना मुँह दूसय लागल जे नहि हँसने बनैत अछि आ नहि कनने। कोना बाँचब आ कतेक बाँचब? बाजारवादी संस्कृतिक प्रभाव एतेक व्यापक भऽ गेल अछि जे हम सब जाबेत जागृत हेबाक सोचैत छी ताबत ओ हमरा सभक घरमे घुसि गेल रहैत अछि। अंग्रेजी बाजयमे लोकके गर्वानुभूति होइत छन्हि। परम्पराके तोड़बामे लोक अपनाकें प्रगतिशील बुझैत छथि। क्षेत्र संरक्षणसँ बेसी क्षेत्र छोड़बामे विकास देखाइत छन्हि। कर्तव्य पारायणक अपेक्षा कर्तव्य पलायनतामे लाभ बुझाइत छन्हि, पारिवारिक एकतासँ बेसी ओकर विघटनमे प्राइवेसी देखाइत अछि, सम्बन्धमे सरोकारसँ बेसी बेपार प्रभावी भेल जाइत अछि। धने मात्र जखन धर्म भऽ जाइत छैक तऽ संस्कृति, आचार-विचार आदिक महत्व किछुओ नहि रहि जाइत छैक। तखन बढ़ैत अछि दुराचार। ओ हमरा अहाँके अनुभूत भइये रहल अछि। नशाक अतिरेकता सम्पूर्ण समाजके अपन बान्हमे तेना बान्हि लेने अछि जे सभ्य व्यक्ति किछुओ करबा आ बजबामे असहाय भऽ गेल छथि। घर घर दारू, भांग आदि अपन पैठ बना लेने अछि। गाम-गामक नाम अलग रहितो स्वरूप आब एके रहि गेल आ ओ स्वरूप अछि ई जे – 'गाम आब रहबा योग्य नहि रहि गेल'।

ई सब बात हमरा सबहक लेल सरिपहुं निराश करय बला अछि, मुदा आइयो हम सब आशाक एकोटा किरणक दिस तकैत ओहि संस्कार आ संस्कृति के बचेबाक प्रयास अवश्य कऽ सकैत छी, मुदा ओहु ठाम पहिने हमरा अपनहिंसँ आरंभ करय पड़त। एहि सब चीजसँ अपनाकेँ फराक राखि अपन पुरातन सांस्कृतिक मूल्य एवं चेतनाकेँ जगेबा हेतु अपन स्वार्थक आहुति देबय टा पड़त। नि:स्वार्थ भावसँ यदि किछु कएल जेतैक तऽ निश्चित हम सब पुन: अपन मिथिलाक मान सम्मान आ अपन मैथिल तत्वक प्रतिष्ठाके संरक्षण एवं संवर्धन करबामे अवश्य सफल होयब। हम फेर कहब जे ई प्रदूषण छी, एकरा कालिक दोष मानय पड़त नहि कि सांस्कृतिक दोष। हवामे खूब प्रदूषण भेलाक बादो एकटा नीक बरखा जेना वायु प्रदूषणकेँ , एकटा नीक बाढ़ि जेना जलप्रदूषणके कम या खत्म करबामे समर्थ छैक तहिना हम सब एकटा पैघ सांस्कृतिक आंदोलनक माध्यमे अपन संस्कृतिमे आयल खराब तत्व सबके शनै: शनै: अवश्य दूर कऽ सकैत छी, एहि आशा एवं विश्वासक संग हम सब मैथिलसँ आह्वान करैत छी – 'आउ अपन सांस्कृतिक तत्व सबके स्वयं धारण करैत सम्पूर्ण मिथिला के पुन: ओकर अत्यंत महनीय संस्कृतिसँ जोड़ि सम्पूर्ण विश्वमे अपन प्रतिष्ठा अर्जित करी आ पुन: जयघोष करी' –

धन्य धरा मिथिला अछि हम्मर
धन्य हमर अछि धाम।
जनकनन्दिनीक उच्च संस्कृति
पुनि शोभित होइ गाम।
कहै जाउ, जय जय मिथिलाधाम
कहै जाउ, जय जय मिथिलाधाम।

●●●

मैथिली उपन्यासक विकासमे 'कन्यादान'क विषयवस्तु ओ भाषा-शिल्प

डा. सुरेन्द्र भारद्वाज

सी. एम. कॉलेज, दरभंगा।
सम्पर्क : +91 8709422745

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगाक मैथिली विभागमे सहायक प्राध्यापक रूपमे कार्यरत डा. सुरेन्द्र भारद्वाज मैथिलीक एक प्रतिष्ठित रचनाकार छथि। कविता, कथा, आलेख आदि विधामे सृजनशील सुरेन्द्रजीक शोधपरक आलेख मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित होइत रहैत छनि। हिनक समीक्षात्मक निबन्धसंग्रह 'मैथिली साहित्यमे चित्रित समाज' वर्ष 2014मे प्रकाशित एवं चर्चित भेलनि। साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत जयन्त पाठकक गुजराती कविता संग्रह 'अनुनय' केर मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमी, नयी दिल्लीसँ प्रकाशित छनि। चेतना समिति, पटना द्वारा वर्ष 2008मे माहेश्वरी सिंह 'महेश' निबन्ध पुरस्कारसँ पुरस्कृत भेल छथि।

सारांश :

आधुनिक मैथिली गद्य साहित्यक महाकाव्यवत् रचनामे परिगणित उपन्यास एकटा सशक्त विधाक रूपमे परिचिति बनौने निर्बाध गतिसँ अनन्त यात्रापर गतिमान अछि। आ से एकर घटनाक वैविध्य ओ कथानकक परिधि-विशालताक कारणहि कहल जाइत अछि। कथानक (कथावस्तु/विषयवस्तु), कथोपकथन, चरित्र-चित्रण, वातावरण, भाषा शैली-शिल्प ओ उद्देश्य उपन्यासक प्रमुख तत्व होइत अछि। आ इएह तत्व सभ कोनो उपन्यासक शास्त्रीय विवेचन-विश्लेषणक आधार बनैत रहल अछि। भाषा ओ शिल्प-शैलीक अभिनव आ वैविध्य प्रयोगहिक कारणसँ कोनो रचना पाठकक अन्त:करणक वा मनोमस्तिष्कक अन्यतम विषय बनल रहैत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ 'कन्यादान' उपन्यासक भाषा-शिल्प आ लेखक प्रो० हरिमोहन झाक भाषाक जादुगरी प्रयोग मैथिली उपन्यासक अन्यतम दृष्टान्त थिक। जकर पाठकक संख्या दिनानुदिन बढ़ैत जा रहल अछि आ भाषिक प्रयोगक दृष्टिसँ अद्यावधि हरिमोहन झाक रचना प्रासंगिको अछिये।

कथानक/कथावस्तु/विषयवस्तुसँ तात्पर्य :

जाहि परिप्रेक्ष्यमे कोनो उपन्यासक समस्त घटनाक चित्रण कयल जाइछ, वस्तुत: तकर व्यवस्थित ओ कलात्मक क्रमबन्धनक निरूपणे कथावस्तु कहबैत अछि—

"...उपन्यासक विषयवस्तु आकारमे वृहत्तरे नहि, अपितु जटिल सेहो होइत अछि। हेतु जे ई जीवनक सर्वांगीण चित्रकेँ प्रस्तुत करैछ। जीवन संघर्षक व्यापक चित्र प्रस्तुत करैछ। तेँ कोनहु कथामे विश्वसनीयता आनबाक लेल आवश्यक ई भऽ जाइछ जे ओकर कल्पनाक आधार निश्चित पात्र, स्थान एवं समय होइक।"[1]

प्रस्तावना :

बीसम शताब्दीक मूर्द्धन्य विद्वान् ओ श्रेष्ठ साहित्यकारमे परिगणित हरिमोहन झा ओ हुनक सुप्रसिद्ध उपन्यास 'कन्यादान'क महत्ता सर्वविदित अछि। 'कन्यादान'क प्रत्येक घटनाक निरूपण व्यवस्थित योजनामे स्वाभाविक रूपेँ भेल अछि। उपन्यासमे वर्णित

मानव जीवनक कोनो घटना कियैक रुचिपूर्ण आ प्रसिद्ध भऽ जाइछ ताहि प्रसंग आचार्य रमानाथ झाक मंतव्य अवलोकनीय अछि—

"कथा साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलनसँ एक गोट कथा जे हमर संस्कार जेकाँ दृढ़ भए गेल अछि से थिक ई जे कथा साहित्यक जे कोनो रूप हो कथा मात्रक मूलभूत वस्तु थिक कथानक-घटनाचक्र। हम मानैत छी जे घटना शून्यमे नहि घटतैक, घटना घटतैक परिवेशमे, परिस्थिति विशेषमे व्यक्ति विशेषकेँ ओ घटनाक विकास होएतैक वर्णनक अथवा कथोपकथन द्वारा। घटनाक्रम ओ परिणाम इत्यादिसँ जीवनक प्रति दृष्टि जे लेखकक छन्हि सेहो अवश्य द्योतित भए जाएत। एवंक्रमे चरित्र, परिवेश, परिस्थिति इत्यादि सभ वस्तुक स्थिति कथामे रहितहि छैक। ओ कथा विशेषमे एहिसँ वस्तु विशेषहुक प्रधानता रहि सकैत अछि। परन्तु कथाक प्राण थिक कथानक आ शेष सभ वस्तु कथानकहिक अंग रूपेँ प्रस्फुटित हो। घटनाक क्रमहिसँ बहराए तऽ ओहि कथाकेँ हम उच्च कोटिक कथा मानब। अंगीक सौंदर्य छैक अंगक सौंदर्यमे, परन्तु अंग विन्यासमे संतुलन हो। सुन्दरसँ सुन्दर अंग विशेषक संतुलनहीन विन्यास हो तऽ अंगी सुन्दर नहि रहत ई विषय सभक अनुभव सिद्ध अछि।"[2]

'कन्यादान'क कथावस्तु सशक्त अछि। एहिमे तात्कालिक मैथिल समाजक सामाजिक जीवन-संस्कृति निरूपित अछि। आलोच्य उपन्यास 'कन्यादान' यद्यपि मानव जीवनक विविध वा सम्पूर्ण पक्षकेँ चित्रित नहि करैत अछि आऽ सएह करब मात्र एकर उद्देश्यमे समाहित नहि छैक। मुदा जे एकर उद्देश्य रहलैक अछि तकर प्रतिपूर्तिक लेल जे अपेक्षाकृत छोट कथावस्तुक परिधि ओ लेने अछि ताहिमे सामाजिक जीवनक कतोक स्थिति-परिस्थिति, प्रकृति-प्रवृत्तिकेँ समेटि समकालिक समाजक अत्यन्त जीवन्त ओ यथार्थ चित्र प्रस्तुत करबामे अद्वितीय अछि।

'कन्यादान'मे चित्रित समाजक प्रसंग जे विचार करब ताहिसँ पहिने तात्कालिक मैथिल समाजक सामाजिक परिवेशक विषयमे डा० भीमनाथ झाक मन्तव्यक अवलोकन करब अतिशयोक्ति नहि बुझना जाइछ-

"एहिठामक समाज घोर अशिक्षाक अन्धकारमे टोइया-टापर दैत छल। स्त्रीवर्गक दुर्दश स्थिति तऽ आर दारुण छलैक। नारी पुरुषक भोगक साधन आ तारण-प्रतारणक पात्र भऽ कऽ रहि गेल छलि। एहि स्थितिकेँ सुधारलो जा सकैत छल— जेना ई बात लोकक ध्यानपर चढ़बे नहि करैक अथवा केओ एकरा अपन ध्यानपर चढ़ऽ देबा लेल तैयारे नहि छलैक खाली वैवाहिक समस्यामे ओझड़ायल अपन जीवनकेँ बिता दैत छल। लोकक मुख्य काज छलैक— विवाह करब, विवाह करायब पहुनाइ करब, बस। जाति-प्रथा चरम सीमा पर पहुँचि गेल छलैक। एक-एक भलमानुस तीसा-चालीसा धरि होइत छल। मिथिला विधवाक देश बनैत जा रहल छल।"[3]

वर्णन वैशिष्ट्य :

मिथिलाक ग्रामीण समाजपर धार्मिक अंधविश्वास तथा सामाजिक कुरीतिक प्रभावक वर्णन उपान्यासक प्रमुख विषय रहल अछि। सम्पूर्ण उपन्यास एहि कोटिक विषय आ कुरीति सभसँ आच्छादित अछि। जतय धरि शिक्षाक प्रश्न अछि तऽ सम्पूर्ण मैथिल समाज खास कऽ उच्चवर्गमे पारम्परिक ढंगसँ संस्कृत शिक्षाक प्रचलन छल। तहिया धरि अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार गाम-घर धरि नहि भेल छलैक। मुदा एकर अर्थ इहो नहि लगाओल जायत जे गामक लोक अशिक्षित होइत छल। पुरुष होअय आकि स्त्री, बौद्धिक क्षमता-सम्पन्न होइत छल ओ सभ। स्त्री-समाजक जे चित्र आलोच्य उपन्यासमे भेटैत अछि से ग्रामीण सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्टताक संग प्रतिविम्बित करबामे सक्षम अछि। एहि उपन्यासक अवलोकनसँ सद्य: ई बूझल जा सकैछ जे मैथिल स्त्री अक्षुण्ण परम्पराक निर्वाहिका, व्यवहार-कुशल आ संस्कृतिक संरक्षिका रहलीह अछि। एहिमे सन्देह नहि जे एहिठामक स्त्री-समुदाय धर्म-कर्मरत रहलीह अछि, हं समाजमे हुनका लोकनिकेँ एतबा स्वतन्त्रता नहि छलनि जे ओ अपन प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तित्वकेँ सामाजिक स्तरपर स्वतन्त्र रूपेँ देखार कऽ सकितथि। तथापि हुनकर चारित्रिक विशेषताक अंत एतबयसँ नहि, अपितु समाजमे कतोक कोटिक स्त्री-चरित्र देखल जाइछ, जकर सद्य: चित्रण 'कन्यादान'मे निदर्शित अछि। उपन्यासमे लालकाकी

वा फुचुक रानी होथि, बड़कागामवाली आ भखड़ाइनवाली होथि, एहि कोटिक पात्र सभ समाजमे रहरहाँ भेटि जाइछ। साम्प्रतिक समाज जकरा योग्यताक सूचक मानि रहल अछि से सभ योग्यता आलोच्य कथानकक स्त्रीपात्र सभमे नहियो भेटय, तथापि छथि ई लोकनि परम व्यावहारिक ज्ञानी आ बौद्धिक रूपसँ सम्पन्न।

'कन्यादान'क विषयवस्तु बड़ व्यापक नहिओ होअय, मुदा जाहि-जाहि विषयक एहिमे समावेश भेल अछि से सभ थिक तात्कालिक सामाजिकताकेँ जकड़ने गूढ़ समस्यासँ सम्बन्धित घटनाक सुव्यवस्थित वर्णनानुक्रम। हरिमोहन बाबूकेँ ओहन-ओहन समस्याक दर्शन प्रत्यक्ष ओ परम्पराक अवगाहनोसँ भेल होयतनि। खास कऽ अपन पिता स्वनामधन्य पं० जनार्दन झा 'जनसीदन' लिखित औपन्यासिक कृति सभसँ पृष्ठभूमि प्राप्त भेले रहनि। आ, अपन पारम्परिक-सामाजिक जीवनक घटनाक्रम ओ परिवेश तऽ छलनिए। समकालिक समाजक ओहन वर्ग जे हुनका 'कन्यादान' रचनाक लेल सर्वाधिक उत्तेजित कयलकनि से छल आलोच्य पोथीमे वर्णित समाज। अर्थात् (1) जे कन्याकेँ जड़ पदार्थवत् दान कऽ देबामे कुंठित नहि होइत छथि। (2) शिक्षा देबाकाल बेटा-बेटीमे अंतर बुझि बेटीकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छथि। (3) जे समाज सुखी दाम्पत्य-जीवनक लेल पति-पत्नीक वैचारिक धरातलक एकरूपतापर विचार नहि करैत छथि। आ (4) जे समाज शारीरिक स्तरपर पति-पत्नीक समानताक आवश्यकता नहि बुझैत छथि।

वस्तुत: अनमेल विवाहक प्रचलन तहिया पराकाष्ठापर पहुँचि गेल छल। आ से कतोक कोटिक छलैक। वयस-जन्य अनमेल विवाह-तहिया कम वयसक ललनाकेँ बूढ़-बुढ़ानुससँ वियाहि देल जाइत छलैक। पाँजि-पाटिक समर्थित लोकमे ई प्रचलन छलैक जे गरीब घरक बेटी स्तरीय पाजि-पाटिवला मरनासन्न बूढ़हुसँ वियाहि देल जाइत छलि। जाहिसँ बेटीक पिताकेँ आर्थिक लाभ होइत छलनि। दू-एक वर्षक अनन्तरहि ओ ललना वैधव्यकेँ प्राप्त कऽ लैत छलि। उपन्यासक एक पात्र दुलारमनि पिउसीक उक्तिसँ उक्त कथनक पुष्टि होइछ-

"ई अहाँ की बजलहु? नीक घरमे ने देबैक तऽ की इनारमे फेकि देबैक? एहिसँ तऽ भोथ हाँसू लए कऽ गरदनि रेति देबैक से नीक। हमर ममिया ससुरक प्रपितामह महादेव झा पाँजि। उनतीस टा विवाह कएलन्हि। जखन एकटा विवाह और करय सभागाछी गेलाह तऽ एगोटाक पुछलापर कहलथिन्ह जे मासमे उनतीस दिन तऽ उनतीस ठाम जायब, तीसम दिन कतय जायब अहाँक कपारपर? ताहि दिन एहन वंशक मर्यादा रहैक।"[4]

आलोच्य उपन्यास 'कन्यादान'मे चित्रित समाजमे बेटीक विवाह धन-बलहिक आधारपर पढ़ल-लिखल अर्थात् आधुनिक अंग्रेजिया पद्धतिसँ शिक्षार्जित शिक्षित युवकक संग होइत छल। पश्चात् ओ पारिवारिक वैमनश्यताक कारण बनैत छल। मुदा सामर्थ्यहीन पिता जमीन-जथा बेचि कऽ कएक-टा बेटीक विवाह सम्पन्न करबितथि? अंतमे पाँजि-पाटिक जे जाल छल ताहिमे फंसि बेटीक तिलांजलि दैत छलाह। पाछाँ आबि ओएह सभ परम्पराक स्वरूप गढ़ैत रहल। सामाजिक ताना-बानाकेँ बूनय लागल। 'कन्यादान'मे कतहु पारिवारिक वैमनश्यता तऽ कतहु अंधविश्वास, कतहु अशिक्षा-जन्य समस्या तऽ कतहु वैचारिक संकीर्णतासँ उपजल सामाजिक परिवेश ओ परिस्थिति भेटैछ। मुदा सभ प्रकारक परिवेशक उपस्थापन लेखक कलात्मक ढंगसँ कयलनि अछि। जाहिसँ कथानकमे निदर्शित घटनाक सत्यता प्रमाणित आ रुचिमय होइत चल जाइछ; संगहि पाठक ओकरा सभकेँ अपन परिवार ओ सामाजिक परिवेशक अनुकूलहि बूझि अंगिकार करैत कथाक संग-संग आगाँ बढ़ैत चल जाइछ। मिथिला-क्षेत्र ओहि कालखंडमे कतेक पछुआएल छल तकर स्पष्ट चित्र उपन्यासमे एकठाम गामक लोक द्वारा पटना शहरक यात्राक क्रममे कथित संकटापन्न स्थितिक वर्णनसँ उद्घाटित होइत अछि— *तहिया गामसँ पयरे सकरी, रेलसँ दरभंगा, दरभंगासँ हाजीपुर, सोनपुर होइत पहलेजा घाट। ओतयसँ जहाजपर ठेलमठेल अफरा-तफरीक बीच कहुना कऽ महेन्द्रू घाट। पछाति लोक सभ पटना पहुँचि पबैत छल।*

ग्रामीण परिवेश यद्यपि बौद्धिक क्षमता-सम्पन्न छल, मुदा अंग्रेजी शिक्षाक प्रभाव गाम-घरमे नहि रहने तार लिखबाक, पढ़बाक आ पढ़यबाक लेल लोक कतय-कतय ने जाइत छल, पढ़ल-लिखल लोककेँ गोहर'बैत रहैत छल। गामक लोकपर सरकारी गोराक प्रभाव, दाब-चाप छल से भिन्न बात। नामे सुनि लोकक सिट्टी-पिट्टी गुम होयबाक बात उपन्यासमे संकेतित अछि। ओकर अदंक(आतंक) एना छल जे

तारो अयलापल डाकघरक मोलाजिमक लालटोपी आ' मोछकेँ देखि गोरा पलटन (अंग्रेज सैन्य पुलिस) बुझि स्त्री-समुदाय सशंकित रहैत छलि। उपन्यासमे मैथिलानीक स्थिति-परिस्थितिक सटीक चित्रण-विवाहक ओरिआओन, गोसाउनिक गीत, परिछनि, नैना-जोगिन आदि विध-व्यवहारक माध्यमे दृष्टिगत होइछ।

'कन्यादान'मे लेखक तत्कालिक सभागाछीक दृश्यकेँ चित्रित करैत ओहिठामक वितंडापनसँ पाठककेँ परिचित करबैत छथि। घटकराजक परिचय, हुनक वाकपटुता आ' वैवाहिक परम्पराक अद्भुत दृश्य समुपस्थित होइछ। कन्यागत ओ वरागतक जतेक प्रकार तदनुसार घटकराजक कृपा-प्रसंग देखि पड़ैछ। कथामे एकठाम मुकुन्द, भोलानाथ आ' घुटर झा द्वारा सभागाछीमे चलैत ठकैती तथा टाकाक लेन-देनक वर्णन करैत छथि। ताहिसँ मैथिल समाजक अध:पतनक पराकाष्ठाक दर्शन होइछ। घटकराज टुन्नी झा कन्यागत-वरागतक मध्यस्तता करैत छथि। हुनक कार्यशैलीक प्रसंग हुनकहि उक्ति अवलोकनीय अछि—

"आहि रौ नैयायिक! ई हमरा पहिने किएक ने कहल? मानि लियऽ जे हमरा ओहिठाम तऽ सभ तरहक कथा आबैये। एकटा खनखनौआ-जाहिमे कन्यागत खनखनाकेँ टाका हँशोथि लैत छथि। दोसर मानि लियऽ टनटनौआ-जाहिमे वर-पक्ष टनटनाकेँ हजार-पाँच शौक तोड़ा गनबैत छथि। तेसर मानि लियऽ जे ठनठनौआ-जाहिमे वर-कन्यागत ठनठन गोपाल भए काज करैत छथि।"[६]

एवंक्रमे ग्रामीण परिवेश ओ संस्कृतिक समस्त स्वरूप आ' विद्रूपताक केन्द्रमे उपन्यासक विषयवस्तु विविध संदर्भक संग स्वाभाविक रूपेँ उपस्थापित भेल भेटैत अछि।

भाषा-शिल्प :

सामाजिक समस्याकेँ हृदयंगम करबामे, विविध आयामक संकेत देबामे तथा ओकर उपस्थापनमे आलोच्य उपन्यास अद्वितीय अछि। 'कन्यादान'मे सामाजिक समस्याक बहुमुखी स्वरूप दृष्टिगत होइछ। कोनो विषय अथवा घटनाक चित्रण जखन भाषाक माध्यमसँ होइछ तऽ ओकर सहज, स्पष्ट आ' सरल ओ प्रचलित(समाजमे पचि गेल वा जायवाला) शब्दक नियोजनसँ ओ प्रभावकारी, रुचिकर ओ आकर्षक भ' जाइछ। भाषा पात्रानुकूल परिमार्जित होयब तथा ओहिमे स्थानीयताक निदर्शन करायब परमावश्यक भ' जाइछ। हरिमोहन झा मैथिली भाषा-साहित्यक लेल भाषाक जादूगरक उपमासँ विभूषित छथि।

एतय एकटा प्रश्न उठैत अछि जे कियैक कोनो-कोनो उपन्यास वा आनहु विधाक कृति विशेष प्रसिद्धि प्राप्त भ' जाइछ, तऽ कोनो कृतिक नामहु विष्मरणक कोलामे कतिआयल भेटैत अछि। वस्तुत: साहित्यक जे कोनो विधा होइछ खास कऽ सर्जनात्मक, भलहि ओकर विषयवस्तु सजीव होउक, प्रभावकारी होउक, टटका होउक, पात्रक चित्रण ओ कथोपकथन कथानुकूल होउक, वातावरण घटनानुकूल होउक, सोद्देश्यताकेँ द्योतित करैत होअय। मुदा ओकर भाषा पात्रानुकूल नहि होउक, ओहिमे स्थानीयताक निदर्शन नहि होइत होउक, ओकर भाषामे सरलता-सहजता-स्पष्टता ओ बोधगम्यताक अभाव देखि पड़य तऽ एहन कृति विशेष पाठकक मानस-पटलपर, जिह्वापर, चित्तपर कतेक काल धरि रहि सकत से सुधि पाठकक लेल संवेद्य थिक। पलखतिओ नहि लगतैक ओहन कथानककेँ स्मृति-पटलसँ विलोपित होयबामे।

"वस्तुत: लोक सामान्य-दैनन्दिन व्यवहारमे जेहन उक्ति सुनबाक अभ्यस्त रहैछ तेहने उक्ति ओकर कानमे अनायास पैसैत छै, आ हृदयमे बैसैत छैक। साहित्यिक समीक्षक लोकनि एहि गुणकेँ सहजता आ स्वाभाविकता कहैत छथि। प्रो० हरिमोहन झाक भाषामे इएह सहजता आ स्वाभाविकता भरल रहैत अछि आ सैह जादू जकाँ असरि करैत अछि।"[६]

'कन्यादान'मे पात्र रूपमे स्त्री होअय वा पुरुष जकर जेहन प्रकृति चरित्र छैक, जाहि वातावरणमे ओकर चित्रण भेल छैक ओकर पात्रहुक भाषा तदनुरूपे भेटैत अछि। पात्रक स्वभाव, परिवेश ओकर प्रवृत्तिपरक भाषाक नियोजनहिसँ उपन्यासक महत्ता सिद्ध भेल अछि। आलोच्य उपन्यासमे गामक स्त्री-पुरुष पात्रक लेल परिस्थिति-जन्य शब्दक चयन, नियोजन आ प्रयोग भेल भेटैत अछि। एहि प्रसंग मोहन भारद्वाजक निम्नोक्ति द्रष्टव्य थिक-

"सभसँ पैघ बात ई अछि जे उपन्यासकारक यथार्थवादी दृष्टिकोण कथ्यसँ कथानक धरि शिल्पसँ भाषा धरि ततेक समतूल अछि जे पाठककेँ ओहिसँ तादात्म्य स्थापित करबामे कोनो प्रयास नहि करऽ पड़ैत छैक। पाठक पोथी पढ़ैत जाइत अछि आ तालमेल खटाखट बैसैत जाइत छैक। जे बात कहल गेल अछि, जाहि रूपमे कहल गेल अछि ताहिसँ पाठककेँ पोथी पढ़बाक अप्रत्यक्ष आनंद एहि लेल होइत छैक जे ओ ओहि स्थितिसँ गुजरबाक अनुभव करैत अछि। घटना, पात्र, भाषा-सभठाम ओकर अपन गाम-घर भेटैत छैक। उपन्यासक यैह स्वाभाविकता ओकरा आत्मीय आ तेँ रोचक बनबैत छैक। 'कन्यादान' जे एतेक लोकप्रिय भेल तकर मूल कारण यैह थिक।"[7]

'कन्यादान'मे मैथिल समाजक अपन घर-परिवार, सर-कुटुम्ब, स्वजन-परिजनक संग समस्त गाम-समाजक अविकल जीवन-चित्र निदर्शित अछि। पाठकवर्ग औपन्यासिक घटनामे स्वयंकेँ जोड़ि लेबामे सक्षम होइछ। वस्तुत: ओ अपनहि घटना बुझि पढ़ैत रहल अछि। समरसता ओ स्वाभाविकताक इएह तत्व एहि रचनाक लोकप्रियताक एक मात्र कारण कहल जा सकैछ। से ठीके जे जं पाठकवर्ग समरसताक एहि समतल धरापर नहि उतरितय, एकाकार नहि होइतय, तऽ आलोच्य उपन्यास कदापि लोकप्रिय नहि होइतैक। एकहिटा उदाहरणसँ स्त्रीक बौद्धिक सम्पन्नता ओ ओकर भाषायी प्रयोग आ तकर प्रभाव-छटाकेँ देखल जा सकैछ—

"सौखमे सौख मिरचाइयोक सौख। हम दिन भरि बही तरबाक तज्जी ने रहय-और ओम्हर निश्चिंत सुतथि पद्मावती बहुरिया। ताहि पर कहनाइ जे माथमे दर्द होइए। अहा हा हा! छवि ने छटा मसुरीक दालि बड़ खट्टा! देहो जड़ैये।"[8]

उक्त कथन उपन्यासक स्त्री-पात्र (पनिभरनी) झुनियाँ माइक थीक। जे पढ़ल-लिखल तऽ नहिञे अछि, मुदा उक्ति चमत्कारिक छैक। से मिथिलाक महिलाकेँ ई क्षमता, वाक्पटुता बिनु पढ़ने-लिखनहुँ अनायासहि सामाजिक धराउ जकाँ प्राप्त भऽ जाइछ। उपन्यासकेँ उत्कृष्ट कोटिमे रखबाक लेल, जीवन्तता प्रदान करबाक लेल एहने भाषा-शिल्पक प्रयोग समुचित काल-पात्र ओ स्थानक अनुरूप होइत रहल अछि। एहन-एहन लोकोक्ति, उपमा-उपमेयक निदर्शन विषयानकूल ठाम-ठाम भेलासँ एहि उपन्यासमे पठनीयताक दृष्टिएँ रोचकता आबि जाइछ। दृष्टान्तक रूपमे विविध विषयक प्रसंग भेल किछु लोकोक्तिक प्रयोग निम्नवत् अछि—

"नाङट नहायब गाड़ब की?"[9]
"आग लगन्ते झोपड़ा जे निकशय से लाल"[10]
"धिया-पुता ककरो घी-ढारी करय मङरो"[11]
"भेल विवाह मोर करबह की?"[12]
"जब छौंड़ी सुनलक सासुरक नाँव
बुलि आइलि छौंड़ी सौंसे गाँव"[13]

आलोच्य उपन्यासमे ठाम-ठाम उपमा-उपमेयक प्रयोग करैत विविध संदर्भसँ घटना सभकेँ रुचिमय जे बनाओल गेल अछि, द्रष्टव्य थिक-

"किन्तु जखन कौतुकागारक द्वार पर पहुँचलाह तऽ देखैत छथि जे सौंसे घर ओही प्रकार खचाखच भरल अछि जेना कार्तीक पूर्णिमासँ एक दिन पूर्व सोनपुर जायवाली मालगाड़ी डब्बा लोकसँ भरल रहैत अछि।"[14] *पुन: "ओहि पावन प्रतीज्ञाक अर्थसँ वर-कन्याकेँ ततबहि सम्पर्क रहैत छैन्हि जतेक आधुनिक ग्रैजुएट लोकनिकेँ मिथिलाक्षरसँ।"*[15]

एहि उपन्यासमे मैथिलीक स्थानीय बोलीक प्रयोग पात्रानुकूल भेल अछि। जेहन पात्र-परिवेश तेहने भाषा। ठाम-ठाम सरल, सरस ओ बोधगम्यताक भाव लेने भाषाक प्रयोग पाठकक जिज्ञासावृत्तिकेँ बढ़यबामे सफल सिद्ध भेल अछि। एहिमे एकटा पात्र बटुक जी जे लालककाक ओहिठाम प्राचिन पद्धतिसँ शिक्षार्जन हेतु निवास करैत रहल छथि। हुनकहिसँ वरक परिचयक प्रसंग आंगनक लोकसँ भेल दु-टप्पीक उद्धृत अछि—

"लाल काकी-ऐ बाबू! कहू, वर देखय-सुनयमे केहन छैक?
बटुक जी-वर देखै सुनेमे केहन रहतन। जेहन आदमी होइअऽ। एगो नाक हइन, दू गो कान हइन, हाथ गोर हइन, और केहन रहतन।
लाल काकी-हो बाबू! जमाय पढ़ल-लिखल छैक कि नहि?
बटुक जी-हमरा लेखे तऽ कुछ न छथ। 'शंशकिरीत'मे हमरा साथे न बोल सकै छैथ। एगो कनीगो जोतिश के बात पुछ देलिअन ताहीमे ढेकार हो गेलन...।"[17]

स्थानीय बोलीक एकटा अन्य दृष्टान्त अवलोकनीय अछि—

"प्रौढ़ा जमीनन्दारनी-हिनका अपने सब की बुझैत हतिऐन्ह। ई खूब खेलायल छथ। जौन चीज पर अपन हक होतैन गऽ ओह पर पहले ही से कब्जा दखल कर देबे के चाहै छथ। कैसे कऽ अपन चीज टेब लेलन?"[17]

निष्कर्ष :

कोनो विधागत रचनामे भाषाक चमत्कारिक प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। भाषाक कौशलपूर्ण प्रयोग, ताहिमे शब्दक उपयुक्त गुम्फन-संयोजनसँ भाषा प्रवहमान् होइछ। पाठक स्वयंकेँ बिसरि ओहि दिशामे आत्मकेंद्रित भऽ जाइछ, जाहि दिशामे कथानकक प्रवाह गतिशील रहैछ। वस्तुत: इएह प्रवाह पाठकक मनोमस्तिष्ककेँ प्रभावित करैत अछि आ पाठक रुचिपूर्ण ढंगसँ एकर बेर-बेर पाठ करितहुँ अघाइत नहि अछि। हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्यादान'मे भाषाक चमत्कारिक प्रयोग अत्यन्त कलात्मक ढंगसँ भेल अछि, जाहिसँ समस्त वर्ण्यविषयक चित्रण स्पष्टताक संग प्रतिविम्बित भेल भेटैत अछि।

संदर्भ सूची

1. पाठक डा० अमरेश, द्वि०सं०-2007, *मै० उ० आलोचनात्मक अध्ययन,* आलोक प्रकाशन, विद्यापुरी, पटना-20 पृ०-30-31
2. पाठक डा० अमरेश, पु*नर्संस्करण-2006,* मैथिली उपन्यास साहित्य, सं०-झा डा० वासुकीनाथ, मैथिली साहित्यक रूपरेखा, चेतना समिति, पटना, पृ०-114
3. झा भीमनाथ, 2008, *पहिल दशकक* नवरत्न, सं०-रघुवीर मोची, हरिमोहन झाक साहित्य संसार, पृ०-221
4. झा हरिमोहन, द्वि०सं०-2006, *हरिमोहन झा रचनावली,* जनसीदन प्रकाशन, कुमर वाजितपुर, वैशाली, पृ०-14
5. तत्रैव, पृ०-21-22
6. झा पं० गोविन्द, 2008, भाषाक जादूगर हरिमोहन झा, सं०-रघुवीर मोची, हरिमोहन झाक साहित्य संसार, पृ०-172
7. भारद्वाज मोहन, 1998-17, समाज-अध्ययन अनिवार्य विषय थिक, सं०-झा राजमोहन, आरंभ, पृ०-72(भारद्वाज मोहन, 2008, समाज-अध्ययन अनिवार्य विषय थिक, सं०-रघुवीर मोची, हरिमोहन झाक साहित्य संसार, पृ०-35-36)
8. झा हरिमोहन, 2006, कन्यादान, पृ०-17
9. तत्रैव, पृ०-20
10. तत्रैव, पृ०-26
11. तत्रैव, पृ०-44
12. तत्रैव, पृ०-57
13. तत्रैव, पृ०-60
14. तत्रैव, पृ०-69
15. तत्रैव, पृ०-72
16. तत्रैव, पृ०-42
17. तत्रैव, पृ०-70

●●●

मैथिली प्रबंध काव्य हरवहाक बेटीमे फजलुर रहमान हाशमीक दृष्टि

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

माफी, आस्थावां, नालंदा।
सम्पर्क : +91 9934847941

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री हिन्दी, मैथिली आ उर्दूमे लगातार लिखि रहल छथि। गजल आ आलोचना हिनक प्रिय क्षेत्र छनि, मुदा बाल कविता सेहो खूब लिखैत छथि। हिन्दी गजलक विशेष आलोचकमे ख्यात डॉ. जाफ़रीजीक 'खुले दरीचे की खुशबू' आ 'खुशबू छू कर आई है' हिन्दी गजलक-संग्रह, 'गजल लेखन परम्परा और हिन्दी गजल का विकास', 'परवीन शाकिर की शायरी', 'डॉ. भावना का गजल साहित्य चिंतन और दृष्टि' आलोचनाक पोथी प्रकाशित एवं चर्चित छनि। 'चाँद हमारी मुट्टी में है' आ 'आखिर चाँद चमकता क्यों है' हिनक प्रसिद्ध बाल कविता-संग्रह अछि। हिन्दी साहित्यमे पीएच-डी आ यूजीसी नेट उत्तीर्ण छथि। देश भरिक दर्जनो सरकारी आ गैर सरकारी संस्था द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री संप्रति हिन्दी विभागमे अध्यापन क' रहल छथि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे आचार्य फजलुर रहमान हाशमी जीक नाम प्रथम मुस्लिम कविक रूपमे प्रतिष्ठित अछि। श्री हाशमी जीक जन्म 09 जनवरी 1942कैं पटनाक बराह (पटना)नामक स्थान पर भेल छल, मुदा भारत आ पाकिस्तानक बंटवाराक बाद ओ बिहारक बेगूसरायमे शरण लेलनि। हुनक पिताजीक पाँच भाइ छलखिन, जाहिमेसँ चारि भाइ पाकिस्तान केर कराची आ लाहौर चलि गेल छलखिन। मुदा ई छोट बच्चा हाशमी अपन पिता 'सलीमउद्दीन फातमी'क ई कहि कऽ रोकि देल गेलैक जे हम सभ भारत छोड़ि कऽ कतहुँ नहि जायब। जे भगवान पाकिस्तानक छथि सैह भारतक भगवान सेहो छथि। ओ हमरा सबहक रक्षा सब ठाम करैत छथि, तखन अपन देश छोड़ि कऽ की फायदा? पिताजी हुनकर बातसँ एतेक प्रभावित भेलाह जे एहि देशमे रहबाक दृढ़ निर्णय लऽ लेलनि। फजलुर रहमान हाशमीक मातृभाषा उर्दू छलनि। पढ़ल-लिखल परिवार छल। हुनका एतयसँ नदीम आ कारवां जैसन पत्रिका प्रकाशित होइत रहल, बादमे हिन्दी पत्रिका 'एक-एक क़तरा' सेहो प्रकाशित होमय लगल छल आ 'आज' सेहो...

हिन्दीक एकटा महत्वपूर्ण राजनीतिक आ साहित्यिक पत्रिका 'दूसरा मत' केर प्रकाशन हुनकर जेठ बेटा ए. आर आजाद द्वारा कएल जा रहल अछि। ई परिवार एखनहुँ साहित्यि सेवामे रत अछि। हिनक बहुतो बेटा-बेटी आ समांगसभ रचनाकार छथि।

हाशमीजी उर्दूमे पढ़ने छलाह। हिनकर अपन घरकैं छोड़ि मैथिलीक अपभ्रंश रूप सम्पूर्ण इलाकामे बाजल जाइत छल। घरमे ई भाषा बजनाइ मना छलैक। कारण गामक अशिक्षित वर्गमे अइ भाषाक प्रयोग होइत छल तैं ई मानसिकता विकसित भऽ गेल छलै कि ई भाषा कम पढ़ल लिखल लोकक भाषा अछि। मुदा हाशमीजीकैं एहि भाषासँ बहुत प्रेम छलनि। गामक लोकक संग ओ यैह भाषा बजैत छलाह। विद्यापतिक 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' जकाँ हुनका ई भाषा बाजब आ सुनब बहुत पसीन छलनि। यद्यपि ई भाषा मैथिली नहि छल मुदा मैथिलीसँ बहुत मिलैत जुलैत छल। हुनकर भाइ गुलाम मोहीउद्दीन चाँद कहैत छलाह कि एक दिन जखन ओ ओहि भाषामे गप शुरू कयलनि तं हुनका बहुत फटकारल गेल छलनि, मुदा ओ उतारा देलनि कि इहो एकटा भाषा अछि आ कोनो नव भाषा सीखला पर कोनो नोकसान नहि होइत छैक। हाशमी मैथिली भाषी नहि रहितहुँ मैथिली भाषा आ साहित्य पढ़य लगलाह।

हाशमीजी मैथिलीमे निरंतर लेखन आ प्रकाशन शुरू कयलनि। हुनक आवाजमे एकटा जादू छलनि, तँइउर्दू मुशायराक संग हुनका मैथिली कवि सम्मेलनक सेहो दूर-दूरसँ आमंत्रिण आबैत छल। आकाशवाणी दरभंगा आ पटनामे नियमित रूपसँ प्रस्तुति देबय लगलाह। आ बहुत कम समयमे हिन्दी आ उर्दू मैथिली कविक रूपमे हुनकर प्रसिद्धि पसरि गेल हिन्दीमे जखन बाल कविता, लघुकथा लेख आ गजल लिखैत छलाह, ओतहि उर्दूमे गद्य आ कविता दुनूमे पावंदीसँ लिखैत छलाह। ओहि समयक प्रसिद्ध उर्दू पत्रिका 'बीसवीं सदी'मे प्रकाशित होयब गौरवक विषय छलै। हुनक रचना ओतय निरंतर प्रकाशित होइत छल। उर्दू पत्रिका उमंगमे प्रकाशित हिनकर गी—

अपन जीह के असर दियौ
भले कठिन हो, ओकरा मोममे बदलि दियौ

कतेको स्कूलमे एकटा प्रार्थनाक रूपमे गाओल जाइत छलैक। मैथिलीक जादू हुनका पर एतेक काज केलकनि जे वर्ष 1996मे हुनका अपन कृति अब्दुल कलाम आजाद लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल। एतबे नहि, साहित्य अकादमीक सलाहकार समितिक सदस्य सेहो छलाह, आ साहित्य अकादमीक छहसँ बेसी पोथीक मैथिली अनुवाद कयलनि, जाहिमे फिराक गोरखपुरी, मीर ताकी मीर आदिक प्रसिद्ध जीवनी शामिल अछि। पाठ्यक्रम लेल विज्ञानक किताब सेहो लिखलनि जे बिहार सरकारक शिक्षा विभागसँ मंजूर छल, आ स्कूलमे पढ़ाओल जाइत छल। हिनक मैथिली रचना सेहो पाठ्यक्रममे शामिल कयल गेल। आइयो बिहार बोर्डक मैट्रिक क्लासमे हिनक कविता 'थर्मसक चाय' पढ़ाओल जाइत अछि। हुनक मैथिली साहित्यिक विकास पर कतेको लोक पीएचडी केलनि। वर्तमानमे नवल किशोर महतो मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगासँ मैथिली साहित्य पर पीएचडी कऽ रहल छथि। हिनक कविता संग्रह 'रश्मि रशि' आ हिन्दी गजलक पोथी 'मेरी नींद तुम्हरे सपने' हिन्दीमे प्रसिद्ध अछि, मुदा मैथिलीमे 'निर्मोही' आ 'हरवाहक बेटी'क रचना हिनक अपार प्रसिद्धि प्रदान केलक अछि निर्मोही मैथिली कविता 1977मे समरवाल प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊसँ प्रकाशित भेल छल। हरवाहक बेटी हुनक दोसर कृति अछि, जे सीताक जन्मसँ शुरू होइत अछि। एहि रचनामे सीताक वन गमनक चित्रण एहि तरहेँ कयल गेल अछि जे पढ़ैत काल नोर निरंतर बहय लगैत अछि। एहि कृतिमे सीताक जन्मसँ लऽ कऽ परलोकमे प्रस्थान धरिक कथा समेटल गेल अछि। रामक परम्परा आ शिष्टाचारक पालन करैत सीताक माताक रूपमे देखाओल गेल अछि।

मैथिली खंडकाव्य हरवाहक बेटीमे अयोध्या पहुँचला पर माता सीताक स्वागत जाहि तरहेँ होइत छैक, एहन अद्भुत घटना संभवत: कोनो आन रामकाव्यमे भेटब कठिन अछि।श्री हाशमी इस्लाम धर्मसँ संबंधित छलाह। इस्लाम धर्ममे सेहो ओ हजरत मोहम्मदक परिवारसँ आयल छलाह, एकर बादो हुनका हिन्दू धर्म पर गहीर अध्ययन छलनि। रामायण, गीता आ महाभारतक गंभीरतापूर्वक अध्ययन केने छलाह। दूर-दूरसँ हुनका प्रवचन लेल बजाओल जाइत छलनि। हुनका भीतर अपन वक्तृत्व कौशलसँ लोक के बान्हबाक अद्भुत क्षमता छलनि।

श्रीराममे संबंध निर्वाहक अद्भुत क्षमता छलनि। हुनका भरत आ कैकेयीक प्रति ओहिना प्रेम छनि जेना कौशल्या आ लक्ष्मणक प्रति छलनि। आदर्श पति, आदर्श पुत्र आ आदर्श भाइक गुण राममे विद्यमान छलनि। रावणक प्रति सेहो हुनका हृदयमे कोनो घृणा नहि छलनि ओ बेर-बेर लक्ष्मणसँ बहुत किछु रावणसं सीखबा लेल कहैत छथि, आ रावणकेँ मारलाक बाद, राज्य ओकर भाइकेँ देलाक बाद वापस अयोध्या आबि जाइत छथि। रामायणक ऐहध बहुतो संवेदनशील घटनाक वर्णन श्री फजलुर रहमान हाशमी केर काव्य संग्रह हरवहाक बेटीमे कयल गेल अछि।

मैथिलीशरण गुप्त एकटा विशिष्ट उद्देश्यक संग राम काव्य साकेतक रचना कयने छलाह, आ ओ उद्देश्य छल उर्मिलाक विरहक वर्णन करब। गुप्त जीक साकेतक बाद राम काव्यक लेखकक ध्यान उर्मिला पर पड़लैक, मुदा सीताक एकटा पक्ष सेहो रामक कवितामे हेरायल छल। सीता राजा जनकक बेटी छलीह, मुदा सीताक सरल जीवनमे कतहु राजकुमारीक चरित्र नहि भेटल।फजलुर रहमान हाशमी एहि पोथीक भूमिकामे लिखने छथि– एहि पोथीक माध्यमे हम सभ सीताक निजीकरण कएने छी। आइ हम जानकी जीकेँ राजाक बेटी मानि कऽ जे अधिकार छीनने छी से घुरा रहल छी।

खण्ड काव्य हरवाहक बेटीक कथा सीता के जन्मसँ शुरू होइत अछि। मैथिलीक प्रसिद्ध कवि श्री हाशमी एहि हरवाहक बेटीमे लिखैत छथि—

हर जोति रहल अछि हरवहा
भेंटल एक सुता सुनयनी
वैह सुता बढ़ि कऽ कहौलनि
जगमे सीता जनक नंदिनी

आगू सभ शिष्टाचारक पालन करैत ओ सीताक सौन्दर्यक वर्णन करैत छथि—

सूरज ज्योति जकाँ मुखमंडल
आँखि छलैक हिमकर के समान
जे देखल ओ बाजि उठल
एहन देखलहूँ नहि आन

कवि स्थापित करैत छथि जे राजा जनककेँ सीताक रूपमे बेटी तं भेटलनि, एहि संसारकेँ सीता सन स्त्री सेहो भेटलनि, जिनकर आदर्शक पालन करैत स्त्री पूर्ण भऽ जाइत छथि। एहि कविक शब्दमे —

राजा पौलक पुत्रीअप्पन
जग पौलक इतिहास
बरखाक हरियालीसँ फिर
हरियर भेल सब घास

राम कविता के पारखी श्री हाशमी कहबाक प्रयास केलनि कि जनकक घरमे माँ सीताक आगमन हुनकर किछु पुण्यक परिणाम छैक।

पुण्यक फल पुण्य होइत छैक
आ पापक फल पाप
महा पुण्यक बल पर बनलनि
जनक जानकीक बाप

सीता पैघ भऽ गेल छलि आ सभटा पिता जकाँ राजा जनक सेहो अपन बेटीक विवाहक चिन्तामे छलाह। जखन प्रतिज्ञा कऽ नेने छलाह जे कयो धनुष उठायत वैसे सीतक विवाह योग्य मानल जयताह। मुदा हुनका इहो चिंता छनि जे एहन योग्य वर नहि भेटत तखन माँ सीता कुमारि रहि जयती—

कइ देलन अप्पन घोषणा
भेलन विषाद पर भारी
एहन पुरुष यदि नहि भेटल
वैदेही रहत कुमारी

एहि पोथीमे आगू सीताक अपहरणक वर्णन अछि—

'लऽगेल चुरा के दसकन्धा
सीता के निज देश
अनुपस्थितिमे राम लखन के
बदलि भिक्षु सम भेष

श्री राम सीता स विरह स पीड़ित छथि। हनुमान जी ई बात नहि देखि सकैत छथि, आ ओ माँ सीता के तकबा लेल निकलि जाइत छथि—

पवन पुत्र जा पता चलोंलन
वाटिकामे सीता
दस शीशक ज़ुल्म क कारण अछि
अति मलीन पुनीता

रावण के अपन शक्ति पर बहुत गर्व छलैक। ओकरा लगैत छैक जे ओकर विशाल सेना आ पैघ साम्राज्य छैक। ई दुनू भाइ राम आ लक्ष्मण हमरा सभक संग की करताह?

जान क रावण हर्षित भेल
करि देवै सभाक अंत
हम्मर की बिगडि सकैत अछि
दू टा मात्र संत

राम आ रावणक बीच युद्ध होइत छैक। एकटा न्यायक प्रतीक आ एकटा अन्यायक उदाहरण। जाहिर अछि न्याय आ अन्यायक बीच न्याय सदिखन जीतैत अछि—

युद्ध भेल आ राम हाथ सँ
सभ जुल्मी मरल गले
यहि तरह संहार दस्युक
हरवहाक पुत्रीसँ भेल

हरबहाक बेटी एक मात्र राम काव्य नहि अछि, कविक दर्शन, प्रकृति वर्णन, काव्य हेतु और महाकाव्यक गुण सेहो चित्रितअछि ।हाशमी ई सत्यक उद्‌घाटन करैत छैक जे हर मनुक्खक एक दिन मरबाक अछि—

रहि धरा पर जीवनधारी
एक दिन अवस्स मरैत अछि
नीक बेजाय नाम अवस्स
धरती पर पड़ल रहैत अछि

जीवनक क्षणिकता श्री हाशमीक उर्दू आ हिन्दी कवितामे सेहो देखबामे अबैत अछि ।हिनक एकटा प्रसिद्ध कविता अछि—

हम समय के
कलंकित केने छी
हमर भाइ

हमरासँ डरैत अछि
हमर भावना जीवित अछि
हमरा लगैत अछि जेना हम मरि गेल छी

तहिना हुनक एकटा प्रार्थना गीतमे सेहो एहने मृत्युक भाव देखबामे अबैत अछि —

दिन-प्रतिदिन डरा जाइत छी
हमर मित्र
हमरा इजोत
हमर पास नहि अछि

एहि तरह हम देखैत छी जे श्री फजलुर रहमान हाशमी मैथिलीमे राम कविताक पहिल मुस्लिम लेखक छथि यद्यपि ईहो सत्य अछि जे मुस्लिम साहित्यकार लोकनि रामकाव्य पर आन भाषामे बहुत कम लिखने छथि, तँ फजलुर रहमान हाशमीक महत्व आओर बढ़ि जाइत छनि। हुनका हिन्दू धर्मक गहीर ज्ञान छलनि, ताहि लेल ओ कोनो पात्रक भूमिका निभा सकैत छलाह। ओ भागवत गीता के उर्दूमे काव्यात्मक अनुवाद सेहो करलकै, जेकरा उर्दू अकादमी, दिल्ली द्वारा बहुत दिन तक प्रकाशन लेल राखल गेलै, आ बादमे खारिज कऽ देल गेलैक। हुनकर प्रकाशनाधीन एकटा किताबक नाम हदीस का परिचय अछि जकरामे हजरत मोहम्मदक जीवनी बताओल गेल अछि । अपन एहि विद्वताक कारण बेगूसरायक साहित्यकारमे दिनकरक बाद हुनकर नाम सम्मानसँ लेल जाइत अछि।

•••

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम
अनुप्रास

रचनाकार सभसँ निवेदन

- रचना मात्र E-mail/WhatsApp पर पठाबी।
- रचना युनिकोड फॉन्टमे पठाबी। मोबाइलसँ टाइप कऽ सेहो पठाओल जा सकैत अछि।
- रचना अप्रकाशित आ मौलिक अछि एकर उल्लेख अवश्य हो।
- रचनाक संग फोटो आ अपन विस्तृत परिचय अवश्य पठाबी।
- रचनाक अन्तमे पूरा पता, मोबाइल नम्बर आ ई-मेल अवश्य लिखी।

— *सम्पादक*

WhatsApp : +91 9430583847, E-mail : anuprasprakashan@gmail.com

बाबूजी

डॉ. नारायणजी

घोघरडीहा, मिथिला, मधुबनी।
सम्पर्क : +91 94318 36445

डॉ. नारायणजी नवम दशकमे साहित्यमे अएलाह आ कविता, कथा एवं समीक्षा लिखए लगलाह। हिनकर पहिल कविता-संग्रह— 'हम घर घुरि रहल छी'(1993)पर चेतना समिति, पटना द्वारा महेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार,'अँगना एकटा आग्रह थिक'(2000)कविता-संग्रह पर यात्री पुरस्कार, मैथिल समाज, रहिका तथा 'धरती पर देखू'(2014) कविता-संग्रह पर कीर्ति नारायण मिश्र साहित्य सम्मान, चेतना समिति, पटना द्वारा प्राप्त भेल छनि। हिनकर अन्य प्रकाशित कृतिसभक नाम अछि, 'चित्र'(कथा-संग्रह-2016), 'जल धरतीक अनुरागमे बसैत अछि'(कविता-संग्रह- 2019), 'कोनो टूटल अछि तन्तु ' (कविता-संग्रह-2021), 'साँझबाती'(कथा -संग्रह -2023)। एकर अतिरिक्त 'निशान्त की चिड़िया'(कवि केदार कानन संग हिंदी अनुवाद (2003) साहित्य अकादमीसँ छपल छनि। नारायणजीक कविता आ कथासभक अनुवाद अनेक भारतीय भाषामे भेल अछि। 'अनार' (बालकथा-संग्रह) पर साहित्य अकादेमी बाल पुरस्कार भेटलनि अछि। अनुप्रास परिवार दिससँ बधाइ।

बाबूजी मरि गेलाह।

बाबूजी जेना मुइलाह, सुनि ककरो विश्वास नहि हएत, जे लोक एना सेहो मरैत अछि। जे एक टा शब्द कानमे पड़ल, प्रिय नहि, अप्रिय लागल, आ लोक मरि गेल ? ने कोनो तेहेन रोग ने व्याधि, ने कफ-पित्त-बात एक हएब, ने कंठक घड़ीघड़ी, ने उनटा श्वासे चलब। आने छटपटी, ने कुहरब आ मरि जाएब ?

एक टा जर्मन फिल्म समीक्षकक कथन एखन मोन पड़ि आएल अछि, जिनकर कहब रहनि जे सिनेमामे देखाओल मनुष्यक मृत्युकेँ कोन ई देखाएब भेल, जे मोमबत्ती मिझाए गेल आ मनुष्य मरि गेल ? देखेबेक अछि, तऽ देखाउ, मनुष्यक त्रासदीकेँ देखाउ, ओकर कछमछी, असह्य पीड़ा आ मूर्छाकेँ देखाउ। तात्पर्य, मनुष्यक मृत्युकेँ देखयबाक लेल मनुष्यक सम्पूर्ण मरणकेँ देखाउ, जे सभ लक्षण मरबाकाल मनुष्यमे देखाइत अछि। मुदा, फिल्म समीक्षकक मरणक अनुभव-ज्ञानसँ फूट बाबूजी मरि गेल रहथि।

बाबूजी ब्लाकमे नोकरी करैत रहथि।ग्राम-सेवक रहथि।नीक प्रतिष्ठा रहनि।एहन गुणक पाछू प्रशंसनीय गुण रहनि, जे अपन छात्र-जीवन कालहिसँ अत्यन्त मेधावी रहथि। कोसीक झमारल परिवार आ निर्धनताक कारणेँ आगू पढ़ि नहि सकलाह। एतेक धरि जे मैट्रिकसँ आगू नहि बढ़ि सकलाह। आठे वर्षक आयुमे पिताक देहान्त भए गेल रहनि।अपनाकेँ अनाथ बूझए लागल रहथि।आ तखन जे नोकरी भेटलनि, धए लेने रहथि।

बाबूजी अपन छोट आमदनीसँ छोट भाएकेँ पढ़बओलनि, एखन ओ सिंगरौलीमे इंजीनियर छथि। छोट बहिन रहए, खर्च-बर्च कए तकर नीक ठाम बियाह करबओलनि। हमरा पढ़बओलनि, जे आइ हम पटनाक सेक्रेट्रिएटमे नोकरी करैत छी।

बाबूजी रिटायर भेल रहथि। पेंशन भेटए लागल रहनि। आ से बाबूजीक नजरिमे पेंशनक राशि चिक्कन छल, अर्थात् प्रचुर छल। से एहि लेल छल, जे ओ बेसी वर्ष धरि नोकरी कएने रहथि। ओ बाजल करथि, जे रिटायर भेलहुँ, से अपन मान-सम्मान बचओने रिटायर भेलहुँ। एक प्रकारसँ काजरक कोठलीसँ बेदाग बचि आबि गेलहुँ।

से, एहन बचि आएल बाबूजीकेँ रिटायरमेंटक बाद एकमुश्त टाका जे भेटल रहनि, ताहि पाइक सदुपयोग ओ तीर्थ-बर्थ जएबामे नहि, पुरान बनल कहियोक सिकमीक घरकेँ तोड़ि मकान

बनएबामे कएने रहथि। ओ चाहने रहथि, जे बासडीह पर कमसँ कम दस फीटक एक टा छत बनबाए ली। मुदा, से मकान बनएबाक समय हमर पत्नी, माने जे हुनकर पुतोहु फोनसँ कहाँदनि कहने रहथिन, जे हुनका बेटी छनि, पाँच वर्षक बाद कन्यादान करए पड़तनि।से, बाबूजी जँ सभ पाइ घरे बनबएबामे दूरि कए देथिन, तऽ हमरा सभ लेल की रखथिन ?

कथा से बाबूजी बेर-बेर हमरा सुनाएल करथि। आ कहथि, "घर जे गाम पर बनबबैत छी, से अहींसभ लेल ने ? सुनियौन कनियाक बाजब!" बाबूजी से हुनकर कहल बात दोहराबथि आ दुखी भए जाथि। आ हम अनुभव करी जे एहन दुखक प्रभाव अपन अधीन हुनका बेसीकाल धरि राखनि।

एकदिन तऽ एना भेल जे हम बाबूजीक संग पटनासँ, जतए हम नोकरी करैत रही आ अपन फ्लैट कीनि रहैत रही, गाम अबैत रही। आ बस जखन दरभंगाक बस स्टैंडमे रुकल छल, हम अपन देह-हाथ सोझ करबा लेल बससँ उतरल रही। बाबूजी सेहो बससँ उतरल रहथि।आ ओ सड़कक कातमे लगाओल फलक एक टा दोकानसँ, जाहिमे अनेक प्रकारक पाकल-पाकल सेहन्तगर फलसभ छल, अपन रूप-रंगसँ आकर्षित करैत छल, अदहा किलो सेव किनने रहथि। मुदा, गाम अएला पर प्रात भेने जखन सेव काटि माँ बाबूजीकेँ देने रहथिन, तखन माँ खिन्न स्वरेँ बाजलि रहए जे कीनि आनल सेवमेसँ दू टा सेव सड़ले छल। आ हम अनुभव कएने रही जे बाबूजी से सुनि दुखी भेल रहथि। आ बाजल रहथि जे सेव बेचनिहार ठकि लेलक।आ तखन हमर हँसीमे कहला पर जे बाबूजी सेव किनबाकाल अहाँ ठकाइत रही, से हम दूरसँ देखैत रही। बाबूजी हमर कहल बातकेँ हँसीमे नहि बुझि आर दुखी होइत बाजल रहथि जे से अहाँ देखैत रही तऽ रोकलहुँ किएक ने यौ? आ हम वार्तालापमे कोनो हँसीसँ उत्पन्न भावक दोसर रूप जानि निरुत्तर भए गेल रही।आ बाबूजी आर उदास भए गेल रहथि।

आ गाममे एकदिन टहलबाकाल नरेनजी भेटल रहए। ओकरासँ गामघरक अनेक तरहक गप भेल रहए। अन्तमे ओ एक टा बात कहने रहए, "हओ, तोहर बाबूजी तोरासँ बात करबा लेल जखन फोन लगबैत छथुन, तऽ हुनका तोरासँ बात करबाक परम इच्छा रहैत छनि जे बौआसँ कने आर बात करी।मुदा, तोँ कहाँदनि कहैत छहक जे फोन राखू बाबूजी, अहाँक आवाज कटैत अछि।"

"नहि, से कोनो बात नहि रहैत छैक! एहनो कतहु भेलैक अछि ? असलमे अपनसभक ओहिठाम नेटवर्क कतेक कमजोर रहैत छैक, से नहि जनैत छियैक ? आ बाबूजीसँ हम कोना नहि बात करऽ चाहब ?" हम बाजल रही।

मुदा, असली बात ई छल जे बाबूजीक फोन करबाकाल हम तखन डेरा पर या तऽ कोनो काजमे बाझल रहैत छी, अथवा आफिस जाइत रहैत छी।आ ताहिसभमे बाझल नहियो रहैत, बाबूजीक बिनु जड़ि-छिपक फोन पर कतेक बात सुनू। आ से सभ बाबूजीसँ सुनब फालतू बात बुझाइत रहैत अछि। आ अकच्छ भए वास्तवमे बाजए पड़ैत अछि जे बाबूजी अहाँक आवाज कटैत अछि।

एकबेर पटनाक हमर डेरा पर बाबूजी गामसँ आएल रहथि। जँकि मकानक तीन मंजिला पर हम डेरा छल, आ चढ़बा लेल केवल सीढ़ी टा छल, लिफ्ट नहि छल, बाबूजी हकमैत सीढ़ी चढ़ि कालबेल बजओने रहथि, आ हमर सात वर्षक बालक, जकर नाम सौरभ छल, गेट खोलने रहए । आ ओ अपन माएक पुछला पर जे के छथि, से जेना बूढ़ भेलासँ बाबूजी झुकि कए चलैत छथि, ओ झुकि कए चलि अपन माएकेँ बुझओने रहए, बाबूजी कहाँदनि कठहँसी हँसि बाजल रहथि, "देखू, सौरभ हमर केहन नखरा उतारैत अछि ?"

प्राय: बाबूजीक से स्वर दुखक स्वर रहनि।

बाबूजी नहाए-सोनाए आ भोजन कए डेरा पर आराम करैत रहथि।ओहि दिन रवि रहैक। हम सेहो डेरे पर रही। सौरभ कहने रहनि, "बाबा, अहाँ इलेक्ट्रिक ट्रेन देखने छियैक ?"

— "नहि देखने छियैक।"

— "अहाँ इलेक्ट्रिक ट्रेन पर चढ़ब ?"

— "हँ, चढ़ब।"

— "बाबा, इएह इलेक्ट्रिक ट्रेन थिक। गाँधी मैदानमे लागल मेलासँ कीनि अनलियैक अछि।"

— "हँ, खूब बढ़िया अछि। हम देखनहुँ नहि रही।"

ओ ट्रेन बच्चासभ लेल एक प्रकारक खिलौना छल।बिछाओल पटरी पर गोलमे स्विच दबला पर घुमि अबैत छल, जखन ओहि ट्रेनकेँ इलेक्ट्रिक बोर्डसँ कनेक्ट कएल जाइत छल। पटरीक कातमे कने-कने दूरी पर छोट-छोट चारि टा टीनक बनल झंडा जकाँ लागल छल, जाहिसभ पर क्रमशः दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई आ कोलकाता लिखल छल। आ जाहि महानगर लेल स्विच ऑन कएल जाइत छल, ट्रेन पटरी पर चलि झंडामे लिखल महानगर लग आबि रुकि जाइत छल।

से, सौरभ बाबूजीकेँ ट्रेन देखबैत पुछने रहनि, "बाबा, अहाँ चेन्नई जाएब ?"

— "हँ, जाएब ।"

— "बाबा, चेन्नईमे अहाँक बेटा रहैत छथि?"

— "नहि, चेन्नईमे हमर बेटा नहि रहैत छथि।"

— "तखन किए जाएब ?"

बाबूजी हमरा कहने रहथि, "बौआ देखू, बच्चासभ सेहो कतेक बूझए लागल अछि, जे जनैत अछि, जतए बेटा रहैत छनि, बाबा ततए भेल फिरैत छथि।"

हम बिहुँसल रही।

बाबूजी नहि बिहुँसल रहथि।

हम साँझमे बाबूजीसँ पुछने रहियनि, "बाबूजी आइ माछ आनी ? माछ खाएब ?"

— "हँ, किएक ने खाएब ? आनू !"

हम असमंजसमे पड़ि गेल रही। बाबूजीकेँ माछ खाएब दऽ पुछि तँ देने रहियनि। ओ अपन स्वीकृति सेहो जनाए देने रहथि, तखन माछ कोना नहि आनि दियनि ? मुदा, सत्य ई छल जे बाबूजीसँ से अनिच्छुक बनि पुछने रहियनि। हम माछ आनए नहि चाहैत रही। काल्हि आफिस छल।रातुक खएलहा भरि दिन धोनि-ढेकार दैत रहत, तकर डर छल। हम बाबूजीसँ मोन मारि कहने रहियनि, "बाबूजी, अहाँ कतेक ने माछ खएलहुँ अछि, आब की माछ खाएब।"

बाबूजी अपन नजरि उठाए हमरा दिस तकने टा रहथि। किछु बाजल नहि रहथि। हुनकर से मौन हमर सुविचारित अपराधकेँ बखानि सकैत छल। मुदा, एहन अपराधकेँ हम कखनहुँ अपराध नहि मानल करी।

प्रात होइत बाबूजी बाजल रहथि, "हम आइ गाम जाएब।"

हम गपसँ बुझाबए चाहने रहियनि, "बाबूजी, हम छुट्टी लए अहाँकेँ गाम पहुँचाए देब।"

हम बाबूजीसँ फूसि बाजल रही।हमरा आफिसमे बहुत काज छल। मार्च क्लोजिंग चलि रहल छल। आ बाबूजी सेहो बुझि लेने रहथि जे हम फूसि कहि रहल छियनि, जे हम गाम धरि पहुँचाए देबनि।

बाबूजी हमर कहल नहि मानने रहथि, आ गाम चलि गेल रहथि।

हम अपन एकान्तमे सोचैत छी जे फी-बातमे हँसैत रहएवला बाबूजी आब गुमसुम रहए लागल छथि। महाकठिन भए गेल छल सरि भए कए बाबूजीकेँ बूझब। ओ समयमे समयसँ आगू-पाछू नहियो भेल रहथि, तऽ समयमे समयसँ बाम-दहिन अवश्य भए गेल रहथि। समय संग नहि बनल रहबाक कारणेँ ओ छोट-छोट बातसँ आहत होबए लागल रहथि।

*****

एक दिन गामसँ बाबूजीक फोन आएल । ओ कहलनि, "बौआ, अहाँक माएक मोन बेसी खराप भए रहलनि अछि। हमर विचार अछि जे पटनाक नीक डाक्टरसँ देखाए दितियनि।"

आ बाबूजी तकर दोसर दिन माँकेँ लए आबि गेल रहथि।

माँकेँ पटनाक नीक डाक्टरसँ देखाए देने रहियनि। दबाइ चलए लागल रहनि। मुदा माँक स्वास्थ्यमे कोनो सुधार नहि बुझाए रहल छल। दिन-प्रतिदिन रोग छुटबाक बदला जड़िआएले जाइत बुझाइत छल।

बाबूजी समय पर माँकेँ अपन पुतोहु अर्थात् हमर पत्नीक हाथेँ दबाइ खुअबाबथि। मुदा, रोग घटैत नहि बुझाइत छल, सुधार कतएसँ बुझएतए?

आफिस जएबा लेल एक दिन तैयार होइतहि रही आकि माँकेँ उकासी उठि गेल रहनि। आ ओ शोणित बोकरि देने रहथि। सभ केओ चिन्तित भए उठल रही। एक टा नामी हास्पिटलकेँ फोन कएने रही। तुरंत एम्बुलैंस आबि गेल छल। एम्बुलैंसक कर्मचारीक सहयोगसँ लाड़ूबातू भेलि माँकेँ डेराक तीन मंजिलाक सीढ़ीसँ उतारल गेल छलनि आ हास्पिटल लए जएबाक लेल एम्बुलैंसमे चढ़ाओल गेल छलनि।

बाबूजी सीढ़ीसँ उतरल नहि रहथि।

पुतोहु सेहो सीढीसँ उतरलि नहि रहथि। बाबूजीकेँ एकसर छोड़ए नहि चाहने रहथि। ऐकान्तिक अवसादसँ बाबूजीकेँ बचाएब हमरासभकेँ आवश्यक बुझाएल रहए। सौरभ सेहो स्कूल गेल छल।

बाबूजी कहाँदनि बाल्कनीसँ माँकेँ एम्बुलेंसमे चढ़बैत देखि सीढ़ी धरि आएल रहथि। आ एकेबेर चीत्कार मारि कहैत खसि पड़ल रहथि, “आब सेवा कए हमरा के जिअओने रहतैक हओ दैव ?”

“एना जुनि हदियाथु! हिनकर सेवा लेल हम नर्स राखि देबनि!” पुतोहु बाजलि रहनि।

“नर्स !” बाबूजी एकेबेर चिचिआएल रहथि, आ पुतोहु दिस ताकि अपन आँखि दुनू उनटाए देने रहथि।

बाबूजी मरि गेल रहथि।

•••

पहिल छाप

श्रवण साह

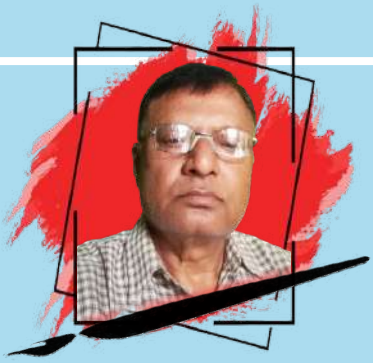

बिचखाना, एकतारा, बेनीपट्टी।

सम्पर्क : +91 9334905366

खाता-खेसरा

जिनगी बितल बेहोस, दोष आब देबै ककरा।
अंत समय गेल आबि, तकै छी खाता-खेसरा।

खतियानी परिसम्पति पर, अहाँ ध्यान नहि देलहुँ।
संचित रकबा पूण्य-पुंजकेँ फूँकि गमेलहुँ।
असमर्थ छी आब, भरोसा करबै केकरा।
अंत समय गेल आबि तकै छी खाता खेसरा॥

आयल अछि यमराज करै लय जिनगिक सर्बे।
अप्पन गेल बिढाय, आन लै किअय तों मरबै।
नहि अछि ओ विश्वस्त, उपकृत कएलहुँ जकरा
अंत समय गेल आबि तकई छी खाता खेसरा॥

‘श्रवण’ सुयश लिय काढ़ि, करू अहाँ चिक्कन करनी।
ओयह असली खतियान-धेनु लाँघत बैतरनी।
केवल इश-भरोस, ने ताकू जेकरा-तेकरा।
अंत समय गेल आबि तकै छी खाता-खेसरा॥

नीता झा

दरभंगा।
सम्पर्क : +91 7019852694

मैथिली गद्य साहित्यक ख्यातिलब्ध नाम नीता झा विश्वविद्यालय मैथिली विभागाध्यक्ष रूपमे सेवानिवृत्त छथि। मैथिली साहित्यमे कथा एवं आलेख विधामे सक्रिय छथि। कथाकार रूपमे चर्चित नीता झाक फड़िच्छ(1984), कथा नवनीत(1990), पृथा(2002), देश-काल(2010),आधा आबादी(2018) प्रकाशित छनि। सामाजिक असंतोष ओ मैथिली साहित्य(1992), पाछाँसँ अबैत इजोत(2007), भावतत्व(2015) आदि हिनक चर्चित एवं प्रशंसित पोथी छनि। चेतना समिति, पटना द्वारा वर्ष 1992मे माहेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार एवं यात्री चेतना पुरस्कार (2022), मिथिला विभूति सम्मान(2013), एवं किरण पुरस्कार(2015)सँ अलंकृत छथि।

कंटरोल

रेऽऽऽऽ पबना, गगना, अनिलबा, सचिनमा ! आइ एतबार हउ, खाऽ कऽ अँगना से ससरि नै जाइ जइहै चारू भाइ। तोरा पाँचो बापुत से आइ हमरा कुछ पूछे के हय। हम आबै छिऔ बड़की मायक अँगनासे, हुनका बोलने। बापोके हिंये बोला ला...।

चारू भाय एक दोसरक मुँह ताकलक। सासुक फरमान सुनि चारू देआदिनी अपन-अपन कोठलीसँ बहरायल। चारू छौंड़ा अपन-अपन जनाना दिस ताकलक जे किछु भाँज लागैक। चारू हाथ डोलाकऽ नकारात्मक संकेत देलकै। चारूके पहिलौठ बेटी छैक, ओ सभ दादीमे नुड़िआयल रहैत छैक— इसकुलसँ अयलाक बादो चारू मौगीके अपन-अपन बेटीके दादीमे लेपटायल देखि नीक नहि लागैत छैक। किसनौत समाजक सम्हरल गृहस्थ परिवार। खेत-पथार, गाय-महींस-बड़द सभटा पोसै यै। चारू बेटा की तऽ डरेवरी करैत छैक आ, नहि तऽ कोनो दोकानमे नोकरी। बसोबासक जमीन-डीह छैके। कम्मे छैक, किन्तु दुमहला ठोकिकऽ चारूके...

एक-एकटा कोठली भऽ गेल छैक। इन्दिरा आवासक टाका भेटलै, शौचायल लेल टाका भेटलैक... बच्चा सभके फ्रीमे खेनाइ, डरेस आ टाका अलगे। उपर से अन्न-पानि... बी.पी. एल. छैक ने!

—बड़की माय... बड़की मायऽऽऽ केन्ने छथिन ?

—के ?

—हम छिअन बड़की माय, बजारबाली।

—आबऽ-आबऽ, घरे आबऽ।

—कनी इहे बाहर इकलथुन न, चलथ हमरा अँगना, हमरे जौरे...।

बड़की माय निकलि कऽ बाजल रहैक— से कोन बात भऽ गेलऽ हे बजारबाली, जे अपने एलऽ हमरा बोलाबे ? कोनो पोता-पोती दिआ समाद भेजा दीतऽ....।

—इहे एकटा बच्चल छथिन ऊँच-नीच देखबै लै, सिखबै लै, से हम दोसराके भेजती ? हमर ई देह-समाङ हिनका लै ने तऽ

कोन काजक ?

ठेंगा नेने बड़की माय आगाँ आ बजारबाली पाछाँ... तकर पाछाँ चारू पोती मानसी, मनीषा, मान्या आ मधुरी। सभसँ छोटकी, एखन कोरे काँखमे रहैत छैक। ठोर छैक मधुरीक फूलसन गुलाबी, तैं सभ दुलारसँ मधुरी कहै छै। मानसी कोरमे नेने रहेक।

—आबथ, बैठथ बड़की माय।

बजारबालीक चारू पुतहु आबि बूढ़ीके गोड़ लागलकनि आ पयर जाँतय लागलनि। एक जनी करू तेलबला मलसी लऽ आनलकै। बड़की माय बजारबालीक अजिआ सासु छथिन तऽ एहि चारू कनियाँक कोन सासु भेलथिन ?

—आइ तऽ सब जूमल हऽ, एतबार हय न ! तैं सभ अँगने हऽ...।

— हमहीं सबके जमा कऽ कऽ बोलेने छिअन आई ई हमरा फरिआ दऽथ..।

— की भेल हे बजारबाली ? तौं छऽ बजारक, मगर सब दिनके सैंतल छऽ, ओरे दिनसे...। तोरा के, की कहलकऽ जे हमरा फरिआबे लै कहै छऽ ?

— देखथुन बड़की माय, हम हिनका तऽर बसलिअनि, अपन बुढ़िआ तऽर बसलियै। आ आब हम अइ चारू मौगिओ तऽर बसिअइ ? हम सब दिन तऽरे रहियै.... हम उप्पर कहिओ नै...? ने तऽ चारू छौंड़ा आ ने तऽ ओकर बापे कुछ बोलै हइ...। कहइ जाइ हइ— जनी-जातिक लफड़ामे हम नै पड़बौ...। अपने पाँचो मील कऽ फरिओ...। सब तऽ हिनके कैल-धैल हन बड़की माय...। अपना सबके लमहर पलिवार भेलै— बड़का बाबू ने असगर रहथिन। बेटा तऽ चारि टा रहैन आ दूटा बेटी छओक निमाह-पतिपाल असगर बड़का बाबू केलखिन। दुनू बेटीक लैहरा ससुरारि... सब निमहलै। कहिओ काइ-कटकट होलन ? आ, आब तऽ पोता-पोतीके कोन बात जे छेरपोता-छेरपोती हन...।

— एखनी की भेलऽ से बोलऽऽऽ...।

— कोनो अँगनामे नीक-निकुत बनइ तऽ घरे-घर बेना बटाइ...। सब एक दोसराके दइ...। पाकै तऽ उहे पूड़ी आ खीर निढ़ाइ। जै पलिवारमे जेतना लोक तेतना पूड़ी बटाइ, की नै ? से कहथुन बड़की माय ? आब ई मौगी सब हमर हाथ रोकै है। हमर बुढ़िया-हिनकर पुतहु, हमरे रान्हे कहै। पूड़ी पकइयै, खीर निढ़ियै आ घरे-घर बाँटहू जइयै। हम्मर उ हिसका छुटतै ? अगल-बगल, ओरे दिनसँ सब जातिक लोक बसै हइ...। मलाह इहाँ से मछरी दऽ जाइ हइ, पासमान इहाँसे सलहेस पूजामे खिरिआ पुड़िआ बटाइ हइ, कोनो कोनो बेर मुर्गा भात सेहो दइ जाइ हइ। बरहम बाबाके पूजामे खीर, केरा, लऽड्डू दइयै जाइ हइ, चारू घरमे। कतना गनइअन, हिनका तऽ सब देखले हन। बरहम बाबाके बेहरी तऽ हिनकर पोते दइ हइ, पुछथुन चारू छौड़ाके! केओ देलकै कहिओ बेहरी ? ईद-बकरीदमे सबइ-दूध, चीनी, कटुक मसल्ला आ फल दइ हइ आ मासु तऽ देबे करइ हइ। से सब खाइमे एकरा सबके बड़ मन लागै हइ आ बाँटे बेरमे दाँती लागइ हइ। बड़की मौगी बोलइ हइ जे—

— हम कोनो मछरी-मुर्गी खाइ छी ?

— गेऽऽ तू नऽ नइ खाइ छे, तोहर घरबाला आ बेटा-बेटी खाइ हउ नऽ ! तोरा लैहरामे केओ खाइ हउ मास-मछरी जे तू खइबे...।

— देखू, हमर नैहरा नइ उकटू...।

— हम अपने पकबै छी, हमरा एखनी आङ-समाङ है। हँ ई सब मदद जरूर कऽ दइ है। केओ पूरी ठोकि दइ है, केओ छाने लै बैठ जाइ है...। सीधा-पानी हमहीं जोरै छी, माने हिनकर पोता पुरबै हन। तब ई मौगी सब हमरा पर कंटरोल करइ है जे-पलिवार पीछू चारिटा पूड़ी आ तनी खीर दिये कहै है। हम एकरा सबके कहिओ कंटरोले ने केलियै आ, ई सब हमरापर कंटरोल करत ? ई चारू मौगमेहरा बापक

जित्ता जिनगी चूलही अल्लग कऽ लेलक। कर भाइ, अपन-अपन कमो आ खो। हमरा पर दाब कोन बातके? हमरा लोग दइ है तँ हम तँ सधेबे करबै। खाली खेबे नइ ने करबै ? ई चारू मौगी हमर हाथ रोकइ बाली के? ककरोसँ कुछ मांगे जाइ छिअइ ? चारूकेँ चारिटा थार साँठि दइ छियै, अपना अपनी कऽ सब लऽ जाइ हय...। सब पबनी हम अपने करइ छी। चारूकेँ मनता मानल हइ, बुढ़ियेकेँ जबानासे। कोइ एक हत्था केरा की एगो नरिअरो ला कऽ दइ है— बड़का पबनीमे। घाट परसे अइते मातर अपन-अपन सूप कोनियाँ लऽ जाइ जेतन। कोइ एक गिलास पानी की चाहो दइहै— सामनेमे ही बोलै छीअन। बेटीक असरामे चार-चार ठो बेटा जनमइली, कोन साफल ? रौना माइ बेटी नइ देलन, मगर रुनकी-झुनकी पोती देलन दू-दू जोड़ा। हिनके असिरबाद से अहू अँगनामे मड़बा बन्हेतै बड़की माय, बेटी बिआहक गीत होतै...।

आइ बजारबाली कंटरोलसँ बाहर भऽ गेल रहैक, बड़की मायक बल पाबि। ओकर घरबला जकरा बलें ओ गिरथाइन अइ, चारू बेटा जे सासु-पुतहुक झगड़ासँ काते रहै छै, चारू मौगी जे बोलबाहरि छैक। एखन सभक मुँहमे सपटी लागल छैक। ओकरा फेर जुआरि आबि गेलै—

— छठिक परसाद के ने ककरा दइ हइ, से ताहू लै मौगी सब बोलै है— घरक बाल-बच्चा लिलोह होइ हय आ बुढ़िया बाँटने घुरइ हय...।

बजारबाली कोनो नीक मनसँ लोक हमरो कहे..., सब कूट करे कूट...। हम चपरासीकेँ बेटी, सरकारी डेरा रहे, बिजुली बत्ती, पर-पेखाना। से हींआ आ कऽ हम गाछी-बिरछी गेली आइ सब लद्दी-पोखरी बाली घरमे जाइ हइ...। सासु-ससुरेक अरजल पर ने ? तकर कोनो गुण राखइ जाइ है। आब देखबे ने जे अपन मरदाबाके कमाइ पर की सब करइ जाइ है...।

हम बजारबाली गोबर-करसी, घास भुस्सा, बथान, गोबर-गोंत सब कइली, जे देखनहू ने रही। बुढ़िया सब काममे जोत दीये...। ऊ काम सब करेकेँ हिसका नइ, कुहरि-कुहरि करी। हँ, हिनकर पोता सब दिन हमरा पीठ पर रहलन...। आ ई देहातिन मौगी सब इस्सी पिस्सी कऽ कऽ पलंगरी तोरैत रहइ है...।

अखनी जे बैसाखी— घड़ी पबनी भेलन हन तैमे जे हमरा दऽ जाइ है, हमहूँ तकरा देलियै। तइलै चारू मौगी अट्ठाबज्जर खसा देलक। पाँचो मरदाबा कात भऽ जाइ हय— मौगी-मेहरके बातमे हम सब नै कुछ जानी... अही लै अखनी हिनका बोलाकऽ लइलिअन हन। ई जे कहथिन— हम सेहे करबइ...। एखनी सबसे उप्पर इहे हथीन हम कुछ नइ बोलबन। ई जे कहतन हम माथ चढ़ाकऽ राखि लेबन...। हमरा बुढ़िआक जइ बात-बेबहार से दुख भेल से हम एकरा सबके जौरे कहिओ ने केलियै।

— देखऽ हे लबकी कनिआ सब। तौं सब तऽ हमर पोतेक पुतहु छऽ...। सासु माय नइ होइ हइ, माय दाखिल होइ हइ। ई जे हमर पोतपुतौह एतना दुखनामा कहलक से तौं सब बोलै जाइ जा झूठ की सच? कोनो बातकेँ दुःख दइ हऽ... हाटन-डाटन करइ हऽ ? बोलइ जाइ जा केहन बन्हिआ तऽ टन-टन बोलइ जाइ छऽ। अखनी कैला नै बोलै छऽ...?

चारू मूड़ी गोतने ठाढ़ ठोरमे सपटी लागल। एहन सन जेना मुँहमे वाक् नहि होइक। पाँचो मरदाबाक झुकल कान्ह। पोती सब दादीक देह पर लुधकल, पोता सब बाहरमे खेलाइत-धुपाइत।

— कैला एकरा दाबमे राखै छहू, कंटरोल करइ छहू ? एखनी एकरा पैरुख हइ, अपना पर हइ। तऽ तनी बोलिये से न मान-मरजाद करबहू, आ की सेहो नइ ? हमर पोता एखन कमाइ हइ, अपन घरबलाक जोड़ल-चीतल बाटइ या उड़ाबइ, रोके बला तौं सब के ? कोन बात के, रोब-दाब आ कंटरोल ? अपना पर कंटरोल करइ जाइ जा...।

•••

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

वेदनगर, रुकनपुरा, पटना।
सम्पर्क : +91 87096 10336

डॉ. रंगनाथ दिवाकर 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर, 'प्रवासी प्रतिबिम्ब' आदि ग्रंथ सभक सम्पादन कयने छथि। स्वतंत्र पोथीमे 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी', मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग', 'सुलतानपुर सौरभ', 'महाकविक महाप्रयाण', 'मिथिला मन्दार मञ्जरी', 'मिथिला पारिजात मञ्जरी' आदि प्रमुख अछि। अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा' (ले. गुलजार सिंह संधू) क डॉ. दिवाकर कृत मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अछि। शोधमे रूचि रखैत छथि। कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भक निर्माण हिनक अमर कृति अछि आ एहि कारणेँ ओ अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। किरण पुरस्कार, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' सम्मान, मिथिला विभूति, मिथिला रत्न सहित अनेक पुरस्कार/सम्मानसँ अलंकृत छथि।

खुट्टीपर टाँगल घुँघरू

ओना नाम रहय रामदेव खतबे मुदा सब कहैत छल रमदेवा। किएक नहि कहत? ओ कोनो काजक नहि। गोबरक चोत। कोमल देह आ तन्नुक मोन। ककरो खवासी कहियो मंजूर नहि। जऽनमे सकैत नहि छल आ पढ़ल लिखल साढ़े बाइस। तहिना मुहफट सेहो। अपन मर्जीक राजा आ अपन मोनक भिखारि। जे मोनमे आबय सैह करत। मोन हेतै तखन अहाँक लेल पहाड़ ढाहि देत बिनु किछु नेने आ नहि मोन हेतै तऽ किछुओ गछि लियौ वा दऽ दियौ, ओ एगो खऽर नहि उसकाओत। बोलीमे लसि नहि, आँखिमे ने लेहाज आ ने पानि, हाथमे सऽक नहि। काजो कोना भेटय! बापक नाम तऽ रहैक ज्ञानी मुदा लोक ओकरा गेनमा कहय। ओ पढ़ल-लिखल नहि रहय मुदा गीत-नाद, विद्यापतिक पदावली आ तुलसीक मानस केर पाँती सब मोन रहय। ओकरे मुइलाक बाद गाममे भोरका परातीक स्वर शेष भऽ गेलै। ज्ञानी किछुए दिनमे अकानि लेलक जे बेटा अपना मोनक राजा अछि। ओ नेनपनेसँ ओकरा गीत सभ रटबऽ लागल, सुर-लय-ताल-मात्रा समझाबय, राग-भास-मींड आ आरोह-अवरोह सभक रहस्य बताबय। स्वरलिपि सिखबैत रहय। मुदा छौंड़ा रहय अलगटेंट! एक बेर बाप कहलकै जे घरमे किछु नहि छौ। हवेली जाकेँ बूढ़ी मलिकाइनसँ कह जे बाउ बेमार छै, किछु सिदहा माँगलक अछि। एकटा भजन सुना दिहै। ओ एतेक दऽ देथुन जे दस दिन अन्न नहि घटतौ। ओ अड़ि गेल जे हम भजन सुना देबै, अपना मोने जे देथिन से नेने आएब। करबो कएलक सैह। कनिआ काकीकेँ भजन सुना देलक। ओ अपने भोजन लेल जाइत रहथि। एकरो बैसाकेँ नीक-नुकुत भोजन करा देलनि। चारि छिम्मी पाकल केरा सेहो देलनि जे गेनमाकेँ दिहै। बस। रमदेवा जखन घुरिकेँ गामपर आएल तखन ओकरा ढकरैत देखि बाप पुछलकै। ओ कहि देलक जे हम माँगलियै किछु नहि। अपने मिसरजीकेँ कहलनि जे एकरा भरि पेट खुआ दियौ। बड़ नीक भजन गबैत अछि। मिसरजी सेहो भजन सुनने रहथि। हमरा खूब खुआ-पिआ देलनि। राहरि दालिमे घीक एहन स्वाद नहि देखने रहियै कहियो। फेर अबैत काल यैह चारि छिम्मी केरा देलनि।

एड़ीसँ टीकासन धरि गेनमाक देह तामसे घोर भऽ गेलै। माथपर घामक चुहचुही देखा रहल छलै। ओ बेटापर खूब बिगड़ल- 'जो रे करमजरुआ! अपने घी-मलीदा भकोसिकेँ आएल मुदा बाप भूखे टटा रहल अछि, माय भूखे लारू-बातू भेल पड़ल अछि आ दुनू बहिन भुखले सारुख आ भैंट लेल रने-वने छिछिआइत अछि से बाजल

नहि भेलौ।' बापक एकहि चाटमे रमदेवाक कनपट्टी लाल भऽ गेलै। आँखिक सोझाँ चान-तरेगन देखा गेलै। दोसर चटकनसँ पहिने ओ पड़ा गेल। कतऽ गेलै तेकर कोनो ठेकान नहि। जखन मुनहारि साँझ भऽ गेलै आ बेटा नहि घूरल तखन ओकरा बकोर धऽ लेलक। जेना-जेना अन्हरिया पसरि रहल छलै गेनमाक हाथसँ जेना बेटा ससरि रहल हो। ओ बेकल भेल कनैत रहल। राति नहि आएल बेटा। भूख बहुत लागल छलै मुदा बेटाक शोग जेना भूखकेँ खा गेल हो। चारू छिम्मी केरा ओहिना टुटलाहा खाटपर रखले रहि गेलै। केओ ओकरा दिस नहि देखलक। बेकल भेल गेनमा पेटकान देने रहल, माय कुहरैत रहल। गेनमाक मोन होइ जे ओह बेकार हाथ उठा देलियै। भरि राति अपन हाथकेँ खटियापर पटकैत रहल। कतेक कबुला-पाती कएलक मुदा बेटा नहि घुरलै। भोरमे कहुना टौआइत हवेली गेल आ सब खेरहा बूढ़ी मलिकाइनकेँ सुना देलक। ओ बोल-भरोस देलनि। गेनमाकेँ खुआकेँ विदा कयलनि। चाउर पठा देलनि, बेटाक खोज करओलनि मुदा ओ नहि भेटल।

कोइ कहय चौबट्टी दिसन जाइत देखलहुँ तऽ कोइ कहय बसपर चढ़ैत देखलहुँ। मोरंग गेल, तऽ कलकत्ता गेल, तऽ दिल्ली-पेंजाब गेल आ कि गुदरिया बबाजी बनि गेल। पता नहि कतय चलि गेल रमदेवा! सब औनाइत रहल मुदा नहि घूरल रमदेवा।

बहुत दिनक बाद कुटमैतीमे नारायणपुर गेल सधुआ गाम आबि कहलक जे स्टेजपर नचैत नटुआक आवाज अनमन रमदेवे जकाँ लगैत छल। गेनमा ओकरा संग कऽ नारायणपुर गेल ताबत नाच पार्टी ओहि ठामसँ विदा भऽ गेल छल। गेनमा अकानि लेलक जे बेटा कोनो ने कोनो नाच पार्टीमे एम्हरे अछि। बाहर नहि गेल अछि। ओ दरभंगाक विभिन्न नाच पार्टी सभमे तकलक। विभूतिपुर (समस्तीपुर)क बहोरन डाँस पार्टी, बटुकजीक पार्टी सभमे जाकेँ देखलक मुदा निराशा भेटल। बखरी सलोनाक सुदामा गिरिक नृत्य दलमे सेहो खोज कयलक। अहियापुर (बछवाड़ा)क शिवदानी गिरिक पार्टीमे किछु संकेत भेटल जे एकटा एहन छड़ेछाँट आएल छल मुदा हम सब बापक संग अयबाक लेल कहि घुरा देने रही। करिहारा (उजियारपुर)क रास बिहारी/राम बिहारी एंड पार्टीमे पता चलल जे सरायरंजनक खजुरी गाममे अनूप सिंहक नाच पार्टीमे एकटा बारह-तेरह बरखक नटुआ आएल अछि ओ गजब अछि। गेनमा पहुँचल खजुरी। स्टेजपर रमदेवाकेँ नाच करैत देखलक मुदा ओ चीन्ह नहि सकल रहए। ओकर सिंगार-पटार, परिधान, भाव-भंगिमा आ नृत्य गजब छल। अनमन मधुबाला जकाँ लागै। मुदा जखन ओ गीत शुरू कएलक तखन गेनमाकेँ कोनो भाँगठ नहि रहल। दर्शक सभक भीड़केँ कहुना चीरैत गेनमा स्टेजक पाछू गेल आ पर्दा खसिते बेटाक सोझाँ आबि ठाढ़ भऽ गेल।

गेनमा बेटाक पयर धऽ लेलक — 'चल रे बाउ। माय पेटकान देने छौ।' फेर बाप-बेटा एक दोसराकेँ पँजियेने कनैत रहल। मालिक ई दृश्य देखि तमसा गेलाह। खूब बतकुच्चन भेलै। मालिक छोड़बाक लेल तैयार नहि रहथि। कहथि जे एकरा रियाज करा तैयार करयमे जे समय, परिश्रम आ खर्ची लागल तकर की? डेढ़ साल भरिक बुतातक दाम दियऽ। कपड़ा-लत्ता, साज-शृंगार, दबाइ-दारूक दाम दियऽ तखने एकरा लऽ जा सकैत छी। तीन हजारपर अड़ल रहथि। इहो दुनू अड़ल रहय जे घरक काज, टहल-टिकोरा आ नाच कएलहुँ ओहिमे सधि गेल। खूब घमर्थन भेल। अंतमे एकाएक गेनमा कलपैत अनूप सिंहक पयरपर खसि पड़ल। बेटा धन अछि, जाए दियौ। अनूप सिंह कलाकार आदमी! पघीलि गेलाह। एहि शर्त्तपर जाए देब गछलनि जे परोपट्टाक कोनो दोसर नाच पार्टीमे नहि जाएत, जखन पत्र वा फोन जेतै तखन आबय पड़तै। दुनू सब शर्त्त मानि लेलनि। कहुना खजुरीसँ पिंड छोड़ा गाम आबि गेल।

गाम घुरि तऽ गेल रामदेव मुदा ओकर मोन एतऽ नहि लागै। स्वभावमे ठेही ओहिना रहय। बोइनिपर काज करय जाइत नहि रहय। घरमे खर्चा घटले रहय। पेटेपर छोट-मोट काज करय। गाममे एक बेर नाटक भेलै जाहिमे ओ खूब सक्रिय रहल। गामक चौकीतोड़ नाचोमे भरि राति नाचय आ नाटक केर स्टेजपर नाच आ स्त्रीपात्रक तेहन जीवन्त अभिनय करय जे सब एकर कला प्रदर्शनपर वाह-वाह करैत रहथि। आब आनो गाम सभसँ साटा भेटऽ लगलै। किछु-किछु आमदनी होमऽ लागल। बापकेँ कचोट रहए जे ओ बेटाकेँ लोकगायक बनबऽ चाहैत छल मुदा ओ नचनिया बनि गेल। तथापि ओ कहियो फेर एकरा किछु कहलनि नहि। रामदेव

जखन बाहरसँ नाचिकेँ आबय तऽ बापक सोझाँ बहुत रास कैँचा-टाका उझील दैत छल। बापक तामस बिला जाइ। पाइमे साँचे बड़ ताकत छै। पिताइल मोन हरियर कऽ दैत छैक।

कतेक बरख बीति गेल। कनिञा काकीक गंगालाभक बाद हवेली सून भऽ गेल। आब सब गोटे दरभंगे रहैत छथि। ओतहि राखि धिया-पुताकेँ पढ़ा रहल छथि। गेनमा सेहो एक दिन भिनसरबेमे प्राती गबिते-गबिते शान्त भऽ गेलाह। रामदेव स्वयं पोता-पोतीवला भऽ गेलाह। पुतोहु आँगनबाड़ीमे सहायिका भऽ गेल छलीह। पोता-पोती आ हुनका ई अपरतीब लगैत छलनि जे रामदेव नटुआ छथि, साटापर आन गाम जाकेँ नचैत छथि। पुतोहु विरोध शुरू कएलनि जे 'आब कोन कमी अछि जे साटापर अखनो नाच करैत छथि। बेटा श्रवण राजमिस्त्री रूपमे कमाइते छनि। इन्दिरा आवाससँ भेटल घरकेँ कतेक सुन्दर बना लेलनि! हमरो दरमाहा भेटिते अछि। किछु बाइलीयो होइते अछि तखन एहि पाकल उमेरमे ई साड़ी वा घघरा-चुन्नी पहिरि,

मुर्दाशंख पोति, घुँघरू बान्हि जे नचैत छथिन से हमरा एको रत्ती सोहाइत नहि अछि। अनसोहाँत लगैत अछि। एतेक दिन जे केलनि से केलनि आब ई निषिद्ध काज नहि करथि। पोती स्कूलसँ आबि कहैत छनि जे सब बच्चा हमरा किचारैत अछि जे एकर बाबा नचनिया छैक। साड़ी पहिरि नचैत छैक।' रामदेव चुपचाप सुनि रहल छल। नाचकेँ जे निषिद्ध काज कहलनि से रामदेवकेँ नहि अरघल। किछु काल बाद बाजल-'कनिञा! संसारमे कोनो काज निषिद्ध नहि होइत छै। जे काज भूख-पिआससँ जीवन रक्षा लेल अन्नक इंतजाम करय ओ काज निषिद्ध कोना भऽ सकैछ? आ ताहूमे नाच! ओह! ई तऽ शुद्ध केर कला-प्रदर्शन अछि। साक्षात् सरस्वतीक वास आ भगवान् भोलेनाथक कृपा! एकरे बलेँ ने हम धिया-पुता सभकेँ पोसलहुँ। मुनियाँ सेहो कहैत रहय जे ओकरा स्कूलमे सब नटुआक पोती कहि किचारैत छै। आब हम ओतेक सकबो नहि करैत छी। पैंतालीसम पार भऽ गेल छी। अहाँ सभ कहैत छी तखन हम आब घुँघरू नहि पहिरब। लियऽ कनिञा हम सप्पत खा लेलहुँ जे आब फेर कहियो घुँघरू नहि बान्हब।' एतेक कहैत रामदेव अपन घुँघरूकेँ पोछि-पाछि माथसँ सटा फेर ओकरा देवालक खुट्टीपर टाँगि देलनि। श्रद्धापूर्वक अगरबत्ती देखा देलनि।

आब तऽ एकरो बीस-पच्चीस बरख बीति गेल। रामदेव बुलू बाबूक हवेलीमे रहय लागल। हरबाहीमे रमि गेल। रहल मुदा ओ ओहिना-बेछप, सुच्चा आ ईमानदार! पूरा दुनिञामे कोरोना सन बीमारी पसरल। बहुत घर सून कऽ देलक। संबंध सभक माने आ परिभाषा बदलि देलक कोरोना। बहुत लोक मुइल। बड़का हवेलीक बड़का मालिकक सासुर बसैत बेटीकेँ पटनामे कोरोना भेल। माय छठिक घाटपर आँचरपर नटुआ नचएबाक कबुला कयलनि। बुच्चीकेँ डाग्दर पित्तीक इलाज बचओलक वा दिनकर दीनानाथक कबुला से कहब कठिन अवश्य अछि मुदा एहि बेर छठि घाटपर नटुआ अवश्य नाचत। गामेक एकटा नटुआ बिरिजभानकेँ कहल गेल। ओकर नीक चला-चलती रहय एहि लाइनमे। ओ गछि लेलक।

महापावनि छठि केर सँझुका अर्घ्य। बाड़ीसँ सटल पोखरिमे केराक थम्ब, चकमक पन्नी, भुकभुकिया छोट-छोट बल्ब आ फूलक मालासँ घाट सजाओल गेल। टोल भरिक लोक जूमल। धिया-पुता सब छुरछुड़ी, अनार, बम, फटक्का आ रॉकेट छोड़ि रहल छल। बड़की कनिञा अपन आँचरमे साड़ी बन्हने ओहि आँचरपर नचबाक लेल नटुआ बिरिजभानक प्रतीक्षा करैत छलीह। माटिक हाथीपर रखल कुरबारमे ठकुआ-भुसबा आ प्रसाद सभकेँ सँति घइलक मुहमे आमक पल्लव सजा ओहिपर दीप जरा रहल छलीह। सँझुका अर्घ्य देल जा रहल छल। देरी होइत देखि बिरिजभानक खोज लेल लक्ष्मीकेँ पठाओल गेल। ओ आबिकेँ कहलक जे बिरिज दंडप्रणाम दैत पुरनी पोखरिक घाटपर पानिमे पैसल अछि। ई समाद सुनिते एहि घाटपर हड़कम्प मचि गेल। व्रतमे सहल उपासल बड़की कनिञा कबुला अकारथ होइत देखि अनिष्टक आशंकासँ डरि गेलीह। विकट परिस्थिति भऽ गेल। आँचरमे बान्हल नवका नुआ जेना लोथे भारी भऽ गेल हो। आब अँचरापर नटुआ कोना नाचत! हमर कबुला अपूर्ण रहि गेल। कबुला कोना पूरत हे छठि मइया! हे दिनकर दीनानाथ! कहुना कबुला पार लगाउ! आब फेर उपास... अगिले साल .... के देखलक....ओ कानय लगलीह। हुनका कनैत देखि हुलसिकेँ छठिमे नैहर आएल बेटी सेहो कानय लगलीह। कोरोना कालमे

ओकरे जीवन रक्षा लेल ने छठि माएसँ कबुला भेल रहय। एहन विकट समय सहसा मँझिली कनिञा घाटपर लेटाइत आँचरपर नाचय लगलीह। हुनकर नहुँ-नहुँ स्वर अभरल— 'हम किछु कऽ सकैत छियनि। हमरा रहैत मोन छोट नहि करथु। हम कोन नटुआसँ कम?' एहिसँ बड़कीकेँ किछु तोष भेलनि। वातावरण कने हल्लुक अवश्य भेल। मुदा कचोट रहबे करय। घाटपरसँ सब घुरि आएल। बड़की अबिते बिछानपर औंघरा गेलीह। हुनक उपाससँ अशोथकित लटकल मुह देखिते मुनू बाबू अग्निश्च-वायुश्श्च भऽ गेलाह। बिरिजभानक घरपर जा ओकरा गंजन कयलनि। तेरहो दशा कयलनि। ओ मात्र कऽल जोड़ने ठाढ़ रहल। बाजल किछु नहि। की बजैत? सँझुका अर्घ्य केर सोह नहि रहलै।

दलानपर आबि मंत्रणा शुरू भेल। गाममे दोसर कोनो नटुआ उपलब्ध नहि। फोन-फान खूब भेलै मुदा कतहु सफलता नहि भेटल। अड़ोस-पड़ोस केर गामक सेहो एहने स्थिति। व्रतभंग केर पाप चढ़ल। ई उतरत तऽ आब अगिले साल!

एहि विचार-विमर्शमे बुलु बाबू कहलनि जे एक बेर रमदेवासँ कहल जाय। मुनू बाबू अपने रामदेवक घरपर जा सभटा खेरहा सुना देलनि आ भुरूकबा तारा उगैसँ पहिने हवेली अयबाक लेल कहलनि। रामदेव मात्र एतबे बाजल जे 'बीस बरख बीति गेल हम घुँघरू नहि पहिरलहुँ। आब पैंसठ-सत्तरि सालमे की नाचब? पुतोहु कहने रहय जे घुँघरू खुट्टी परसँ जखने उतारब तखने बारि देब। हमरा सभसँ सब संबंध समाप्त! हम सप्पत खा नेने छी। माफी सरकार!'

ओ अपन दुनू हाथ जोड़ि देलक। निराश मुनू बाबू विदा होइत एतबे कहलनि जे 'अहाँ स्वयं सुच्चा कलाकार छी, कने सोचब। आब बड़की भौजीक व्रतक पइत अहींक हाथ।' एतेक कहैत ओ दलानपर आबि गेलाह। पूरा गाम निसभेर सुतल रहय मुदा रामदेवक आँखिमे नीन नहि रहय। ओकर आँखिक आगू अतीतक विभिन्न घटना साबुनक फेन जकाँ आबि-आबि बिला रहल छलै। भरल महफिलमे नचैत रामदेव! कानवला पितरिया थारीपर नचैत रामदेव, शीशाक गिलासपर पयरक कलाकारी देखबैत रामदेव, तरुआरिक धारपर नचैत रामदेव, हजारक हजार केर भीड़मे सीता बनल रामदेव! दीप जरा सीता पाताल-प्रवेशक दृश्य करैत खाधिमे खसैत काल चारू दिशिसँ भेल कैँचा-रुपैयाक बरखाक ओ अपूर्व दृश्य मोन पड़ि गेलै! ओह! बापक चाट खा गामसँ पड़ाइत कालक दृश्य मोन पड़लै! तखने सहसा बूढ़ी मलिकाइनकेँ सुनाओल भजन, राहरिक दालिमे घीक ओ स्वाद आ चारि छिम्मी केरा मोनमे अभरि गेलै। ओह! बड़की कनिञाक व्रतक पइत हमर हाथमे! आइ मुनू बाबू ई की कहि देलनि! सभदिन देनिहारक लेल आइ हम दाता! मुनू मालिक हमरा सुच्चा कलाकार कहलनि। कलाकारक की धर्म? दोसरक मोनक कष्टकेँ अपन कलासँ रंजन करी आ हम कऽ की रहल छी! बड़की कनिञाक व्रतभंग भऽ जेतै। कतेक कलपतीह ओ! नहि! ई किन्नहु सुच्चा कलाकारक धर्म नहि! आइ महापावनि छठि दिन कलाकारक धर्मक त्याग? नहि नहि!

कलाकारक धर्मक दहारमे हुनक घुँघरू नहि बान्हबाक सप्पत भासि गेलै। रामदेव उठि दिशा-मैदानसँ आबि स्नान कयलनि। खुट्टीपर टाँगल घुँघरू उठबैत छलाह तखने घाटपर पूजाक सरंजाम लेल जागलि पुतोहु केर तमसाइल स्वर अभरल — 'ई की करैत छथिन?'

— 'मात्र अपन धर्मक निर्वाह! मुनू मालिक अपनेसँ घरपर आबि कहने रहथि। हम जेबै।' ससुरक स्वर रहय।

— 'आब कोइ मालिक-तालिक नहि होइ छै। गेलै जमाना! जे पाइ देलनि से घुरा देथिन। कहि दैत छिएनि हम भिन कऽ देबनि।' कनिञाक स्वर कड़गर छलै।

— 'आब अहाँक जे फुराय से करू। एक छदाम नहि लेलहुँ मुदा हम अपन धर्मक निर्वाह अवश्य करब। श्रवणक माय चलिए गेलीह, आब एसकरुआ हम। जीबे कतेक करब? कहुना जीबि लेब। हँ, अहूँ सुनिए लियऽ। अहाँ किछु नहि कऽ सकबै। रोइञो भगन नहि हेतै। एहनो जमानामे सब भैयारी संगे छथि। बड़का मालिक आइ-काल्हि अहींक विभागक डायरेक्टर छथि। अहाँकेँ अपन सहायिकागिरीक बड़ तुझकी

अछि ने? एक मिनटमे अहाँक सहायिकागिरी निखत्तरमे चलि जाएत। तखन बारैत रहब हमरा!'

एतबा कहैत रामदेव घुँघरू उठा विदा भऽ गेलाह। दूरापर सूतल लक्ष्मीकेँ उठा साया-साड़ी-ब्लाउज आ क्रीम-पाउडर मँगा पूरा तैयार भऽ दुरूखापर ठाढ़। घाटपर जयबाक लेल दुरूखासँ बहराइत बड़की कनिञाकेँ प्रणाम करैत कहलनि — 'मलिकाइन! जा नाचवला साड़ी किएक छोड़ि देलखिन? आँचरमे ओ साड़ी बान्हि लेथिन। अहाँक बुढ़बा नटुआ आँचरपर नचबाक लेल प्रस्तुत अछि।'

बड़की कनिञा हतप्रभ भेलीह। दोहाइ दिनकर दीनानाथ! हे छठि मइया! खुशीक मारे हुनक आँखि नोरा गेलनि। चोट्टहि घुरि साड़ी अपन आँचरमे बान्हलनि। आँचरपर नचैत रामदेव घाटपर आबि अद्भुत नृत्य कयलनि। डॉक्टर साहेब अपन तबला-डुग्गी आनि लेलनि। कन्हैया चौधरी हारमोनियम निकालि लेलनि। कलावन्त सभक कला जमि गेल। शताधिक घुँघरूसँ मात्र एक घुँघरूक अबैत स्वरसँ लोक चकित भेल। तबला आ घुँघरूक अद्भुत संगति देखि शहरुआ सभकेँ सेहो चकबिदोर लागि गेल जे एहन निछच्छ देहातमे सेहो एतेक स्तरीय संगति संभव अछि। गीत-नृत्य-संगीतक सरिता बहय लागल— श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भव भय दारुणं...

नीक इजोर भऽ गेल छल। प्राचीमे लाली पसरि रहल छल। भगवान् भास्कर हुलकी दऽ रहल छलाह। तखने घाटपर दंड प्रणाम करैत बिरिजभानक आगमन भेल। ओ पोखरिमे पैसि स्नान कऽ बाहर आबि चुपचाप पोखरिक कातमे ठाढ़ जामुनक गाछ तऽर बैसि गेल। ककरो ओम्हर ध्यान नहि गेलै। डगरा-सूप-कोनियाँ-कोसियामे राखल प्रसादपर दूधक ढारसँ अर्घ्य देलाक बाद मुनू बाबूक ध्यान ओम्हर गेल — 'तौं तऽ नाश कयलेँ। देखही बुढ़बा नटुआ कोना खुट्टीपर टाँगल घुँघरूसँ हमरा सभक इज्जत बचा देलनि।' बिरिजभान मुड़ी गौंतने रहय। तखने रामदेव अपन नाच रोकि ओकरा लऽग जा कहलनि — 'देखै की छेँ? तुरंत तैयार हो आ आबि जो!'

बिरिजभानक माय ओकर झोरा नेने ठाढ़ छलीह। ओ अऽढ़मे तैयार होइत रहए। तखने मुनू बाबूकेँ पिताइल ओम्हर बढ़ैत देखि बड़की भौजी बाजि उठलीह— 'ओ सेहो व्रत केने छै। नचैत छै तऽ ओकरो नाचऽ दियौ। छठि व्रतक दिन! जखन हमर अनिष्ट छठि मइया सुधारि देलनि तऽ एकरे किएक कष्ट हो। इहो उपासल छै।' भौजीक बात सुनि मुनू बाबू गुम्मी लाधि लेलनि। बिरिजभान हाली-हाली तैयार भऽ आँचरपर आबि सर्वप्रथम रामदेवकेँ गोर लगलक। फेर दिनकर दीनानाथकेँ सुमरि ओ आँचरपर शुरू भऽ गेल। दू पीढ़ीक अद्भुत नृत्य! आंगिक-वाचिक अभिनय, पद-ध्वनि, भाव-भंगिमा, यति-गति, त्वरा, तालमेल आ प्रश्नोत्तरीमे के बीस रहल ई कहब मोश्किल। ओम्हर घाटपर हाथ उठि रहल छल एम्हर महारपर दू पीढ़ीक कलाकारक कला केर द्वन्द्व परवान चढ़ि रहल छल। हाथ उठायब संपन्न होइते मुनूबाबू नमरीक एकटा माला बना रामदेवक गरामे पहिरा देलनि। बिरिजभानकेँ सेहो जे गछने रहथि से दैत विदा कयलनि। रामदेवक विदाई भव्य रहय। जाइत काल बड़की कनिञा रामदेवकेँ प्रणाम करैत धोती-साड़ीक अतिरिक्त नुकाकेँ की देलनि से ककरो नहि पता। एकर चर्च होइत रहल मुदा एहिसँ बेसी घमर्थन होइत रहल हुनका रामदेवकेँ प्रणाम करबाक विरल घटनासँ। अपन घाटपर हाथ उठा एहि घाटपर आएल रामदेवक बेटा-पुतोहु ई दृश्य देखि दंग रहि गेल। शायद जे काज पाइ नहि करा सकैत अछि से भाव करा दैत छैक। रामदेव एकरा अपन कलाकारी जीवनक अपूर्व सम्मान मानैत विदा भऽ गेलाह। पाछूसँ रामदेवक बेटा श्रवण आ पुतोहुक कन्हापर दू छिट्टामे तुलसीफूलक चाउर, कतरनी चूड़ा, राहरिक दालि, गमकैत घीक डिब्बा, करू तेल, कटुक मसाला, काजू-किशमिश, फल, मधुर आदि रहय।

केराक हत्था नेने संग चलैत लक्ष्मी बाजल — 'जे खेत करबाक हो से खेत देखा देबाक आदेश मुनू बाबू हमरा देलनि। जे खेत पसीन हुअए से कहब, घुरती काल हम देखा देब।'

रामदेव अपन जीवनक अंतिम नाच आ एकर एहन सम्मानसँ तिरपित रहथि। बेटा-पुतोहु से मुदित आ गर्वित।

•••

रमेश

दरभंगा।

सम्पर्क : +91 70918 96541

रमेशजी समकालीन कविताक एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर छथि, कुशल कथाकार छथि, साधल समीक्षक छथि, सुधी शोधप्रज्ञ छथि, सुदक्ष सम्पादक छथि। हिनक अनेक कृति अक्षय कीर्त्तिकलश बनल अछि। कृति सभमे 'समांग', 'समानान्तर', 'दखल', 'समकालीन नाटक' आ 'कथा समय' बहुप्रशंसित कथासंग्रह अछि। कविता-संग्रहमे 'संगोर', 'समवेत स्वरक आगू', 'पाथर पर दूभि', 'कोसी घाटी सभ्यता', 'काव्यद्वीपक ओहि पार' आ 'कविता समय' अकूत यश अर्जित कयलक। गजल-संग्रह 'नागफेनी' गजलक संसारमे अपन स्थान सुरक्षित करओलक। समीक्षा-संग्रह 'प्रतिक्रिया' आ 'निकती' अपन नाम सार्थक कयलक। सगर राति दीप जरय कार्यक्रम केर कथा-संकलन 'श्वेत पत्र'क सह सम्पादन कयने छथि। 'एकैसम शताब्दीक घोषणापत्र' (कथागोष्ठीक कथा-संकलन) आ 'मंडन मिश्र : मीमांसा-अद्वैत समागम' केर सम्पादन कएने छथि। तिरहुत साहित्य सम्मान, डा. इन्द्रकान्त झा सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा) आदिसँ सम्मानित छथि।

नीम गाछ परहक गुरीच

2021ई.क प्रस्थान-काल छल ओ!

'कोरोना-काल' कोनो बैबे, करीप-करीप बीतिए गेल छल, आ कोरोना नामक 'काल' सेहो, आब भागिए गेल छलै, अथवा सरकारी टीकाकरणसँ ओकरा बड्ड मोसकिलसँ, अपना देससँ, भगाइए देल गेल छलैक!

संगहि, दर्जनक-दर्जन लोक गामसँ, आ सैकड़ के-सैकड़ लोक बीच शहरसँ, शमशानमे जा कऽ छाउर भऽ गेल छलैक! गामक कएटा आप्त हित-मीतक अकाल-मृत्यु, प्रोफेसरो सैहैबकेँ भित्तरसँ हिला देने छलनि!

हुनका आब कतहुसँ डेरा पर अबिते, सोचनमा रोग लागि जाइत छलनि!

हुनका मोन पड़ऽ लगैत छलनि, जे, कतहु कोनो बैबे, श्राद्धकर्म भऽ पाओल छलै, तऽ कतहु कोनो धरानियें एगारह जन, अथवा, तिथि-छाया, कि बर्खी भऽ पाओल छलै!

कतहु साराझंप्पियो नहि भऽ पाओल छलै, तऽ ककरो 'हमर लोक', कोनो नदीमे, जलजीवक ग्रास बनि गेल छलै!

ककरो कर्त्तापुत्र इंगलैण्डसँ नहि आबि सकल रहै, तऽ ककरो बेटीक हाथें मुखाग्नि भेटबाक अदगोइ-बदगोइ, एहनो परिस्थितिमे, समाज कऽ रहल छलै! बेसी लोक, 'अपना लोक'कैं नहि बंचा सकबाक, अथवा, अपन पारिवारिक अर्थव्यवस्था डूबि जेबाक आपसोचमे डूबल छल।

कुल्लम परिस्थिति ई जे, ने तऽ कोरोनाक आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक प्रभावे समाप्त भेल छल, आ ने ओकर भयावह स्मृतिएसँ लोक, मुक्त भऽ पाबि रहल छल!

अथवा, प्रोफेसरो सैहैब तकरासँ फिरी नहि भऽ पाबि रहल छलाह!

भाँति-भाँतिक नव-नव मनोरोग, लोकक मानसिक संतुलन बिगाड़ि रहल छलै, तऽ जकरा कनियें छूने रहैक कोरोना, तकरा सबके आब टुनकीबला हृदयाघात भऽ रहल छलै!

प्रोफेसरे सैहैबक मिथिला कौलनीमे, एहेन दू गोटे, साँझ कऽ रेलवे पलेटफारम पर टहलैत काल, टन्न बाजि गेलखिन!

से सद्य: देखि कऽ स्तब्ध रहि गेलाह ओ!

आब तऽ शहरमे, ककरो मरनी-हरनीमे कठियारी गेनिहार लोकोक बहुते अभाव भऽ गेल छैक!

प्रोफेसर सैहैब एखनो तरकारी अनैत छलाह, तऽ डेरामे अपन हाथ साबुनसँ धोलाक बाद, सब तरकारीकेँ धोइत छलाह!

भोरे-भोर घरक सब सदस्यकेँ गुरीच, धात्री, तुलसी, नीम आ घृतकुमारीक मिलजुमला-रसमे, पानि मिला-मिला कऽ, आइयो ओ बलजोरी पियाबैत छथि!

कनियाँ ओमहर मुँह टेढ़ कऽ कऽ भगैत छनि, तऽ बेटा अपन कोठलीए बन्न कऽ लैत छनि!

मुदा परफेस्वर सैहैबक विजयी-भाव मानैत छनि, जे खाली पारासिटामौल, विटामिन-सी आ एजिथ्रोमाइसिनेक बदौलत नहि, अपितु ओकरा सबहक संग, आयुर्वेदिक अहू रस सबहक बदौलत, ओ कोरोना वायरससँ पूरा परिवारकेँ बँचा सकलाह अछि!

परिवार तऽ बाँचि गेलनि, मुदा, कोरोनाकालमे, कनी-कनी कोरोना छू देबाक चलते, सबके 'कोरन्टाइन'मे जे फराक-फराक कोठलीमे रहऽ पड़लनि, से सबके अपनामे सीमित आ फराक-फराक रहबाक आदतिए लागि गेलैक!

तकर बाद, बाँकी सब कसरि 'मोबाइल, डिभाइस आ गैजेट'केँ दुनियाँ, पूरा कऽ देलकै!

अर्थात् एक तऽ राकस, आ दोसर नोतल!

कोरोना इसबा, तऽ मोबाइल फोन बिसबा!

दिन-दिन भरि लोककेँ बैसथूड़ी लागल!कोरोनाक परसादे, प्रोफेसर सैहैबकेँ पूरा परिवार घरघुसना भऽ गेल छलनि।

बस्स, अपने टा तरकारी बजार, किराना दोकान, दवाइ दोकान आ पेट्रोल पंप जेनाइ आ एनाइ!

अप्पन कौलेज बन्द, दसमामे पढ़ैत बेटाक ट्यूशन बन्द!

आ कनियाँ तऽ, कहियो भोजन बना लैत छलीह, आ कहियो बेटा स्विगीसँ औनलाइन आदेश दऽ कऽ पिज्जा, बर्गर, नूड्ल्स, मंचूरियन, किच्छो मंगा लैत छलीह।

प्रोफेसर सैहैब लग, घरक भोजनक कोनो विकल्प नहि रहि जाइत छलनि...(?)

सार कहियो 'परफेस्वर साहेब', कहियो 'परोफेस्सर साहेब', आ कहियो 'ओझा जी' कहि कऽ, फोन पर पुछैत छलखिन, जे 'आइ की भोजन बनल अछि', तऽ घरक मर्यादा रखैत कहि दैत छलखिन, 'अरिकंचन, कुम्हरौड़ी, ओल, बड़ी, अथवा भांटा-अदौड़ी, किछुओ केर तरकारी!

कनियाँ हुनका पर हँसैत रहैत छलखिन आ बेटा, पापाजीक 'मिथिलाबला व्यंजन-प्रेम' पर, व्यंग्य करैत रहैत छलखिन!

मुदा, अपना प्रोफेसर सैहैब लेखेँ, धनि सन!

ओ एमहर कनहा झाड़ैत छलाह, ओमहर पीठ झाड़ैत छलाह, आ व्यंग्य-हँसीसँ फिरी भऽ जाइत छलाह!

फेर लागि जाइत छलाह, अपन परिवार-सेवामे!

आ हुनकर परिवार लागि जाइत छल, अपना मोबाइल-प्रेममे!

कोइ काहू मगन, कोइ काहू मगन!

ककरोसँ ककरो, कोनो मतलब नहि!सब अपन-अपन कानमे, ईयर-फोन, ईयर-बड्ड, अथवा, बड़का हेडफोन ठुसने!

बेटा तऽ बाथरुमो जाइनि, तऽ माथ-कानकेँ बड़का हेडफोनसँ झाँपनहि जाइत रहनि!

ककरोसँ क्यो, कोनो टहल- टिकोराकेँ आशा नहि कऽ सकैत छल!

सब अपनेमे डूबल!

कनियाँ मोबाइलमे भजन लगा कऽ 'संगीतकेँ डिभाइस'मे 'ब्लूटूथ'सँ जोड़ि दैत छलखिन, तऽ बेटा सन्नी कहैत छलनि, 'अरे मम्मी यार, बी टैक्नोलॉजी- फ्रेण्डली एन अपटुडेट!'

बस्स, मम्मी डीजेबला संगीत लगा लैत छलखिन!

प्रोफेसर सैहैबकेँ सेहो, तखन अपन कानमे लटकलहा तारबला हेडफोन ठूसि कऽ, गोपीगीत, भ्रमर गीत आ वेणुगीत सुनबाक अलावें, आर कोनो उपाय नहि रहि जाइत छलनि!

बेटा कहैत छलनि, 'अरे यार पापा! ई तार की दुनू कानमे लटकौने रहैत छी?
खाली 'ईयर-बड' लगाउ ने, बहुत 'सौफिस्टिकेटेड' छै!
कनेक 'अप-टु-डेट' होउ ने, यार पापा!'

...आ 'पापा यार', टक-टकाटक ताकैत रहि जाइत छलाह, अपना भावी उत्तराधिकारी दिस!

किछु कालक बाद कनियाँक कोठलीमे मुड़ियारी देलनि, तऽ ओ आँगुरसँ 'मोबाइल-स्क्रीन' पर, उपर-निच्चाँ 'स्क्रौल' करैत, भीडियो-पर-भीडियो देखि- देखि, मोने-मोन, मन्द-मन्द अठनियाँ मुसकान मुसकिआइत भेटलखिन!

...आ बेटाक कोठलीमे एक अझक्क देखलनि, तऽ ओ ओकरा डीजे पर पाश्चात्य-नाच नाचैत देखेलनि!

असलमे, आब सब अपनेमे सीमित भऽ गेल छल।

परिवारक आपसी प्रेम-संवेदना समाप्त छल, आ ककरोसँ दू पाँती गप्प करबाक पलखति, ककरो नहि छलै!

बुझाइत रहै, जेना आब क्यो ककरोमे नहि रहि गेल हो!

...आ जेना, परिवारमे सबहक जीवन औपचारिकते बनि कऽ रहि गेल हो!

हुनका मोनमे एलनि, जे एकर दसमाक सीबीएसई बोर्ड परीक्षाक रिजल्ट तऽ गेल्ले घर छै!भऽ सकै छै, कोनो संगीत प्रतियोगितामे निकलियो जाय, तैओ मैट्रिको उत्तीर्ण केनाइ तऽ जरुरी छै!

मुदा हुनकर मोनक बात, मोनेमे रहि जाइत छलनि।

प्रोफेसर सैहैबकेँ बुझना गेलनि, जेना, हुनका घरमे, खीड़ाक लत्तीमे आब करैला फरऽ लागल छल!

आ सेहो करैला, आब नीमक गाछ पर लतरि कऽ चढ़ऽ लागल छल!

आब कौलेज खुजि गेल रहैक, आ

एहनेमे एकदिन एसकूटरसँ प्रोफेसर सैहैब अपन डेरा घुरैत छलाह।

तऽ देखलनि जे, हुनकर बेटा सन्नी, दुनू कानमे ईयर-बड्ड कोंचने, बन्द गुमटीमे रेलवे लाइन पार कऽ रहल छनि, आ रेलगाड़ी सीटी दैत तेजीसँ ओही लाइन पर सन्नी दिसन बढ़ैत चलि आबि रहल छै!

प्रोफेसर सैहैबकेँ अविचंक लऽ लेलकनि!

ई स्कूटीकेँ खसा कऽ बैरियर तर दऽ कऽ दौड़लाह आ फिल्मी शैलीमे सन्नीकेँ धक्का दऽ कऽ ठेलैत, अपनहुँ लाइन पार कऽ गेलाह!

रेलगाड़ी निकलि गेल आ लोक दाँते आँगुर काटऽ लागल!

सब एतबे बजैत रहय, जे एकर माय खड़जितिया पावनि केने रहै, तँ आइ जान बाँचलै!

सन्नी दोसर लाइन पर धाँय बजरा खसल छल, से धड़फड़ा कऽ उठल, तऽ ओकर दुनू कानक ईयर-बड्ड फेका गेल रहै, आ ओ थरभसा गेल रहय!

ओ उनटे प्रोफेसर सैहैबकेँ पुछलकनि- 'यार पापा, आपने ऐसा धक्का क्यों दिया मुझे?'

आम जन्ता हँसऽ लागल, आ ओकरा लुलुआबऽ-लोढ़ियाबऽ लागल, तऽ ओ अपन दुनू ईयर-बड्डकेँ ताकऽ लागल!

आ ओकर पापा अपन हकमी-हँफनीकेँ नियंत्रित करैत, रेलवे ढ़ाला पार कऽ, थुस्ससँ, थुसकुरिया मारि कऽ, बैसि गेलाह!

लोक सब हुनका, गमछासँ हावा देबऽ लागलनि।

क्यो ओइ पारसँ, एसकूटी उठा कऽ आनि देलकनि, तऽ सम्हारलनि एसकूटीकेँ कहुना।

मुदा बेटा नहिए बैसलनि एसकूटी पर!

आ फेर दुनू कानमे ईयर-बड्ड ठूसि कऽ, मग्गसँ संगीतक झनकार पर झूमैत, पयरे विदा भऽ गेलनि, जेना ओकरा 'किछु खास' भेले नहि हो!

प्रोफेसर सैहैब, घर आबि, एसकूटी लगा कऽ, काटल गाछ जकाँ, एकटा 'ट्रांस'बला दशामे, काटल गाछ जकाँ हहा कऽ, बिछाओन पर खसलाह!

मुदा क्यो लगमे आबि कऽ पुछबो नहि केलकनि, जे, की भेल?

उनटे सन्नी आबि कऽ, अपना मम्मीकेँ शिकाइत केलकै, 'अरे यार मम्मी!आइ तऽ पापा हमरा रेलवे लाइने पर धक्का मारि कऽ खसा देलनि!हम तऽ बाँचिए गेलौं, रेलगाड़ीसँ!

मम्मी, पापा एहेन किए छथिन?'

कनियाँ, हिनका लगमे आबि कऽ कहलखिन-'छीया-छीया!

अयं यौ, अपना संतानोकेँ लोक एना करै छै?एना तऽ सात घर दुश्मनोकेँ लोक नहि करैत छै!'

प्रोफेसर सैहैबकेँ मुँह खुजले रहि गेलनि, अपन 'सफाइ' 'देबाक' लेल!

मुदा हिनकर 'सफाइ' 'लेबाक' लेल, क्यो तैयारे नहि छलनि!

प्रोफेसर सैहैब सोचऽ लगलाह, जे, चूक कतऽ भऽ गेल?नीक संस्कार देबाक समय, कहिया आस्तेसँ ससरि गेल, आ हम बूझि नहि सकलहुँ, विश्वविद्यालयी कार्यकलापमे आकंठ डूबल रहि गेलहुँ..!

जीवन-संगिनी छलीह, सन्नीकेँ माँ! तिनको शिक्षा-संस्कार आगू नहि बढ़ा सकलहुँ। 'गृहिणी'केँ 'गृहनिर्मात्री' नहि बना सकलहुँ!

आ ने 'कनियाँ'केँ 'जीवन- संगिनीएं' बना सकलहुँ! 'अर्द्धनारीश्वरबला अवधारणा'क प्रति जे हमर विद्वत्ता छल, से तऽ किताबेमे रहि गेल!

आइ अपने-आप कनियाँ आ बेटा, सब तरहक स्वतंत्रता, अपना हाथमे एतेक आ एना भऽ कऽ लऽ लेलक, जे स्वतंत्रताकेँ 'अन-सोसल' मीडिया, 'उच्छृंखलता'मे बदलि देलक!

आब हम की करी?आब की हेतै, हौ दैव?'

प्रोफेसर सैहैब, अपना धुनिमे सोचैत जा रहल छलाह, ...आ तरकारी धोइत जा रहल छलाह!

ता, सार बाबूक फोन एलनि, आ पुछलकनि, जे, एखन की कऽ रहल छी?

मुदा, ओ 'हँ' 'हूँ' कऽ कऽ टालि देलनि। बेटाबला आजुक घटना ककरो कहलासँ परिवारक प्रतिष्ठे खराब हेबाक संभावना बुझायल रहनि!

ता, कमोडबला वाशरुम जेबाक आवश्यकता बुझेलनि, तऽ वाशरुम अन्दरसँ बन्द बुझेलनि।

मुदा, भित्तरसँ पाश्चात्य संगीतक झनकारकेँ कानफाड़ू आवाज अबैत बुझेलनि!

हुनका लुदलुदीक वेग बुझेलनि!

मुदा, ओ लुदसँ सोफा पर, जी- जाँति कऽ बैसि गेलाह।

दस मिनटकेँ बाद, पेटमे गैसक बिरड़ो मरोड़ देबऽ लगलनि, तऽ ओ कनियाँक कोठलीमे हुलकी देलनि।

मुदा, हुनका 'नेपाली भीडियोबला क्षणिका-कठहँसी'मे मगन देखलनि!

ओ असगरे अपनेमे 'बतहिया हँसी' हँसैत-हँसैत खखरी भऽ कऽ, बिछाओन पर आँघरिया मारि-मारि कऽ, अइ पारसँ ओइ पार जा रहल छलीह!

तैओ, प्रोफेसर सैहैबक ओ कनियाँ छलखिन, तैं, अपन समस्या कहलखिन, तऽ, कनियाँ चट दऽ बजली-'अहूँकेँ तखने वेग अबैए, जखन सन्नी गेल रहैत छै! दुन्नू बाप-बेटा कमाले छी!

चलि ने जाउ, देसी बेसिनबलामे!'

आब ई पड़लाह, पहपैटमे, कारण, कमोडबलामे नहि गेलासँ ठेहुन-दर्द उठबाक आ बढ़ि जेबाक संभावना

प्रबल छलनि!

आ से तेहेन वाशरुम एक्कहि टा रहनि!

खैर, कहुना सहास कऽ कऽ भारतीय शैलीक बेसिनबला 'बाथरुम'मे गेन्नहि कुशल छलनि!

कारण, सन्नीक माथसँ कान धरिमे लागल, मोटका आ बड़का 'हेडफोन-सेट', प्रोफेसर सैहैबक, कमोडबला वाशरुम-हैन्डिल खटखटेनाइकेँ, सन्नीक कान धरि पहुँचहि ने दऽ रहल छलैक!

पूरा एक घंटाक बाद सन्नी बहार निकलल, तऽ डीजे-संगीतक झोंकमे, अथवा कोनो मोबाइल गेमकेँ सम्मोहनमे, सोझे अपन कोठलीमे घोंसिया गेल।

प्रोफेसर सैहैबकेँ कनेक अकरहर सनकेँ बुझेलनि!

फेर, एक बेर प्रोफेसर सैहैब, अपन पत्नीकेँ, सन्नीबला आजुक घटना सुनाबऽ चाहलनि, हुनकर कोरोनाकालक निर्धारित कोठलीमे जा कऽ, तऽ पत्नी कहलखिन- 'मारु मुँह जरलाहाकेँ! आबहु तऽ कनियाँ-काल जान छोड़ू ने!भरि जीवन तऽ नौड़पन करेबे केलहुँ!एक तऽ लोक अइ कोरोना-मोरोनाकेँ मारल!आ तै परसँ, की सुनाबऽ आयल छी, बकर-बकर?'

चोट्टे प्रोफेसर सैहैब घुरि कऽ कमोडबला वाशरुममे ढुकि गेलाह, कारण, फेर हुनका लुदलुदीक वेग बुझना गेल रहनि!

मुदा, हुनका हठात् छातीक वामा भागमे दर्दकेँ हूक बुझेलनि, जकरा ओ पेटक गैसकेँ हिलोड़ बूझैत, बैसले रहलाह।

फेर हुनका मोन पड़लनि, जे कनियेँ तऽ कोरोना हुनको छूने रहनि, आ डाक्टर 'एसिम्प्टोमैटिक' तऽ कहि कऽ दवाइ चलौनहि रहनि!

मुदा गैसक बिरड़ो शान्त भेलाक बावजूदो, हुनकर छातीक वामा भागक दर्द बढ़िते गेलनि, आ ओ कमोडे पर बेसुधि होइत चलि गेलाह...!

करीप-करीप आध घंटा धरि, ककरो वाशरुमक जरुरति नहि भेलैक।

तकर बाद सन्नीक मम्मी वाशरुम जाय चाहलनि, तऽ ओ हुनका बन्न बुझेलनि।

केवाड़ी खटखटेलनि आ ठेललनि, तऽ ककरो कोनो सुगबुगाहटियो टा नहि बुझेलनि।

सन्नीकेँ हाक देलनि, तऽ ओ अपने दुनियाँमे डूबल छल!

ओकर आँखि लाल-लाल भेल छलै।

ओ मम्मी पर झपटलक, तऽ ओ किछु बुझि नहि सकलीह, जे ई सब की भऽ रहल छै!

ओ वाशरुमक अलमुनियम पैनेलबला एपीसी केवाड़ीकेँ धक्का मारलनि, तऽ खुजि गेलै।

मुदा, ओ देखलनि, जे प्रोफेसर सैहैब पाथर जकाँ, कमोड पर ओहिना बैसल छथि।

ओ हुनका कहुना अपनेसँ शौच करा, अपना कनहा पर उठेलनि, तऽ ओ हुनकर, कनेक साँस चलैत अनुभव केलनि।

अपसियाँत भेल, कहुना कऽ घिसियबैत, बिछाओन पर अनलनि हुनका, तऽ ओरिया कऽ पारि देलनि!

हुनका भेलनि, जे कहीँ हृदयाघात तऽ ने भऽ गेलनिहेँ?

ओ हुनकर छातीकेँ दाबि-दाबि कऽ, हुनकर साँस तेज कऽ कऽ चालू करऽ चाहलनि, हुनकर छातीक धड़कन तेज करऽ चाहलनि।

ओ ताहि लेल अपसियाँते छलीह, कि ओमहरसँ सन्नी अपन घरक छत परसँ, आस्ते- आस्ते पैर बारि कऽ आबैत रहल!

ओकरा हाथमे मोबाइल छलै, आ मोबाइल फोन पर ओकरा, क्यो निरंतर निर्देश दऽ रहल छलै!

ओ आगू बढ़ैत-बढ़ैत, गओंसँ प्रोफेसर सैहैब लग आयल।

ओकरा कानमे, फोनेसँ क्यो फुसफुसेलै- 'पापा का गला कसकर दबाओ!गला दबाओ!कस के दबाओ...'

ओ प्रोफेसर सैहैब के नरेटी चाभऽ लागल!

कि सन्नीकेँ मम्मी, प्रोफेसर सैहैबकेँ बामा हाथे छाती दाबिते, तुरंत रणचंडी जकाँ, सन्नीकेँ जोरसँ ठेलि देलनि!

सन्नी दूर सोफा पर ढ़नमना कऽ खसि पड़ल!

ओकर माथ चोटसँ झनकि उठलै, तऽ ओ होशमे आयल!

आब ओ 'पापाजी यौ, पापाजी!' विलाप करैत, आबि कऽ पापाजीक पैर पर तड़ाक् बजरा खसल, आ हुनकर पैर पकड़ि कऽ, नोरसँ कानऽ लागल!

सन्नीकेँ माँ पुछलखिन- 'तोँ एना पापाजीकेँ गरदनि दाबि कऽ मारऽ किए चाहलहुन, रे सन्नी?'

सन्नी अपन स्मार्ट-फोन दिस इशारा करैत, रोदना करैत बाजल- 'पबजी, मम्मी गे, पबजी गेम! वैह कहलक, पाँच लाख रुबलमे, पापाजीकेँ कंठ मोकऽ लेल!आ फेर बेरम-बेर कहैत-कहैत, दिमागे घुमा देलक!'

सन्नीकेँ मम्मी जी, बेटाक नामेँ, कि अपने नामेँ, अपन माथा पीटऽ लगलीह, पतिक हृदयक धड़कन आ सोंसाक गति, अकानऽ लगलीह....!

•••

सुखदेव प्रसाद साहु

+2, शिक्षक हिंदी माधोपुर पंडौल।

सम्पर्क : +91 99399 65471

अछूत

हमर हाथ छुआइत अछि।
हमर भात छुआइत अछि।
हमर पानि छुआइत अछि।
हमर बैन छुआइत अछी।

नहि छुआइत अछि
हमर खून, हमर साँस
हमर बनायल वास
मौनी, पथिया, चँगेरा-सूप
नहि छुआइत अछि।

हमर घर छुआइत अछि।
हमर धर छुआइत अछि।
हमर जाति छुआइत अछि।
हमर पाँती छुआइत अछि।

हमर माँजल बासन नहि छुआइत अछि।
हमर खीचल वसननहि छुआइत अछि।
हमर उपजाएल अन्न नहि छुआइत अछि।
हमर काएल काज नहि छुआइत अछि।

हमारासँ मंदिर छुआइत अछि।
अहाँक जाति आ मजहब छुआइत अछि।
अहाँक देवि आ देवता छुआइत अछि।

मुदा ओहि मंदिरक
निर्माण हमही करैत छी।
ओहि मंदिरक भगवान
हमही बनबैत छि।

श्याम भास्कर

एमएमटी कॉलेज, दरभंगा (बिहार)

सम्पर्क : +91 9852388889

रंगकर्मी आ फिल्मकार श्याम भास्कर आकाशवाणी दरभंगामे तीन दशक धरि कैजुअल हिंदी एनाउंसर रहलाह। एलएनएमयूक पीजी नाटक विभागमे 2022 ई० धरि अध्यापन एवं रेडियो पत्रिका साहित्यिकी आ शतदलक संकलन-संपादन कएलनि। रेडियो लेल दू दर्जनसँ अधिक नाटक आ फीचर लेखनक संग गीत एवं नाटक प्रभाग, विश्वविद्यालयक नाटक विभाग, यूनिसेफ, आकाशवाणी, साक्षरता मिशन, विद्यापति सेवा संसथान, चेतना समिति आ आन अनेक संस्था लेल कुशल नाट्य निर्देशन कएलनि। नाटक 'सोन कछुआ' प्रकाशित छनि। टेली फिल्म 'राजा सलहेस', फेर हेतै भोर', वीडियो फिल्म 'पिरितिया' आ फीचर फिल्म 'विद्यापति'क लेखन-निर्देशन कएने छथि। बहुत बादमे कथा-लेखनमे रूचि भेलनि। अधिकांश कथा विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। फाइन आर्ट, मूर्तिकला आ काव्यलेखनमे नेनपनेसँ रूचि छनि। सम्प्रति एमएमटीएम कॉलेज, दरभंगामे हिन्दी-विभागाध्यक्ष छथि।

पहाड़ सिंह

फुदनाक माय बुधनी कुशल चमाइन रहै। गाममे कोनो घर नै रहै, जतऽ ओकर खगता नै होइ। केहनो प्रसब करबऽमे कुशल। बच्चा उनटा होइ वा कोनो आन जटिलता होइ, बुधनीकेँ हाथक चमत्कार! कहियो कोनो जच्चा-बच्चाकेँ जियान नै होबऽ देलकै। तहिया गाममे कोनो डॉक्टरी सुबिधा नै रहै। ब्लॉकमे छोटसिन अस्पताल रहबो करैक तऽ ओ दूर रहै। मुदा बुधनी, चाहे घोर अन्हरिया कंपकंपी वला राति हो, अन्हर-बरखा हो, चाहे घामोकेँ भाप बनबैत आइग बरसैत बज्र दुपहरिया हो, एक बजाहट पर हाजिर। तेँ रधियाकेँ बाबी तऽ ओकरा डागडरनिए कहैत छल्खिन्हें। बेर-विपत्तिमे बुधनिए परसौती सबहक सहारा रहै। से बुधनी जखन पेटक पथरीसँ छटपटाइत मरलइ तऽ ओकरा देखऽ बला कियो नै रहै। बारह सालकेँ फुदना ओकरा टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलै आ बुधनी ओकरा अपना छातीसँ लगेने प्राण त्यागि देने रहै।

'नाम फुदन पासवान, बाप का नाम सकुनी पासवान। माय का नाम बुधनी। बाप का पेशा बहलवानी।' - रजिस्टरमे नाम लिखैत मास्टर साहेब बुधनीसँ पुछने रहथिन– 'एकर बाप किए नै एलइ ?'

'बाऊ एकर हियाँ नै हइ।'

'कत' गेलइए ?'

'नै मालूम। आठ महिना हो गेलइ, कटही लऽ कऽ जे गेलइ नेपाल से... फुलपरासक कोनो महाजन साथे रहै, ओकरो कोनो हाल-खबर नै मिलइ हइ। ओकरो घरबाली केन्नी नै आदमी दौड़ेल्कइ,मुदा ..'

माय जे मरलै तहिया ओ घुसकैत-फुसकैत तीसरा वर्गमे चलि गेल रहै। चौथा क्लास ओ नै देखलकै। ओ गामेकेँ कोनो नाच पार्टीमे नटुआ भऽ गेलइ आ एहि ठामसँ ओहि ठाम बौआइते-बौआइत कहिया जवान भऽ गेलइ, से कियो नै बुझलकै। नाच पार्टीकेँ मनसुखबा गोल-मटोल फुदनाकेँ बज्जर सन सक्कत काया देखलकै तऽ पहिने इनकार कऽ देने रहै। मुदा जखन फुदना नैना-जोगिन आ सलहेस नाचक एक टा सीन देखा अपन ऑडिशन सम्पन्न केलक, तऽ बाँकी नटुआ सब तेहेन ने पिहकारी मारलकइ

जे मनसुखकेँ अनेरे हँसी आबि गेलइ आ ओ 'श्री मनसुख डांस पार्टी एंड कंपनी'केँ जूनियर कलाकार चुनि लेल गेल। तहिये मनसुख ओकर कलाकारी नाम धऽ देने रहै पहाड़ सिंह। से फुदना पहाड़े जेँका देह लऽ कऽ आ नटुआगिरी छोड़ि-छाड़ि कऽ गाम घुरि आयल रहै। आब गामेमे रहि कऽ अपन कलाकारी जमेतइ, स्वतंत्र-स्वच्छंद। गामेकेँ अपन नाच देखेतइ। गामेकेँ अपन बजार बनेतइ।

अपन टूटल-उजरल घरकेँ कहुना रहबा जोगर बना कऽ, फुदना भरि दिन ओसारा पर पड़ल रहिते, नहिं तऽ दू-दू- तीन-तीन दिन फरार रहिते। प्राय: भरि पोख दारु पीने, बबुआन टोलक लोककेँ गरियाबैत। एहि दारु-बंदियोमे ओकरा दारु कतऽसँ भेटैत छलैक, से उएह जाने। संग दैत छलैक ओकर एकमात्र भजार बेचना, जे दिनमे पल्लेदारी करैत छलैक आ रातिमे चौर-कलामें भाग्य अजमबैत रहैत छलैक। सफल ओ प्राय: नहिए होइ छल, योजने बनबैत, कल्पनामे सेन्ह मारैत, राइत बीति जैत छलैक। जहिया लैह जाइ तऽ सबसँ पहिने दारुकेँ इंतजाम करैत, चखना लेल अपना मौगीकेँ पटिया सीधे पहुँचते पहाड़ सिंहक दुरा। आ तकरा बाद पूरा गाम ठेंगा पर।

दुसधटोलीमे पोखेर कात एकटा पुरान हनुमान मंदिर रहै, जकरा अजोधी पासवान बड्ड खर्च कऽ कऽ नव रूप दऽ, भव्य बना देने रहथिन। अजोधी मुंबइमे बेस कमाइ छलाह आ कहियो-कहियो गाम घुरइ छलाह तऽ पुराटोल लेल उत्सव काल होइत रहै। टोलबैया लेल भोज-भात होइ। पूरी छनाइ, छागर कटै आ गामक वीआइपी लेल स्पेशल दारु अबै। हनुमान मंदिर लग राति भरि नाच-गानकेँ झमकौआ महिफिल जमइ। फुदना उर्फ़ पहाड़ सिंहक तऽ जवाबे नै। एक बोतल अंग्रेजी दारु चढ़ाकऽ फ़िल्मी गाना पर एहेन ने रिकार्डिंग डांस करिते जे नवकी कनिया आ जवान होइत छौरी सब ओकर एक-एक ठुमका पर पागल। नाच-गानके एहि कार्यक्रमक समापन सूर्योदयकेँ बादे होइतै आ सबगोटे हनुमानजीकेँ गोर लागि अपना-अपना दूरा दिस विदा होइतैथ। मुदा पहाड़ सिंह अलबत्ते छल। सब गोटे जखन चलि जाय छलाह तऽ ओ हनुमानजीक मूर्ति लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाइ छल आ हनुमानजीकेँ भरि इच्छा गरियाबऽ लगैत छल – 'ताँ झुठ्ठा नकली भगवान..याद होऊ कि भूलि गेलही ? हिएँ तोहर बरंडा पर कते गुहारै छलौ हमर माय। माथा पटकै छलौ। से ककरा खातिर? हमरे खातिर .. हमर सुग्गा हमर फुद्दन पढ़ि-लिखि कऽ दरोगा हो जाइ... किरपा करियौ बजरंगबली! से केलही ने किरपा ? ओकरे उठा लऽ गेलही। हम दरोगा- पुलिस की, चोरो नै बनि सकली। आ बड़का-बड़का चोर डाकूकेँ बना देल्ही धनिकाह, बड़का लोक। हमरा बेरिया इहे चुप्पी। पत्थल बनल टुकुर-टुकुर देखताह। इह ! मुँह जे लगइए चुहार सन !...'

एहने सन आर कतेक रास गाढ़ि-फैज्झति, व्यंग्य-उपराग-उपहास। कखनो खौंझैत-तमसैत,कखनो कनैत आ कखनो चिचियैत। ... रतका खुमार जखेन उतार पर अबितइ, तखन ओ चुपचाप अपना झोपड़ी दिस डेग बढैबते। तखन रस्ता भरि ओ चुप्पे रहिते, चाहे कियो कतबो तरहें टोकबाक प्रयास करइ। ओकरा लेल धनसन। असोरा पर पसरल सफरी पर जाकऽ पसैर जइते। फेर बड़ी काल बाद जखन सूर्य माथसँ कनि निच्चा कन्हा पर अबै छथिन, ओकरा देह पर रौदक झड़की लागऽ लगैत छलैक, तखन ओ हाँफी लैत,आँइख मलैत पोखेर दिस विदा होइते। आर कनी काल बाद बेचना ओकरा लेल अपना एहिठामसँ किछु, भरि थारी लेने अबितइ, नै तऽ अपने किछु बना लै छलय।

असलमे ओकर दिन राइतेमे शुरू होइ। कखनो ककरो मुड़ेन-छठिहारमे, बियाह-जनोउमे, आ नै तऽ किसनामठी- छैठमे, दुर्गा पूजामे; छोटे पाइकेँ होइ, साटा ओकरा भेट जैत छलैक। आ रहलइ बेचना तऽ ओ तऽ चोरे रहय, ओना ओकर मुख्य धंधा पलदारी रहय आ बेर-कुबेर मालिककेँ ठेलो चला लैत रहय। जहिया ठेला चलबिते, तहिया ओ राजा भऽ जैते।

मुदा एक दिन तऽ गजबे भऽ गेलै। असलमे ओ जे मंदिर बनायल रहैक अजोधी पासवानकेँ से अजोधी पासवान अही गाममे नै, लग-दूरकेँ बहुत गाम तक कुख्यात रहै। पहिने गामेमे, पाइवला सबहक घरमे सेन्ह मारैत छले। एक ठाम फैंस गेल। पुलिस एलइ,पड़ा गेल। आब तऽ मुंबइमे कोनो नामी गैंगकेँ छोटका

डॉन बनल अइ। बेस अरजलकए। तऽ ओकरा की फुरेलइ ! हनुमानजीकेँ आँखि चानीकेँ बनबा देलकेन्ह आ आंखिक बीचक पुतली सोनाकेँ। एहि तरहेँ ओहि हनुमानजीक मूर्तिक फेरसँ प्राणप्रतिष्ठा भेलेन्ह।

आब हनुमानजी धनिक भऽ गेल रहथि। हुनकर सुरक्षो जरुरी। आ प्रतिदिन नियम-निष्ठासँ पूजाकेँ करत ? एहेन कोनो योग्य पुजारीकेँ तकनाइ जरुरी। तय रहय, आब अजोधी पासवान संस्कारी भऽ गेल रहैथ। ब्राह्मणक नकलची बानर। गामेमे बभन टोलीक दरिद्र छिम्मेर, बज्रमुर्ख रामगोइंद झा भेंटि गेलखिन्ह। पंडित रामगोइंद झा अपना खापरि सन कारी पतरकी टेंटियाहि नयकी कनियाँ संग मंदिरक काजमे लागि गेलाह। पंडीजी आ पंडिताइनकेँ लोभ तऽ तहिए भऽ गेल रहेन्ह, जहिया ओ दुनु पहिल बेर हनुमानजीक चमकैत आंखि देख लेने रहथिन्ह। एक निस्तब्ध साँझ ओ दुनु प्राणी हनुमानजीक आरती करैत अपनामे नियार केलेन्ह जे अहि अमावस्या राइत हनुमानजीक दुनु आँइख घप्प कऽ लेल जाय। सोनासँ दुनु कानक किछ बनिए जायत आ किछु पाइ मिला देबैक तऽ चानीसँ पायल सेहो। से तेहन भेलइ, बेचना ओहि सांझ मंदिरेक दोग वला एकपेरिया धेने आबि रहल छल। ओ दुनुके कनफुसकी करैत सुनि लेलकइ से सोझे फुदना लग गेल आ उद्घोषणा केलक – 'हम आइ राइत हनुमानजीकेँ आन्हरे कऽ देबै।'

'की मतलब छौ तोहर ?... हुनकर आँइख चोरेबहुन ?'– फुदना अचरजमे अपन आँइख नचबैत बाजल।

बेचना ताधरि बोतल खोइल लेने रहय, गिलासमे ढारइत खौंझायल – 'तोरा कोन छौ ? तू तऽ अपने गरियबैते रहै छही हलुमानजीकेँ। ... आ हम नै चोरेबइ तऽ उ बभने चोरा लेतै। बियुह रचइ छलइ जे अमबस्या राइत आँइख निकाइल कऽ जेबर किनै जेतै। ... से हम सुनलिइ, अभिये मंदिरे बाटे अबैत छलियै तऽ।'

'से हम ओकरो नै चोराब' देबैक। रे बेचन ! तू बूझही ! रे ! ओ अन्हरी परानपुर वाली, हमरे माय जाँकी, भोर- सांझ हलुमानजीकेँ विनती करे आबै हइ,जे ओकर बेटा ठीक भऽ जाइ। ओकरा जब पता चलतै, जे हलुमानजी आन्हर भऽ गेलखिन्हें, तखनी ओकर विसुआसकेँ कैसन ठेस लगतै ? आँइखें नै रहतइ हलुमानजीकेँ तऽ चिन्हतइ केना भगवानजी, जे ओकरा जे राइत-दिन गरियाबैत रहै हइ, उ हम छियै। हम फुद्दन पासवान, माने पहाड़ सिंह।'

•••

साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ अलंकृत विभूति सभक अभिनन्दन !

वर्ष 2023क मूल पुरस्कार डॉ. बासुकीनाथ झाकेँ 'बोध संकेतन' (निबंध)क लेल देल गेल। संस्कृति मिश्रकेँ कविता-संग्रह 'कहबाक अछि हमरा'क लेल युवा पुरस्कार, वर्ष 2023क बाल साहित्य पुरस्कार अक्षय आनंद 'सन्नी'केँ 'ओल कतरा, झोल कतरा' (कविता)क लेल एवं 2024क डॉ. नारायणजीक हुनक बाल कथा-संग्रह 'अनार'क लेल देल गेलनि अछि। श्रीमती मेनका मल्लिककेँ मत्स्येंद्र प्रधानक नेपाली उपन्यास केर मैथिली अनुवाद 'नीलकण्ठ' पर साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार देल गेल अछि।

अनुप्रास परिवार दिससँ हिनका लोकनिकेँ
हार्दिक बधाइ एवं शुभकामना।

अमल कुमार झाक छओटा लघुकथा

सरिसब-पाही, मधुबनी।
सम्पर्क : +91 88090 61603

व्यवस्था

—नानीमाँ! अहाँ प्रचण्ड गर्मीमे बरखा देख कानि किया रहल छी?

—कानि नहि रहल छी बाऊ! अहाँक नानाजी मोन पड़ि रहल छथि।

— बरखा देख नानाजी किएक मोन पड़ि रहल छथि नानीमाँ?

—अहाँक नानाजी बरखा देख बड़ प्रसन्न होइत छलाह। कहैत छलाह यै आइ भगवान अहाँ के हमरा अपन स्वाद भरल हाथक गर्मा गर्म प्यौजक पकौड़ी आ झागदार कॉफी पियेबाक आदेश दऽ रहल छथि।

— अच्छा! से बात! नानाजी प्यौजक पकौड़ी खाइत छलाह?

— जखन हम दुनू गामसे बाहर रहैत छलहु। गाममे प्यौज लहशून वर्जीत छलै। गाममे एक दोसरसँ भेंटो दुर्लभ छल। भगवतीक कृपासँ शहरमे नौकरी भेटलैन्हि तखन एक दोसरसँ नीकसे परिचय भेल।

— ऐँ! ई की कहि रहल छी नानीमाँ? गाममे पति-पत्नी एक संग नहि रहैत छल?

— नहि! पुरुख लोकनि पुबरिआ घरमे आ महिला लोकनि उतरबरिआ घरमे।

— ई नीक व्यवस्था नहि छल। हम अहि व्यवस्थाके घोर बिरोध करितौं। पति-पत्नी एक दोसरकेँ पूरक होइत अछि। विवाह उपरांत दुनूकेँ सतत संग रहबाक चाही। एक दोसर से विचार कऽ केँ नीक बेजाए बुझबाक प्रयास करबाक चाही। पति-पत्नीकेँ एक दोसर से दूर राखब उचित नहि छल।

— बाऊ! पहिने बड्ड कम बएसमे विवाह होइत छलै। अपन नीक बेजाए बुझबाक क्षमता नहि रहैत छलै तँ घरक श्रेष्ठ संग अलग-अलग रहबाक व्यवस्था छलै। उचित अवसर पर एक संग समय बितेबाक समय आ घरक व्यवस्था कएल जाइत छलै। अनुशासन संग संयम सिखाओल जाइत छलै। पति-पत्नीकेँ एक दोसर लेल सम्मानक भाव रहैत छलै।

जीद्द

— अहाँ अपन जीद पर कतेक दिन अड़ल रहब?

— जाबत ओ अपन गाम ओ माँ बाबूजीकेँ छोडि हमरा संग एतय शहरमे रहय नहि औतैत।

— शहरक मोह बुझलहु मुदा सासु ससुरसे कोन समस्या?

— जाबत सासु ससुर संग रहतैत हम अपन इच्छासे किछु नहि कऽ सकैत छी। केकरो अपन घरमे नहि बजा सकैत छी। केकरो अपन हाथसे बना किछु नहि खुआ सकैत छी?

— सासु ससुर कहियो अहि सब लेल रोकलैन्हि अछि?

— नहि! हुनका सभकेँ ई सभ पसीन नहि छनि। ओ अपन जीवन अपन हिसाबसे जीबौथ हमरा हमर हिसाबसे जीबए दौथ। हमरा और किछु नहि चाही। हम स्वतंत्र रहय चाहैत छी। अपन वर आ बच्चा संग।

— ई तऽ अहाँक व्यक्तिगत इच्छा अछि। अहाँ अपन वरक इच्छा पुछलहु अछि?

— ओ हमर इच्छा नहि बुझय चाहैत छथि तऽ हम किएक हुनकर इच्छा बुझू? ओ रहथु अपन माँ बाबूजी संग गाममे। हम शहरमे स्वतंत्र जीवन जीयब।

अन्तरद्वन्द

—यै! सुति रहलहु?

—नीन नहि भऽ रहल अछि बड़का बच्चाक विषयमे सुनिके।

—एहन की सुनलहु अछि बड़का बच्चाक विषयमे?

—बड़का बच्चाकेँ दुनू ठेहुन खराब भऽ गेलैन्हि अछि। ऑपरेशन करबा बदलबए पड़तनि। बारह लाख रुपयाक खर्च हेतैन्ह। बड बेसी कष्ट सहि रहल छथि मुदा हाथ खाली छैन्हि। जे किछु जमापुंजी छलैन्हि दुनू बेटीकेँ विवाहमे खर्च भऽ गेलैन्हि।

— अहाँ मदद करय चाहैत छियैन्हि? अहाँ लग बारह लाख रुपया अछि?

— रुपया तऽ नहि अछि मुदा विवाहमे नैहरसँ भेटल गहना अछि। आब गहना लऽ हम की करब? संतानक कष्ट नहि देखल जाइत अछि।

— दऽ दियौन्ह सबटा गहना बड़का बच्चाकेँ।

— सबटा बड़का बच्चाकेँ देबैन्हि तऽ छोटन की कहतैत? अभावमे ओहो छथि। हुनको टप्पूकेँ इन्जीनियरिंग कॉलेजमे दाखिला करेबाक हेतु रुपयाक आवश्यकता छैन्हि। लोन लऽ रहल छथि। किछु नहि फुराइत अछि की करी?

अमझौता

लाल भाइ! नव गप्प सुनलहु? ढिढरा तेसर सम्बन्ध कएलक अछि।

गरीबी जे नहि कराबए!

से की?

ढिढरा बड्ड गरीब अछि। उपरसे बापक कर्जाक बोझ। जे कमाइत अछि से महाजन सुदि कहि लऽ लैत छै। बेचारा बेर-बेर सम्बन्ध कऽ कैं कनियाँक मजदूरीसे परिवारक पेट भरबाक प्रयास करैत अछि। नव कनियाँ घर सम्हारैत छै आ पुरनकी हवेली महलमे काज कऽ घर खर्च पुरा करैत छै। जवानीमे बापक कर्जाक हिसाब सुनि गाम छोड़ि परदेश भागि गेल छल। छओ महिनामे रोगाह शरिर संग गाम घुरि आएल छल। तहियासे जोर घटाउमे लागल रहैत अछि।

बेर-बेर कनियाँ कोना भेट जाइत छै?

गरीबी सभ ठाम एक्के रंग खेल खेला रहल छै। सब गामक एक्के हाल। गरीबीक सहोदर अशिक्षा संतानक संख्या बढेबामे सतत संग पुरैत छै। जेकरा एकटा संतान रहतै से ने नव घर वर ताकत अपन बेटी लेल? एकसे अधिक बेटी रहला पर ढिढरे सन वर तकैत अछि जे बिना खर्च सम्बन्ध करैत छै।

एहन नव कनियाँ ढिढरा सन वरके वर मानैत छै?

सबटा गप्प कहल नहि जाइत छै। अहाँ बच्चा नहि छी। अपन बुद्धिक उपयोग करु। हा हा हा हा।

परिवार

यै! आइ छोटी आबि रहल छथि एक बरख बाद। आलू बिरियाक तरकारी आ चाउरक सोहारी पनपियाइ लेल बना दियौन। बड्ड पसीन छैन्हि। भोजनक विन्यास अहाँ इच्छानुसार करैत रहब।

यौ! अहाँ डायरेक्शन नहि दियऽ हमरा। हमरो सासुर बसना बीस बरख भेल। केकरा की पसीन

अछि हमरो बुझल अछि। अहाँकेँ छोट बहिन छियथि तँ हमरो दुलारु ननदि छियथि। भनसाघर हमर छी। हमरा जे मोन होएत हम से खुआयब। बुझलहु श्रीमान?

बुझलहु! श्रीमतीजी! भनसाघर अपनेक छी। एक कप चाह देब?

कहिया नहि देलहु अछि?

कोइ किछु कहलक अछि? एतेक गरमायल किएक छी?

बाबूजीकेँ गेलाक बाद माँकेँ होइत छैन्हि हम हुनकर संतानक उचित सत्कार नहि करैत छियैन्हि!

माँ किछु कहलैन्हि अछि?

कहलैन्हि तँ किछु नहि मुदा हुनकर हाव भावसे सब किछु बुझा जाइत अछि।

अहाँ सभक उचित सत्कार नहि करैत छी?

अपना जनैत कहियो केकरो अनादर अथवा सेवामे कोनो कमी नहि कएलहु अछि। अहाँ नहि देखैत छी? हम सब किछु देखैत छी। बुझैत छी। तँ कहलहु आलू बिरियाक तरकारी आ चाउरक सोहारी बनेबाक हेतु। अहाँ अपने अन्ट-सन्ट सोचि मोन खराब कऽ रहल छी। जाउ फटाफट चाह बना लाउ आ संग पी लियऽ। छोटी आबि जेतैत तखन हमरा संग बैसबाक फुर्सत नहि भेटत।

अहाँ हरदम अपने जोगारमे लागल रहैत छी। हद्द हाल अछि! आइ अहीँ चाह बनाके पियाउ। अहाँक हाथक स्वादो बिसरा गेल अछि।

औ बाबू! हमर दाव हमरे पर! कोनो बात नहि। आइ अहाँकेँ राम प्यारी स्पेशल चाह बनाकेँ पियबैत छी। अहूँ मोन राखब हमर हाथक चाह।

वाह! लाज़वाब भक्कतोड़ चाह बनौलहु अछि। आब सब दिन भोरका चाह अहीं बनाउल करु।

मोह!

यौ! सुति रहलहु?

की भेल?

एकटा गप्प पुछू? बिगरब नहि ने?

पुछू जे पुछबाक अछि। बिना बुझने कोना कहि दियऽ जे बिगरब नहि?

लालीकेँ कल्याणक योग्यता छै। शहरमे वर संग रहैत अछि। पहिल बेर गर्भपात भऽ गेल छलै। हमर मोन बेचैन रहैत अछि। लालीके जा लऽ अनियौ। हम हरदम संग रहबै। सकुशल बच्चा भऽ जेतै। नहि तऽ हमरे ओकरा लग दऽ आउ।

ठाकुरजीकेँ पुछबैन्हि। जेना जे कहतैत से करब।

ठाकुरजी बच्चा छथि ओ की कहतैत? आइ हुनकर माँ बाबू रहिथिन तखन चिंता के बात नहि छल। ठाकुरजी बच्चा छथि। अहि अवस्थाक कोनो ज्ञान नहि छैन्हि। मौगीके कष्ट मौगीये बुझैत छै। अहाँ लालीके लऽ अनियौन्ह।

लाली आब मात्र हमर बेटी नहि छियथि। ठाकुरजीकेँ धर्मपत्नी छथीन। ठाकुरजीकेँ इच्छा अनुसार हम किछु करब। अहाँकेँ चिन्ता स्वभाविक अछि। हम काल्हि भोरमे पुछबैन्हि। जेना जे कहतैत से करब।

ठाकुरजी नहि आबय देथिन। पिछलो बेर नहि आबय देने रहथिन शहरी अस्पतालक सुविधाक लाथ लगाके। की भेलै अस्पतालक इलाज से? हम अहि बेर असगर नहि छोड़बैन्हि लालीकेँ।

हरदम जोर जबर्दस्ती उचित नहि। उचित निर्णय छलैन्हि ठाकुरजीके। एतय अस्पताल नहि छै। शहरमे नीक अस्पताल आ नीक उपचारक सुविधा छै। दुर्घटना कखनो कतौ भऽ सकैत छै। अहाँ बेकारक गप्प नहि करु। हम काल्हि भोरमे ठाकुरजीसे पुछबैन्हि। जे कहतैत से करब।

हमरा अहाँक जबाव बुझल छल। सब पुरुख एक्के रंग होइत अछि। मायक दु:ख कोइ नहि बुझैत अछि।

•••

रूपा धीकक दूटा कविता

काठमांडू, नेपाल।
सम्पर्क : +977 980-3760069

हमर चुनौती शाहजहांक लेल

उफ, कनी आँखि की लागल रहए
दिनेमे देखलौं एकटा एहेन सपना
जे झकझोरि देलक
आ सुन्दर मिठगर भ्रम चकनाचूर भऽ गेल
कतऽसँ आइ हमरा सपनामे
आएल रहथि मुमताज
वैह मुमताज
जिनकर स्नेहवश हुनका यादमे
शाहजहाँ बनबेलनि
दुनियाँमे प्रसिद्ध ताजमहल
जकर संगमरमरक चकाचौंधकेँ
दुनियाँ निहारैत अछि
बनि गेल अछि
प्रेमी-प्रेमीकाक मिसाल
आ एकटा रमणीय तीर्थ स्थल
मुदा आइ जखन
हमरा सपनामे एलीह मुमताज
हुनकर आँखि नोराएल छलनि
आ ओ हमरा कहली
अहुँ गेल रही
ताजमहल निहारए
हम अहाँकेँ देखने रही
आ हम अहाँक मनोदशा सेहो पढ़ने रही
अहाँ ताजमहलकेँ निहारैत
इएह सोचैत रही
काश हमरो यादमे
एहन आलीशान ताजमहल बनिते
नइ सखी, अहाँ भ्रममे छी
टुटली मड़ैयामे अहाँ सुतल छी
दिनोमे निचैन
आ हम ओइ ताजमहलमे
रहै छी बौआइत रातियो कऽ
नहि जानि ओ ताजमहल
प्रेमक प्रतीक छी
की मात्र एकटा प्रायश्चित
जँ, हमरा भेटल रहिते अहौंसन स्नेह
तऽ शाहजहाँकेँ
बनबैये नहि पड़ितनि ओ ताजमहल
आ हमहुँ निचैन भऽ
दिनो कऽ सुतितहुँ अहौंसन
ई कहैत मुमताज
अलोपीत भऽ गेलीह
हमर निन्न टुटि गेल
हमर माँ कहैत छथि —
दिनक सपना सत्य होइत छै
हम सोचऽ पर विवश छी
अपना जगह पर
शाहजहाँ ठीक वा मुमताज
की टुटली मड़ैयामे
हम...!

ओलती

जिनगीक ओलतीसँ
टपटप चुबैत
पनिक तऽर
रहै छी सभदिन
पियासले हम
पजारैत स्नेहक आगिसँ चुल्हि
रान्हैत मरसटका भात
पकबैत अधझरकु रोटी
कल्लोक लेल
एकटक लगौने
कल्हुका भविष्यक लेल।

जन-संहारक अमृतोत्सव

रघुनाथ मुखिया

बलहा, सुखपुर, सुपौल।
सम्पर्क : +91 74883 05680

सगरि मुलुकक लोकक कान
ओही दिन भए गेल रहैक ठाढ़
जाहिदिन दिन-दुपहरियामे
कोतबाल फूकने रहै बिगुल

रातिक भकोभन्न अन्हरियामे
नोटबंदी सं पजरल लुत्ती पर
जनकर्फ्यू आ लॉकडाउनक पेट्रोल ढारि
पजारल धधराक इजोतमे
अकचकाइत बहुरुपिया
छप्पन इन्चीक छाती ठोकि
बेर-बेर कहैत रहलै अपन मोनक बात
हम देश कें बिकय नै देब
हम देश कें झुय नै देब
आ, समुच्चे देशक लोक सन पिटबेने रहै थारी
जनता-जनार्दन सं मांगने रहै
मात्र एक सैय दिन

मुदा अजगुत जे आइ
कसैया हाथे देश विकियो गेलै
दहोदिस फिरेबै नजरि तं
बुझायत जे देश झुकियो गेलै

जखन सिंहासन सिद्धि लेल
पुलवामा कें बनायल गेलै सिद्धपीठ
आर डी एक्सक हवन कुण्डमे
42 गोट सिपाही कें देल गेलै समिधा
ओकरे शोनितक रक्ततिलक लगा कए
रत्न-जड़ित सूट-बूट पहिरि
लखटकिया कलम
आ जन-गणक नोरक मोसि सं
पढ़ाओ कें पटाओ लीखि
इंटायर पॉलिटिकल साइंसमे
व्हाट्स एप्प यूनिवर्सिटीक
फूसि-फासि अकादमी सं
अरजलक आचार्यक प्रमाण-पत्र
जनता कें चकमा देब
बुझलनि राजधर्म

जखन एन आर सीक चाबुक सं
डिटेंशन सेंटरमे भरल लोकक
ओदारल गेलै खाल
जेना हौरसाक छीलल जाइ छै छाल
झोकल गेलै भकसी
दिमाग सं अपन गाम-नाम-ठाम
बिसरि जेबाक लेल
तीन सैय सत्तरिक ताप पर
खलबलाइत इन्होरमे
स्नान करबा कें
चारि सैय चालीस वोल्टक स्पर्श सं
कयल गेल रहै
दिमागक शुद्धिकरण

एखन सुरसरिमे हेलैत
लक्षक-लक्ष लहास
श्मशानमे घनेरक-घनेर
अछियाक धुइयाँ सं

पसरल अन्हरियामे
डूमल अछि देश

आसमानमे गीध-कौआ आ सिकड़ा सब
चरगन केने अछि
गाम-घर पर सबेरे-सकाल
टहल मारय लागै छै
नढ़या, कुकूर, हुरार आ बनबिलार

ओह! ओहि अध्जरू लहासक
चिरचिराइन गंध सं
सिहरि रहलैए रोइयाँ-रोइयाँ
कलपि रहलैए जीवित लोकक आत्मा
घरे-घर भरल छै जेना भूत-प्रेत आ पीशांच
सब कियो अपन-अपन ठाम पर
अपन माय सं, बाप सं
भाइ सं, बहिन सं
सखा आ संबंधी सं
सर आ कुटुम सं
डरि रहलैए आ कए रहलैए
मृत्युक आत्म-साक्षात्कार
आ भोगि रहलैए धर्मप्रधान देशमे
नरकक भोग

जखन श्मशानक चकमक इजोत
सागरक नीलाभ प्रकाश पुंज सं
छिटकि कए
अकासक रक्ताभ आभा संग
मिझ्जर भाय कए बना रहलैए
रोजी-रोटी लेल किल्हारि कटैत
मानव श्रृंखलाक प्रतिबिम्ब
सेन्ट्रल विस्टामे धर्म-दण्ड लेने यमराज
मस्तमौला भेल मना रहलैए
जन-संहारक अमृतोत्सव।

नीरा दास

सिमरा, झंझारपुर, मधुबनी।
सम्पर्क : +91 9110981988

सुन्दर सृष्टि

जे ई सुन्दर सन श्रृष्टि रचलनि
करै छी हुनका हम प्रणाम
सुन्दरताक करु की हम बखान।

सुन्दर वन अछि सुंदर उपवन
सुन्दर खेत-खरिहान
सुन्दरताक करु की हम बखान।

नेना-भुटका चिड़ै-चुनमुनी
चैत मास कोइलीक बोली
लागय जेना सातो सुर झंकार
सुन्दरताक करु की हम बखान।

धरा पहिरि पीयर रंग साड़ी
तीसी फूलक लागल किनारी
प्रियतमाक प्रिय मधुमास
सुन्दरताक करु की हम बखान।

देखि छटा सावन-भादव केर
कारी मेघ कजराएल आँखि
चहुँ दिस हरियर कंचन धान
सुन्दरताक करु की हम बखान।

सुन्दर तन अछि मन अछि सुन्दर
बोली मधुर मिश्री सन मिठगर
ओ छथि सुंदर सभसँ महान
सुन्दरताक करु की हम बखान।

अंशुमान सत्यकेतुक तीनटा कविता

कोइलख, मधुबनी।
सम्पर्क : +91 75490 70416

कुचक्र

जखनि-जखनि शुरू होइत अछि
पैकारी अन्हारक
आ पसरि जाइत अछि
गीदरक हुआँ-हुआँ चारू भर
धधकि उठैत अछि कविता हमर
डाहि देबऽ चाहैत अछि
धृतराष्ट्रक गुमान सभटा
जे बचल रहए पाण्डवक सत्य
आ पसरि जाय सगरो इजोर मह-मह

अइ अन्हरियामे
सह-सह करैत हिटलरक पोआ सभ
फुफकारि उठैए आदतन
जहरक व्यापारमे लागल
त्रिशूलक टंकारसँ सम्मोहित
जय-जयकार करैए
तऽ त्रिपुंडक जोशमे
हिन्नू कि मुसलमान कहैए

जखनि-जखनि बैसलए गिद्ध
संसदक चानि पर
बाजलए कविता हमर जोर सँ
आइ फेर चिकरि उठलए
कंठ फारि कऽ
बंद मुट्ठीसँ गिद्ध कैं चेतौनी दैत
आ से ताधरि गरजत
जाधरि नहि सुखेलैए ओकर
धमनीक लाल सोनित
ओना अखनि चिन्तित अछि
कविता हमर
आबि तुलाएल अछि घटाटोप मेघ
एहिसँ बचबाक लेल
करऽ पड़तै ओकरा चानन ओ टीका
ओढ़ पड़तै रामनामी गमछा
अन्यथा मानल जाएत
पातकी, देशद्रोही

मुदा से कोना
कविता हमर बनि जायत गाँधी
सत्य ओ अहिँसा कैं पिजा कऽ
बनाओत हथियार
करत प्रतिरोध ताधरि
जाधरि गिद्ध नहि समेटैत अछि
अपन पाँखि
प्रेम ओ सद्भावक राग
नहि निकसैत अछि संसदक कंठ-कंठ सँ
आ फुला नहि जाइत अछि शान्तिक
उज्जर दप-दप फूल सगरो।

अनुत्तरित

गलऽ लागल अछि खेतमे लागल
सभ जजात हमर
कहि दियौ
अकासमे मर्राइत मेघक टोली सभ स
नहि चाही हमरा
टिपर-टापर किंवा एकार-नवार
हमरा चाही चमकैत एकटा सुर्ज
आगिक एकटा गोला

जे जोगौने राखय जीवनक आस चाही रौदसँ
गमकैत एकटा आँगन
जेतय कनकनी भऽ जाइत होई मरणासन्न
जेतय बुद्ध दैत होइथ शान्तिक उपदेश
आ गांधी गबैत होइथ वैष्णव जन तो तेने कहिये...

हमरा नहिं चाही
पुरवा पछवा बसात
जे जकड़ि लेने अछि
हमर मायक ठेहुन आ डाँड़
एतबे सिहकी हएत अफरात
जे शीतल कऽ सकय घामसँ तितल पिताक देह
आ समेटने रहय हमरा भीतर सदिखन
मनुक्ख हेबाक सरोकार

एहि बिखाह होइत समयमे
उघि रहल सभ
एक दोसराक लहास
जरूरी अछि सक्कत एकटा कान्ह
मुदा ओहो तेहने जे उठा सकय
धाय-मायक प्रति आस्थाक बोझ
चाही कनमा भरि दुलारक संवेग
जे पोहला सकय लहालोट भेल नेनाकेँ

खगता अछि अखनि
एकटा कपारक जे बदरंग नहि भेल हो
ठोप-चाननक आरेखसँ
छाती भरि बसातक
मिझरायल नहि हो जाहिमे
दरबारसँ उठल चारणकेँ धुँआ

की एतेक सहज छै आइ
अपन खेरहा बाँचब
कहाँदैन छै मनाही जोरसँ चिकरबाको
विचार तऽ रहिये ने गेल छै एहि दुनियाक चौहद्दीमे
हमरा चाही थोड़े मोसनाइ
जे बन्न मुट्ठीसँ उसाहि दी
थोड़े करिया आखर जोरसँ
मुदा मातल एहि समयकेँ
की हेतै ओहो सहाज
स्वयं छी अनुत्तरित।

अनभुआर

सड़कक काते कात छिड़ीयाएल
कांटक बिहैनक बीच
दौग रहल अछि हेंजक हेंज मनुक्ख
भुतियाएल एकक पाछू दोसर
कतऽ जाइत अछि ई सभ
केकरो ज्ञात नहि
दौग रहल अछि अपस्यांत मुदा
निरुद्द्येश्य,निस्वप्न,निर्भाव
सड़कक आवाजाहीसँ सर्वथा निस्पृह
कोनो अज्ञात लक्ष्यक पाछू

दौगब तऽ मनुक्खक नियति थिकै जिनगीक एक
छोड़ सऽ दोसर छोड़ तक
भागैत रहैछ मनुक्ख
सभ किछु समेटि लेबाक जतनमे
कखनहु भरि छाती सिहकी
त कखनहु आंजुर भरि रौद
औंस लेबऽ चाहैत अछि
अपन अकासक चारू भर
मांटि धयने रहबाक निम्मित
मुदा आई ने तऽ पैरतर छै मांटि
ने माथ पर अकासक बोझ
शेष छै मात्र दौगैत रहबाक उत्तेजना

ओकरा नहि छै बुझल
दौगैत ओ अछि जेकरा
पहुंचबाक छै कोनो निश्चित ठाम पर
कहाँ छै ओकरा लेल कोनो ठाम
नहि कियो अप्पन सभ आने आन
ओ देखि रहल अछि कोनो
बाबरी मस्जिद कि कोनो गोधरा त्रिपुंडक अन्हरियामे
नहि देखाइत छैक ओकरा
कोनो मायक गर्भमे सूतल बच्चा
आ कि त्रिशूलक टंकारमे नहि सुनाईत छैक
कोनो नेनाक चित्कार
कतेक अनभुआर सन
भेल जा रहल अछि ई सड़क
सरिपहुं कतेक अनभुआर।

प्रभात कुमार
चोरौत, सीतामढ़ी।
सम्पर्क : +91 9555283396

मोनी 'वैदेही'
बेल, बैरगनिया, सीतामढ़ी।

मीठगर मैथिली

रसगर मैथिली, मीठगर मैथिली।
कियैक पड़ल असगर मैथिली ?

भूमिजाकेँ बोल मैथिली,
फगुआकेँ ढ़ोल मैथिली।
जाड़क सिरकक खोल मैथिली,
बहुत अछि अनमोल मैथिली॥

नेन्ना-भुटकाकेँ हरहोर मैथिली,
रहू माछक झोर मैथिली।
एहि छोरसँ ओहि छोर मैथिली,
मिथिलाकेँ पोरे-पोर मैथिली॥

बाबा गाछी केर आम मैथिली,
गोनू झा केर गाम मैथिली।
गार्गी-अहिल्याक ठाम मैथिली,
श्यामा माइकेँ धाम मैथिली॥

पान मैथिली-धान मैथिली,
मिथिलाकेँ मखान मैथिली।
कोयल केर मीठगर तान मैथिली,
मिथिला केर अभिमान मैथिली॥

विद्यापति केर पद मैथिली,
खट्टर कक्काक गद्य मैथिली।
मंडन-अयाचीक छंद मैथिली॥

करियौ कृपा हे दुर्गा मैया

करियौ कृपा हे दुर्गा मैया, अछि डूबल नैया।
देखू डूबल अछि नैया, करतै के पार हे मैया?
अहीं छी जग केर खेबैया, हे दुर्गा मैया।
करियौ कृपा ...

कते दु:ख कहू कते कानी, बेटी हम छी अज्ञानी।
जगमे नहि कोनो रखबैया, हे दुर्गा मैया।
करियौ कृपा ...

दु:खक पहाड़ टूटल, कनैत छी असगर भूखल।
कियो नहि हमरा पूछबैया, हे दुर्गा मैया।
करियौ कृपा ...

अहीं एक अवलम्बा, सुनियौ हे माँ जगदम्बा।
अहीं छी दु:ख सुनबैया, हे दुर्गा मैया।
करियौ कृपा ...

सुनू हे माँ कल्याणी, मोनी कहैए कानी।
करैत छी हम अहाँ कें गुहरिया, हे दुर्गा मैया।
करियौ कृपा ...

डॉ. चन्द्रमणिक चाखिटा गीत

दरभंगा।
सम्पर्क : +91 94308 27795

एक

कोन पाला पड़ल छै जे काँपैये हाड़,
चल रे मीता ऐ चिनगीसँ धधरा पजार।
एहि अन्हरियामे नीक नहि लागैए यार॥ चल रे...

देह तनतै जखन धाह लगतै कने
बाट सुझतै अगिन साह देतै कने
कते दिन धरि झुकएबैं तौं घोकड़ीमे घाड़॥ चल रे...

दही चूड़ा सुरकि कऽ हम सुस्त भेल छी
सहि उपद्रव अगत्तीक पुष्ट भेल छी
घिउ महलैं बहुत ओहि टाराकैं ढार॥ चल रे...

गहनमरू बनल कोना कटतौ ई दिन
सिंधु देलकनि की बाट रामकैं बाण बिन
तोहर खुट्टीमे टाँगल छौ धनुखा उतार॥ चल रे...

छी पुजारी अहिंसा आ शांतिक बनल
गेल थकुचल बहुत देह नहिए तनल
ढोल सिमसिम भेलै सेंकि चमड़ी ततार॥ चल रे...

टाँट पड़ल भूमि 'चन्द्रमणि' कोड़ि अबै छैं
की बनैये ले अपन देह तोड़ि अबै छैं
अपन हक लेऽ सुगरनीकैं बाधसँ खेहार॥ चल रे...

दू

जखन गोतियासँ गोतिया नेयारि लैत छै।
तखन सत्ता बहुरिया उढ़ारि लैत छै॥
जखन गोतियासँ...

कहल जाइत छै जे चोर-चोर भाय होइत छै
सड़ल अतरीवलाक एक राय होइत छै
जखन अलग-अलग मुण्डक अलग राग हो
तखन पोनहिपर ढोलिया सुतारि लैत छै॥
जखन गोतियासँ...

लोभ सत्ताक लेल भेष बदलै छै ओ
सकल छटुआसँ मेलजोल बढ़बै छै ओ
देखि अन्हर बिहाड़ि लागि जाइत छै पराहि
केओ पूछै तऽ दाँतहि चेआरि लैत छै॥
जखन गोतियासँ...

राजा बनतै सियार तऽ रंगल रहतै
सिंह मारत दहाड़ तऽ हिलल करतै
पानि पड़िते धोखड़ि रूप निखरै नृपक
तखन केहरि प्रजाकैं उबारि लैत छै॥
जखन गोतियासँ...

छै जरूरी प्रजामे बढ़ौ चेतना
देश हितमे प्रथम होउक संवेदना
'चन्द्रमणि' स्वर्ण लंका अरुचि रामकैं
अज्ञानहि ने ज्ञानहु उधारि लैत छै॥
जखन गोतियासँ...

तीन

मन रे,
बनि पवन बहै मिथिला मधुवनमे!
ई तन सगुन चिरइया गाबए
गीत मातृ-वंदनमे॥ मन रे...

गंगा गंडक कोशी कमला
कल-कल करथि बहथि नित विमला
साँझ भोर लक्ष्मी केर रुनझुन
विष्णु रमथि कण-कणमे॥ मन रे...

राजा जनक विदेह जतय छथि
रघुकुल-तिलक-सिनेह ततए छथि
जतए भूमिजासँ रामायण
सीता छथि हरि-मनमे॥ मन रे...

हठसँ पाथरि भेली अहिल्या
दूर करी हम अपन अविद्या -2
अनशन तोड़बौलनि श्रीराघव
परतर नहि त्रिभुवनमे॥ मन रे...

याग्यवल्क्य उदयन वाचस्पति
भामति मंडन ओ विद्यापति-2
कीर्तिपताका उड़य गोसाईंक
धोती नभ-आँगनमे॥ मन रे...

लोरिक कारिख गहिल भवानी
गोनू-ज्ञान कतेक बखानी-2
दीनाभद्री देव, भेद नहि
नर आ नारायणमे॥ मन रे...

कस्तूरी अछि अपनहि अंदर
मिथिला अपन स्वर्गसँ सुन्दर-2
परम धामकेँ छोड़ि 'चन्द्रमणि'
कतहु ने जो रन-वनमे॥ मन रे...

चारि

नियम निष्ठासँ व्रत कयने छी,
छठि परमेसरी अबियौ।
कि नीपल घाट सजने छी,
हे छठि परमेसरी अबियौ॥
नियम-निष्ठासँ...

अपन बेटाकेँ पजियौने कनक मंदिरमे सूतल छी
उठू आदित्यकेँ जगबू कियै दुनियाँसँ रूसल छी
कि चौमुख दीप लेसने छी,
हे छठि परमेसरी अबियौ॥
नीपल घाट सजने छी ...

सुरुज उगता नयन देखत इजोतक जाल जग पसरत
विनय स्वीकारथिन आदित्य तऽ दुःख धोन्हिमे ससरत
कि केरा नारियर रखने छी,
हे छठि परमेसरी अबियौ॥
नीपल घाट सजने छी ...

व्रती सब ठाढ़ अन्हरोखेसँ जलमे हाथ अछि जोड़ने
कियै कयने छी एत देरी भगतसँ मुँह छी मोड़ने
अरघ साँझहुमे देने छी,
हे छठि परमेसरी अबियौ॥
नीपल घाट सजने छी ...

कि कोनियामे भरल भुसबा आ ठकुआ मौसमी फल अछि
'चन्द्रमणि' भोग स्वीकारू नदी-पोखरि ठरल जल अछि
दिऔ सुत धन सुगढ़ काया,
हे छठि परमेसरी अबियौ॥
नीपल घाट सजने छी ...

जगदानन्द झा 'मनु'क चारिटा गजल

ग्रेटर नोएडा, गौतमबुद्ध नगर।
सम्पर्क : +91 92124 61006

एक

करेजामे हमर साजन आबि गेलै
मनक सभ तार बटगबनी गाबि गेलै

हुनक मुस्कीसँ सगरो दुनियाक सम्पति
करेजा जानि नै कोना पाबि गेलै

बलमकेँ दर्द कनिको जनिते हमर मन
कतेको दुख अपन चट्टे दाबि गेलै

बनेलहुँ अपन जखनसँ संगी अहाँकेँ
जिला भरि केर लोकक मुँह बाबि गेलै

बसेने छलहुँ मन मंदिरमे जिनक छबि
दया भगवानकेँ ओ 'मनु' लाबि गेलै

दू

अहाँ बिनु नै सुतै नै जागैत छी हम
कही की राति कोना काटैत छी हम

अहाँक प्रेम नै बुझलहुँ संग रहितो
परोक्षमे कते छुपि कानैत छी हम

करेजा केर भीतर छबि दाबि रखने
अहाँकेँ प्राण अप्पन मानैत छी हम

बुझू नै हम खिलाड़ी एतेक कचिया
अहाँ जीती सखी तेँ हारैत छी हम

अहाँ जतए कतौ जगमे खुश रही 'मनु'
दुआ ई मनसँ सदिखन मांगैत छी हम

तीन

किए तीर नजरिसँ अहाँकेँ चलैए
हँसी ई तऽ घाएल हमरा करैए

मधुर बाजि पाजेब छम-छम अहाँके
हमर मोन रहि रहि किए डोलबैए

हिलोरे हबामे अहाँकेँ खुजल लट
सगरो तऽ दाँतेसँ आङुर कटैए

जखन ससरि जेए अहाँ केर आँचर
पकरिते करेजा कतेको मरैए

अहाँकेँ तऽ मुँह देखि जीवैत 'मनु' अछि
भ जेए मिलन थोर मनमे रहैए

चारि

करेजामे अपन हम की बसेने छी
अहाँकेँ नामटा लिख-लिख नुकेने छी

बितैए राति नै कनिको कटैए दिन
अहाँकेँ बाटमे पपनी सजेने छी

हमर ठोरक हँसीकेँ देख नै हँसियौ
अहाँ हँसि लिअ दरद तेँ हम दबेने छी

हमर जीवन अहाँ बिनु नै छलै जीवन
मनुक्खसँ देवता हमरा बनेने छी

निसा ई गजलमे आँखिक अहाँकेँ 'मनु'
बुझू नै हम महग ताड़ी चढ़ेने छी

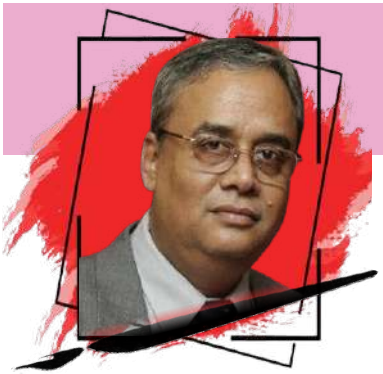

तीनटा कोरियाई कविता : अनुवाद केर अएनामे

—उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

गुरुग्राम सेक्टर 81
सम्पर्क : +91 9434050218

एक

राज महलसँ एकटा कूपित चिड़ै जकाँ उड़ि कए निकललहुँ
आ तहियेसँ देखू हम अपन असगर छाँहकँ नील पहाड़क बीच घसीटने जाइ छी।
राति-राति हम निन्नक भीख माँगैत छी सभठाँ, मुदा निन्न कथी लए आओत;
वर्षक वर्ष बीतै छइ शोकेमे, तैयो शोक ने होइ छइ शेष।
गायनो बंद भऽ गेलै, उषा कालक चान भोरे-भोर पहाड़क चोटी पर होइ छइ म्लान;
ने जानि कत्तेऽ खून बहि गेल, तब जा कऽ खसल पत्रराजि वसंतक घाटीमे भेल अछि लाल।
जखन स्वर्ग अपनहि बुलबुलक मधुर गीत सुनिये नहि पबैत अछि बहीर जकाँ,
कथी ले चाहै छी ओ शोकार्त मनुक्खक कान तकरा तैयो चाहै छइ सुनै लए ?

—जोसेऑन किंग दानजोंग

Since I left the imperial palace like a resentful bird,
I have dragged my lonely shadow among blue mountains.
I beg for sleep night after night, but sleep won't come;
year after year passes in grief, but the grief doesn't end.
Singing stopped, the moon is pale over the peaks at dawn;
blood streamed, fallen petals are red in the spring valleys.
When heaven is deaf to the song of a nightingale,
why are a grieving man's ears so keen?

一自寃禽出帝宮
孤身隻影碧山中
假眠夜夜眠無假
窮恨年年恨不窮
聲斷曉岑殘月白
血流春谷落花紅
天聾尙未聞哀訴
何乃愁人耳獨聽

*[A poem by **Joseon King Danjong** (r. 1452-1455) after he was exiled to Yeongwol in Gangwon-do (Gangwon Province), in the collection- "Among the Flowering Reeds," edited by Kim Jong-Gil (2002) White Pine Press.]*

दू

हमर तऽ इच्छा एतबे जे अहाँकेँ भेंट करी, सपनेमे —
किये तऽ ओत्तय हम जखने जाइ छी, अहाँ आबिये जाइ छी
तैँ चलू हम दुनू फेरसँ सपना देखी आगामी रात्रिक
रवाना हैब तऽ एक्के समय हैब, फेरसँ भैँट हैबा लेल, स्वप्नपथ पर।

—ह्वांग शिन-ई

My wish to see you is fulfilled only in dreams;
whenever I visit you, you visit me.
So let us dream again some future night,
starting at the same time to meet on our way.

相思相見只憑夢
儂訪歡時歡訪儂
願使遙遙他夜夢
一時同作路中逢

*[A poems by **Hwang Chin-i**, who was a gisaeng during Joseon times, a Korean version of a geisha; from the same anthology]*

तीन

जे पत्तासभ एत्ते गँहीर प्रेम कएने छल
सभटा आब खसि पड़ल अछि
हमर सामने बला पहाड़ परसँ।
आब तँ रहैये खाली पहाड़कँ चाहत,
ताहि परहक सफेद बर्फ
जे खसियो सकैत अछि
नदी केर देह पर।
मुदा हम तँ अहाँकँ देखए चाहब
बर्फ खसत, ताहिसँ पहिनहि।

—किम योंग तैक

Lovely leaves
have all been shed
from the mountain ahead of me.
Longing for the empty mountain,
white snow
might fall
upon the river.
Before the snow falls,
I would love to see you.

초겨울 편지/ 김용택
앞산에
고운 잎
다 졌답니다
빈 산을 그리며
저 강에
흰눈
내리겠지요

눈 내리기 전에
한번 보고 싶습니다

[***Kim Yong-taek*** (1948) was born in Imsil, Jeollabuk-do. With lyrical (often regional) vernacular, he has written many poems about undamaged agricultural communities and the profound beauty of nature. His poetry collections include The Sumjin River, A Clear Day, Sister, The Day Is Getting Dark, The Flower Letter I Miss, Times Like A River, That Woman's House, and Your Daring Love. He received the Kim Soo-young Literary Award (1986) and the Sowol Poetry Award (1997)]

श्याम दरिहरे

19 फरवरी 1954 - 25 जून 2021

झारखण्ड सरकारमे डिविजनल कमाण्डेंटक पदसँ सेवानिवृत्त मैथिली आ हिंदीक प्रतिष्ठित कवि, कथाकार आ उपन्यासकार श्याम दरिहरे जीक तीन गोट कथा-संग्रह 'सरिसोमे भूत', 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कम' आ 'रक्त सम्बन्ध' प्रकाशित आ प्रशंसित कृति छनि। उपन्यास 'घुरि आउ मान्या', 'जगत सब सपना', 'हमर जनम किए भेलै हो रामा' आ 'बाती कोन जराउ', एकर अतिरिक्त मैथिली कविता-संग्रह 'क्षमा करब हे महाकवि' आ हिंदी कविता-संग्रह 'गंगा नहाना बाकी है' सेहो बेस चर्चित कृति छनि। 'सरिसोमे भूत'क लेल हिनका किरण सम्मान, रहिका एवं 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कम'क लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ तिरहुत साहित्य सम्मान, हैदराबाद प्राप्त छनि। धर्मवीर भारतीक प्रसिद्ध काव्य-कृति 'कनुप्रिया'क मैथिली अनुवाद बेस चर्चित छनि। ब्रजकिशोर सम्मानसँ सम्मानित, घनीभूत मानवीय संवेदनाक कवि दरिहरेजीक कवितामे भावना, करुणा आ प्रेम, जीवनक प्रति अशेष आस्था आदिकेँ अकानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यक लेल अपूरणीय क्षति भेल अछि जे आइ ओ हमरालोकनिक बीच सदेह नहि छथि। मुदा, मैथिली साहित्याकाशमे ओ अनन्त काल धरि जगमगाइत रहताह।

[प्रस्तुत समीक्षा श्याम दरिहरेजी दि. 1 जून 2021केँ अनुप्रासक मेलपर पठओने छलाह। कतिपय कारणवश एकर प्रकाशन पूर्वमे नहि भ' सकल। एहि अंकमे श्रद्धास्वरूप प्रकाशित कएल जा रहल अछि। — सम्पादक]

मैथिली साहित्यक विलक्षण पोथी अछि 'मिच्छामी दुक्कड़म' !

हम मिच्छामी दुक्कड़म पोथीक लेखक श्री कुमार मनीष अरविन्दकेँ एहन अद्‌भुत पुस्तक लिखवा लेल बधाइ आ मैथिली भाषा-भंडारकेँ एहन विलक्षण पोथीसँ अलंकृत करए लेल हृदयसँ धन्यवाद दैत छिअनि।

सभसँ पहिने हम पोथीक नाम पर विचार करब। लेखक स्वयं एकर व्याख्या पुस्तकक भूमिकामे एवं अन्यत्र सेहो कएने छथि। ओ जैन धर्मावलम्बीमे प्रचलित एकटा परम्पराक उल्लेख कएने छथि जे मनुष्य आ प्रकृतिसँ क्षमा-याचनाक संदर्भमे अछि। हमरा मोनमे एहि सम्बन्धमे दूटा प्रश्न उठैत अछि। पहिल जे मैथिलीक क्षमा-याचनाक बदला 'मिच्छामी दुक्कड़म'क प्रयोग किएक ! तकर स्पष्टीकरण पुस्तक पढ़ला पर भेटि जाइत छैक। जैन अहिंसाकेँ परम धर्म मानैत छथि आ लेखक एकटा जीवक हत्याक कारणे अपनाकेँ ओकर दोषी मानैत छथि। आन धर्म अहिंसा पर ओतेक बेशी जोर नहि दैत अछि भरिसक तेँ। जैन धर्मक प्रमुख पवित्र धर्मस्थल पारसनाथ पहाड़ी छैक जे लेखकक कार्यक्षेत्रमे पड़ैत छलनि। ओतऽ ओ कए बेर ऑपरेशन सेहो कएने हेताह (एकबेरक उल्लेख पुस्तकमे अछि), आएल गेल हेताह। तेँ हिनकर मोन पर 'मिच्छामी दुक्कड़' अपन अस्तित्व जमा लेने होएत।

हमरा मोनमे दोसर प्रश्न ई उठैत अछि जे लेखकक मोनमे क्षमा-याचनाक प्रेरणे किएक भेलनि ? ओकर उत्तर पोथीक अनुसार यैह अछि जे ओ एकटा हिंसक हाथीक संहारमे सहायक भेल छलखिन। तऽ से की ? अपन कर्त्तव्यक पालन अधर्म कोना भेलैक! हुनकर नौकरीक माँग छलनि ओ। जँ ओ से नहि करितथि आ ओ हाथी आर लोकक हत्या करैत रहैत तऽ की से हिनका लेल धर्मसम्मत होइत ? जँ से नहि तखन एहन अपराधबोध किएक। जँ अपराध नहि तखन क्षमा याचना कथिक ! ई नामकरण लोककेँ भय दिस प्रेरित कऽ सकैए की ? यद्यपि पुस्तकमे लेखक अपनहि एहि संदर्भमे बेश विमर्श प्रस्तुत कएने छथि। तैओ क्षमा-याचना करैत छथि। एहने मोह आ भ्रम पूर्वमे महाभारतक युद्धक काल अर्जुनकेँ भेल छलनि। फलतः गीताक उद्‌भव भेल छल। 'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम' सभक कर्त्तव्य छैक। सेनाक लेल दुश्मनक संहारे धर्म थिकैक। तखन क्षमा-याचना भरिसक अतरिक्त भद्रता थिक कि भयक परिणाम भऽ सकैए।

लेखक एकटा एहन घटनाक चर्चा करैत छथि जाहिमे

एकटा कम्पनी अपन धनबलसँ सम्पूर्ण सिस्टमकेँ किनि लैत छैक। वनभूमि पर कब्जा करैत छैक। गरीब-गुरबाक जमीन सेहो हथिआ लैत छैक। ओहिमे ओकर सहायक छैक स्थानीय माफिया, स्थानीय प्रशासन, पुलिस प्रशासन आ मन्त्री। वन पदाधिकारी ओहि जमीनकेँ माफियासँ बचाबक लेल ओना प्रयास करैत छथि जेना ओ जमीन हुनकर बपौती कि मरौसी होनि। एस०पी०सँ धमकी आ मन्त्रीसँ फटकार खाइत छथि, मुदा अपन अभियानसँ हाथ नहि छिपैत छथि। अपन नौकरी आ जिनगीक खतराकेँ अनठबैत कर्मयोगी जकाँ सम्पूर्ण सिस्टमसँ लड़ैत छथि मुदा अन्ततः माफियाक विजय होइत छैक। हमरा बुझने, लेखकक मोनमे, वनभूमिक रक्षामे असफलता हेतु क्षमा, प्रकृतिसँ कि वनदेवीसँ, मँगबाक खाँहिस सेहो उठल छल हेतनि। तेँ ओहू कारणे हमरा 'मिच्छामी दुक्कड़म' नामकरण उचित बुझाइत अछि। जँ हमर अनुमान ठीक अछि तऽ ई नामकरण लेखकक कर्त्तव्यपरायणता, दृढ़ता, साहस आर निर्भयताक द्योतक सेहो अछि।

अस्तु, आब आगूक बात करी। एहि पोथीकेँ कोन कोटि (विधा)मे राखल जाएत से विचार समीक्षक-आलोचक लोकनि करताह। मुदा साधारण पाठक लेल ई एकटा दुरूह कार्य होएत। ई पुस्तक एके संग उपन्यास, संस्मरण, वनगाथा, लेखकक वन-जीवन चरित, शिखर पर जिजीविषाक विस्तारीकरण आदि अनेक विधाक सिमानकेँ छुबैत प्रतीत होइत अछि। वन्य प्राणी आ वनवासीक जीवन, लेखकक संघर्ष, वन-पर्यटन आदि अनेक बातक ज्ञान मैथिली साहित्यमे एकेठाम एतेक रास नहि आएल छल। तेँ ई पोथी कोनो रिक्त स्थानक पूर्ति नहि कएलक अछि अपितु एक नव स्थानक निर्माण कएलक अछि आ से लेखकक सफलताके निरूपित करैत छनि।

की ई पोथी उपन्यास थिक ? मिच्छामी दुक्कड़म प्रारम्भ होइत अछि एकटा उत्पाती आ हिंसक हाथीक वध प्रकरणसँ। लेखक कि नायक जे कही, से आइ ने वरीय पदाधिकारी छथि। जखन नव नौतार छलाह तऽ सहायक वन संरक्षक छलाह। ई वन्यप्राणी विशेषज्ञक कोर्स सभ पास कएने छथि। तेँ जखन वरीय पदाधिकारी आदेश देलखिन तऽ ओकर पालन करब हिनका लेल आवश्यक छलनि। ओ ओहि हाथीकेँ डार्ट लगबैत छथि। हाथी बेहोश होइत अछि आ पहिचान स्थापित भेलाक उपरान्त पुलिसक गोलीसँ मारल जाइत अछि। उनचालिस लोकक हत्याक अपराधी हाथीक मृत्युसँ ओहिठामक जनता अपनाकेँ सुरक्षित अनुभव करैत अछि। संगहि तुरते वैह पीड़ित जनता ओहि हाथीकेँ गणेशजीक अवतार मानि पूजन-अर्चनक ओरिआओनमे लागि जाइत अछि। जकर सभक परिवारक सदस्यकेँ हाथी मारने छलैक वैह सभ आहि संकटसँ मुक्ति देनिहार पदाधिकारी कर्मचारीकेँ सरापऽ लगैत अछि। एहि विरोधाभासकेँ लेखक नीक जकाँ उभारने छथि।

लेखक स्वयं ई निर्णय नहि कऽ पबैत छथि जे ओकरा विश्वास कहथि आकि अन्धविश्वास ! धर्म कहथि आकि मूर्खता ! मुदा जखन विभागीय वरीष्ठतम पदाधिकारी हुनकर पीठ ठोकवाक बदला अप्रसन्नता व्यक्त करैत छथिन तऽ नायक डेरायल सन लगैत छथि। ओ असमंजसमे पड़ि जाइत छथि। विशेषतः जखन ओ टी०बी० आ बादमे कैन्सर रोगसँ पीड़ित होइत छथि तऽ हुनकर दृढ़ता डगमगाइत सन बुझाइत छनि। तखन पाठकक समक्ष ई प्रश्न अवश्ये उठैत छैक जे ओहि बिमारीसँ ग्रस्त संसारक सभ मरीज की हाथीए मारने अछि? सरकारी नौकरीमे सेना आ पुलिस अनेक बेर आततायीकेँ मारि खसबैत अछि। तेँ की ओ अधर्मक भागी अछि? नहि, किन्नहु नहि। जाहि धर्मक अज्ञानता एहन अपराधबोध उत्पन्न करैत छैक ओही धर्मक सही पाठ छैक जे अपन निर्दिष्ट सत्कर्म कुशलतासँ करब योग छैक। ''बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युजयस्य योगः कर्मसु कौशलम्॥ ''सरकारी कर्मी द्वारा सरकारक आदेश पालन ओहने कर्म छैक। लेखक ओकरे निर्वहन कुशलता पूर्वक कएलनि। ओहि कर्ममे हुनकर व्यक्तिगत कोनो स्वार्थ नहि छलनि। ओ एकदम आसक्ति रहित कर्म कएने छथि। तेँ ओ कोनो पापक भागी नहि छथि। एहि लेल गीता स्पष्ट कहने अछि—

''ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेण पद्मपत्रमिवाम्भसा॥''

पुस्तकक अन्त सेहो ओही हाथीक प्रकरणसँ भेल अछि। से अन्त बड़ नाटकीय आ मार्मिक ढंगसँ भेल अछि। अनेक वर्ष बितलाक बाद नायक, पदोन्नतिक बाद, पुन: ओही क्षेत्रमे पदस्थापित होइत छथि जतऽ हाथीक वध भेल छलैक। मेलाक वर्णन आ गोपनीय ढंगसँ गणेशजीक ओहि पूजास्थल धरि पहुँचबाक निर्णय नीक भऽ पड़ल अछि। ई खंड बड़ प्रभावित करैत छैक। गणेशजीक चौतरा आकि ओहि हाथीक स्मारक स्थलक पुजारीसँ नायक बात करैत छथि। फेर असगरे चौतरा लग जाकऽ अपन मनोभाव प्रकट करैत छथि। हृदयसँ क्षमा याचना करैत पुस्तकक नामकरण 'मिच्छामी दुक्कड़म' करबाक निर्णय लऽ लैत छथि। तखने ई पुस्तक सेहो ओहि हाथीक स्मारक बनि जाइत अछि। एकटा हिंसक जीव लेल एहन करुणा आ कृतज्ञता भाव अन्यत्र दुर्लभ अछि। तँ ई हाथी काँड पोथीकेँ औपन्यासिक कृति बनबैत अछि।

एतबे नहि, पुस्तकमे एकटा लगभग प्रेमकथा सेहो चलैत नजरि अबैए। ओ प्रेमकथा उपन्यासकेँ चहटगर बनबैत-बनबैत हाथ कपछि लैत अछि, आकि कहू जे कठुआ जाइत अछि। ओहि कथामे रेस्ट हाउसमे दू-तीन दिन नायक आ नायिकाक रहब। ट्री हाउसमे संगे राति बितायब। डायरी पर कविता लिखब। रातिमे जंगल भ्रमण करब। वन्य प्राणीक दर्शन ओहन वनमे करब, जतऽ सखुआक पैघ-पैघ गाछसँ भरल वनमे पलास जेना आगि लगा देने हो। स्काटलैंडक नायिका कैथीक संग वियोगक वर्णन पोथी एना करैत अछि। ''हमरा मस्तिष्कमे पछिला दू दिनमे समेटल गेल असंख्य चित्र सभ बेराबेरीकऽ जेना निकलिकऽ आँखिक सोझाँ अबैत जा रहल छल। गाड़ी बढ़ैत चलि जा रहल छलैक। ...कैथी कैक वर्ष धरि सम्पर्क रखने छलि हमरासँ। ओकर मेल भेटैत छल हमरा... मेल भने नहि आएल हो मुदा कैथी हमरा मोनमे अबैत रहैत छलि।... कैथीक मादे उठैत प्रश्न सभ हमर मोनकेँ भरि दैत अछि। जखन कखनो ओकर स्मरण अबैत अछि तऽ।'' नायक जखन कैन्सरसँ पीड़ित छथि दर्दसँ छटपटाइत छथि तऽ फेर कैथीक नील आँखि दर्द निवारण लेल मोनमे उपस्थित होइत छनि। एतेक स्वादिष्ट फोड़न पड़ल व्यंजनमे तड़का लगैत छैक अंडमान निकोबारमे। जखन अचक्के नायिका आ नायक दू दशकक बाद एक दोसराक दर्शनक अनुपम अवसर प्राप्त कऽ पबैत छथि। एहि एकान्त भेंटघाट लेल रोमान्टिक भूमि तैयार करैत छैक एल०टी०सी०क उपयोग लेल नायकक असगरे यात्रा करब। तैओ एतेक सरंजामसँ तैयार प्रेम-व्यंजन अन्तत: एकटा पथ्य सन बनिकऽ रहि जाइत अछि। लेखक जानिबुझिक भरिसक झँसिगर मसल्लासँ परहेज कएने छथि। डाक्टर मना कएने हेतनि, कारण ओहेन कठिन बिमारीसँ तुरते स्वस्थ भेल व्यक्ति लेल मसल्ला अहितकर होइत हेतैक।

तें हमरा मिच्छामी दुक्कड़म एकटा प्रिय उपन्यास सन लगैए। मिच्छामी दुक्कड़म की लेखकक संस्मरण अछि ?-अहाँ कहब जे ई कोन नव बात भेलैक ! जे केओ एकरा कनियो मने पढ़ि लेत सेहो ई बात कहत जे ई लेखकक संस्मरण छनि। तखन हँ, हम ई कह चाहैत छी जे एहि पोथीकेँ चलैत-फिरैत अन्दाजमे एकटा संस्मरण कहि निकलि लेब तथ्यक सरलीकरण करब होएत। ई सरलीकरण लेखकक परिश्रम, समर्पण, लेखकीय क्षमता आ विद्वताक संग अन्याय करब होएत। ई संस्मरण मैथिली साहित्य लेल अभूतपूर्व अछि। कोनो लेखक वन्य जीवन, ओकर उपादेयता, ओकर जनजीवन, दीनता, संघर्ष, नक्सलक अत्याचार आ वनक उच्छेदन लेल बिर्त माफियाक कथा एक संग कहाँ दऽ सकल छलाह। सेहो एतेक प्रमाणिकताक संग !

वनक बीच बसल आदिवासीक दैन्य जिनगी देखि लेखकक कवि हृदयसँ फूटि पड़ल अछि "... रहतैक ओहिना बरकैत बैगाक अस्तित्व-कथा/फऽर ओ सभ 'कुसमा'क/ओहिना कऽ खाइत रहत/हैरैत रहत मासक मास बाघक उछिष्ट/पीबैत रहत/भूगर्भक विषाणु रहित पेयजल ...आ जीबैत रहत/दैत रहत हमरा सभकेँ/मौका भविष्यहुमे/कार्य सिद्धिक/अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धिक।" एहन संवेदनशील संस्मरण प्रशंसनीय अछि। एहने संवेदनशील उल्लेख ओ जिक्कू नामक कुकुरक मृत्युक कारणक चर्चा करैत कएने छथि।

लेखक जखन मुखर्जी दादाक संस्मरण लिखैत हुनकर माध्यमसँ वस्त्रहीन आदिवासी कन्याक घटनाक उल्लेख करैत छथि तऽ सत्ते देह सिहरि उठैत अछि। लेखक घटनाक वर्णन एहन प्रामाणिकताक संग कएने

छथि जे मोनमे हठात् उठैत छैक जे एखन धरि जँ एहन दु:स्थिति भारतीय नागरिकक छैक, तखन फेर देशमे सरकार आ ओकर सभक बड़का-बड़का दाबीक की अर्थ छैक।

ई पुस्तक संस्मरणक उच्चतम शिखरकेँ तखन छुबैत अछि जखन लेखक कैन्सरसँ ग्रस्त होइत छथि। ओहि दुखद स्थितिक संस्मरण लिखैत जहिना ओ पाठककेँ द्रवित आ भयभीत करैत छथि, तहिना ओहन रुग्नावस्थामे अपन विरल जीवनानुभव सभकेँ बेराबेरी उद्घाटित कऽकऽ पाठककेँ चकित कऽ दैत छथि। ओ मेदान्ता अस्पताल जएबा लेल दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उतरल छथि। अर्द्ध बेहोशीक अवस्था छनि। दर्दसँ बहरएबाक लेल छटपटाइत मोन जंगल दिस भागैत छनि। ओहि भीषण दर्दमे हुनका मोन पड़ैत छनि; हुनके शब्दमे ''पलामूक ओ खून बोकरैत बुढ़िया, जकरा अस्पताल पहुँचौने छलिऐक... नदीक बालु पर खेलाइत बच्चा सभ... बालु पर हाथसँ चुआँ कोड़िकऽ पानि पिबैत बच्चा सभ... गोली लगलासँ घायल भेल पुलिसक सिपाही... हमरा बाँहि पर मृत्युसँ बचबाक लेल संघर्ष करैत ओकर जिजीविषा... कैथीक नील रंगक आँखि... ओकर देशक स्वतंत्रताक कामना... ओकर राष्ट्रगान... ओकर देश स्कॉटलैन्ड सहित अनेक देश... चकभाउर कटैत पृथ्वी... आह...आकाशगंगा... दर्द भऽ रहल अछि माथमे... असहनीय दर्द।''

लगभग ओहने चमत्कृत करऽवला दर्द आ संस्मरण-आख्यानक कोलाज ओ उपस्थित करैत छथि जखन डाक्टर हुनका हेमीकोलेक्टोमी करब कन्फर्म कऽ दैत छनि। हेमीकोलेक्टोमी माने एहन अपरेशन जाहिमे पेटक बड़ी आँतसँ कैन्सर प्रभावित अंशकेँ काटिकऽ निकालि देल जाए। हुनकर परिवारक लोक बेचैन छथिन। केओ भगवानसँ प्रार्थना कऽ रहल छनि, केओ महामृत्युंजय मन्त्रक जाप कऽ रहल छथिन। मुदा मरीजकेँ मोन पड़ैत छनि राजस्व मन्त्रीक संग भेल मिटिंग। मोन पड़ैत छनि जंगलकेँ उजाड़क लेल राजनेता आ पूँजीपतिक स्वार्थ आ मिलीभगत। मन्त्रीक चैम्बरसँ निकलिकऽ लिखल कविता— ''शक्ति जँ आन्हर बनाबय/अर्थ जँ अपरीति गाबय/सूति ने रहि जाय देखिहह-/ ई विवेकी मन/हे कठिन क्षण... प्रबलता दय/ सकय सभटा ताप सहि/हम्मर निबल तन/हे कठिन क्षण।'' तहिना मोन पड़ैत छनि जोगीडीहक हथिनीवला घटना। ई सभ कते अविस्मरणीय संस्मरण थिक से सभ पाठक अनुभव करताह।

लेखक अपरेशनसँ बचिकऽ आबि गेल छथि। ओ०टी० नोट्स कहि रहल छनि जे सम्पूर्ण एपेन्डिक्स सहित लगभग दू फीट आँत काटिकऽ निकालि देने छनि। देहमे मशीन लागल छनि पेट आदिमे नली लागल छनि। पत्नी राजश्री, माता-पिता, धियापुता आ परिवारक आन सदस्यक मानसिक अवस्थाक मात्र कल्पना टा कएल जा सकैए। ओहनो अवस्थासँ कनिये मुक्त भए बोकारो अबिते जे पहिल बात हुनका मोनमे अबैत छनि से थिक बोकारोक ओहि एस०पी०क बदली जे वन माफियासँ मिलल छल।

ई सभटा विवरण पाठकक मोनमे मात्र साहस आ जिजीविषाक नहि, अपितु कर्तव्यक प्रति अपार समर्पणक संचार सेहो करैत अछि। तेँ 'मिच्छामी दुक्कड़म' एकटा श्रेष्ठ आ रोआँ भुलका देबऽवला संस्मरण-ग्रन्थ मानल जा सकैत अछि।

मिच्छामी दुक्कड़म की एकटा यात्रा-वृतान्त अछि ? आब हमरा ई विचार करबाक अछि जे की एहि पोथीकेँ यात्रा वृतान्त आकि पर्यटन गाइड के रूपमे देखल-मानल जा सकैत अछि ? एहि पोथीक ई विशेषता छैक जे एहिमे लेखकक कल्पनाक उड़ान शामिल नहि छनि। सभटा पात्र, स्थान आ घटना एकदम वास्तविक छनि। आँखिक देखल आ देहक भोगल। एहिमे ने कोनो उत्प्रेक्षा अलंकारक प्रयोग अछि ने कतहु अतिशयोक्ति अलंकार। निट्ठाही कठिन भूमि पर अवतरित आ ओहने भूमि पर ठाढ़ अछि पोथी प्रारम्भसँ अन्त धरि। लेखक भूमिकेमे अपन बात एहि सम्बन्धमे स्पष्ट करैत कहि देने छथि जे— ''मुदा जें कि लेखक अपन आत्माक संग कोनो छल नहि कऽ सकैत अछि, तेँ प्रयास ई रहल अछि जे सम्पूर्ण ईमानदारीक संग वस्तुस्थितिकेँ पाठकक सोझाँ राखल जाय।''

●●●

दुलकुआ चोर

डा. अमलेन्दु शेखर पाठक

मैथिली विभाग, सी.एम. कालेज, दरभंगा।

सम्पर्क : +91 9431287344

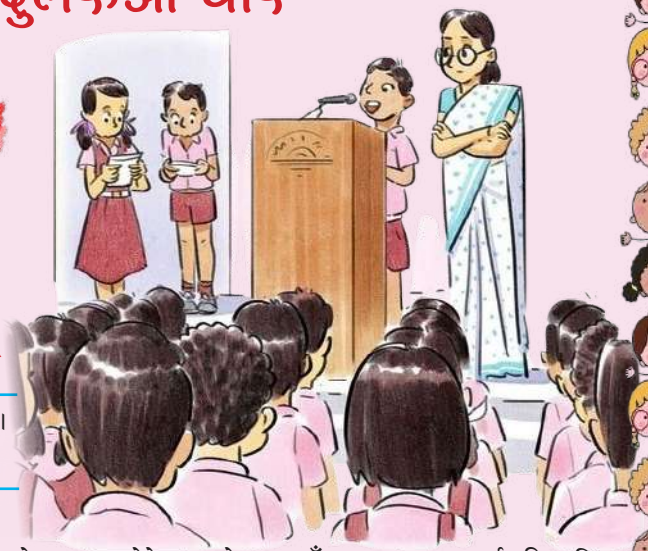

नरेशकेँ छोड़िकऽ शेष सभ गोटे अकबका गेला। सभ गोटे एक-दोसराक मुँह ताकऽ लगला। ई की बाजि रहल अछि नरेश? किनको अपना कानपर भरोस नहि भऽ रहल छलनि, मुदा सभ गोटे ठीके सुनने छला। नरेश फेरो अपन बात दोहरा देलक। सभक मोनेमे एके प्रकारक बात एलनि- बड़ बुरबक अछि नरेश...एहनो कतहु लोक बाजय... अज्ञानीसँ अज्ञानी लोक एहन नहि बाजि सकैत अछि... के एहन होयत जे अपनेसँ अपनाकेँ चोर घोषित करत... चोर धरि पकड़ल गेलाक बादो ई नहि गछै छै जे ओ चोरि केलक अछि... ताहूमे अपना लेल आयोजित सम्मान-समारोहमे के एहन कहत जे ओ चोर अछि?

ई सभटा बात समारोहमे भाग लेबा लेल पहुँचल एक-एक गोटेक मोनमे घुरिया रहल छलनि। आ आयोजक लोकनिकेँ तऽ किछु फुराइए ने रहल छलनि जे की करथु। सभक उछाह पले भरिमे बिला गेलनि। ओ सभ लाजे कठौत भऽ गेला, जेना ई सभ अपने चोरि करैत पकड़ल गेल होथि। किनको साहस नहि भऽ रहल छलनि जे समारोहमे जमाजुट छात्र-छात्रा लोकनि आ हुनका सभक अभिभावक लोकनिसँ नजरि मिला सकथि।

आ नरेशपर जेना कोनो बातक असरिए ने छलै। ओ मुसुकि रहल छल। अपन सम्मानक बाद जखन माइकपर बजबा लेल आयल छल तखन ई सुनबा लेल सभ गोटे सजग भऽ गेल छला जे ओ की कहैत अछि। अभिभावक लोकनि अपना धीयापुताकेँ ध्यानसँ नरेशक बात सुनबा लेल कहलनि। नेना-भुटका सभ सेहो सञ्च-मञ्च भऽ गेला। सभ अपन अग्रज छात्रक मुँहे हुनकर सफलताक कथा सुनबा लेल कान पाथि देने छला। हुनकर माता-पिता सेहो ई जनबा लेल उत्सुक छला जे नरेश कोना तैयारी केलक जे मेट्रिककेर परीक्षामे राज्य भरिमे प्रथम आयल। ओकरा सभसँ बेसी अंक भेटल छलै। शिक्षक लोकनिक मुँहपर गौरवक भाव आरो गाढ़ भऽ गेल छलनि। कोना ने होइतनि, हुनकर पढ़ायल छात्र राज्य भरिमे टॉप जे केने छलनि। सेहो सभ विषयमे सयमे सय अंकक सङ। हेडमास्टर साहेबक प्रसन्नताक तऽ कोनो अन्ते नहि छलनि। जहिया बाघी सन निछच्छ देहातक एहि इसकूलमे आयल छला तहिया बड़ दुखी भेल छला। आइ लगै छनि जे भने अयला। तहिया नहि अबितथि तऽ आइ सन सुअवसर भेटितनि आ कि नहि भेटितनि से के कहत। आइ हिनकर सम्मान कतेक बर बढ़ि गेलनि अछि जे ओकर आकलन अपनो नहि कऽ पबैत छथि। राज्यक मुख्यमन्त्री आ शिक्षामन्त्री नरेशक सङ हिनको सम्मानित करथिन। इसकूलकेँ राज्यक प्रथम आदर्श विद्यालय घोषित कऽ देल गेल छै। इसकूलकेँ बीस टा कम्पूटर देल जेतै। एहि लेल नबका भवन बनतै। इण्टरनेटकेर सुविधा भेटतै। नबका हाइटेक कक्षा सभ बनाओल जेतै। पेयजल लेल मोटर लगतै। नबका शौचालयकेर

फराकसँ बेबस्था हेतै। समारोह आरम्भ होयबासँ पहिने आइए जिलाधिकारी एकरा सभ लेल निरीक्षण केलथिन अछि। हेडमास्टर साहेब सङे छलथिन। जिला शिक्षा पदाधिकारी सेहो सङ छलथिन। जिलाधिकारी हुनका कहने रहथिन- "सभटा तैयारी शीघ्र पूर्ण कऽ लियऽ... इसकूल चकचका दियौ... मुख्यमन्त्री स्वयं एतऽ आबऽवला छथि, ओ इसकूलक नवका भवनक अपने शिलान्यास करता... हुनका बाद शिक्षामन्त्री अयता आ कम्पूटर भवनक आधारशिला रखता।"

हेडमास्टर साहेबक प्रसन्नता अकास लागि गेल छलनि। पयर धरतीपर नहि पड़ि रहल छलनि। जिलाधिकारी अपना सङ आयल अभियन्ताकेँ बजारसँ गाम धरि पकिया सड़क बनबेबा लेल सेहो कहने छलथिन। एकटा दोसर अधिकारीकेँ इसकूलमे आ इसकूल धरि आबऽवला बाटपर बिजुरी लगेबा लेल कहलथिन। ई सभ सुनिकऽ आनन्द विभोर भेल हेडमास्टर साहेब मोने-मोन नरेशकेँ ढाकीक ढाकी आशीर्वाद देलथिन। नरेशेक कारण तऽ आइ इसकूलक सङ गामोक काया-कल्प भऽ रहल छलै ने। ताबत मुख्यमन्त्री आ शिक्षामन्त्रीक अबैया दऽ आन किनको नहि बूझल छलनि। हेडमास्टर साहेब सभटा समाद अपना शिक्षक आ छात्र सभकेँ कहबा लेल उताहुल छला, मुदा गऔँ नहि धऽ रहल छलनि। विचारलनि जे अपना स्वागत-भाषणमे कहि देता, मुदा ने जानि कोना जिला शिक्षा पदाधिकारी हिनका मोनक बात बुझि गेलथिन। ओ एहि दऽ बजबासँ साफ मना कऽ देलथिन। हिनका भेलनि जे अपने बजता, मुदा ओहो एहि सभ दऽ किछु नहि कहलथिन। बादमे जिलाधिकारी महोदय अपना भाषणमे एकरा सभक घोषणा केलथिन। तखन हेडमास्टर साहेब बुझलनि जे हिनका किए मना कयल गेल छलनि। तथापि एहि सभपर बात करबा लेल बहुते मसल्ला छलनि। जिलाधिकारी पूरा योजना थोड़बे कहलथिन। ओ तऽ मुख्यमन्त्री आ शिक्षामन्त्रीक बेरा-बेरी अबैया, नब भवनक शिलान्यास आ कम्पूटर टाक बात कहलथिन। सड़क-बिजुरी दऽ किछु नहि बजला। हेडमास्टर साहेब विचारलनि जे बादमे शिक्षक आ छात्र लोकनिकेँ एहि सभ दऽ विस्तारसँ कहता। मुदा आब की कहता कपार... ई नरेशबा तऽ सभटा लाहेब कऽ देलक... अभगला से किरदानी केलक अछि जे कतऽ राजकीय सम्मान होइतनि से आब उनटे दण्डित ने भऽ जाथि... छौँड़ा पहिले पाँतीमे माहुर उगिलि देलक... ।

हेडमास्टर साहेबक आँखि तामसे करजनी सन लाल भऽ गेलनि। किछु बजबा लेल ठोर फरकलनि, मुदा जिलाधिकारीपर नजरि पड़िते सकदम भऽ गेला। निराशासँ भरि गेला। निराशासँ एक-एक गोटे भरि गेल छला जखन नरेश पहिले पाँती बाजल छल- "हमरा ई सफलता चोरिक बलपर भेटल अछि... हम जमिकऽ चोरि केलहुँ... ढाकीक ढाकी फूसि बजलहुँ आ राज्य भरिमे सभसँ बेसी अंक प्राप्त करबामे सफल रहलहुँ... ।"

जिलाधिकारी आ जिला शिक्षा पदाधिकारी सेहो तामसे भेर छला। अखने कनी काल पहिने दुनू गोटे अपना-अपना भाषणमे बाजल छला जे पूरा प्रदेशमे कदाचार मुक्त परीक्षा भेल छल। एहिमे हिनकर जिला सर्वश्रेष्ठ रहलनि। तेँ हिनका जिलाकेँ राज्य स्तरपर पुरस्कृतो कयल गेलनि। जिलाधिकारीकेँ लागि रहल छलनि जेना नरेश कनबोज टिकाकऽ हुनका कसगर चमेटा मारि बैसल होइनि। हुनका एहि बातक अपसोच भऽ रहल छलनि जे अपना भाषणमे नरेशक एतेक प्रशंसा किए कऽ देलनि। ओकरा आगू पढ़ाइमे सुविधा आ सहयोग करबाक बात किए कहलनि। पत्रकार सभपर नजरि पड़लनि तऽ चिन्तित भेला- बाप रे! काल्हि जखन अखबार सभमे ई समाचार छपतै तऽ पूरा प्रदेशमे हरबिर्रो मचि जेतै। आब मुख्यमन्त्री आ शिक्षामन्त्रीक कार्यक्रमक की हेतै? हिनका सभसँ कोन मुहेँ बात करता? हिनकोपर कारबाइ भऽ सकै छनि। जिलाधिकारी कछमछ करऽ लगला जिला शिक्षा पदाधिकारी तऽ मानि लेलनि जे हुनकर स्थानान्तरण तय छनि। मोने-मोन नरेशकेँ सरापऽ लगला- करम नेढ़हा चोरि करबो केलक तऽ ढोल पिटबाक कोन परोजन छलै... अभगला अपना सङ हमरो सभकेँ लऽ डूबल... ।

नरेशक कथनसँ सभसँ बेसी आहत ओकरे सङ पढ़निहार दिनेश भेल। दिनेश अपना कक्षामे सभ दिन टॉप करैत रहल छल। नरेश तऽ कहुना कूथि-काथिकऽ पास करै छल। दिनेशेक प्रेरणासँ तऽ पढ़हु लागल छल। नहि तऽ पहिने मटरगस्तीमे लागल रहैत छल। इसकूलसँ पड़ाकऽ सिनेमा देखब। ककरो आम-लिच्ची झखा देब। अकारणे ककरोसँ मारिपीट कऽ लेब। किछु ने किछु नोकसान कऽ देब। नहि किछु तऽ चारपर ढेप फेकि देब। ई सभ नरेश लेल सामान्य बात छलै। एतनीए टासँ गुटका-तमाकू खाय लागल छल। मोबाइल गेममे परिकल तऽ टाका-पाइ चोराबऽ लागल। कते खेप ने बाप-पित्ती एहि लेल डेङेबो केलथिन, मुदा किए सुधरैत। उनटे आरो बिगड़ले जा रहल छल। भरि दिन मोबाइल गेम आ रील देखैत बितै छलै एकर। पढ़ाइसँ तऽ जेना छठि-आठम छलै। दिनेश जहिया-जहिया बुझबै छलै तहिया-तहिया एकरा सङ मारि-पीट करऽ लगै छलै। तँ दिनेश टोक-टाक करब छोड़ि देने छलै। तथापि ओहि दिन फेर झमेला भऽ गेलै। ओना ओ अन्तिम झगड़ा छलै। एकर बाद तऽ एकदमे सुधरि गेल छलै। सभटा अधलाह काज छोड़ि देने छलै नरेश। मोन लगाकऽ पढ़ऽ लागल छलै। आ जेना-तेना घीचि-घाचिकऽ पास केनिहार नरेश छमाहीमे नीक नम्मर अनने छलै। दिनेशोकेँ पछाड़ि देने छलै। दिनेशसँ एक नम्मर बेसी अनने छल नरेश। दिनेश पछुआ गेल छल तथापि प्रसन्न छल। ओकर सङ्ङी नरेश सुधरिए नहि गेल छलै, अपितु तेना पढ़ऽ लागल छलै जे एकरो टपि गेलै। ई भेल छलै अन्तिम झगड़ाक कारणेँ। ओ झगड़ा नहि होइतै तऽ नरेश कदापि नहि सुधरैत। ओहिना मोन छै दिनेशकेँ। ई सभ अठमामे गेले छल। तहिये ओहि दिन कक्षामे शिक्षक नरेशसँ देशक पहिल राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति आ प्रधानमन्त्रीक नाम पुछने रहथिन। ओकर उत्तर देल नहि भेलै नरेशकेँ। गोङिआय लागल। एहिपर दिनेश कहि देलकै- "आरो रील देख... रील देखैत-देखैत तोहर बुद्धि भोथ भऽ गेल छौ... एकर उत्तर तऽ चौथो-पचमाक छात्र दऽ देतै।"

बस लेसि देलकै नरेशकेँ आ शिक्षकक सोझेमे तेहन घुस्सा मारि बैसलै जे दिनेशक ठोर फुटि गेलै। शोणित बहरा गेलै। हेडमास्टर साहेबकेँ शिक्षक कहलथिन तऽ ओ नरेशकेँ इसकूलेसँ निकालऽ लेल टीसी बनाबऽ लगलथिन। नरेशकेँ जनतब भेलै तऽ दौगल दिनेश लग पहुँचल आ नाम कटबासँ बचाबऽ लेल गोहराबऽ लागल। ओकरा बूझल छलै जे हेडमास्टर साहेब दिनेशकेँ बहुत मानै छथिन आ ओकर बात नहि टारथिन। दिनेशकेँ वचन देलक नरेश जे ओ सुधरि जायत। सभटा अधलाह आदति छोड़ि देत आ मोन लगाकऽ पढ़त। दिनेश टटके लागल घुस्सा बिसरि देलक आ हेडमास्टर साहेबक नेहोरा-मिनती कऽकऽ नरेशकेँ नाम कटबासँ बचा लेलक। एतबेपर नरेश सुधरैत आ कि नहि से नहि कहि, मुदा ओही दिन एकटा आरो घटना भऽ गेलै जे एकरा पूरा-पूरी सुधारि देलकै। भेलै ई जे नाम कटब टरि गेलै तऽ दुनू सङे गामपर जाय लेल बिदा भेल। जौआँ पीपर लग पहुँचले छल आ कि कतऽसँ ने एकटा अजोध गहुमन आबिकऽ नरेशक पयरमे लपटा गेलै आ छाबामे हबकि लेलकै। साँप लगले पड़ा सेहो गेलै। ई सभ पले भरिमे भऽ गेलै। आन सभ विद्यार्थी तऽ भागि पड़ेलै, मुदा दिनेश नहि पड़ायल। ओ चट अपना औजार बक्ससँ नबका ब्लेड बहार केलक आ नरेशकेँ जतऽ साँप कटने छलै ओतऽ गुनाक चेन्ह जकाँ कनी चीरि देलकै। फेर हाथसँ दबा- दबाकऽ शोणित बहार करऽ लगलै। ताबत एकटा टेम्पू ओहि बाटे जा रहल छलै। दिनेश ओकरा रोकिकऽ साँप कटबाक बात कहलकै तऽ टेम्पूवला एकरा दुनूकेँ चढ़ा लेलकै। टेम्पूवला भगत ओतऽ जाय चाहै छलै, मुदा दिनेश सोझे ताजपुर अस्पताल चलऽ लेल कहलकै। ताबत नरेशक आँखि मुनाय लागल छलै आ मुँहसँ गाउज बहराय लागल छलै। आब नरेशकेँ साहस रखबा लेल कहैत, किछु नहि हेतै तकर भरोस दैत दिनेश अपन मुँह नरेशक छाबापर ओहि ठाम लगा देलक जतऽ साँप कटने छलै आ शोणित बहरा रहल छलै। आ फेर लागल चूसि-चूसिकऽ बिखाह शोणित फेकऽ।

टेम्पूवला मना केलकै- "बौआ अहाँक ठोर फूटल अछि अहूँकेँ बिख लागि जायत एना नहि करू।" मुदा किए मानैत दिनेश। ओ टेम्पूवलाक बात सुनि नरेशकेँ देखि मुसुकि उठल छल अवश्य। अस्पताल पहुँचैत-पहुँचैत नरेशक सङ दिनेशो अचेत भऽ गेल। लगले उपचार भेलै आ दुनू गोटे बचि गेल। डाकदर साहेबक कहब छलनि जे जँ जानपर खेलिकऽ दिनेश शोणित चूसि-चूसि नहि फेकने रहैत तऽ नरेशकेँ नहि बचायल जा सकैत छल। अगिला दिन दुनू गोटे अस्पतालसँ घूरल आ पकिया भजार भऽ गेल। आब दुनूमे एक-दोसराकेँ पढ़ाइमे पछाड़बाक बाजी लागऽ लगलै। कहियो दिनेश तऽ कहियो नरेश अगुआ जाय। से क्रम अखन धरि चलि रहल छै। एहि बरख दिनेश बेराम पड़ि जेबाक कारण मेट्रिकक परीक्षा नहि दऽ सकल तेँ नहि तऽ देखा दितै। देखा की दितै ई तऽ चोरि केलकै से अपने कहै छै। तखन तऽ इसकूलोक परीक्षामे ई अवश्ये चोरि करैत हेतै... ।

दिनेशक कानमे चोरि शब्द फेरो पड़लै। नरेश ओतेपर नहि ठमकल छलै, ओ अनुज छात्र सभकेँ कहि रहल छल- "अहूँ सभ सफल होबऽ चाहै छी तऽ हमरे जकाँ चोरि करब सीखू... ।"

आब नहि सहि भेलै दिनेशकेँ। ओ चिकरि उठल- "रे निरलज्जा चुप्पो रह... अपने तऽ चोरि करबे केलेँ आनो सभकेँ चोरि सिखबै छेँ... ।"

आब जिलाधिकारी आ जिला शिक्षा पदाधिकारी सेहो तमतमेला आ ठाढ़ भऽ गेला। हेडमास्टर साहेब बेंत उसाहिकऽ दौड़ला, मुदा नरेशपर तऽ जेना कोनो असरिए नहि भेलै। ओकर मुसकी ठहाकामे बदलि गेलै। ओ ठहाका लगबैत बाजल- "आहि रे बा भजार! तूँ की बुझलही परीक्षामे चोरिक बात... नहि-नहि हम परीक्षामे चोरिक बात कैए ने रहल छी... ।

हेडमास्टर साहेबक सङ सभ गोटे थकमका गेला।

नरेश मुसुकैत बाजल- "हम चोरि केलहुँ समयक... पहिने तीन-तीन घण्टा खेलाइत रही जाहिमेसँ अढ़ाइ घण्टाक चोरिकऽ पढ़ाइमे लगेलहुँ... टीभी देखैत रही ताहूमेसँ समयक चोरि केलहुँ... मोबाइलमे जे कनी-मनी समय जाइ छल तकरो चोरा लेलहुँ... सम्बन्धी सभ ओतऽ जायब-आयब बन्न कऽ ओहि समयक चोरि करैत रहलहुँ... पहिने पाबनि-तिहार आ मेला-ठेलामे घूमऽ जाइत रही ताहिमे जे समय लगै छल तकरो चोरि करैत रहलहुँ... आ एहि चोरि लेल फूसि सेहो जमिकऽ बाजी... कखनो मथदुक्खीक लाथ करी तऽ कखनो पेटमे मरोड़ दऽ फूसि बाजी... मायसँ तऽ बरमहल फूसि बाजी... रातिकऽ अधे पेट खाइ आ कही जे पेट भरि गेल जाहिसँ अबेर राति धरि पढ़ि पाबी... आधा भोजन चोराकऽ कूकुरकेँ दऽ दी... हम चोरि करैत रहलहुँ आ फूसि बजैत रहलहुँ पढ़बा लेल... एहन चोरि करब आ एहन चोर बनबा लेल ककरो कहब बेजाय बात भेलै... ?"

नरेशक बात सभ मन्त्रमुग्ध भेल सुनैत रहला। जखन ओ चुप भऽ गेल तऽ हेडमास्टर साहेबक सेहो ध्यान भंग भेलनि। ओ बेंत फेकि लपकिकऽ नरेशकेँ गरा लगा लेलनि। ओकर पीठ ठोकलनि आ माइकपर बजला- "चोरि करब पाप छै... अपराध होइ छै... फूसि बाजब बेजाय होइ छै... चोरसँ सभ घृणा करैए से जनैत रही... चोरि करब नीको भऽ सकै छै... चोर दुलरुओ भऽ सकैए से आइ पहिले-पहिल बुझा देलनि हमरा सभक दुलरुआ चोर नरेश... हमहूँ कहै छी सभ छात्र हिनके सन दुलरुआ चोर बनै जाउ...।"

सभ गोटे थपरी बजाकऽ अपन सहमति आ प्रसन्नता प्रकट केलनि। ताबत दिनेश जोरसँ नारा लगा देलक- "दुलरुआ चोर... !"

सभ एक सङ कहलनि- "जिन्दाबाद... !"

जिन्दाबाद कहनिहारमे जिलाधिकारी आ जिला शिक्षा पदाधिकारीक सङ हेडमास्टरो साहेब सम्मिलित छला। जिलाधिकारी अपना गरासँ माला आ माथपरसँ पाग उतारिकऽ नरेशकेँ पहिरा देलनि। फेर तऽ सभ गोटे नरेशकेँ फूल-मालासँ तोपि देलनि। आ दुलरुआ चोर अपना गराक सभटा माला आ पाग दिनेशकेँ पहिरा ओकरा गरासँ लपटि गेल।

मिथिलेश कुमार झा

जगति, बेनीपट्टी, मधुबनी।

सम्पर्क : +91 93306 86067

तकिते रहि गेल दुन्नू भाइ

झगड़ू-रगड़ू छल दुइ भाइ
बएनमे एकटा भेटलै लाइ
झगड़ुक मन जे सौंसे खाइ
रगड़ू धपाएल, लूझि पड़ाइ
छीना-झपटीमे भेलै लड़ाइ
अँगनामे गुरकि गेल लाइ
पएर दबा कऽ आएल बिलाइ
लऽ पड़ाएल गुरकल लाइ
तकिते रहि गेल दुनू भाँइ !

कंप्यूटर जी

कंप्यूटर जी, कंप्यूटर जी !
सुनू-सुनू कंप्यूटर जी !!

हिसाब-किताब अहाँ खूब करै छी,
विज्ञानक सभटा भेद जनै छी,
हमरा लए ई सब पहाड़ छै
बनियौ हम्मर ट्युटर जी !

दुनिया भरि अहाँ 'मेल' पठाबी,
किसिम-किसिम केर खेल कराबी,
फाइल करी आ किताब पढ़ाबी,
अहाँमे बड़-बड़ हूनर जी !

अंतर्जालमे सभकेँ ओझरयलहुँ,
केहन-केहन ओझरी सोझरयलहुँ,
सभ समस्याक निदान अहीँ लग
अहाँ छी प्रॉब्लम शूटर जी !

जंतब केर भंडार अहाँ छी,
ज्ञानी अपरंपार अहाँ छी,
एक किलिक पर सबटा हाजिर
अहीँ छी सबहक फ्यूचर जी !

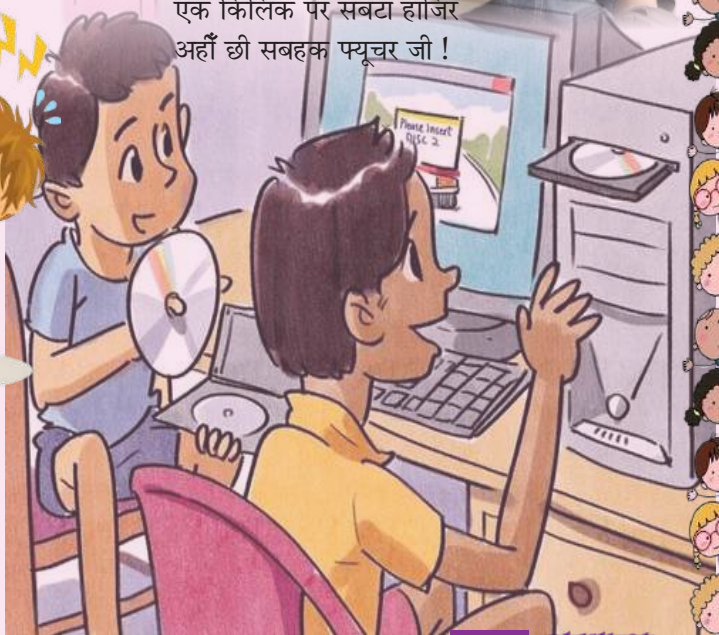

पाहुन चिड़ैया

आ आ रे खंजन चिड़ैया
हमरा अँगना आ
दूर देस केर तू रहबैया
पाहुन बनि कऽ आ

बहुत सुरेबगर रूप-रंग छौ
तेहने सुन्नर आँखि
हजार-हजार कोस उड़इ छँ
केहन बलगर पाँखि

आबै आ रे बैसक देबौ
देबौ दूध-भात
आ आ रे खंजन चिड़ैया
हमरा अँगना आ

तोरा देश सभ जाढ़े थर-थर
हमरा ओइठाँ रौद
कुदिहें-फनिहें चराउर करिहें
संगे तपिहें रौद

चर-चाँचर आ झील बहूते
गाछक फुनगी झूला
आ आ रे खंजन चिड़ैया
हमरा अँगना आ

आबै सब संगी-बहिना संग
आबै उड़ि-उड़ि आ
दूर देश केर तू रहबैया
चुन मुन चुन चुन गा।

बिढ़नी

बबलू गेल तातिलमे
आम खाए ले गाम,
गाममे खाए लागल
थुर्री-बजरी लताम।
टिकली-फतिंगा पाछू
दौड़य बाड़ी-झाड़ी,
फूल पर बैसल देखय
भम्हरा कारी-कारी।
एकदिन अमोट पर
देखलक बैसल बिढ़नी,
ओकरा पकड़य ले
भेलै मोन घिरनी।
कले-मचे प्रेमसँ
जखने बढ़ेलक हाथ,
बिन्हे लेलकै आँगुरमे
चिचियाएल बाप-बाप।
दौड़ल अएलीह माए आ
करय लगली उपचार,
परचारैत बबलूकेँ
देलखिन अपन विचार।
बिढ़नी होइछ दुष्ट बड़
मानय नहि दुलार,
एहन-एहन जीव संग
करी कठोर बेभार।

पुस्तक सूची : हिन्दी-अंग्रेजी

यात्रा संस्मरण
49. देश विदेश : डा. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' 500/-

आध्यात्मिक
50. श्रीमद्भागवतगीता(पद्यानुवाद) : विनोद कुमार झा 351/-
51. श्रीमद्भागवतगीता(भावानुवाद) : वन्दना झा 351/-
52. अष्टावक्र गीता(भावानुवाद) : वन्दना झा 251/-
53. श्रीदुर्गासप्तशती : वन्दना झा PB 351/- HB 551/-
54. श्रीराम गीता : वन्दना झा 100/-
55. मैथिली चालीसा संग्रह : वन्दना झा 100/-
56. मैथिली सुन्दरकाण्ड : वन्दना झा 100/-
57. श्रीदुर्गासप्तशती : सतीश चन्द्र 'सजल' 451/-

आलेख-संग्रह
58. शान्ति निबन्धावली : आचार्य पं. महेश झा 200/-
59. मैथिली आलेख संचयन II : प्रा. रामावतार यादव 500/-
60. मिथिला मंदार मंजरी : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 300/-
61. मिथिला पारिजात मंजरी : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 300/-
62. आलेखिका : डॉ. सुनीता झा 300/-
63. समय संदर्भ : डा. सुरेन्द्र भारद्वाज 300/-

व्याख्यान
64. मैथिली गीत : परम्परासँ आइ धरि : डॉ. चन्द्र मणि झा 250/-

गजल
65. जे कहि नञि सकलहुँ : दीप नारायण विद्यार्थी HB 199/- PB 149/- *(दोसर संस्करण)*
66. प्रेम पूरित भाष : विजय इस्सर 'वत्स' 250/-

पत्र-संग्रह
67. पतियाक आखरमे गुँजैत भ्रमर(सं.) : डा. महेन्द्र नारायण राम 500/-

मधुप साहित्य
68. मधुप सप्तसुधा : कविचूड़ामणि मधुप 500/-
69. मधुप समग्र- I

शोध
70. महाकविक महाप्रयाण : डॉ. रंगनाथ दिवाकर 800/- HB
71. कबीर आ हुनक मैथिली पदावली : डॉ. तरानन्द वियोगी 500/-

पाक-कला
72. सिदहा बारी : डॉ. नीरा मिश्रा 801/- HB

समीक्षा संकलन
73. अभिज्ञान महाप्रयाण : दीप नारायण 300/-

आचार-विचार
74. विचार संहिता : हरिदेव झा 300/-

साक्षात्कार
75. गपसप : रामभरोस कपड़ि 'भ्रमर' 300/-

हिन्दी उपन्यास
76. फूलो रानी : प्रो. महेन्द्र प्रसाद सिंह 250/-
77. अगम अगोचर : अर्जुन झा 150/-

अंग्रेजी उपन्यास
78. HEFTY DELIGHTS : Samriti Jha 200/-

हिन्दी कविता-संग्रह
79. स्मृति : श्यामानन्द ठाकुर 150/-
80. अंतरंगी : श्यामानन्द ठाकुर 200/-
81. कहूँ तुझे सूरज या चंदा : लक्ष्मी देवी स्मृति झा 100/-
82. विरह संदेश : शंकर मधुपांश 160/-
83. भूमिजा : शंकर मधुपांश 201/-
84. मधुयामिनी : शंकर मधुपांश 151/-
85. नींव का पत्थर : जगमोहन चौधरी 201/-
86. मैं बिहार हूँ : दीपक वत्स 199/-
87. तेरे न होने से : कुमारी आरती 200/-
88. अँगीठी पर गुलाब : संजय सरस 160/-
89. सुनो तो : शंकर मधुपांश 201/-
90. माँ नदी बन गई : दीपा मिश्र 200/-
91. गीतमालिका : कंचन कुमारी 250/-
92. घर आएल लक्ष्मी : योगानंद हीरा 250/-
93. कंक्रीटी जंगल की बात : कुमार मनीष अरविन्द 200/-

हिन्दी गजल
94. हंसती आंखों के आंसू : डॉ. हाजिक फरीद 199/-

अनुवाद
95. परिचय शतक (हिन्दी) : कविचूड़ामणि मधुप (अ.- शंकर मधुपांश) 199/-
96. योनि का आत्मबोध (हिन्दी) : दीपा मिश्रा (अ.- प्रेरणा पारिश) 251/-

हिन्दी दोहा-संग्रह
97. संरक्षण के दोहे : कुमार मनीष अरविन्द 200/-

प्रेरणादायी
98. सफलता का मार्ग : परमानन्दकुमार 350/-

शोध
99. दुसाध जाति का वृहत् इतिहास : डॉ. महेन्द्र नारायण राम 600/-
100. भारतीय दर्शन में वाद-विवाद : डॉ. बीरेन्द्र कुमार चौधरी 800/-HB
101. कबीर भक्ति रस सिद्धांत : महात्मा श्री योगेन्द्र दास 500/-

पोथीसभ a पर सेहो उपलब्ध अछि।

अनुप्रास प्रकाशन समूह

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847211
www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashan@gmail.com
+91 9430583847 +91 8862977228

अनुप्रास प्रकाशन

काव्यांश बुक्स किएशन

अनुप्रास प्रकाशन समूहक उद्देश्य भाषा-साहित्यक श्रेष्ठताकेँ स्थापित करब थिक। स्तरीय साहित्यकेँ सर्वसुलभ करएबाक एहि सारस्वत प्रयासमे अपने लोकनिक सहयोग आ सलाह अपेक्षित अछि।